Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

अंतर्राष्ट्रीय संगोष्ठी

International Seminar

13, 14, 15 February, 1992

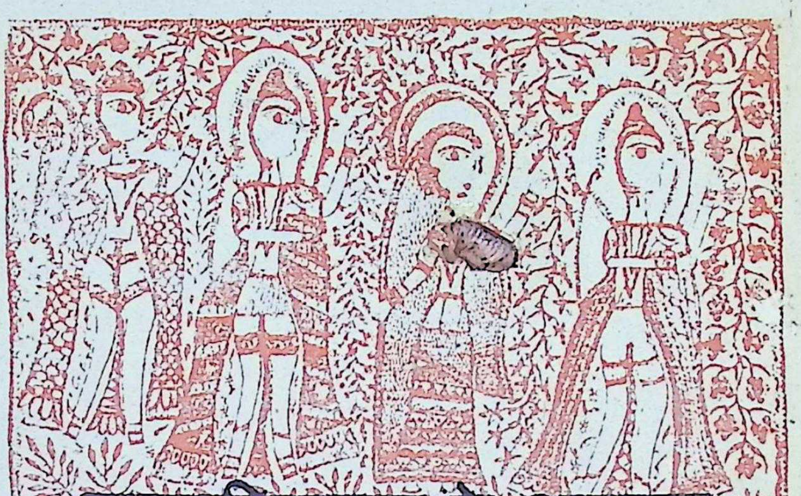

रामचरितमानस के अनुवाद
Ramcharitmanasa In Translations

भारतीय अनुवाद परिषद
Bhartiya Anuvad Parishad

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

अन्तर्राष्ट्रीय संगोष्ठी में पढ़े गये आलेख

13, 14, 15 फरवरी 1992

रामचरितमानस के अनुवाद
Ramcharitmanasa In Translations

भारतीय अनुवाद परिषद
Bhartiya Anuvad Parishad

203 आशादीप, 9 हेली रोड
नई दिल्ली-110001

Mohit

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

अनुक्रम

1	असमिया में रामचरितमानस	चित्र महंत	9
2	अयोध्याकाण्ड का अनुवाद : अदालत खाँ	डा. शिव नारायण खन्ना	15
3	रामचरित मानस के अंग्रेज़ी अनुवाद	डा. अवजिनेश अवस्थी	23
4	हिल का योगदान	डा. सुधेश	28
5	रामचरितमानस का मेरा अनुवाद	सी. एल. ढोंडी	38
6	उड़िया में रामचरितमानस	डा. शंकर लाल पुरोहित	44
7	कन्नड में मानस का अनुवाद	सु. रामंचद्र	51
8	कश्मीरी में मानस के अनुवाद	डा. शिबन कृष्ण रैणा	58
9	मानस का कुमाउँनी अनुवाद	डा. रुक्मिणी जैन	68
10	रामायण तुलसी दल	डा. रामनिरंजन पांडे	72
11	मानस का गुजराती काव्यानुवाद	डा. अम्बा शंकर नागर	82
12	रामचरित मानस का तमिल अनुवाद	डा. रवीन्द्र कुमार सेठ	87
13	रामचरितमानस के तेलुगु अनुवाद	डा. टी. राजेश्वरानंद शर्मा	91
14	मानस के पंजाबी अनुवाद	डा. मनमोहन सहगल	104
15	मानस के मराठी रूपांतर	डा. गजानंद नृसिंह साठे	119
16	मानस के मलयालम अनुवाद	डा. एस. तंकमणि अम्मा	131
17	मैथिली रामचरित मानस	डा. नयनबाला शर्मा	135
18	रामचरितमानस का रूसी अनुवाद	हेमचंद पांडे	140
19	सिन्धी में मानस के अनुवाद	डा. मुरलीधर जैतली	144
20	हरियाणवी पद्यानुवाद	डा. जय नारायण कौशिक	148
21	तालिका : मानस के अनुवाद		154

डा. भगीरथ मिश्र का विशेष लेख, इतालवी, जापानी, उर्दू, बंगला तथा संस्कृत में मानस के अनुवादों पर लेख प्रकाशन के समय तक नहीं मिल पाये हैं।

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

भारतीय अनुवाद परिषद की कार्यकारिणी
1991-1993

अध्यक्ष	डा. सुरेशचन्द्र गुप्त
उपाध्यक्ष	डा. जे. पी. दास
,,	श्रीमती सरला जगमोहन
सचिव	डा. विमलेश कान्ति वर्मा
संयुक्त सचिव	डा. मधु बरुआ
मुख्य सम्पादक	डा. गार्गी गुप्त
सम्पादक	डा. देवेश चन्द्र
कोषाध्यक्ष	श्रीमती नीता शेखर
निदेशक : अनुवाद प्रशिक्षण पाठ्यक्रम	डा. ओम्प्रकाश सिंहल
निदेशक : मासिक संगोष्ठी	श्रीमती संतोष खन्ना
	डा. देवेश चन्द्र
	डा. रणजीत साहा
	श्री राजकुमार सैनी
सदस्य	श्री ओ. पी. चावला
	डा. उषा गोपाल
	श्री मोहन मुरारी
	श्री मुहम्मद अलीम
	श्री कलूड़ा अभिनव

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

आजीवन सदस्य

संरक्षक सदस्य

डा. सुलेखचंद्र गुप्त

1. डा. गार्गी गुप्त
203 आशादीप, 9 हेली रोड
नई दिल्ली-110001

2. श्री कृष्ण गोपाल अग्रवाल
जेड-8, सरोजनी नगर
नई दिल्ली-110023

3. श्रीमती संतोष खन्ना
280-बी, लक्ष्मीबाई नगर
नई दिल्ली-110023

4. श्री विश्वनाथ मिश्र
61-ई, बंगला साहिब रोड
नई दिल्ली-110001

5. डा. एन. ई. विश्वनाथ अय्यर
26/2035, कालेज लेन
त्रिवेन्द्रम (केरल)

6. डा. ज्ञानवती दरबार
23/211, लोधी रोड
नई दिल्ली-110003

7. श्रीमती शशि अग्रवाल
704 आशादीप, 9 हेली रोड
नई दिल्ली-110001

8. डा. कृष्ण कुमार गोस्वामी
1764, औट्रम लाइन्स
डा. मुखर्जी नगर
दिल्ली-110009

9. डा. रवीन्द्र गर्गेश
6018/10, देवनगर
नई दिल्ली-110005

10. श्रीमती कुसुम अग्रवाल
326, गुरुरामदास नगर
लक्ष्मी नगर
दिल्ली-110092

11. डा कैलाश चन्द्र भाटिया
भारती नगर
मैरिस रोड
अलीगढ़-202001

12. श्रीमती विमला मित्तल, प्राचार्य
चम्पा अग्रवाल महिला कालेज
अलीगढ़ (उ. प्र.)

13. डा. सोना शर्मा
सी-175, हरिनगर, घंटाघर
नई दिल्ली-110064

14. डा. श्याम सिंह शशि
'अनुसंधान' बी-4/245
सफदरजंग एन्कलेव,
नई दिल्ली-110029

15. डा. मदन शर्मा
1095, लोदी रोड कांपलेक्स
नई दिल्ली-110003

16. श्री ब्रजनारायण अग्रवाल
सह-संपादक, 'साप्ताहिक हिन्दुस्तान'
कस्तूरबा गांधी मार्ग, हिन्दुस्तान भवन
नई दिल्ली-110001

17. श्री रघुनाथ सिंह
सी-2/26 ए, लारेंस रोड
दिल्ली-110035

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

18. प्रो. सत्यभूषण वर्मा
सी. आर. एस. कांपलेक्स
जे. एन. यू., न्यू महरौली रोड
नई दिल्ली-110067

19. डा. लक्ष्मी कण्णन
ए-2503, नेताजी नगर
नई दिल्ली-110023

20. प्रो. जी. गोपीनाथन
हिन्दी विभाग, कालिकट विश्वविद्यालय
कालिकट-673635

21. महाप्रबंधक
दूर संचार विभाग
मध्य प्रदेश दूर संचार क्षेत्र
भोपाल-15

22. श्रीमती लता सिंहल
517, इंदिरा नगर,
आई. वी. आर. आई. रोड
इज्जत नगर, बरेली

23. कुमारी बी. वाई. ललिताम्बा
811, 10वां, "ए" मेन प्रथम स्टेज
इंदिरा नगर
बंगलौर-560038

24. श्रीमती वीना मुरारका
संपादक 'वैस्ट इंडिया'
5901 क्रिस्टी एवेन्यू,
कमरा नं. 301, एयेरीविल
कैलिफोर्निया (अमरीका)

25. डा. अलका पंवार
मंदाकिनी 5-बी, मोदी बाग
गणेशखिण्ड पूना-411016

26. राजभाषा अधिकारी
बैंक आफ इंडिया, राजभाषा विभाग
पो. बा. नं. 4, ए. वी. पटेल नगर
नागपुर-440 001

27. डा. गंगा प्रसाद विमल
3 ए/11, डब्ल्यू. ई. ए., करोल बाग
नई दिल्ली-110005

28. श्रीमती मीनाक्षी जोशी
76, सैक्टर 9-ए
चण्डीगढ़-160017

29. श्री एस. एम. रामचंद्रन गोस्वामी
शारदा विहार 89/02
बंगलौर-560004

30. डा. बालकरण पाल
भारतीय रिजर्व बैंक
सहकारी किसान भवन
महात्मा गांधी मार्ग
लखनऊ-226001

31. श्रीमती विजय लक्ष्मी कौशिक
ए-15/29, बसंत विहार
नई दिल्ली-110057

32. श्री विमल दे
आर जेड-62-ई.
वाशिष्ठ पार्क
नई दिल्ली-110046

33. श्रीमती शकुन्तला माथुर
बी-6, पंडारा रोड
नई दिल्ली-110003

34. प्रो. वी, एम. दांडेकर
"अर्थबोध"
968/31-22, सेनापति बापत रोड
पुणे-411016

35. श्रीमती सरला जगमोहन
ए-190, ग्रीन पार्क एक्सटेंशन
नई दिल्ली-110016

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

36. डा. एन. सुन्दरम्
प्लाट सं. 10
बालाजी नगर
वीरुगंम वक्कम
मद्रास-92

37. डा. पी. सी. जोशी
इंस्टीट्यूट ऑफ इकॉनोमिक ग्रोथ
स्टाफ क्वार्टर्स
मलका गंज, दिल्ली-110007

38. निदेशक
सोसायटी फार प्रोमोशन आफ
वेस्टलेंट्स डेवलपमेंट
श्रीराम कला केन्द्र
1, कोपर्नीकस मार्ग
नई दिल्ली-1

39. श्री सुरेन्द्र अग्रवाल
बी-12/223, लोदी रोड
नई दिल्ली-110003

40. श्रीमती प्रेमलता अग्रवाल
"प्रेमदीप"
23 वाई, किदवई नगर
कानपुर-208011

41. डा. प्रायर मारिओ
एस-168 पंचशील पार्क
नई दिल्ली-110017

42. डा. के. नागेश हत्वार
1736, मगधी चौर्ड रोड
विजया नगर
बंगलोर-560040

43. श्रीमती शरद चन्द्रा
सी-4/53, सफदरजंग एरिया
नई दिल्ली-110016

44. डा. अमर सिंह वधान
संकाय सदस्य
सिंडिकेट बेंक, क्षेत्रीय कार्यालय
भोपाल (म. प्र.)

45. डा. ललित मोहन बहुगुणा
सी-2/68-बी
जनकपुरी
दिल्ली-110058

46. श्री रमेश चंद्र सुकुल
85/2, आर. टी. द्वितीय तल
संजीव रेड्डी नगर
हैदराबाद-500038

47. श्री इंद्रनील नाथ
139, नर्मदा
जवाहर लाल नेहरू विश्वविद्यालय
न्यू महरौली रोड
नई दिल्ली-110067

48. श्री जयप्रकाश भारती
'संपादक-नंदन'
हिन्दुस्तान टाइम्स हाउस
के. जी. मार्ग, नई दिल्ली-110001

49. श्री एम. एम. खन्ना
प्रभारी अधिकारी
भारतीय स्टेट बेंक, आंचलिक कार्यालय
पंजाब पो. बा. नं. 95
एस सी ओ 103 से 110,
सेक्टर-17 बी
चण्डीगढ़-160017

50. डा. तारा जोशी
9, तुगलक रोड
नई दिल्ली-110001

51. डा. उषा गोपाल
आई-10, प्रसाद नगर
नई दिल्ली-110005

52. श्री ब्रह्म प्रकाश गुप्त
191-ए पंडारा रोड
नई दिल्ली-110003

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

53. श्रीमती देवलीना केजरीवाल
डी/1-84, चाणक्यपुरी
नई दिल्ली-110021

54. डा. मधु बरुआ
सी-254, सरिता विहार
नई दिल्ली-110 044

55. डा. सुरेशचन्द्र गुप्त
सी-88, इंद्रपुरी
नई दिल्ली

56. डा. मदन लाल मधु
फ्लैट नं. 367
मॉस्को-117296

57. डा. ठाकुर दास
केन्द्रीय हिन्दी संस्थान
आगरा

58. श्री रिछपाल सिंह वर्मा
लोकसभा सचिवालय
संसदीय सौध
नई दिल्ली-110001

59. श्री शारदा प्रसाद
लोकसभा सचिवालय
संसदीय सौध
नई दिल्ली-110001

60. श्री कलूडा अभिनव
जे-130 सेक्टर 23
गाजियाबाद

61. डा. महेन्द्र
3 जी, जवाहर नगर
दिल्ली-110007

62. डा. मंजुला दास
एफ-23, माडल टाउन
दिल्ली-110007

63. डा. पूरन चन्द टन्डन
एफ. एफ. 41
लक्ष्मी नगर
दिल्ली-110092

64. डा. सुधेश
1317 पूर्वांचल
जे. एन. यू.
नई दिल्ली-110067

65. डा. आशा जोशी
69 साक्षर अपार्टमेंट्स
ए-3 पश्चिम विहार
नई दिल्ली-110063

66. डा. आर. सुरेन्द्रन
रीडर हिन्दी विभाग
कालिकट विश्वविद्यालय
कालिकट (केरल)

67. डा. ओम्प्रकाश सिंहल
61/5, रामजस रोड
करोल बाग
नई दिल्ली-110005

68. डा. रश्मि बहल
111-A, पॉकेट-A,
D.D.A. Flats (SFS)
सुखदेव विहार
नई दिल्ली-110025

69. श्री बालशौरि रेड्डी
निदेशक,
भारतीय भाषा परिपद
36-A, शेक्सपीयर सरणी
कलकत्ता-700 017

70. डा. एन, जी. देवकी
हिन्दी विभाग
कोचिन विज्ञान और तकनीकी
विश्वविद्यालय, कोचीन-682 822

71. श्रीमती प्रतिमा श्रीवास्तव
451, गली शीश महल
सीताराम बाजार
दिल्ली-110006

72. श्री सतपाल शर्मा
47, कोटा हाउस, शाहजहां रोड
नई दिल्ली-110011

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

73. डा. जे. पी. दास
305, S.F.S. हौज खास
नई दिल्ली-110016

74. श्री अशोक कुमार वर्मा
भारतीय दूतावास
5, विया वेन्ती सेतम्बरे
रोम, इटली

75. डा. भीमसेन निर्मल
1-1-405/7/1, गांधी नगर
हैदराबाद-500 380

76. सुश्री माधुरी खोसला
B D/3, पीतमपुरा
दिल्ली-110 036

77. श्री हरीशचंद्र गुप्ता
कपिल अपार्टमेंट्स
फ्लेट नं. 102, प्लाट नं. 31-34
न्यू स्नेह नगर, वारधा रोड
नागपुर-440015

78. श्री सी. एच. रामुलू
रीडर हिन्दी विभाग
हैदराबाद विश्वविद्यालय
हैदराबाद-500134

79. श्री सुब्रता लाहिरी
ए-7 सेंटर सिन्धी रोड
कलकत्ता-700073

80. प्रो. शशि मुदिराज
हिन्दी विभाग
हैदराबाद विश्वविद्यालय
हैदरावाद-500134

81. डा. मुरलीधर कृष्णचंद्र जैतली
डी-127, विवेक विहार
दिल्ली-95

82. श्री विशद प्रकाश गुप्त
सी-132 अशोक विहार
फेज-1, दिल्ली-52

83. डा. सुमन ढींगरा
F-5/26 कृष्ण नगर
दिल्ली-110051

84. डा. रमानाथ त्रिपाठी
21 वैशाली (पीतमपुरा)
दिल्ली-34

85. डा. रुक्मिणी जैन
26/95 शक्तिनगर
दिल्ली-110007

86. श्री शिवकुमार मदान
सी-2/172 जनकपुरी
नई दिल्ली-58

87. श्री चंद्रप्रकाश प्रभाकर
आल इंडिया रेडियो
बर्मी यूनिट, संसद मार्ग
नई दिल्ली-1

88. श्रीमती नरगिस संजीवनी सतपाल स्नेह
114 ब्लॉक-ए, जलवायु विहार
कमाना हाली, बेंकलूर-84

89. श्री राजेश सी. रस्तोगी
माल अपार्टमेंट्स
माल रोड, दिल्ली-54

90. कु. रश्मि गोविन्द
61 वँदना अपार्टमेंट्स
42 पटपडगंज, दिल्ली-92

91. श्रीमती देशवाला बगाइ
ए.सी-53 टैगोर गार्डन
नई दिल्ली-27

92. डा तान्या गुप्ता
रोम विश्वविद्यालय
रोम (इटली)

93. प्रो. ज्यार्नो मिलानेत्ती
रोम विश्वविद्यालय
रोम (इटली)

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

असमिया में रामचरितमानस

चित्र महन्त

रामायण और महाभारत हमारे देश के दो ऐसे महाकाव्य हैं, जिन्होंने सारे भारत को एक सूत्र में बांध दिया है। इस विशाल भारत में शायद ही ऐसा व्यक्ति होगा, जिसका 'रामायण' और 'महाभारत' से परिचय न हो। हां, इन दो महाकाव्यों में से रामायण का महत्त्व इसीलिए बढ़कर है, क्योंकि इसका परिसर विशाल है। यानी इस काव्य की कथा-कहानी और आदर्श भारत तक ही सीमित नहीं है। वास्तव में विश्व भर में राम काव्य का प्रसार है। कुछ देशों में राम काव्य का प्रसार ही नहीं बल्कि इन्डोनेशिया की तरह दक्षिण-पूर्वी एशिया के कई देशों में दैनंदिन जीवन भी रामायणी संस्कृति से सराबोर है। इसका एक कारण यह भी है कि इसमें सत्य, न्याय और लोकमंगल की भावना की प्रतिष्ठा है। रामायण में जीव मात्र के प्रति समभाव है। उसमें समन्वय तथा संहति की वाणी है। वह आदर्श मानव तक पहुंचने का संदेश देती है। हमारे आज के भारत में राम है और रामायण काव्य है किन्तु दक्षिण-पूर्वी एशिया के देशों में इससे बढ़कर रामायणी संस्कृति की भी व्यापकता है। वहाँ रामायण या रामायणी संस्कृति साम्प्रदायिक नहीं है, राष्ट्रीय है। राम राष्ट्रीय वीर हैं और रामायण राष्ट्रीय आदर्श का ग्रंथ है।

दक्षिण पूर्वी, फिर पूर्वी एशिया में रामायण या रामायणी संस्कृति सबसे पहले इन्डोनेशिया, मलय, इन्दोचीन आदि देशों में पहुँची। आगे उसका चीन-जापान, कोरिया आदि देशों में खास तौर पर एक महान काव्य के रूप में रामायण को प्रवेश मिला।

हमारे देश के धर्म तथा संस्कृति के महानायक राम और कृष्ण हैं। कृष्ण का एक लोकप्रिय नायक के रूप में जो स्थान भारतीय मानस में है—वैसा राम का नहीं है। किन्तु कृष्ण खासतौर पर आर्य परिवारों से सम्बन्धित हैं। किन्तु कथा के रूप में या काव्य के रूप में रामायण का जो लोकप्रिय स्थान है वैसा महाभारत को या भागवत को प्राप्त नहीं है। इस दृष्टि से [illegible]तवर्ष में भी रामायण का एक असाम्प्रदायिक रूप है।

प्राचीन कामरूप और आज का असम सदा से विभिन्न आदिवासी लोगों की निवास भूमि है। दलबद्ध रूप से यहां आर्य लोग बहुत देर से आये। ईसा पूर्व में इस अंचल में बहुत कम आर्य आये थे। तथापि चौंकने वाली बात यह है कि इस अंचल के आर्य परिवार की भाषा के अतिरिक्त अन्य आदिवासी बोलियों में भी रामायण की रचना हुई और अपने-अपने अंचल में राम-कथा का व्यापक प्रसार हुआ। इस प्रकार साहित्य के रूप में राम-काव्य का प्रचार यहां सदियों से रहा। ऐसा लगता है कि श्रीमंत शंकरदेव से पहले यहाँ

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

कृष्ण काव्य नहीं के बराबर था। जो महाभारतीय साहित्य रचे गए थे उसमें भी कृष्ण का महत्व बहुत कम रहा। शंकरदेव से पूर्व जो उल्लेखनीय ग्रंथ यहाँ रचे गये वे तो रामकाव्य ही हैं।

चौदहवीं सदी के माधवकन्दली रामायण के अतिरिक्त और कई रामायण रचित हुए जो विभिन्न पात्रों के आधार पर उपाख्यान मूलक है। इस संबंध में असमिया के विद्वान डा. सत्येन्द्रनाथ शर्मा ने कहा—'इन काव्यों की विषय-वस्तु का स्रोत सभी मामलों में वाल्मीकीय रामायण नहीं है। इनका स्रोत जैमिनी-भारत, अद्‌भुत रामायण, आनन्द रामायण और कुछ पौराणिक राम-कथाएँ रही हैं।' माधव कन्दली और हरिहर विप्र से लेकर इस शती के ज्योति प्रसाद आगरवाला के 'ज्योति बाल रामायण' तक चौबीस साहित्यकारों के उनतालीस रामायणी काव्य तथा शंकरदेव से लेकर अब तक रामकथा पर आधारित 66 नाटककारों के लगभग 76 नाटक प्राप्त हुए हैं।

इनके अतिरिक्त इस अंचल के उत्तर-असमिया भाषाओं में भी रामायण काव्यों की रचना हुई जिनमें कार्बी उपभाषा का 'साबिन आलुन' तथा खामति उपभाषा का 'लिकचाओ लामांग' प्रमुख हैं।

भूमिका के रूप में इतना कह चुकने के बाद हम अपने विषय पर आते हैं। हमारे निबन्ध का विषय है असमिया भाषा में रचित या अनूदित उत्तर भारत के सर्वमान्य संत कवि लोकनायक गोस्वामी तुलसी दास कृत रायायण का तथा उनके अनुवादकों का परिचय प्रदान करना।

यहाँ एक बात स्पष्ट कर देना चाहिए कि संस्कृत इतर भाषाओं में से किसी भी भारतीय भाषा में देश के धरोहर स्वरूप महान ग्रन्थों का पारस्परिक अनुवाद कार्य प्रत्यक्ष नहीं हुआ था। हाँ, हिन्दी के सूफी काव्यों को आधार मानकर असमिया तथा अन्यान्य आधुनिक भारतीय भाषाओं में कुछ काव्य अवश्य रचित थे। उनमें केवल मूल कहानी को ही यथावत रखा गया था। हमारे कहने का मतलब यह है कि सभी भारतीय भाषाएं संस्कृत ग्रन्थों को ही अपनी-अपनी प्रांतीय भाषाओं के साहित्य सृजन का आधार मानती थीं। वास्तव में हमारे देश के भावात्मक ऐक्य का भी वही मूल था।

रामचरितमानस के कई अनुवाद असमिया में हुए हैं। उनमें से श्रीकांत सूर्य का अनुवाद उल्लेखनीय इसलिए है कि इन्होंने अठारहवीं सदी में ऐसा एक महान काम हाथ में लिया था। इनके अतिरिक्त (स्व.) कृष्णनाथ शर्मा तथा श्री बापचन्द्र महन्त तथा श्रीमती केशदा महन्त ने इस महान कार्य को पूरा किया था।

उन दिनों यानी सन 1794 ई. में श्रीकांत सूर्य विप्र ने गोस्वामी तुलसीदास कृत 'रामचरितमानस' के अनुवाद का काम सम्पूर्ण किया किन्तु उन्होंने सम्पूर्ण रामायण का अनुवाद का काम किया या नहीं इसका पता नहीं चलता। सन 1921 में लंकाकाण्ड की एक प्रति असम के विशिष्ट कवि (स्व.) हितेश्वर बरबरूवा को प्राप्त हुई। उन्होंने उसकी प्रतिलिपि कराई तथा प्रकाशन हेतु असम साहित्य सभा को दिखाया। सन 1975 में डा. महेश्वर नेओग के सम्पादन में असम साहित्य सभा ने इसे प्रकाशित किया। खेद है कि असम साहित्य सभा ने इस कांड के अतिरिक्त शेषकाण्डों के बारे में खोज नहीं की।

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

सौभाग्यवश व्यक्तिगत खोज के फलस्वरूप उत्तरकाण्ड की एक अनूदित प्रति प्राप्त हुई। इसके बाद पंडितों ने विचारा कि संभवतः श्रीकांत ने पूरे रामचरित मानस का ही अनुवाद किया हो परन्तु अब तक इसकी पुष्टि नहीं हो सकी है।

लंकाकाण्ड के मंगलाचरण से यह पता चलता है कि आहोम के राजा कमलेश्वर सिंह के महामन्त्री पूर्णानन्द सिंह के आदेशानुसार इस ग्रंथ का अनुवाद किया गया था। विद्वानों ने इसका रचनाकाल सन 1794 माना है।

मूल वाल्मीकि रामायण को सभी-प्रांतीय भाषाओं के लेखकों ने तोड़ा-मरोड़ा है। अपने-अपने अंचल के परिवेश, परिस्थिति तथा सस्कृति के अनुकूल परिवर्तन-परिवर्धन किया गया है। मूल वाल्मीकि रामायण में न होते हुए भी किसी ने राम के द्वारा दुर्गा पूजा कराई तो किसी ने शिव या शिवलिंग की पूजा कराई। असम में शंकरदेव ने राम को विष्णु माना। इस प्रकार सभी भारतीय भाषाओं में रामायणों की इस प्रकार की भिन्नताएँ हैं। विदेशी अथवा इतर-आर्य-गोष्ठी द्वारा रचित रामायण की बात और ही है। इतना होते हुए भी रामायण वाल्मीकि रामायण ही हैं—उसमें चाहे कितना ही प्रक्षिप्त अंश जोड़ दें।

अब प्रश्न है कि असमिया कवि श्रीकांत ने भी तुलसी रामायण के अनुवाद के समय क्या इस परम्परा को माना ? मोटे तौर पर ऐसा नहीं ही हुआ— जैसे माधवकन्द जी ने भी नहीं किया था। श्रीकांत के 'मानस' काव्य में तुलसी की कथा को तो परिवर्तित नहीं किया किन्तु कहीं-कहीं अन्य कथाओं का जो रामचरित मानस में नहीं है, संयोजन हुआ है। इन्द्रजीत के वध के बाद रावण के दो पुत्र अहिरावण तथा नरांतक की कहानी इसमें संयोजित हुई जो कि वाल्मीकि या तुलसी किसी की रामायण में नहीं है। अंजना प्रसंग भी तुलसी रामायण से नहीं अपितु किसी अन्य रामायण की उपरामायण से ले लिया जिसमें हनुमान की माता अंजना लक्ष्मण को छोड़ राम-सीता तथा हनुमान को अच्छी तरह फटकारती है।

एक स्थान पर अनुवादक ने तुलसीदास की शील सम्पन्न मर्यादा को क्षत किया है। यहाँ तुलसी ने काग द्वारा सीता का चरणक्षत दिखाया है, वहाँ श्रीकांत ने काग द्वारा स्तन पर क्षत किया दिखाया है।

मूल पाठ इस प्रकार है—

सीता चरन चोंच हति भागा।
मूढ़ मंदमति कारन कागा॥

श्रीकांत ने इसका रूपांतर इस प्रकार किया है—

सुरपति काक रूप धरि आसि।
सीता स्तन क्षत कैला काम अभिलाषि॥

उत्तरकाण्ड के अनुवाद में भी कवि श्रीकांत ने कहीं-कहीं अनेक प्रसंगों को अनावश्यक रूप से संयोजित किया है।

तुलसी रामायण के अनुवाद के सम्बन्ध में डॉ. कृष्ण नारायण प्रसाद 'मागध' का कथन है—'इसने एक अनछुई जमीन गोड़ी है। इसके पूर्व तक मात्र संस्कृत की कृतियाँ ही असमियां में अनूदित होती रही थीं। बेलीक चलने की पहली बार हिम्मत कर श्रीकांत ने

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

सफलतापूर्वक यह संकेत कर दिया कि असमिया साहित्य भण्डार की समृद्धि के लिए न केवल संस्कृत बल्कि आधुनिक भारतीय भाषाओं और वह भी पश्चिमी (हिन्दी) की महत्व-पूर्ण कृतियां अनूदित करने की आवश्यकता है।...इस समय (सन 1796) तक शायद ही किसी आधुनिक भारतीय भाषा में रामचरित मानस का अनुवाद हुआ हो।'

मानस का अनुवादक श्रीकांत सूर्य विप्र का सम्पूर्ण परिचय अब तक प्राप्त नहीं हुआ है। थोड़ा बहुत परिचय विद्वानों का जो प्राप्त हो सका है उसके अनुसार उनके पूर्वज कान्य-कुब्ज के हरिप्रिया गाँव के थे। उस ग्राम के नन्दनाथ पाण्डेय के वंशज दयाशील पंडित सन 1508 ई. में असम आये। उनके जन्म स्थान तथा जन्मतिथि का भी पता नहीं चलता। परन्तु उस समय की राजधानी रंगपुर (शिवसागर) के ही आसपास कहींरही होगी। चूंकि श्रीकांत राजाश्रित कवि थे, इसलिए उनका शिवसागर रहना तो स्वतः साबित होता है। उनके पूर्वज पण्डित तथा ज्योतिष शास्त्र ज्ञाता थे—इसी कारण से राजकीय सम्मान हमेशा प्राप्त करते थे। इसी दृष्टि से भी श्रीकांत का व्यक्तित्व ऊँचा ही रहा होगा—जिसका उदाहरण हमें उनके काव्य से मिलता है।

इन्होंने अपने काव्य 'रामलीला' (उन्होंने अपने इस काव्य में कई जगह इस नाम का उल्लेख किया है) समग्रवादी छन्द पद में अनूदित की है। इसके अतिरिक्त छवि, दूलड़ी, झुमरी तथा झूना छन्द का प्रयोग किया गया है। अनुवाद अत्यन्त सरल तथा प्रभावोत्पादक है। हां, कहीं-कहीं साहित्य गुण की दृष्टि के कुछ पदों में निम्नगामिता का अनुभव होता है। रचना की शैली की दृष्टि से कवि ने असम के वैष्णव कवियों का अनुसरण किया है। प्रारम्भ तथा अन्त दोनों में ऐसा देखा जा सकता है। प्रत्येक अध्याय के अन्त में 'मिनति वचन' के रूप में कवि के दर्शन, भक्ति आदि की झलक मिलती है। यह लेखक का मौलिक चिन्तन होता है। 'लंका कांड' के अन्तिम एक अध्याय 'मिनति वचन' के रूप में ही रचित है—जिसमें श्रीराम की परमब्रह्म के रूप में स्तुति की गई है।

श्रीकांत के रामायण का एक ध्यातव्य विषय यह है कि इसमें सांस्कृतिक छवियों का भाषांतरण अपने स्थानिक परिवेश के अनुकूल किया गया है। एक उदाहरण—

कल्पतरु वृक्षसम नाहिं बिड़म्वन।
दुखी भिक्षी समस्तक करंत पुरण॥

अनुवाद प्रायः शाब्दिक अथवा अत्यन्त स्वाभाविक है। हां, जहाँ तुलसी ने एक ही पद में जो भाव प्रकट किया वहां श्रीकांत ने कहीं-कहीं दो या दो से अधिक पदों की शरण ली—जिससे भाव प्रकरण बिलकुल स्पष्ट और स्वाभाविक हुआ। एक उदाहरण :

तुलसी :

सिंधु वचन सुनि राम सचिव बोलि प्रभु अस कहेउ।
अब बिलंबु केहि काम करहु सेतु उतरै कटकु॥

श्रीकांत :

हेन राम चक्रपाणि सिंधुर बचन शुनि
कहिलंत माति मंत्रीगण।

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

त्रिलम्बत नाहिकाज सेनाक करियो साज
बांधियोक सेतु एतिक्षण ।

तुलसी :

यह लघु जलधि तरन कति बारा । अस सुनि मुनि कह पवन कुमारा ।
प्रभु प्रताप बड़वानल भारी । सोषेउ प्रथम पयोनिधि सारी ।।

श्रीकांत :

जाम्ववन्त वाणी शुनि बोले हनु महामारी
एहि लघु सिंधु कतवर ।
रामर हृदये धरि ओक आमि आछोतरि
नाहि किछु प्रयास आमार ।।
प्रभुर प्रताप बले दुर्धोरि बारवानले
सुहिलंत जल जलधिर ।

अन्त में यह कहना है कि माधवकन्द की रामायण के होते हुए अन्य रामायण के प्रति लोगों का झुकाव स्वभावतः बहुत कम है । फिर एक ही कांड का होना लोकप्रिय होने में एक अन्यतम वाधा है । तथापि यह आज विद्वानों तथा पंडितों ने आदर से ग्रहण किया और असमिया राम साहित्य में यह एक नवीन तथा महत्वपूर्ण संयोजन साबित हुआ है ।

× × ×

प्राचीन ग्रंथों का अनुवाद आधुनिक काल में आधुनिक भाषा में तथा आधुनिक शैली में यहाँ होता रहा है। इस क्षेत्र में गीता के अनुवादक डा. महेन्द्र बरा का प्रयास स्तुत्य है । इसी बीच आधुनिक असमिया गद्य में सम्पूर्ण बाल्मीकीय रामायण का अनुवाद स्व. कवि-चन्द्र महन्त ने किया और छह खण्डों में गुवाहाटी विश्वविद्यालय ने इसे प्रकाशित किया है। यों पन्द्रहवीं-सोलहवीं सदी से ही गद्य में रामायण रचने की परम्परा यहां है । उसी समय रामायण ही नहीं गीता भागवत आदि का अनुवाद भी प्राचीन असमिया गद्य में हुआ था ।

असम के प्रसिद्ध हिन्दी विद्वान श्री बापचन्द्र महन्त तथा उनकी पत्नी श्रीमती केशदा महन्त ने सम्मिलित रूप में तुलसी दास कृत रामचरित मानस का अनुवाद गद्य शैली में किया । श्रीमती महन्त ने बालकाण्ड, अयोध्याकाण्ड और उत्तरकाण्ड का और शेष कांडों का अनुवाद श्री महन्त ने किया । अनुवाद कार्य सर्वदा दूरूह होता है और इसे मौलिक की तरह कर पाना असम्भव-सा होता है। महन्त द्वय ने इसका मुक्त अनुवाद नहीं किया जिसके फलस्वरूप तुलसीदास की आत्मा तो वहां सुरक्षित हुई लेकिन असमिया भाषा की कलात्मकता असुरक्षित रह गई । यह असुरक्षा खासकर श्रीमती महन्त द्वारा अनूदित कांडों में अधिक है । हाँ, इस कमी को अनुवादकों ने ग्रंथ की भूमिका में मान लिया । इसका प्रकाशन असम साहित्य सभा ने किया ।

मानस के अनुवाद का कार्य क्यों हाथ में लिया गया इस सम्बन्ध में अनुवादकों का कथन है कि अंग्रेजी, रूसी, फ्रांसीसी, जर्मनी आदि भाषाओं में अनुवाद हो जाने के पश्चात भी गोस्वामी तुलसीदासकृत रामचरित मानस का सम्पूर्ण अनुवाद असमिया से नहीं हो रहा था । फिर श्रीकांत द्वारा अनूदित रामायण भी सम्पूर्ण नहीं है और स्व. कृष्णनाथ

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

शर्मा द्वारा अनूदित रामायण भी जब अधूरी रह गई तो उस अधूरे काम को पूरा करने की प्रबल इच्छा के फलस्वरूप ही इन्होने यह काम हाथ में लिया।

जैसा कि पहले ही हमने कहा कि इन्होंने रामचरित मानस का शाब्दिक अनुवाद ही किया, ऐसी स्थिति में सांस्कृतिक स्थलों का रूपांतरण में अलग वैशिष्ट्य परिलक्षित नहीं हुआ और इसी के फलस्वरूप अनूदित रामचरित मानस में यत्र-तत्र अव्यवस्थता दिखाई पड़ती है।

श्रीरामचरितमानस के असमिया अनुवादक श्री बापचन्द्र महन्त का थोड़ा परिचय हमने पहले भी दिया। हिन्दी के विद्वान श्री महन्त का जन्म सन 1928 ई० की सात मई को जोरहाट नगर के निकट गोहांइ टेकेला गाँव में हुआ। ये महापुरुष शंकरदेव के प्रमुख शिष्य शतानन्द के वंश में पैदा हुए। इनका पालन-पोषण एक वैष्णवी परिवेश में हुआ। इनका साहित्य , धर्म-संस्कृति तथा राष्ट्रीयता को लेकर है। हिन्दी भाषा में लिखित सामाजिक पट भूमि सहित अनम के बरगीत नामक ग्रंथ हिन्दी साहित्य में श्री महन्त का एक महती अवदान है।

श्रीरामचरितमानस की अन्यतम अनुवादिका श्रीमती केशदा महन्त असम के अन्यतम प्राचीन व उच्च शिक्षा संस्थान जगन्नाथ बसवा महाविद्यालय के असमिया विभाग की प्राध्यापिका है। इनका जन्म स्थान जोरहाट नगर है और पिता प्रसिद्ध स्वतन्त्रता संग्रामी स्व. मोहन चन्द्र महन्त जी, असमिया साहित्य के प्रयास से विजय श्रीमती महन्त ने अपने पति के साथ मिलकर और अकेले अनेक ग्रंथों की रचना की। उनमें से गोस्वामी तुलसीदास आस 'रामचरित मानस' एक उल्लेखनीय ग्रंथ है। इन्होंने श्रीरामचरित मानस के प्रथम तीन कांडों का अनुवाद किया है जिसके बारे में पहले ही कहा जा चुका है।

अन्ततः हमें यह स्पष्ट रूप से कहना चाहिए कि गोस्वामी तुलसीदास कृत राम-चरित मानस का अनुवाद ने केवल असमिया भाषा को ही सम्पन्न नहीं किया एक श्रेष्ठ ग्रंथ का रसास्वादन करने का सौभाग्य भी असमिया पाठकों को प्राप्त हुआ।

स्व० कृष्णनाथ शर्मा ने भी एक प्रयास किया था। उस समय ये स्वतंत्रता सेनानी तथा प्रसिद्ध समाज सेवक जोरहाट कारागार में बन्द थे। उस समय असम के श्रेष्ठ नेता लोकप्रिय गोपीनाथ बरदलै भी उसी कारागार में थे। उन्हीं की प्रेरणा से देशप्राण कृष्ण-नाथ शर्मा ने गोस्वामी तुलसीदासकृत रामचरित मानस के अनुवाद का काम हाथ में लिया था। अपने कारावास के दौरान ही स्व. शर्मा ने अनुवाद का काम सम्पूर्ण किया था। दुर्भाग्यवश आज उस रामायण की सम्पूर्ण प्रति नहीं मिल रही है—जो है उसमें भी जगह-जगह कुछ अंश नष्ट हुए हैं।

शर्मा जी का जन्म जोरहाट नगर में सन 1887 में हुआ था और सन 1946 में उनका देहावसान हुआ।

इनके अतिरिक्त श्रीचित्त महन्त ने बालकाण्ड का तथा श्री देवेन दास ने बालकाण्ड के कियदेश का अनुवाद किया था—जो मासिक पत्रिका में प्रकाशित भी ही चुका है।

□

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

अयोध्याकाण्ड का अनुवाद : अदालत खाँ

डॉ. शिवनारायण खन्ना

ईस्ट इंडिया कम्पनी ने शासन की बागडोर सँभालने के साथ-साथ महसूस किया कि किसी देश पर शासन करने के लिए वहां की भाषा जानना आवश्यक है। हिन्दी भारत में सर्वाधिक प्रचलित भाषा थी, अतएव सरकारी कामकाज की शिक्षा के पाठ्यक्रम में हिन्दी को सम्मिलित किया गया। हिन्दी के पठन-पाठन के लिए पुस्तकें तैयार की जाने लगीं। उन दिनों 'रामचरित-मानस' हिन्दी का अत्यधिक लोकप्रिय ग्रंथ था। अतएव **'रामचरित-मानस'** के अंश सरकारी अधिकारियों की पाठ्य पुस्तकों में सम्मिलित किए गए। प्रारम्भ में 'सुन्दरकाण्ड' का समावेश हुआ और बाद में क्रमशः अन्य काण्डों का। सरकारी नौक-रियों के उच्च पदों पर उन दिनों प्राय: विदेशी ही नियुक्त किए जाते थे। इन विदेशियों को गद्य-पद्य संग्रह में **'रामचरितमानस'** के काण्ड भी पढ़ने पड़ते थे। मानस की भाषा अवधी तथा भारतीय जनमानस एवं परम्परा से अनभिज्ञ होने के कारण इन विदेशियों और विशेष-कर अंग्रेज़ों को **'रामचरितमानस'** के इन अंशों को समझने में कठिनाई होना स्वाभाविक था।

सरकारी शिक्षा का केन्द्र कलकत्ते का फोर्ट विलियम कालेज था। इस कालेज में कार्यरत अदालत खाँ ने विदेशियों की इस कठिनाई को महसूस कर उसे दूर करने का निश्चय किया। कालेज में वह हिन्दी, हिन्दुस्तानी तथा फारसी के अध्यापन के लिए मुन्शी के पद पर कार्य करते थे। हिन्दी गद्य-पद्य संग्रह की पाठ्य-पुस्तक में उन दिनों **'रामचरित-मानस'** का अयोध्याकाण्ड सम्मिलित था। अतएव अदालत खाँ ने अयोध्याकाण्ड को अंग्रेज़ी में रूपान्तरित करने का निर्णय लिया। अनुवादक ने बड़ी लगन और परिश्रम से दोहा, चौपाई तथा सोरठा आदि का क्रमश: संख्यानुसार अनुवाद करना प्रारम्भ कर दिया। अंग्रेज़ी गद्य में किया गया यह अनुवाद 1871 में पूरा हुआ। इसी वर्ष यह ग्रंथ **'ट्रांसलेशन ऑफ द सेकेण्ड बुक ऑफ रामायन फ्राम द हिन्दी ऑफ तुलसीदास इनटू लिटरल इंगलिश विद कोपिअस एकस्प्लेनेटरी नोट्स एण्ड एल्यूशन्स'** शीर्षक से बापटिस्ट मिशन प्रेस में छपा।

अदालत खाँ कृत अयोध्याकाण्ड का अनुवाद 'रामचरितमानस' के किसी काण्ड का प्रथम अंग्रेज़ी अनुवाद है। इस अनुवाद के पूर्व फ्रांसीसी विद्वान गार्सी द तासी ने 'सुन्दरकाण्ड' का फ्रेन्च भाषा में रूपान्तर किया था। तासी ने फ्रेन्च भाषा में हिन्दी साहित्य का सर्व-प्रथम इतिहास **'इस्तवार द ल लित्रेत्यूर ऐंदुई ए ऐंदुस्तानी'** दो भागों में प्रस्तुत किया। प्रथम

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

भाग 1839 ई० तथा द्वितीय 1847 ई० में छपा। इस द्वितीय भाग में 'सुन्दर काण्ड' का फ्रांसीसी भाषा में गद्यानुवाद है। अतएव अदालत खाँ कृत अनुवाद किसी भी विदेशी भाषा में 'अयोध्याकाण्ड' का प्रथम अनुवाद है। प्रथम अंग्रेज़ी अनुवाद होने पर भी अनुवादक को गोस्वामी तुलसीदास का दृष्टिकोण तथा विचारधारा स्पष्ट करने में पर्याप्त सफलता मिली। अदालत खाँ के समक्ष कोई मार्गदर्शक न था, अतएव उन्हें स्वयं अपना मार्ग प्रशस्त करना पड़ा।

अदालत खाँ को उर्दू, फारसी, हिन्दी तथा अंग्रेज़ी भाषाओं का समुचित ज्ञान था। फोर्ट विलियम कालेज में अध्यापन करते हुए वे बोर्ड आफ एक्जामिनेशन्स कार्यालय का कार्य भी देखते थे। इस अवधि में उन्होंने अयोध्याकाण्ड के अतिरिक्त हिन्दी से प्रेमसागर तथा बैताल पच्चीसी और फारसी तथा उर्दू से बागोबहार (1881) एवं गुलिस्ताँ (1883) आदि के कुछ अंशों के अंग्रेज़ी अनुवाद भी किए थे। बाद में हुए 'रामचरितमानस' के अन्य अंग्रेज़ी तथा दूसरी भाषाओं के अनुवादों पर अदालत खाँ कृत अयोध्याकांड के अंग्रेजी अनुवाद का स्पष्ट प्रभाव है।

यह एक विचित्र संयोग है कि 'रामचरितमानस' के प्रथम अंग्रेज़ी अनुवाद का श्रेय एक मुस्लिम साहित्यकार को है। यह तथ्य भी महत्वपूर्ण है कि यह अंग्रेज़ी अनुवाद फोर्ट विलियम कालेज में विदेशियों को हिन्दी भाषा की शिक्षा देने तथा उन्हें भारतीय आचार-विचार से परिचित कराने के उद्देश्य से हुआ। अदालत खाँ निःसंदेह इस भगीरथ प्रयास के लिए सदैव स्मरणीय रहेंगे।

अनुवादित ग्रंथ 21 सेन्टीमीटर लम्बा तथा 13.5 सेन्टीमीटर चौड़ा है। प्रारम्भिक 4 पृष्ठों की प्रस्तावना के अतिरिक्त पुस्तक में 244 पृष्ठ हैं। प्रत्येक दोहे की संख्या के साथ उसका अनुवाद सहज अंग्रेज़ी में प्रस्तुत है। दोहे के पश्चात चौपाइयों की दो-दो पंक्तियों का क्रमशः अनुवाद है। पाद टिप्पणी में कठिन शब्द नागरी लिपि में अंकित हैं तथा उनके अर्थ का उल्लेख भी है।

15 जुलाई, 1871 को अदालत खाँ ने इस ग्रंथ की प्रस्तावना लिखी। प्रस्तावना की प्रथम पंक्ति में ही अनुवादक ने घोषित किया—रामायण इस देशवासियों के पढ़ने का सचमुच एक बहुत ही आनन्दप्रद ग्रंथ है। रामायण से यहाँ अनुवादक का आशय 'रामचरितमानस' से है। अदालत खाँ ने यह भी स्वीकारा कि प्रायः जीवन के आचार-विचार तथा रीति-रिवाज से अनभ्यस्त एक विदेशी के लिए कवि के मधुर पदों और उसके मानवीय संवेदनाओं को समझना सहज नहीं। इस कठिनाई को दूर करने के लिए अदालत खाँ ने प्रस्तावना में सम्पूर्ण मानस की कथा को अंग्रेज़ी भाषा के माध्यम से अति संक्षिप्त रूप में प्रस्तुत किया।

अदालत खाँ लिखित प्रस्तावना का हिन्दी रूपान्तरण इस प्रकार है :

'रामायण' इस देशवासियों के पढ़ने की सचमुच एक बहुत ही आनन्दप्रद पुस्तक है, किन्तु विदेशियों के लिए बहुत कठिन। प्राच्य जीवन के आचार-विचार और रीति-रिवाज से अनभ्यस्त एक विदेशी उसमें नाटकीय छद्मता के माध्यम से अभिव्यक्त शिष्टाचार के विभिन्न रूपों से विरक्त होकर कवि के मधुर पदों और उसकी मानवीय संवेदनाओं को

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

फूहड़, विषम और बचकाना समझता है। इस कठिनाई को दूर करने के लिए मैंने इसके पदों का सरल और स्पष्ट अंग्रेज़ी में अनुवाद किया, बहुत से ऐतिहासिक संदर्भ सम्मिलित किए, अनेक भाषा शास्त्रीय अनियमितताओं को दूर किया और साथ ही पदों को उनके स्वाभाविक क्रमों में प्रस्थापित किया ताकि भाव अधिक प्रांजल हो सके।

चूंकि सरकार द्वारा अनुमोदित हिन्दी में उच्च प्रवीणता परीक्षा के लिए अध्ययनार्थं पाठ्यक्रम रामायण के मध्य से चयन किया गया है, इसीलिए उस भाग के पाठक के लिए समस्त कहानी का सारांश जानना सुविधाजनक होगा। देवताओं को बहुत सताने वाले लंका के राजा रावण का विनाश करने के लिए विष्णु ने चार विभिन्न रूपों में अयोध्या के राजा दशरथ के घर अवतार लिया। राजा दशरथ की कई रानियाँ थीं, जिनमें कौशल्या, कैकेयी और सुमित्रा राजा की अधिक अनुग्रही थीं। कौशल्या राम की माता बनीं, भरत कैकेयी के पुत्र थे, और लक्ष्मण एवं शत्रुघ्न की जननी सुमित्रा थीं। ये चारों भाई एक दूसरे के साथ बड़े प्रिय और परस्पर बड़े सामंजस्य तथा बन्धुत्व भाव से रहते थे, किन्तु लक्ष्मण को राम के प्रति और शत्रुघ्न को भरत के प्रति अधिक लगाव था। सयाने होने पर राजा ने उन्हें विवाह के लिए राजी किया। इस प्रकार राम का विवाह मिथिला अर्थात आधुनिक तिरहुत के राजा जनक की पुत्री सीता से और लक्ष्मण का सीता की भगिनी उर्मिला से हुआ। राजा जनक के भाई कुशा-द्वज की पुत्री मांडवी से भरत का विवाह एवं मांडवी की छोटी बहन श्रुतकीर्ति से शत्रुघ्न का पाणिग्रहण सम्पन्न हुआ। इस बीच राजा दशरथ वृद्ध होने के कारण राज-कार्य सँभालने में अपने को असमर्थ अनुभव करने लगे। उन्होंने अपने दरबारियों और प्रजा की सहमति से अपने बड़े पुत्र राम को राजा बनाकर स्वयं राजगद्दी छोड़ने का निश्चय किया। किन्तु कैकेयी की दासी कुबड़ी कुब्जा के कपटयोग ने राजा की इस शुभेच्छा पर तुषारापात कर दिया। इस औरत ने अपनी धूर्तता से रानी कैकेयी के सरल हृदय पर अपना प्रभाव अंकित कर उसे उकसाया कि वह राम को वन भेजने और अपने पुत्र भरत को गद्दी पर प्रतिष्ठित करने के लिये राजा को बाध्य करे। राजा के समक्ष इस निर्मम प्रस्ताव को मानने के अतिरिक्त अन्य कोई विकल्प न था क्योंकि पहले कभी महान विपत्ति में कैकेयी ने राजा की बड़ी सहायता की थी। राम को आदेश हुआ कि वह 14 वर्ष वन में रहें और भरत अपने पिता का उत्तराधिकारी बने। राजा दशरथ अपने प्रिय पुत्र राम के वियोग को सहन न कर सके और शीघ्र ही चल बसे। शत्रुघ्न ने कुब्जा को उसके दुष्कर्मों के लिए दंडित किया, और सम्पूर्ण अयोध्यावासी गुरु वशिष्ठ तथा भरत के साथ राम को वापस बुलाने गए। वन में राम को विभिन्न प्रकार से प्रबोधित किया गया कि वे रिक्त राजगद्दी को सँभालें, परन्तु सहृदय राम ने अपनी मधुर वाणी से सभी को मना लिया तथा भरत को आदेश दिया कि वह उनकी अनुपस्थिति की अवधि में राज्य का संचालन करें।

राम जब अपनी पत्नी और भ्राता के साथ पंचवटी में रह रहे थे, रावण की बहन सूर्पणखा ने उनके रूप पर मोहित हो उनसे एकान्त सहवास की कामना की, किन्तु राम ने इसे अस्वीकार कर दिया। लक्ष्मण से निवेदन करने पर उसे उनके हाथों दंडित होना पड़ा। उसकी नाक और कान काट दिए गए और वह अपमानित कर वापस चली गई। रावण ने जब अपनी बहन की दयनीय दशा देखी, तो उसके अपमान का बदला लेने का निर्णय

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

किया और एक दिन वेश बदलकर भिखारी के रूप में सीता की झोपड़ी के समक्ष उपस्थित हुआ [उस समय राम और लक्ष्मण शिकार खेलने बाहर गए हुए थे] तथा सीता को लेकर भाग गया। इस परिस्थिति ने राम को लंका के राजा रावण का नाश करने के लिए प्रेरित किया। वानरों की सहायता से राम ने समुद्र पर सेतु का निर्माण किया, जो द्वीप को मुख्य भाग से अलग करता था। इस प्रकार राम समुद्र पार कर लंका पहुँचे और अपहरणकर्त्ता की राजधानी पर कब्जा करना चाहा। भीषण युद्ध हुआ जिसमें रावण राम के हाथों मारा गया और उसका छोटा भाई विभीषण राम द्वारा लंका की राजगद्दी पर पदासीन किया गया। राम ने सीता की पवित्रता को दिव्य परीक्षा अग्नि के माध्यम से परखा, सीता क्षति-हीन बाहर आयीं। राम सीता के साथ अयोध्या आये और शांति एवं चैन से अपने राज्य का शासन करने लगे। तुलसीदास द्वारा वर्णित उनकी रामायण में राम के इतिहास की यही स्थूल रूपरेखा है।

यह एक निर्विवाद तथ्य है कि तुलसीदास कवित्व की शक्तिशाली प्रतिभा से सम्पन्न थे। उनकी उद्दात संकल्पना, शुद्ध शैली और शब्दचयन-शक्ति विश्व मान्य है। हिन्दी काव्य में जीवन के वास्तविक चित्रण एवं घरेलू आचार-विचार के निरूपण में उनके प्रति-स्पर्धी बहुत कम हैं। उनकी पदयोजना सुमधुर, सुरीली, पुरुषोचित तथा भावपूर्ण नवीन उपमाओं से युक्त अत्यन्त उत्कृष्ट है एवं उनका नीतिविवेचन सचमुच ही दार्शनिक, युक्ति-युक्त तथा आदर्श हैं।'

अनुवादित ग्रंथ के प्रथम पृष्ठ का शीर्षक है: '**द अयोध्याकाण्ड आर दैट पार्ट आफ द रामायण विच ट्रीट्स ऑफ राम्स गोंइंग टू द फारेस्ट**।' इस अनुवाद का उद्देश्य विदेशियों को हिन्दी सिखाने के साथ-साथ उन्हें भारतीय आचार-परम्परा आदि से अवगत कराना भी था अतएव अनुवादक ने प्रारम्भ में दिये संस्कृत श्लोक छोड़ दिए हैं। 'अयोध्याकाण्ड' के प्रथम दोहे में उल्लेख है कि श्री गुरु के चरण कमलों की रज से अपने मन रूपी दर्पण को साफ करने में श्री रघुनाथजी के उस निर्मल यश का वर्णन करता हूँ जो चारों फलों को देने वाला है—

श्री गुरु चरन सरोज रज, निजमनु मुकुरु सुधारि।
बरनऊँ रघुवर विमल जसु, जो दायकु फल चारि॥

उपर्युक्त दोहे का अदालत खाँ द्वारा प्रस्तुत अंग्रेज़ी रूपान्तर देखिए—

By the dust of the lotus feet of my saintly spiritual tutor having brightened the mirror of my mind, I describe the unsullied fame of Ram, the giver of four fruits.

पाद टिप्पणी में 'रघुवर' तथा 'फोर फ्रूट्स' (फलचारि) को अनुवादक ने स्पष्ट किया। चारों फल अर्थात धर्म, अर्थ, काम एवं मोक्ष का सही उल्लेख है। इसी प्रकार अयोध्याकाण्ड में चौपाई की प्रथम पंक्तियां हैं—

जब तें रामु ब्याहि घर आए।
नित नव मंगल मोद बधाए॥

इन पंक्तियों को अनुवादक ने कितने सहज रूप में प्रस्तुत किया है—

When Ram after his marriage returned home, there were every day fresh rejoicings and festivities.

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

अनुवादक ने अन्य स्थल पर एक दोहे को इन शब्दों में रूपान्तरित किया है—

O king, your name and fame fulfill all objects; and the desires of your mind, O gem of kings, are the attendants on (good) results.

मूल दोहा इस प्रकार है—

राजन राउर नामु जसु सब अभिमत दातार।
फल अनुगामी महिप मनि मन अभिलाषु तुम्हार।।

अदालत खाँ द्वारा प्रस्तुत अंग्रेजी का हिन्दी रूपान्तर है—हे राजन्! आपका नाम और यश ही सम्पूर्ण मनचाही वस्तुओं को देने वाला है। हे राजाओं में श्रेष्ठ आपके मन की अभिलाषा फल का अनुभव करती है। तुलसीदास कृत चौपाई तथा अदालत खाँ की अंग्रेजी में पूर्णतः एक ही भाव व्यक्त हैं।

कोप भवन में कैकेयी राजा दशरथ से कहती हैं, आप माँग-माँग तो कहा करते हैं, पर देते लेते कुछ भी नहीं, आपने दो वरदान देने को कहा था, उनके मिलने में भी सन्देह है :

मांगु-मांगु पै कहहु पिय कबहुँ न देहु न लेहु।
देन कहेहु बरदान दुइ तेउ पावत संदेहु।।

अब इन्हीं विचारों को अनुवादक के शब्दों में देखिए। भाषा भेद के अतिरिक्त कहीं कोई परिवर्तन नहीं :

Although you request me, dear to ask for something, yet you have never given me any thing. You have promised to grant me two boons, but even in getting them there is doubt.

यहाँ यह उल्लेखनीय है कि अनुवादक ने यह टिप्पणी भी दी है—"यहाँ लेहु का कोई अर्थ नहीं।"

वनगमन के पूर्व लक्ष्मण जी अपनी माँ सुमित्रा के पास उनकी अनुमति लेने जाते हैं। गोस्वामी तुलसीदास के शब्दों में सुमित्रा के आशीवर्चन इस प्रकार हैं :—

उपदेसु यहु-जेहिं तात तुम्हरे राम सिय सुख पावहीं।
पितु मातु प्रिय परिवार पुर सुख सुरति बन बिसरावहीं।।
तुलसी प्रभुहि सिख देइ आयसु दीन्ह पुनि आसिष दई।
रति होउ अविरल अमल सिय रघुबीर पद नित नित नई।।

अदालत खाँ ने उपर्युक्त भाव को इन शब्दों में व्यक्त किया—

This is my advice, O Son that Ram and Seeta may derive happiness from you, and forget in the forest the collection of the pleasure of seeing his parents, dear family and the city.

Tulsi says she gave her son advice and instruction, and repeated her blessing (saying), 'May your love for the feet of Seeta and Ram never cease, but remain pure and be renewed daily.'

रामचरितमानस के इतने अनुसंधान तथा अध्ययन होने पर भी अदालत खाँ द्वारा व्यक्त अर्थ तथा अंग्रेजी शब्दचयन में अपना विशिष्ट महत्व रखता है।

अयोध्या त्याग वन की ओर जाते हुए मार्ग में तीर्थराज प्रयाग पड़ता है। प्रयागराज

 में 'रामचरित-मानस' में तुलसीदास ने कहा—

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

को कहि सकइ प्रयाग प्रभाऊ।
कलुष पुंज कुंजर मृगराऊ॥
अस तीरथपति देखि सुहावा।
सुख सागर रघुबर सुख पावा॥

तीर्थराज प्रयाग का अदालत खाँ द्वारा अनुवादित अंग्रेजी विवरण भी प्रस्तुत है—

Who can describe the power of Allahabad. It is the lion for the elephant of the collection of sins.

Having seen such a handsome chief of the places of pilgrimage, Ram the ocean of happiness derived pleasure.

अयोध्या काण्ड में एक स्थल पर 'जनकौरा' शब्द प्रयुक्त हुआ है। इस प्रयोग के सम्बन्ध में अनुवादक की टिप्पणी उल्लेखनीय है—'जनकौरा' means जनक की ओर के i. e. those belonging to Janak This word has been coined by the poet to suit the verse.

अदालत खाँ अपने अनुवाद कार्य में सदैव सजग रहे। एक स्थल पर मूल अवधी में प्रश्नवाचक पंक्ति का नकारात्मक प्रयोग है—'नामु सत्य अस लाग न केहू।' अनुवादक ने अंग्रेजी में 'That his name was significant (of his character) appeared to every body' कहकर ही संतोष नहीं किया वरन् पाद टिप्पणी में यह भी कहा 'interrogative has been struck out to suit the English.'

'पुरजन परिजन प्रजा गोसाइँ' पंक्ति को पाद टिप्पणी में अनुवादक ने 'परिजन' को स्पष्ट करते हुए लिखा—परिजन तथा परिवार समानार्थी हैं।

राम के वियोग में दशरथ विलाप करते हैं और वह रात्रि एक युग के समान समाप्त ही नहीं होती—

बिलपत राउ बिकल बहु भाँती।
भइ जुग सरिस सिराति न राती॥

टिप्पणी में अदालत खाँ ने हिन्दुओं की मान्यता के अनुसार चारों युगों का उल्लेख करते हुए बताया—सतयुग अर्थात स्वर्णयुग 17,28,000 वर्षों का, त्रेता अर्थात रजत युग 12,96,000 वर्षों का, द्वापर अर्थात कांस्य युग 8,64,000 वर्षों का तथा कलियुग अर्थात लौहयुग 4,35,101 वर्षों तक माना जाता है।

भरत के अयोध्या लौटने पर और उन्हें रोते-बिलखते देख गुरु वशिष्ठ दुखी मन से भरत को सांत्वना देते हुए कहते हैं—

सुनहु भरत भावी प्रबल बिलखि कहेउ मुनिनाथ।
हानि लाभु जीवनु मरनु जसु अपजसु विधि हाथ॥

अदालत खाँ द्वारा प्रस्तुत इस दोहे के अंग्रेजी रूपान्तर का अवलोकन करें—

The sage being sad said 'Listen, O, Bharat, fate is powerful, since loss and profit, life and death, fame and disgrace, are in the hands of providence.

अलंकारों की दृष्टि से निम्नलिखित दोहा महत्वपूर्ण है जिसमें तुलसीदास कहते हैं कि प्रेम अमृत है, विरह मन्दराचल पर्वत है, भरत जी गहरे समुद्र हैं। कृपा सागर श्री

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

रामचन्द्र जी ने देवता एवं साधुओं के हित के लिए स्वयं (इस भरत रूपी गहरे समुद्र को अपने विरह रूपी मन्दराचल से) मथकर यह प्रेम रूपी अमृत प्रकट किया—

पेम अमिअ मंदरु बिरहु भरतु पयोधि गँभीर।
मथि प्रगटेउ सुर साधु हित कृपासिंधु रघुबीर।।

उपर्युक्त पंक्तियाँ अदालत खाँ के शब्दों में प्रस्तुत हैं—

In the deep ocean of Bharat by the Mander of separation, Ram the sea of mercy, churned and brought forth the nectar of love for the sake of gods and pious men.

अदालत खाँ ने उपर्युक्त अंग्रेजी रूपान्तर के पश्चात टिप्पणी में कहा—

This couplet is put very intricately. Its natural order ought to be thus—

भरत के गम्भीर पयोधि में विरह मन्दर से प्रेम अमिय को सुर और साधु के हित कृपा सिंधु रघुवीर ने मथकर प्रगट किया।

अदालत खाँ ने पाद टिप्पणी में पुन: अपने विचार रखे—

This beautiful simile is borrowed from the well known history of churning of the ocean in the Mahabharat, by the order of Vishnu the gods and demons churned the ocean with the mountain Mander. This joint efforts were crowned with the produce of several verities among which were the moon, the elephant Airabat, the horse Uchchai-Shraba, the flower tree Parijat, the nectar for the gods, and many other precious stones.

उपर्युक्त दोहे के अनुवाद में अदालत खाँ को कितना अधिक परिश्रम करना पड़ा होगा। टिप्पणी से यह भी विदित होता है कि अदालत खाँ को महाभारत का भी विशद ज्ञान था।]

अयोध्याकाण्ड का अन्तिम छन्द है—

सियराम प्रेम पियूष पूरन होत जनमु न भरत को।
मुनि मन अगम जम नियम सम दम विषम व्रत आचरत को।।
दुख दाह दारिद दंभ दूषन सुजस मिस अपहरत को।
कलिकाल तुलसी से सठन्हि हठि राम सनमुख करत को।।

उपर्युक्त छन्दों को अनुवादक ने इस प्रकार स्पष्ट किया—

If the birth of Bharat had not been filled with the nector of the love of Seeta and Ram, then who would have performed the curbing of the outward passions, the regulating, pacifying, and the restraining of inward ones, and the most austere penances, which are inaccessible to the minds of devotees ?

And who would have removed the pain, burning, poverty, hypocrisy, sins, and the pretence to a good fame, and who would have brought the cunning Tulsi, against his will before the mind of Ram in this iron age. ?

कितना उपयुक्त अनुवाद बन पड़ा है। 'कलिकाल' को 'आइरन एज' कह कर अनु-

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

वादक ने मूल रचनाकार की बात उसी रूप में विदेशियों तक पहुँचाई। अयोध्याकाण्ड के अन्त में एक सोरठा है—

भरत चरित करि नेम तुलसी जो सादर सुनहिं।
सीय राम पद पेमु अवसि होइ भव रस बिरति ॥

अब अदालत खाँ द्वारा प्रस्तुत अंग्रेजी रूपान्तर भी देखिए—

Having made the character of Bharat the (object of one's) now, whatever Tulsi says, and people hear it with respect, then love for the feet of Seeta and Ram and estrangement from the pleasures of the world, must certainly be gained.

उपर्युक्त उदाहरणों से स्पष्ट होता है कि अदालत खाँ का अवधी और अंग्रेजी दोनों भाषाओं पर समान अधिकार था। अनुवादक ने 'मानस' को बहुत गहरे पैठ समझने का प्रयास किया तथा यथासंभव उसी रूप में विदेशी भाषा में प्रस्तुत किया। अन्तर कथाओं को स्पष्ट करने के लिये अदालत खाँ को काफी प्रयास करना पड़ा। अनुवाद में उन्होंने अनेक ऐतिहासिक संदर्भ सम्मिलित किए। पाद टिप्पणी में अप्रचलित शब्दों की व्याख्या की तथा छन्द बन्धन के कारण तोड़े-मरोड़े शब्दों के मूलरूप भी प्रस्तुत किए। अदालत खाँ ने मानसकार के काव्य कौशल, साहित्यिक सौन्दर्य, दार्शनिक विचारधारा तथा भक्ति भावना की यथेष्ट प्रशंसा की। अदालत खाँ कृत अनुवाद के गहन अध्ययन से प्रमाणित होता है कि मुसलमान होने पर भी अदालत खाँ को प्राचीन भारतीय परम्परा, रीति-रिवाज, रहन-सहन, मान्यताओं तथा लोक-श्रुतियों का पर्याप्त ज्ञान था। उन्होंने हिन्दुओं की मान्यताओं तथा विश्वासों को यथावत् समादर-सहित प्रतिष्ठित किया। अनुवाद से कहीं भी ऐसा प्रतीत नहीं होता कि किसी अन्य धर्मावलम्बी ने अयोध्याकाण्ड का यह अंग्रेजी रूपान्तर प्रस्तुत किया। धन्य है अदालत खाँ तथा ऐसे अन्य मुस्लिम साहित्यकार।

□

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

'श्रीरामचरितमानस' के अंग्रेजी अनुवाद और एटकिन्स का योगदान

डॉ. अवनिजेश अवस्थी

'मानस' का सर्वप्रथम अंग्रेजी अनुवाद मुंशी अदालत खाँ ने किया था जो फोर्ट विलियम कॉलेज, कलकत्ता द्वारा सन् 1871 में प्रकाशित हुआ। यह गद्यानुवाद था। उसके बाद सन 1883 में 'श्री एफ. एस. ग्राउज़ ने मानस का अनुवाद प्रस्तुत किया। यह भी गद्यानुवाद था। ग्राउज़ अदालत खाँ के अनुवाद से बहुत संतुष्ट न थे जैसा कि उन्होंने भूमिका में स्पष्ट किया भी है। वह लिखते हैं :—

At the outset I was under the impression that as a tranlator there was on one at all in the field before me; but after making some little prograss in the second book I discovered but there was already in existence for that particular section of the poem an English version, published in 1871, by Adalat Khan, a mohemmadan Munshi of the college and the Fort William in Calcutta. I at once procured a copy of it, and it is only proper to acknowledge that it was of considerable assistance to me. It does not, however encroach very largely upon the ground that I had intended to occupy. The munshi appears to have written solely with a view to lighten the labours of his own pupil and of others who like them were preparing for a special examination. And despite not a few misapprehensions of the sense such persons will probably find it quite as useful for their purpose as my translation, if not more so. But in the attempt to secure literal accuracy, and also no doubt from the fact that English was not his mothertongue of the translator, language employed is throghout so curiously unidiomatic that in many places it is absolutely unintelligible w!thout a rcference to the original and this the general reader would not be in a position to make.

ग्राउज़ के लगभग 75 वर्षों के पश्चात् श्री डगलस पी. हिल ने 'मानस' का अंग्रेज़ी में गद्यानुवाद ही प्रस्तुत किया। श्री हिल ने भूमिका में स्पष्ट किया है कि उनके अनुवाद की आवश्यकता को मुख्यतः इस संदर्भ में देखना चाहिए कि ग्राउज़ के पश्चात इन 75 वर्षों में पर्याप्त नई जानकारियाँ आई हैं और 'मानस' का पर्याप्त प्रामाणिक पाठ भी तैयार हुआ है, साथ ही वे ग्राउज़ के अनुवाद से पूर्णतया संतुष्ट नहीं दीखते। इसी समय ए.जी. एटकिन्स ने

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

अंग्रेज़ी का पद्यानुवाद प्रस्तुत किया जो हिन्दुस्तान टाइम्स प्रेस ने 1954 में प्रकाशित किया। श्री एटकिन्स अपने अनुवाद की भूमिका में लिखते हैं:—

When I began to study the Ramayana. I found great help in understanding and interpreting passages from the prose version of F.S. Growse, first published more than seventy five years ago. But it was evident that Growse did no more than give, very prosily, the meaning of the passages and did not at all represent the literary quality and music of Tulsidas.

इसके लगभग पैंतीस वर्षों के बाद सन् 1988 में प्रो. आर. सी. प्रसाद का अंग्रेज़ी गद्यानुवाद प्रकाश में आया। श्री प्रसाद ने इसमें 'लवकुशकाण्ड' और 'हनुमान चालीसा' भी जोड़ दिया है, जिसका उन्होंने भूमिका में कोई कारण नहीं बताया है। ध्यान देने की बात है कि वर्षों के अनुसंधान के पश्चात् मानस का जो पाठ तैयार हुआ है उसमें लवकुश काण्ड नहीं है। इसके अतिरिक्त श्री एस.पी. बहादुर ने तुलसी की सभी कृतियों का 'कम्पलीट वर्क्स ऑफ तुलसीदास' के नाम से अंग्रेज़ी अनुवाद किया है। श्री सी. एल. ढोडी ने भी मानस का अंग्रेज़ी अनुवाद किया है। गीता प्रेस, गोरखपुर द्वारा मासिक अंग्रेज़ी पत्रिका 'कल्पतरु' में प्रकाशित मानस का अंग्रेज़ी गद्यानुवाद भी अब मूल पाठ के साथ पुस्तकाकार रूप में आ गया है।

उपरोक्त सभी अनुवादों में श्री एटकिन्स का पद्यानुवाद विशेष रूप से उल्लेखनीय है, केवल पद्य में अनुवाद होने के कारण ही नहीं बल्कि इसलिए कि श्री एटकिन्स की तुलसी एवं 'मानस' के प्रति अपार श्रद्धा ने उनके परिश्रम को एक विशेष आयाम प्रदान किया है—

> and since the rhythm and rhyme had to be carefully thought out, it meant that much more time had to be spent over a passage than otherwise—ofter one couplet taking an hour of thinking. Ten years have thus been spent at the work, but I have enjoyed it.

तुलसी के 'मानस' में चार वक्ताओं में से सर्वप्रथम स्वयं भगवान शिव हैं, अतः 'मानस' में शिव वक्ता तो हैं ही, साथ ही शिव-पार्वती कथा भी उसमें आ गई है। पार्वती के मन में भगवान राम के ब्रह्मत्व के प्रति कुछ सन्देह है। तुलसी ने इस अवसर पर केवल एक छंद में राम के ब्रह्मत्व और उनके अवतार हेतु को अत्यन्त सहजता से प्रस्तुत कर दिया है—

मुनि धीर जोगी सिद्ध संतत बिमल मन जेहि ध्यावहिं।
कहि नेति निगम पुरान आगम जासु कीरति गावहिं।
सोई राम व्यापक ब्रह्म भुवन निकाय पति माया धनी।
अवतरेउ अपने भगत हित निज तंत्र नित रघुकुल मनी।।

इस अत्यधिक भाव-गांभीर्य एवं दुरुह दार्शनिक विषय को इस माधुर्यपूर्ण कवित्वमयी भाषा में गा देना तुलसी की अलौकिक काव्य-प्रतिभा का द्योतक है। इन चार पंक्तियों को यदि 'रामचरितमानस' की भूमिका भी मान लें तो अतिशयोक्ति न होगी। ग्राउज़ ने यूं तो 'रामचरितमानस' का अंग्रेज़ी गद्यानुवाद किया है, किंतु इस छंद के लालित्य एवं माधुर्य से संभवत: उसमें भी काव्य-प्रतिभा जाग उठी—

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

Seers and sages, saints and hermits, fix on him their reverent gaze,
And in faint and trembling accents Holy Scripture hymns his praise.
He, the omnipresent spirit, lord of heaven and earth and hell,
To redeem his people freely has vouchsafed with men to dwell.

और ज़रा एटकिन्स का अनुवाद देखिए—

He whom seers and sages and saints in all ages,
With pure, holy mind contemplate;
He whose highest praises all scripture upraises,
Tho' far beyond man to relate;
He all things pervading Lord Brahma all aiding,
The Lord of all creatures and myst'ry,
The faithful to aid, now himself man is made,
In Raghu's line gracing all hist'ry.

श्री आर.सी. प्रसाद का अनुवाद निम्नलिखित है :—

He who has incarnated himself as the jewel of the house of Raghu for the sake of his devotees is no other than the Supreme Eternal, all pervading and ever free, Lord of all the worlds and master of Maya, whom steadfast sages, yogis (mystics) and Siddhas (adepts) continually contemplate with their sinless mind and whose glory the Vedas and the Puranas and other Scriptures sing, naming him Not this not this.

एटकिन्स ने तुलसी के माधुर्य एवं संगीत को जितनी बारीकी से ग्रहण किया है वह निश्चित ही प्रशंसनीय है। छंद की प्रत्येक पंक्ति के भीतर ही उन्होंने अन्त्यानुप्रास का जो 'सृजन' किया है वह सामान्यत: अनुवाद में अत्यधिक दुष्कर होता है—मौलिक रचना की तो और बात है, वहाँ रचनाकार शब्द चयन के लिए अपेक्षाकृत अधिक स्वतंत्र होता है। एटकिन्स के अनुवाद के संदर्भ में हमने जानबूझ कर 'अत्यानुत्रास' शब्द का प्रयोग किया है 'तुक' का नहीं। अन्त्यानुप्रास कविता का अलंकार है जहाँ भाव की उपेक्षा नहीं हो सकती जबकि 'तुक' के आग्रह में भाव कभी-कभी गौण रह जाता है। भाव व्यंजना में भी एटकिन्स तुलसी के कहीं अधिक निकट नज़र आते हैं। ग्राउज़ ने जहाँ लिखा—Lord of heaven and earth and hell वहीं एटकिन्स ने भुवन निकाय के लिए earth और hell का प्रयोग नहीं किया जो तुलसी की भावना के अधिक अनुरूप है।

'मानस' का एक और अत्यधिक मधुर प्रसंग है जहाँ तुलसी की कवित्व-शक्ति पूरे निखार पर है—

कंकन किंकिनि, नूपुर धुनि सुनि। कहत-लखन सन राम हृदयँ गुनि।
मानहुँ मदन दुंदुभि दीन्हीं। मनसा बिश्व विजय कहँ कीन्हीं॥

यहाँ कोमलकांत श्रृंगार रस को ध्वनि-बिम्ब से सम्पृक्त कर दिया गया है—इस ध्वनि-वैभव को नेत्र मीलित करके ही देखा जा सकता है। ध्वनि वैभव के ऐसे उदाहरण संसार की कविता में कम ही मिलते हैं। इनमें ध्वनि शब्द के सारे अर्थ अनायास ही समाहित हो गए हैं। प्रो. आर.सी. प्रसाद ने इस ध्वनि-बिम्ब को यों अंकित किया है—

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

> Hearing the tinkling of her bangles, the small bells on her girdle and the anklets, Rama thought within himself and then said to Lakshman. It sounds as though cupid has sounded his kettledrum ambitious to conquer the universe.

ग्राउज़ के अनुवाद में भी इसी प्रकार की वर्णनात्मकता है—

> When he heared the sound of the golden bangles on her hands and feet Rama thought within himself, and then said to Lakshman--'Imagine love triumphant over the whole world to be now sounding the Kettledrum of victory.'

एटकिन्स द्वारा किया गया इस 'ध्वनि-वैभव' का अंकन अधिक प्रभाव एवं नाद-सौन्दर्य से युक्त है—

> At the sound of the tinkling of anklet and bangle,
> Said Rama toLakshman as thoughts 'gan to mingle,
> I hear sounds that 'tis the Love God who comes,
> With world conquering cymbals and beating of drums.

अनुवाद में बहुत बार शब्द-चयन के लिए शब्द-कोश नितान्त अपर्याप्त होते हैं, क्योंकि शब्द-कोश से शब्द लेकर उसमें संदर्भानुकूल भाव नही भरे जा सकते। कामदेव के लिए प्रो. प्रसाद ने और गीताप्रेस गोरखपुर के अंग्रेज़ी अनुवाद में cupid शब्द का प्रयोग उस अर्थ का व्यंजक कैसे हो सकता है जो एटकिन्स का Love-God कर रहा है। सीता के बाटिका में आगमन से राम के हृदय में उठे भावों की अभिव्यंजना के लिए Love God में वह सारा अर्थ-गौरव एवं व्यंजना व्याप्त है जो हिन्दी के कामदेव में है। ग्राउज़ ने यहाँ कामदेव के लिए मात्र Love शब्द का प्रयोग किया है जो कामदेव के देवत्व एवं आलौकिकता को अभिव्यंजित करने में नितान्त अपर्याप्त है। 'कहत लखन सन राम हृदय गुनि' का शब्दानुवाद तो यह ठीक है कि Sri Rama thought within himself and then said to Lakshman किन्तु सीता के प्रथम दर्शन के अवसर पर राम के हृदय में उठे भावों की अभिव्यक्ति के लिए तुलसी ने जो 'राम हृदय गुनि' कहा उसका सौन्दर्य यह नहीं कि पहले राम ने भली-भाँति सोचा-समझा, विचारा बल्कि कहने में जो विलम्ब है वह केवल इसलिए कि अवसर के अनुरूप कोई उत्प्रेक्षा समीचीन नहीं लग पा रही। तुलसी के इस मनोभाव संभवतः एटकिन्स अधिक निकट रहे हैं।

सीता के सौन्दर्य-वर्णन में कवि तुलसी का कवि हृदय खूब रमा है—

> जो छवि सुधा-पयोनिधि होई। परम रूपमय कच्छपु सोई।।
> सोभा रजु मंदर सिंगारू। मथे पानिपंकज निज मारू।।
> एहि बिधि उपजै लच्छि जब सुंदरता सुख मूल।
> तदापि संकोच समेत कवि कहहिं सीय समतूल।।

यदि सौन्दर्यामृत का महासागर हो (समुद्र का जल खारा होता है) कच्छप भी उसी के अनुरूप रम्यतम हो, शोभा की रज्जु हो, शृंगार रस स्वयं ही मंदराचल का कार्य सम्पादन करे और कामदेव कर कमलों द्वारा मंथन करे—एक अभिनव-अभिराम सागर मंथन हो तथा उससे एक अभिनव अप्रतिम लक्ष्मी उद्भूत हो, तब भी कवि उसे संकोचपूर्वक ही सीता के समतुल्य कहेंगे। इन पंक्तियों में कल्पना भावुकता एवं अलंकृति

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

का जैसा समन्वय हुआ है वैसा संसार के साहित्य में अन्यत्र दुर्लभ है। तुलसी ने यहाँ उदात्त को भी उदात्त कर दिया है। एटकिन्स ने इस सौन्दर्य का अतीव प्रभावशाली अनुवाद किया है। इसी प्रसंग में तुलसी ने लिखा है—

सिय सोभा नहिं जाई बखानी। जगदंबिका रूप गुन खानी ॥
उपमा सकल मोहि लघु लागी। प्राकृत नारि अंग अनुरागी ॥

एटकिन्स ने तुलसी के इस भाव को अंग्रेज़ी पद्य में बड़े ही प्रभावी ढंग से प्रस्तुत किया है—

No ever can hope Sita's charm to define
The mother of worlds; of all fair things the mine
To me every figure of speech is unworthy
As used for all woman the common and earthy.

प्रो. आर.सी. प्रसाद एवं ग्राउज़ के अनुवाद पर भी एक दृष्टि डाल लें, पहले प्रो. प्रसाद का अनुवाद और उसके बाद ग्राउज़ कृत अनुवाद दिया जा रहा है :—

Sita's beauty beggars all description, Mother of the Universe that she is and an embodiment of charm and excellence. To me all comparisons se n worthless for they are appropriate to the limbs of mortal women.

× × ×

Her beauty is not to be told : Seeing that she is the mother of the world the perfection of all grace and goodness, every comparison seems to me unworthy of her and appropriate only to mortal women.

एटकिन्स और अन्य दोनों अनुवादों में अन्तर स्पष्टतः देखा जा सकता है। जो सौन्दर्य every figure of speech is unworthry में है वह comparisons में कहाँ ! इसी प्रकार प्राकृत नारियों के लिए earthly जितना appropriate (समुचित) है, जो भाव-व्यंजना इसमें है वह mortal में नहीं।

समग्रता में यदि मानस के अंग्रेज़ी अनुवादों पर एक विहंगम दृष्टि डालें तो एटकिन्स का अनुवाद अन्य अनुवादों की अपेक्षा तुलसी के ज्यादा करीब नज़र आएगा। जैसा कि हमने पहले स्पष्ट किया है कि एटकिन्स न केवल इसलिए मानस के अधिक निकट हैं कि उन्होंने मानस का पद्य में अनुवाद किया है अपितु इसलिए कि उन्होंने मानस के निहितार्थ पकड़ पाने की पूरी चेष्ठा की है। न केवल अर्थ में अपितु अभिव्यंजना में भी उनका यह भरसक प्रयत्न रहा है कि दोहे, सोरठे, चौपाई के अन्त्यानुप्रास को वे अंग्रेज़ी में भी सुरक्षित रख सकें। मानस की रचना सामान्यतया दोहा-चौपाई में हुई है, किन्तु तुलसी ने प्रसंगानुकूल अर्थ-सौन्दर्य की अभिवृद्धि हेतु अन्य छंदों का भी प्रयोग किया है। प्रत्येक काण्ड का शुभारम्भ तुलसी ने संस्कृत-श्लोक से किया है, अन्य स्थानों पर भी भगवान राम और शिव की स्तुति भी भिन्न छंदों में की है। अलौकिक प्रतिभा सम्पन्न कवि का यह छंद वैविध्य निष्प्रयोजन नहीं हो सकता, एटकिन्स ने इस छंद परिवर्तन को अपने अंग्रेज़ी अनुवाद में सविनय स्वीकार किया है—I have tried to give varied meters somewhat comparable to those of Tulsidas, changing as he changes—whirh breaks monotony in reading ; also rhyme where he gives it, and lauguage that is clear and simple in verse form. (शेष पृष्ठ 37 पर)

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

हिल का योगदान

डॉ. सुधेश

तुलसी कृत 'रामचरितमानस' के खण्डों के अनुवाद पहले कई विदेशी भाषाओं में हो चुके थे, पर सम्पूर्ण 'रामचरितमानस' के अंग्रेजी अनुवाद का श्रेय सबसे पहले एफ.एस. ग्राउज़ को ही है। इसका शीर्षक था The Ramayan of Tulsi Das. इसके बाद W. Douglas P. Hill ने सम्पूर्ण रामचरितमानस' का अंग्रेजी अनुवाद The holy lake of the Acts of Rama शीर्षक से सम्पन्न किया जिसका प्रथम संस्करण सन् 1952 में 'ऑक्सफोर्ड यूनीवर्सिटी प्रेस, लन्दन से और दूसरा संस्करण सन 1971 में आक्सफोर्ड यूनीवर्सिटी प्रेस, फ़ेराडे हाउस, कलकत्ता से छपा। यह अनुवाद डिमाई साइज़ के 499 पृष्ठों में है।

भूमिका में श्री हिल ने अपने अनुवाद को ग्राउज़ की तुलना में बेहतर बताते हुए लिखा' है—it is hoped that the present rendering has achieved a greates degree of accuracy. इसका एक कारण हिल ने यह बताया है कि ग्राउज़ ने 'मानस' की जिस प्रति का उपयोग किया वह प्रामाणिक नहीं थी और नागरी प्रचारिणी सभा द्वारा प्रकाशित प्रति और हनुमान प्रसाद पोद्दार द्वारा सम्पादित और गीता प्रेस गोरखपुर द्वारा सन 1447 में प्रकाशित प्रति की तुलना में विश्वसनीय नहीं थी। हिल ने दूसरा कारण यह बताया कि ग्राउज़ मूल रचना को समझने में कहीं-कहीं चूक गए और इसके प्रमाण स्वरूप उन्होंने अरण्यकाण्ड के छन्द संख्या सात के एक अंश के ग्राउज़ द्वारा किए गए अंग्रेजी अनुवाद के साथ अपने अंग्रेजी अनुवाद को प्रस्तुत कर उसको बेहतर बताया। विदेशी भाषा की मूल रचना को शतप्रतिशत समझने और फिर उसके सफलतम अनुवाद का दावा कोई अनुवादक नहीं कर सकता।

हिल महोदय ने 'रामचरितमानस' की उस प्रति को आधार बनाया है, जिसे गीता प्रेस, गोरखपुर ने सन 1947 में छापा था और जिसकी टीका हनुमान प्रसाद पोद्दार ने लिखी थी। गीता प्रेस ने 'रामचरितमानस' के अनेक छोटे-बड़े संस्करण छापे हैं और यश के साथ प्रचुर लाभ कमाया है। किसी रचना की कौन सी प्रति अधिक प्रामाणिक है, यह पाठानुसन्धान का विषय हो सकता है। अनुवादक के लिए यह सावधानी तो आवश्यक है कि वह किसी कृति की जिस प्रति को आधार बना रहा है, वह प्रामाणिक भी है या नहीं, क्योंकि प्रामाणिक रचना के अनुवाद का कुछ अधिक साहित्यिक मूल्य होगा। लेकिन अनुवाद के लिए यदि मूल रचना की प्रामाणिक प्रति ली गई है तो इससे अनुवाद पर भी प्रामाणिकता की मोहर

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

नहीं लग जाती । इसलिए मैं हिल के बेहतर अनुवाद के दावे को इस आधार पर स्वीकार नहीं कर सकता कि उनके द्वारा आधार बन गई 'रामचरितमानस' की प्रति ग्राउज़ द्वारा प्रयुक्त प्रति से अधिक प्रामाणिक है । आधार की प्रामाणिकता काम्य है पर वह अनुवाद की सफलता का प्रमाण नहीं मानी जा सकती ।

हिल महोदय ने 'रामचरितमानस' के अंग्रेज़ी अनुवाद का शीर्षक रखा है The holy lake of the acts of Rama. इस शीर्षक में प्रयुक्त The Holy lake शब्दावली The और Holy के बावजूद 'मानस' शब्द के साथ जुड़ी अर्थ ध्वनियों को व्यक्त करने में अक्षम हैं । अंग्रेजी में The के प्रयोग से किसी विषय अथवा वस्तु की निश्चयात्मकता का बोध होता है । Holy शब्द The के बाद इसलिए लगाया गया कि अनुवादक जानता था कि 'मानस' के लिए सिर्फ Lake पर्याप्त शब्द नहीं होगा । वास्तविकता यह है कि The Holy Lake भी 'मानस' का संकेत नहीं दे सका । 'मानस' को यदि आप कैलाश पर्वत पर स्थित मानसरोवर तक भी सीमित रखें, तो भी कहना होगा कि मानसरोवर एक Lake या झील नहीं है । एवरेस्ट ने हिमालय की सबसे ऊँची चोटी को तो ढूँढ निकाली और उसे अपना नाम 'एवरेस्ट' दे दिया, पर उसे न कैलाश पर्वत मिला और न मानसरोवर । अनेक हिन्दुस्तानी कैलाश पर्वत और मानसरोवर का वास्तविक अस्तित्व मानते हैं और वहाँ की यात्रा भी कर आए हैं । लाखों करोड़ों भारतीय कैलाश पर्वत को शिव का धाम भी मानते हैं । कैलाश पर्वत और उस पर मानसरोवर है या नहीं, यह तो भूगोल शास्त्री जानें, पर मेरा विचार है कि कैलाश पर्वत और मानसरोवर करोड़ों हिन्दुस्तानियों के मन में स्थित हैं और 'रामचरित मानस' में प्रयुक्त 'मानस' शब्द वही मानसरोवर हो सकता है जो उनकी आस्था का केन्द्र है । 'मानस' का एक अन्य अर्थ मस्तिष्क या बुद्धि भी है । यह अर्थ Lake से प्रकट नहीं हो सकता । यह बात दूसरी है कि तुलसी ने 'रामचरितमानस' शीर्षक में 'मानस' को बुद्धि के अर्थ में प्रयुक्त न किया हो । 'मानसरोवर' पावनता का भी प्रतीक है और रामचरित का श्रवण और पाठन पुनीत भावों का उत्प्रेरक माना जाता है । 'मानस' में गुंफित पावनता का अर्थ क्या Lake से प्रकट हो सकता था इसीलिए अनुवादक ने उसे Holy lake कहा । फिर Holy lake शब्द भी उन अर्थ ध्वनियों तक नहीं पहुँचता जहाँ तक मानस' शब्द पहुँचता है ।

हिल द्वारा दिए गए शीर्षक The holy lake of the acts of Rama में 'the acts' भी विचारणीय है । क्या इससे 'चरित्र' के सम्यक् अथवा वास्तविक अर्थ का बोध होता है ? मेरा उत्तर है – नहीं । किसी व्यक्ति के चरित्र का उसके क्रियाकलाप (acts) से बहुत कुछ अनुमान हो जाता है, पर चरित्र शब्द क्रिया या क्रियाकलाप से अधिक संश्लिष्ट और व्यापक है । 'चरित्' को संस्कृत के 'चरित्र' का तद्भव रूप कह कर छुट्टी नहीं पाई जा सकती क्योंकि मेरी जानकारी के अनुसार 'चरित्' भी संस्कृत शब्द है, जो कालिदास और भवभूति आदि संस्कृत महाकवियों की कृतियों के शीर्षकों में प्रयुक्त हुआ है । 'चरित्' में एक और अद्भुत अर्थ की व्यंजना निहित है, जिससे तुलसी अवश्य परिचित रहे होंगे । 'चरित्' जहाँ चरित्र का अर्थ देता है, वहाँ वह संस्कृत, प्राकृत, अपभ्रंश और हिन्दी की एक सुदीर्घ काव्य-परम्परा का भी द्योतक है—अर्थात 'चरित्' का एक व्यापक परम्परागत अर्थ 'चरित काव्य' भी है, 'चरित्रकाव्य' नहीं चरितकाव्य । 'रामचरित' से चरितकाव्य की सुदीर्घ काव्य-

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

परंपरा का भी बोध होता है और राम के चरित्र को केन्द्र में रखकर लिखे गए काव्यों को 'रामचरित' भी कहा गया। 'रामचरित' के बाद 'मानस' का प्रयोग तुलसी की सूझबूझ का सूचक है और उनकी भक्ति भावना का भी, तुलसी ने जो 'रामचरित' लिखा उसके श्रवण से निर्मलता की परिकल्पना की गई जो मानसरोवर में स्थान करके हंसों को मिली होगी। क्या इतनी दूर तक हिल द्वारा प्रयुक्त the acts की ध्वनि जाती है ? नहीं। इसलिए अच्छा होता यदि अनुवादक अपने अनुवाद का शीर्षक Ramacharitmanas ही रखते।

'रामचरितमानस' के विभिन्न काण्डों के नामकरण में अनुवादक ने 'काण्ड' का अंग्रेजी प्रर्याय Act या Chapter या Canto नहीं दिया है। उसने ग्रन्थ के शीर्षक में acts शब्द रखकर सन्तोष कर लिया।

अब तक मैंने जो बातें कीं उनसे अनुवादक के अनुवाद कर्म पर कोई प्रकाश नहीं पड़ता। कोई कह सकता है कि ग्रन्थ के शीर्षक पर विचार करना अत्यावश्यक नहीं था, पर उर्दू की काव्योक्ति 'खत का मज़मूं भाँप लेते हैं लिफ़ाफ़ा देखकर' के अनुसार जैसे किसी व्यक्ति के नाम से उसके व्यक्तित्व का प्रथम परिचय मिलता है उसी प्रकार ग्रन्थ के शीर्षक से भी उसकी विशिष्टता का कुछ संकेत मिलता है। यह संकेत पर्याप्त नहीं होता, पर शीर्षक के अनुवाद पर विचार करना अप्रासंगिक नहीं है।

अब हिल के अनुवाद कर्म और अनूदित कृति पर विचार कर लिया जाए। यह बताने की आवश्यकता नहीं कि तुलसी का 'रामचरितमानस' एक महाकवि का अमर महाकाव्य है, जो भारतीय संस्कृति तथा दर्शन का ही दर्पण नहीं, काव्यकला का भी एक आदर्श है। हिल के अंग्रेजी अनुवाद से हमें कविता प्राप्त नहीं होती, क्योंकि अनुवादक ने गद्यानुवाद का सहारा लिया है। यह बात अब अवश्य कह सकता हूँ कि अनूदित कृति का गद्य बड़ा ललित, अंग्रेजी भाषी शिक्षित समाज की मुहाविरेबाज़ी के निकट और शाब्दिक अर्थ व्यंजक के स्थान पर भाव व्यंजक बन पड़ा है। 'रामचरितमानस' जैसे गुण और आकार में बड़े ग्रन्थ का किसी विदेशी भाषा में अनुवाद अपने आप में एक कठिन परिश्रम का काम है जिसे हिल ने महोदय ने सम्पन्न करने का श्रेय लिया है।

इस अनुवाद को देखकर यह स्पष्ट हो जाता है कि अनुवादक खड़ी बोली पर आधृत आधुनिक हिन्दी के साथ-साथ अवधी पर आधृत मध्यकालीन हिन्दी से भी सुपरिचित है। विदेशियों के लिए मध्यकालीन हिन्दी अर्थात व्रजभाषा, अवधि, भोजपुरी आदि आधुनिक साहित्यिक हिन्दी के मुकाबले कठिन पड़ती है, पर डगलस पी. हिल अवधी का अच्छा ज्ञान रखते प्रतीत होते हैं। अवधी के साथ संस्कृत से भी उनका गहरा परिचय है। मूल रचना के गद्यानुवाद से पहले उन्होंने 29 पृष्ठों की जो विस्तृत एवं विद्वतापूर्ण पृष्ठभूमि लिखी है और जगह-जगह पादटिप्पणियों में जो स्पष्टीकरण दिए हैं, उनसे अनुवादक की विद्वता का पता चलता है।

कविता के अनुवाद में प्राय जो कठिनाइयाँ आती हैं, उनका समाधान श्री हिल ने कहाँ तक और किस रूप में किया, इसकी चर्चा आवश्यक है। कविता के काव्यानुवाद में कठिनाइयाँ कुछ बढ़ जाती हैं, पर हिल द्वारा गद्यानुवाद का रास्ता अपनाने पर भी कठिनाइयाँ कम नहीं रही होंगी, और उनकी नींद हराम और रातें खराब अवश्य हुई होंगी। व्यक्तिवाचक संज्ञाओं, पौराणिक तथा ऐतिहासिक पात्रों एवं स्थानों, मिथकीय तत्वों और

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

रूढ़िवाचक शब्दों के अंग्रेजी अनुवाद में अनुवादक ने सूझबूझ से काम लेते हुए प्राय: उन्हें मूलरूप में ही अंग्रेज़ी लिपि में रख दिया है, जैसे वेद, पुराण, आगम, निगम, काशी, मगध, गन्धर्व, किन्नर आदि को मूलरूप में रखा गया है। श्रावण और भादों जैसे ऋतुवाचक शब्दों को अनुवादक ने Sravana and Bhadon रखा है और पादटिप्पणी में बता दिया है कि श्रावण का मतलब है जुलाई-अगस्त और भादों की अवधि अगस्त-सितम्बर महीनों के अधिकांश को घेरती है। मैना, कोयल, घी जैसे शब्दों के अंग्रेजी पर्याय तो मिलते हैं पर अनुवादक ने मैना को Maina, घी को Ghi के रूप में रखना उचित समझा। तात्पर्य यह कि कहीं-कहीं जातिवाचक संज्ञाओं को भी अनुवादक ने मूल-रूप में रखा है। शायद इसका कारण यह रहा हो कि कोयल और चातक जैसी जातिवाचक संज्ञाओं के लिए उन्हें केवल Cuckoo शब्द ही मिला हो और मूल अर्थ की रक्षा के लिए उन्हें मूल शब्द ही मिला हो और मूल अर्थ की रक्षा के लिए उन्हें मूल शब्द ही रखना उचित लगा हो। बरहाल, अनुवादक ने अपने शब्द विवेक का परिचय दिया है। शब्द विवेक के कारण ही वे शाब्दिक अनुवाद से बचकर भावानुवाद की ओर उन्मुख हुए।

व्यक्तिवाचक संज्ञाओं को दूसरी भाषा में मूलरूप में रखना उपयोगी तो है पर उसके साथ एक खतरा भी यह है कि यदि उन्हें पादटिप्पणी में स्पष्ट न किया जाए अथवा ग़लत स्पष्टीकरण किया जाए तो वांछित अर्थ सम्प्रेषित नहीं होगा और मूल शब्द के साथ अन्याय भी हो सकता है। हिल ने एक स्थान पर 'दारु मलय' के लिए Wood from Malaya रखा है, लेकिन पादटिप्पणी में 'मलय' का कोई स्पष्टीकरण नहीं दिया है, जिससे मलय पर्वत की अवधारणा से अपरिचित विदेशी इस अनुवाद का अर्थ लेगा— मलाया से आयातित लकड़ी। 'देवदारु' की लकड़ी कोई साधारण लकड़ी नहीं होती। अत: 'दारु' के स्थान पर Wood से काम नहीं चल सकता। ये बातें पादटिप्पणी में स्पष्ट की जानी चाहिए थीं।

एक स्थान पर अनुवादक ने वाल्मीकि के लिए the lord of poets और हनुमान के लिए the lord of Monkeys लिखा है। पाद टिप्पणी में दोनों के लिए क्रमश: वाल्मीकि और हनुमान का प्रयोग किया गया है। यदि वाल्मीकि और हनुमान अनुवाद में रखे जाते और पादटिप्पणी में उनकी व्याख्या की जाती तो बेहतर होता। हनुमान के लिए the lord of monkeys शब्दावली का प्रयोग मुझे इसलिए अनुपयुक्त लगा कि 'वानर' केवल Monkey का पर्याय नहीं है, वह किसी आदिमजाति का सूचक शब्द है, जैसे 'नाग' केवल 'सर्प' का वाचक नहीं, बल्कि पूर्वोतर भारत में बसने वाली किसी जाति का भी परिचायक है। नाग, नागचौधरी, नागपाल जैसे गोत्र आज भी भारत में प्रचलित हैं।

'रामचरितमानस' में ऐसे शब्द प्रयोग प्राय: प्रत्येक पृष्ठ पर मिल जाएँगे, जो भारतीय संस्कृति में निबद्ध हैं, जिनका सफल अनुवाद भारतीय इतिहास, भारतीय संस्कृति और भारतीय दर्शन के सम्यक् ज्ञान के बिना नहीं हो सकता। ऐसे शब्द किसी भी भाषा के अनुवादक के लिए बड़ी चुनौती हो सकते हैं। इस चुनौती का सामना श्री डगलस पी. हिल ने साहस और सूझबूझ के साथ किया है, पर कहीं-कहीं वे चूक भी गए हैं। कुछ उदाहरण लीजिए। बालकाण्ड के एक दोहे में 'पितर' शब्द आया है, जिसके लिए अनुवादक ने 'fathers' शब्द रखा है, जिससे अनेक पिताओं को ध्वनि निकलती है। पश्चिम में किसी के अनेक पिताओं की कल्पना शायद की जा सके, भारत में नहीं। उपयुक्त अनुवाद होता Forefa-

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

thers. बालकाण्ड में ही एक चौपाई का अंश है—'आकर चारि लाख चौरासी, जाति जीव जल थल नभ वासी।' इसमें चार आकारों अर्थात जातियों के प्राणियों का उल्लेख है। तुलसी इस चौपाई में स्वेदज, अण्डज, पिण्डज और उद्भिज नामक चार आकारों अथवा जातियों के जीवों, जल, पृथ्वी, आकाश में रहने वाले और चौरासी लाख यौनियों में कर्मानुसार पुनर्जन्म लेने प्राणियों की वन्दना कर रहे हैं—रामकथा कहने से पहले। 'आकार चारि' को अनुवादक ने four modes के रूप में रूपान्तरित किया है और पादटिप्पणी में उसकी स्पष्ट व्याख्या की है। 'लाखि चौरासी' का अनुवाद Eight million four hundred thousand किया है। यहाँ संख्या का संकेत तो ठीक है, पर यदि 84 Lakhs लिखा जाता और पाद टिप्पणी में भारतीय संख्या 'लाख' को समझाया जाता तो अंग्रेज़ी अनुवाद में भारतीय परम्परा का पुट आ जाता। फिर चौरासी लाख योनियों की अवधारणा भारत की पुनर्जन्म की अवधारण से किस प्रकार जुड़ी है, इसकी व्याख्या भी आवश्यक थी। इसके अभाव में भारतीय संख्या का अंग्रेज़ी रूपान्तरण पर्याप्त नहीं है। विदेशी भाषा में अनुवाद का अर्थ मूल रचना का विदेशीकरण नहीं है, बल्कि विदेशी कलेवर के बावजूद मूल रचना के मौलिक तत्वों की यथासम्भव रक्षा करते हुए उसके सांस्कृतिक और पारम्परिक तत्वों को उजागर करना है।

बालकाण्ड की एक चौपाई की अर्द्धाली है—'सीय राममय सब जग जानी, करउँ प्रनाम जोरि जुग पानी'। हिल ने इसका अनुवाद यों किया है—Knowing the whole world to be instinct with Sita and Ram, I do obeisance with folded hands. 'सीय राममय' को to be instinct with Sita and Rama के के माध्यम से पूर्णरूपेण व्यक्त नहीं किया जा सका। 'सीय राममय' होने के पीछे भक्त का जो भक्ति-भाव है और सीता तथा राम में जिस विराट भगवत्सत्ता की परिकल्पना है—वह विराट सत्ता जो 'सब जग' में समाविष्ट हो सके—और भारतीय दर्शन के सिद्धान्त अद्वैतवाद की जो प्रतीति है, वह उक्त अनुवाद में नहीं आ सकी। फिर 'जोरि जुग पानी' के लिए with folded hands शाब्दिक अनुवाद तो हो गया पर हाथ जोड़कर सम्मान प्रकट करने की भारतीय पद्धति की पावनता, और 'जोरि जुग' में निहित अनुप्रास अलंकार से उत्पन्न ध्वन्यात्मक चमत्कार अंग्रेजी अनुवाद में नहीं आ पाया। कम से कम इसका संकेत पादटिप्पणी में अपेक्षित था।

सांस्कृतिक तत्वों का विदेशी भाषा में अनुवाद निस्सन्देह चुनौती भरा काम है। इस काम में हिल हमेशा चूके ही नहीं है। उन्होंने चुनौती को अच्छी तरह झेला भी है और बहुत सफल अनुवाद भी किए हैं। 'बालकाण्ड' में एक और चौपाई है जिसका अंश है—'एक अनीह, अरूप अनामा, अज सच्चिदानन्द पर धामा।' हिल का अनुवाद है—God, who is one, desireless, without form or name, unborn, True Being, Consciousness and Bliss. उक्त चौपाई में 'सच्चिदानन्द' एक कठिन शब्द है (अनुवाद की दृष्टि से कठिन) और केन्द्रीय शब्द भी। इसके अनुवाद में विदेशी तो क्या, हिन्दुस्तानी भी चूक सकते हैं। पर हिल ने 'सच्चिदानन्द' का अनुवाद True Being, Consiousness and Bliss किया है, जो 'सच्चिदानन्द' की तरह गुम्फित (Compact) और मुख्यार्थ व्यंजक है।

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

डॉ. राधाकृष्णन ने अपने प्रसिद्ध ग्रन्थ Indian Philcsophy में 'सच्चिदानन्द' को infinite existence, absolute truth and pure delight कहा है, जो अनुवाद से अधिक 'सच्चिदानन्द' शब्द की व्याख्या है। इसलिए मैं कह सकता हूँ कि हिल का यह अनुवाद डॉ. राधाकृष्णन से बेहतर है। पर 'नेति नेति' का हिल द्वारा किया गया अनुवाद Not thus Not thus मुझे बेहतर नहीं लगा। इसके स्थान पर No end, No end होना चाहिए था।

यह बात सर्व विदित है कि 'रामचरितमानस' जैसे भारत की सामान्य जनता में प्रचलित है और करोड़ों लोग जैसे उसे धर्मग्रन्थ की तरह आदर देते हैं, वैसे ही कविता के प्रेमियों और काव्यमर्मज्ञ विद्वानों के बीच भी उसकी प्रतिष्ठा है। इस महान रचना में जो साहित्यिक गुण हैं अथवा काव्यकला की जिन विशिष्टताओं का इसमें समावेश है, उनका किसी भी विदेशी भाषा में अनुवाद बड़ा कठिन है। इसके लिए अनुवादक का कवि होना अनिवार्य है, अर्थात जिस भाषा में अनुवाद किया जा रहा है उस भाषा का कवि। इस दृष्टि से 'रामचरितमानस' का हिल द्वारा किया गया अंग्रेज़ी अनुवाद देखें, तो उत्साहजनक प्रतिक्रिया नहीं होती। इसका एक कारण तो यही है कि हिल अंग्रेज़ी के कवि नहीं हैं। कम से कम उन्होंने इसका प्रमाण अपने अनुवाद में नहीं दिया है। इसीलिए उन्होंने गद्यानुवाद का रास्ता चुना। कुछ लोग तर्क कर सकते हैं कि गद्य भी काव्यात्मक हो सकता है और जो रचना छन्दोबद्ध नहीं है, वह भी काव्य हो सकती है। इस विषय में यहाँ इतना कहना पर्याप्त है कि कविता में गद्य के गुणों का समावेश उसी प्रकार किया जा सकता है जैसे उसमें नाटक, कथा, मिथक आदि का उपयोग हो सकता है, पर जिसे गद्यकाव्य (Prose Poetry) कहा जाता है उसे मैं कविता मानने को तैयार नहीं हूँ और काव्यात्मक गद्य तो गद्य है ही। तो हिल का अनुवाद गद्य ही है, वह काव्यात्मक गद्य भी नहीं हो पाया। तात्पर्य यह कि तुलसी के श्रेष्ठकाव्य के बदले हमें हिल महोदय द्वारा अंग्रेज़ी में उत्कृष्ट कविता प्राप्त नहीं होती।

'रामचरितमानस' में प्रायः प्रत्येक पृष्ठ पर शब्दों के कुशल प्रयोग द्वारा अनेक अलंकारों, ध्वन्यात्मक गुणों, वैचित्र्यपूर्ण उक्तियों, मिथकीय प्रयोगों और कल्पना की उड़ानों के दर्शन होते हैं। ये सारी बातें एक पृष्ठ पर नहीं होतीं, बल्कि सम्पूर्ण ग्रन्थ में बिखरी हुई हैं। अब प्रश्न यह है कि हिल अंग्रेज़ी में इन्हें रूपान्तरित कर सकते हैं या नहीं। मेरा उत्तर है—नहीं। किसी भाषा के सौन्दर्य को दूसरी भाषा में शतप्रतिशत रूपान्तरित नहीं किया जा सकता। प्रत्येक भाषा में अपनी तरह का सौन्दर्य होता है। कुशल अनुवादक यही कर सकता है कि अनुवाद की भाषा का सा सौंदर्य किसी मात्रा में सृजित कर सकता है जो कि मूल भाषा के सौन्दर्य से भिन्न होगा। हिल अपने अनुवाद में अंग्रेज़ी कविता का सा सौंदर्य सृजित नहीं कर सके हैं। कुछ उदाहरण देखिए। 'बालकाण्ड' में राम जब पहली बार सीता का दर्शन राजा जनक की बाटिका में करते हैं तो सीता के आगमन को तुलसी यों प्रकट करते है—

कंकन किंकिनि नूपुर धुनि सुनि,
कहत लखन सन रामु हदयँ गुनि।

हिल ने इसका अनुवाद इसीप्रकार किया—Hearing the tinkle of her bracelets and anklets and the bells on her girdle, Rama pondered in his heart and said to Laksman मूलरचना की प्रथम पंक्ति के पाँच शब्दों में जो ध्वन्यात्मक

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

सौन्दर्य है वह अनुवाद के चौदह शब्दों में नहीं है, फिर मूल पाठ में 'क' और 'न' की आवृत्ति से क्रमश: छेकानुप्रास और वृत्यानुप्रास की जो छटा निहित है, वह अनूदित पाठ में नहीं है। मूल पाठ की दूसरी पंक्ति का अन्तिम शब्द 'गुनि' अनुवादक द्वारा 'Pordered in his heart' के चार शब्दों के रूप में अनूदित हुआ है, जिससे मूलभाव की व्यंजना तो हो गई पर 'सुनि' और 'गुनि' में तुकान्त का निर्वाह कर तुलसी ने जिस कौशल का परिचय दिया है वह अनुवाद से ग़ायब है।

सीता के रूप-सौन्दर्य का तुलसी ने 'रासचरितमानस' में खुलकर वर्णन किया है, जबकि सीता उनकी आराध्या हैं। इसी प्रकार सीता के प्रथम दर्शन से राम के मन में प्रेम के संचार का भी तुलसी ने चमत्कारपूर्ण वर्णन किया है। तुलसी राम और सीता के भक्त थे और राम की मानवसुलभ क्रियाओं का वर्णन करते समय भी वे क़दम-क़दम पर इस बात को रेखांकित करते चले गए कि राम भगवान का अवतार हैं और सीता शक्ति का, पर तुलसी भक्त के साथ कवि भी तो थे। राम के रतिभाव का वर्णन करते समय उनके कवि पर भक्त हावी नहीं हुआ। बल्कि उनकी भक्ति में से उनका कवित्व छलक-छलक पड़ता है। 'बालकाण्ड' में राजा जनक की वाटिका में सीता के प्रथम दर्शन के बाद राम की मनोदशा को तुलसी यों व्यक्त करते हैं—

भए विलोचन चारु अचंचल।
मनहु सकुचि निमि तजे दिगंचल॥

इस अंश का अनुवाद इस प्रकार किया—Motionless stared his beauteous eyes as though Nimi has deserted his eyelids in modest eonfusion.

मूल पाठ की पहली पंक्ति में 'च' व्यंजन की कई बार आवृत्ति से वृत्यानुप्रास का जो सौन्दर्य है वह तो अनुवाद में ग़ायब है ही, 'विलोचन' में विशेष देखने वाले लोचन के जिस अतिरिक्त गुण की ओर संकेत है वह eyes द्वारा व्यक्त नहीं हो पाया है। दूसरी पंक्ति में उत्प्रेक्षा अलंकार की योजना करते हुए तुलसी ने 'निमि तजे दिगंचल' द्वारा समय के जिस ठहराव की ओर संकेत किया है, वह Nimi has deserted his eyelids in modest confusion द्वारा प्रकट नहीं हो सका। इसका मुख्य कारण अनुवादक द्वारा 'निमि' और 'दिगंचल' शब्दों को ठीक तरह न समझना है। 'निमि' की व्याख्या परिशिष्ट में करते हुए हिल महोदय ने निमि को राजा इक्षवाकु का बेटा बताया है, जिन्होंने मिथिला के राज्यकुल की नींव डाली, जिनसे राजा जनक का पैतृक परम्परागत सम्बन्ध था। 'दिगंचल' को हिल ने 'eyelids' का पर्याय समझ लिया। मूल पाठ में 'निमि' समय का प्रतीक है, न कि इक्षवाकु का बेटा राजा निमि। हिन्दू परम्परा में 'यम' मृत्यु का दूत माना जाता है, पर कहीं उसका अर्थ 'मृत्यु' भी लिया जाता है अर्थात पात्र के स्थान पर उसके गुण का बोध होता है। उसी प्रकार 'निमि' एक राजा विशेष होगा, पर सर्वत्र उससे व्यक्ति का ही बोध नहीं होगा। सम्भव है कि अपने पराक्रम द्वारा युग को प्रभावित करने के कारण वह 'युग' अर्थात 'समय' का प्रतीक बन गया हो। इसी कारण 'निमिष' का अर्थ क्षण या पल हुआ। 'दिगंचल' का सही अर्थ है 'दिशाओं का आंचल'। 'निमि तजे दिगंचल' का अभिप्रेत अर्थ हुआ 'समय ने दिशाओं का आंचल छोड़ दिया'। यह तो शाब्दिक अर्थ हुआ। व्यंजित अर्थ है—'समय

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

निस्सीम होकर ठहर गया'। सीता के सौन्दर्य का प्रथम दर्शन कर राम टकटकी बाँध कर अर्थात स्थिर आँखों से उसे इतनी तन्मयता से देखने लगे कि उन्हें समय का ज्ञान नहीं रहा, मानों समय ठहर गया हो। जो समय के ज्ञान से ऊपर उठ जाए, उसके लिए मानो समय ठहर जाता है। इस चमत्कार-पूर्ण अर्थ तक हिल नहीं पहुँच सके अन्यथा राम की दर्शन-तन्मयता अथवा एकाग्रता को वे modest confusion न कहते। जहाँ दर्शन की तन्मयता या एकाग्रता है, वहाँ दर्शक समय के बोध के साथ अपनी चेतना की जागरूकता से भी ऊपर उठ जाता है, फिर वहाँ न confusion होता है, न modest confusion. मतिभ्रम में समय भागता हुआ दिखता है, न कि ठहरा हुआ। उसमें लोचन और चंचल हो जाते हैं, जबकि तुलसी ने लिखा है—'भए विलोचन चारु अचंचल।'

मैं 'रामचरितमानस' में आए अलंकारों या उसमें प्रयुक्त भारतीय काव्यरूढ़ियों, लोकोक्तियों और मिथकीय तत्वों को ज्यों का त्यों अंग्रेज़ी में उतारने की अपेक्षा, हिल महोदय या किसी अनुवादक से नहीं रखता हूँ, पर इतनी आशा तो अनुवादक से की जानी चाहिए कि अपनी भाषा की ज़मीन पर खड़े होकर मूल पाठ कला के जिस स्तर तक पहुँचा है, उसका कुछ आभास वह अपनी भाषा की काव्य रूढ़ियों के माध्यम से उस भाषा के पाठकों को करा सके। हिल इस प्रसंग में अनेक बार चूक गए हैं और यह चूक वहाँ अधिक अखरती है, जहाँ मूल पाठ में प्रयुक्त किसी शब्द प्रयोग का वास्तविक अर्थ उनके हाथों से फिसल गया है। एक उदाहरण और लीजिए। 'लंका काण्ड' में एक चौपाई है :—

सत्यसंध छांड़े सर लच्छा। कालसर्प जनु चले सपच्छा॥
जहँ तहँ चले विपुल नाराचा। लगे कटन भट बिकट पिसाचा॥

हिल ने इसका अनुवाद इस प्रकार किया :—

Then Rama, true to his promise, shot a hundred thousand arrows they sped like winged serpents of death. On every side sped forth his volleys, and the frightful goblin warrions began to be cut to pieces.

मूल पाठ की प्रथम पंक्ति में 'सर लच्छा' के लिए अनुवादक ने a hundred thousand arrows रखा है, जिससे रावण के विरुद्ध राम की वीरता का चित्र प्रस्तुत नहीं होता। राम जैसा शूरवीर और कुशल योद्धा एक तीर या कुछ तीर चला कर अपने शत्रु को पराजित कर दे तो यह उसके कौशल के अनुरूप होगा, पर अनुवादक ने राम को एक लाख तीर चलाते हुए बताया है। एक लाख तीर चलाकर लक्ष्य को प्राप्त करने में क्या वीरता है? ऐसा तो आज गली का लड़का भी कर लेगा, जो मुहल्लों की रामलीला में राम बनता है। वास्तव में 'सर लच्छा' का वांछित अर्थ है 'लक्ष्य पर लगे तीर' और योद्धा का कौशल भी लक्ष्य पर तीर मारने में है, न कि एक लाख तीर चलाकर एक शत्रु को मारने में।

उक्त चौपाई में 'सत्य संध' समास भी आया है, जिसका अनुवाद True to his promise किया गया है। यदि इसे स्वीकार कर लिया जाए तो अनूदित पाठ से यह प्रकट होगा कि राम एक लाख तीर छोड़ने का वादा करके युद्ध क्षेत्र में उतरे थे और वह भी एक शत्रु के विरुद्ध जिसका नाम था रावण। Promise शब्द इतना लचर है कि वह 'सत्य' तक

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

नहीं पहुँचता। तभी तो आए दिन लोग promise करके उसे तोड़ना नहीं भूलते। यदि राम True to his promise थे भी, तो promise का सत्य से अनिवार्य सम्बन्ध आजकल नहीं दीखता। मेरे विचार में 'सत्य संध' से तुलसी का आशय था 'सत्य का संधान करने वाले राम'।

उक्त चौपाई के अन्तिम भाग में 'लगे कटन भट बिकट पिसाचा' का अंग्रेज़ी अनुवाद frightful goblin warriors began to cut to pieces किया गया है। मूल पाठ में 'कटन भट विकट' में कठोर वर्ग 'ट' की आवृत्ति से रौद्ररस की जो उद्भावना हुई है, वह Cut to pieces में नहीं है। 'पिसाचा' में जो क्रूरता वह goblin warriors में नहीं है।

इस प्रकार मुझे लगता है कि अलंकारों और शब्दों के ध्वन्यात्मक गुणों की रक्षा की दृष्टि से हिल से अंग्रेजी अनुवाद में कई महत्वपूर्ण भूलें हुई हैं। लगता है कि अनुवादक का संस्कृत भाषा से कुछ परिचय रहा होगा, पर वे संस्कृत काव्य शास्त्र से अनभिज्ञ रहे। काव्यशास्त्रीय शब्दावली को ज्यों का त्यों रखना उपयोगी होता और पाद टिप्पणी में पारिभाषिक शब्दों की व्याख्या से काम चल जाता। पर हिल ने 'रस' जैसे प्रचलित पारिभाषिक शब्द के अनुवाद में भी भूल की। 'बालकाण्ड' में तुलसी ने अपनी विनम्रता प्रकट करते हुए लिखा था—'भावभेद रस भेद अपारा, कबित दोष गुन बिबिध प्रकारा'। हिल ने इसका अनुवाद यों किया—Countless the distinctions of emotion and sentiment, and many the kinds of fault and excellence in verse. यहाँ रस भेद को 'distinctions of sentiment' कहना पर्याप्त नहीं। 'रस' का पर्याय 'sentiment' नहीं हो सकता। 'रस' को 'aesthetic pleasure' कहना उपयुक्त होता, अथवा 'रस' को अंग्रेज़ी में भी 'Ras' लिखा जाता, तो बेहतर होता।

'बालकाण्ड' में एक और चौपाई है—'कबित रसिक न राम पद नेहू, तिन्ह कहँ सुखद हास रस एहू'। पहले अंश का अनुवाद हिल ने इस प्रकार किया—Those who are skilled in poetry, but have no love for Rama's feet. अनुवाद के नीचे यह टिप्पणी भी है—Some double the negatives, inserting 'na before Kabita and but this makes little distinction between the first two classes, and the negative obviously can not be inserted before Has. टिप्पणी से स्पष्ट है कि अनुवादक 'कबित' से पहले 'न' जोड़ने का समर्थन नहीं कर रहा है, क्योंकि दोनों पद नकारात्मक हो जाएँगे। इसलिए उसके अनुसार 'न' का सम्बन्ध दूसरे पद अर्थात 'राम पद नेहू' से है। अर्थ विचार की दृष्टि से यह बात सही है, पर यदि पहले पद अर्थात 'कबित रसिक' के पहले 'न' लगाया जाता तो छन्द शास्त्र और अलंकार शास्त्र की दृष्टि से गलत होता। चौपाई छन्द के चार चरणों में प्रत्येक में सोलह मात्राएँ होती हैं। यदि 'कबित रसिक' के पहले 'न' लगाया जाता तो एक मात्रा बढ़ जाती अर्थात पहले चरण में सोलह मात्राओं के स्थान पर सत्रह मात्राएँ हो जातीं, छन्द के नियम का निर्वाह न होता। अलंकार शास्त्र में एक अलंकार 'दीपक' नाम का भी है। दो पदों के बीच में प्रयुक्त कोई शब्द यदि दोनों पदों के अर्थ को प्रकाशित करे तो उस बीच के शब्द में दीपक अलंकार होता है। जैसे देहरी पर रखा दीपक कमरे में भी उजाला करता है और आँगन में भी, इसी प्रकार दीपक अलंकार में भी होता है। उर्दू कविता में भी इस अलंकार का खूब प्रचलन है। यदि 'कबित

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

रसिक' के पहले 'न' रखा जाता तो 'कबित रसिक न राम पद नेहू' में दीपक अलंकार की सम्भावना न होती । दीपक अलंकार से अपरिचय के कारण हिल ने 'न' को बाद के पद 'राम पद नेहू' के साथ जोड़ा है। तुलसी के उक्त कथन में दीपक अलंकार को अंग्रेज़ी में रूपान्तरित नहीं किया जा सकता था । इसलिए हिल ने उक्त चौपाई का जो सम्भव अनुवाद किया वह सही तो है पर तुलसी की उक्ति में दीपक अलंकार का जो चमत्कार है वह अनुवाद में ग़ायब हो गया । तात्पर्य यही कि 'रामचरितमानस' के कलात्मक सौन्दर्य को हिल अपने अंग्रेज़ी अनुवाद में प्रायः रूपान्तरित नहीं कर सके हैं। शत-प्रतिशत रूपान्तरण तो किसी भी अनुवादक के लिए सम्भव नहीं है, पर जिस सीमा तक मूल पाठ के साहित्यिक गुणों की रक्षा अथवा उनका निर्वाह सम्भव हो, उस सीमा तक अनुवाद सफल कहा जाएगा। हिल निश्चित रूप से कविता के बदले कविता नहीं दे सके हैं, पर उनके अनुवाद के महत्व को कम करके भी नहीं आँका जा सकता ।

The holy lake of the acts of Rama में जिस अंग्रेज़ी का प्रयोग किया गया है, वह टकसाली भाषा है और उसमें अर्थव्यंजना की भरपूर शक्ति और प्रवाह है। अपने आप में यह बात कम महत्वपूर्ण नहीं है कि एक अंग्रेज ने हिन्दी के महाकाव्य 'राम-चरित मानस' के अनुवाद का बीड़ा उठाया और उसे सम्पन्न किया । हिन्दी भाषा और साहित्य में सामान्यतः और तुलसी के 'रामचरित मानस' में विशेषतः डगलस हिल की जो गहरी पैठ है उसका परिचय उनके अनुवाद से तो मिलता ही है, उनकी विस्तृत भूमिका भी उनकी विद्वत्ता और हिन्दी में गहरी रुचि की परिचायक है। यदि इस भूमिका का हिन्दी अनुवाद छापा जाए तो मेरे कथन की पुष्टि होगी ।

□ □ □

(पृष्ठ 27 से)

एटकिन्स ने मानस-सृजन का तो गूढ़ जान ही लिया था—It is in this that the chief signiflcancc cf his work lics so that it is much than history or biography । इसके साथ ही उन्होंने राम-भक्ति का आनन्द भी कदाचित अनुभव कर लिया था—उनका मानस का अंग्रेजी अनुवाद करने का उद्देश्य भी संभवतः यही था—The Gospel, or Good news which the Lord Jesus Christ Commanded His followers to take to the whole world of men tells of that answer and that salvatiou. That aim here is to show the earnestness and sincerity of devotion as expressed by such as Tulsidas (with much else commonly accepted but not vitally relevant) which must surely be acceptable to God and have a response from Him.

□ □ □

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

What inspired me to translate 'Shri Ramacharitamanasa'

C. L. Dhodi

I translated Shrī Rāma Charita Mānasa as 'The Gospel of Love—An English Rendering of Tulasī's Shrī Rāma Charita Mānasa (The Spiritual Lake of Rāma's Pastimes)'. Why The Gospel of Love ? Love permeated throughout, Shrī RāmaCharita Mānasa is full of the various Hindi words equivalent to love, such as, Prem, Pyār, Anurāg, Rati, Sneh and Neh. 'Rāmhi kewal premu piyārā' is the central theme of the Poem. As stated in the Introduction to my book, this Gospel of Love is a portrait of the mutual love between God and the devotees on the one hand, and between the various earthly relations on the other.

I should also explain why have I translated the Term 'Mānasa' as 'The Spiritual Lake'. It is not that earthly Mānasarovara. This has been explained by the illustrious author in the beginning of The Poem—

मेधा महि गत सो जल पावन । सकिलि श्रवन मग चलेउ सुहावन ।
भरेउ सुमानस सुथल थिराना । सुखद सीत रुचि चारु चिराना ।।
सप्त प्रबन्ध सुभग सोपाना । ग्यान नयन निरखत मन माना ।।

Good intellect is the field with the heart as the deep spot within. Over the field of receptive intellect fell that purifying water of Rāma's Glories. Contracting and flowing through the attractive path of the inner ear, It entered the beautiful spot in the beauteous heart, and stayed there till it became still more refreshing, cool, tasty, lovely as well as ripe. The seven Cantos are the beautiful Steps (of the Lake) which when seen with the eyes of Gyāna, provide the peace of mind.

मन करि विषय अनल बन जरई । होई सुखी जौं एहिं सर परई ।।

Scorched by the forest-fire of sensuality, the elephant of the mind finds peace by getting into this Lake.

चली सुभग कविता सरिता सो । राम बिमल जस जल भरिता सो ।।

From this Spiritual Lake there flows the River of the charming poetry full of the water of Rāma's Splendid Glories, Shrī Rāma Kathā.

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

Philosophically, The Rāma Charita Mānasa is mostly based on Shrīmad Bhāgavata. Both historically and philosophically, the Bhāgavata begins from where the Mahābhārata ends. Lord Krishna's discourse to Arjuna at the battlefield of Kurukshetra concludes with the precept 'Mām ekam sharanam vraja'. 'Have refuge in Him alone' is thus the base of Shrīmad Bhāgavata, and, thereby, the foundation of Shrī Rāma Charita Mānasa. Instances :

While advising Rāma about the places for His stay in the forests, Sage Vālmīki observes :

सब के प्रिय सब के हितकारी। दुख सुख सरिस प्रसंसा गारी।।
कहहिं सत्य प्रिय बचन बिचारी। जागत सोवत सरन तुम्हारी।।
तुम्हहि छाड़ि गति दूसरि नाहीं। राम बसहु तिन्ह के मन माहीं।।

In His address to the people of Ayodhyā, Shrī Rāma says :

मोर दास कहाइ नर आसा। करइ तौ कहहु कहा बिस्वासा।।

'To profess to be My servant, but to pin hopes on men !
Does such conduct deserve any trust ?'

At several places, Shri Rāma Charita Mānasa elucidates the lofty themes of Shrīmad Bhāgavata. Instances :

जिन्ह हरिकथा सुनी नहिं काना। श्रवन रंध्र अहिभवन समाना।।
नयनन्हि संत दरस नहिं देखा। लोचन मोरपंख कर लेखा।।
ते सिर कटु तुंबरि समतूला। जे न नमत हरि गुर पद मूला।।
जिन्ह हरि भगति हृदयँ नहिं आनी। जीवत सव समान तेइ प्रानी।।
जो नहिं करइ राम गुन गाना। जीह सो दादुर जीह समाना।।
कुलिस कठोर निठुर सोइ छाती। सुनि हरिचरित न जो हरषाती।।

This is based on Shlokas 20-24 of Chapter 3 of Canto II and Shlokas 2-4 of Chapter 80 of Canto X of the Bhāgavata which I have translated as below in my book :

'The man who never hears Lord Krishna's Story has ears like the holes in the ant-hills (passages for the reptiles of vices). The tongue that does not sing His Glories is, like that of the frog, engaged in useless prattle. Better if it was not there. The head that never bows at Lord Krishna's Feet is simply a burden inspite of being resplendent with silken robes and crown. The hands that do not serve and worship Krishna are that of a corpse despite being ornamented with gold bangles. The eyes that do not behold the images, holy spots, rivers, etc., which bring God to mind, are like the 'eyes' on the peacock plume The feet that do not walk to the sacred places connected with The Lord's pastimes are like the

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

stationary objects. The man who has not placed the dust of the feet of the loving devotees of God on his head is a walking corpse. He who fails to appreciate the fragrance of the Tulasī leaf offered at The Lord's Feet is virtually desitute of breath (smelling sense). Of iron is the heart that does not melt and flow to the Lord on hearing or singing His Beauteous Names. When the heart melts, the eyes brim with tears and each and every atom of the body experiences exhilaration.'

'Worthy and true to the name is only the faculty of speech that sings the glories of God. Worthy and true to the name are only the hands that remain engaged in The Lord's service. Worthy and true to the name is only the mind which remembers That All-Opulent One dwelling in all moving and nonmoving entities. Worthy and true to the name are only the ears that hear His Holy Stories. Worthy and true to the name is only the head that bows before the entire universe taking it to be His moving as well as nonmoving image. Worthy and true to the name are only the eyes that find His frame everywhere.'

This is from the Lankā Kānda :

महा महा मुखिआ जे पावहिं । ते पद गहि प्रभु पास चलावहिं ।।
कहइ बिभीषन तिन्ह के नामा । देहिं राम तिन्हहू निज धामा ।।
खल मनुजाद द्विजामिष भोगी । पावहिं गति जो जाचत जोगी ।।
उमा राम मृदुचित करुनाकर । बयर भाव सुमिरत मोहि निसिचर ।।
देहिं परम गति सो जियँ जानी । अस कृपाल को कहहु भवानी ।।

Hanumān and Angada catch the prominent demon generals and hurl them to Shrī Rāma. Vibhīshana tells their names. The Lord grants them a place in his Personal Kingdom ; These rogues, cannibals, fond of Dvija's flesh, get the State that the Yogīs aspire. (Reciting The Rāma Story to Pārvatī, Shiva says ;) Umā ! Soft Hearted and The Mine of Compassion is Rāma. 'May be out of hostile feelings, these night-wanderers do after all remember Me.' This He appreciates, and grants them the Sublime State. Benevolent like Him is who ? tell me, Bhavānī.

In my note below these Chaupāees, I have given the translation of some relevant Shlokas from the Bhāgavatam :

'Therefore, may be out of firm hostility, devotion. fear, love or desire, the mind should anyhow be completely fixed on The Lord. He recognises no difference in these diverse sentiments. My firm conviction is that the intensity with which the man gets immersed in The Lord through hostile sentiments is generally not experienced through the efforts in Bhakti.' (Shrī Nārada Mahārāja in Bhāgavatam VIII/1 (25-26))

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

'While eating, drinking, sleeping, walking, speaking or breathing, Kansa thought of Krishna. He always visualised Him with the dreadful Chakra in Hand. As a result of this constant thinking though out of sheer hostility, he was blessed with the Sublime State of becoming one with The Lord, the goal that even the ascetic Yogīs find difficult to attain.' (X/44(39))

'Clearly visible to all, there emerged a luminous flame from Shishupāla's body and merged in Lord Krishna. Throughout his three births, he constantly remained thinking of The Lord with hostile feelings. By dint of this meditation, he got absorbed in Him.' (X/74(46))

The notes to the translation in my book have over a hundred similar sayings from the Bhāgavatam. At places, Shrī Rāma Charita Mānasa also gives the gist of the Upanishads. Instances :

आदि अन्त कोउ जासु न पावा । मति अनूमानि निगम अस गावा ॥
बिन पद चलइ सुनइ बिन काना । कर बिन करम करइ विधि नाना ॥
आनन रहित सकल रस भोगी । बिन बानी बकता बड़ जोगी ॥
तन बिनु परस नयन बिनु देखा । ग्रहइ घ्रान बिनु बास असेषा ॥
असि सब भाँति अलौकिक करनी । महिमा जासु जाइ नहिं बरनी ॥

These Chaupāees are based on the Shvetāshvataropanishad (III-19), Brihadāranyaka Upanishad (III/7/24), Kena Upanishad (Part I), and Mundakopanishad (I/1/6). Shrī Shrī Vishnu Purāna (V/1/39-41) says the same thing. The notes in my book have my translation of numerous parallel pieces from the ancient Indian scriptures. The Gospel of love has also over 70 similar sayings (translated by me) from the Granth Sāhib. And, there also are the parallel precepts of Bhagavān Mahāvīra and Lord Buddha. The annotations to my translation include many similar sayings from the scriptures and the saints of the other religions. Instances :

Tulasī Dās concludes his great work with the advice :

'RAMA should we remember. 'RAMA' should we sing. Always should we hear Rāma's glories.

The Holy Bible says :

'I Will extol thee, my God, O king; and I will bless the name for ever and ever.

Every day will I bless thee; and I will praise the name for ever and ever.

Great is the Lord, and greatly to be praised; and his greatness is unsearchable,'

The Holy Bible, Old Testament records in Psalm 145/1-3 as given below :

'For whosoever shall call upon the name of the Lord shall be

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

saved.' (Saint Paul-Holy Bible, New Testament, Romans 10-13) 'Glorify the name of the Lord The Most Supreme.' Similarly the Holy Koran says : 'Praise the Lord, praise, praise, praise the Lord. His worship is the unending treasure.' (Maulāna Rūmī)

As stated by me in the Introduction to my book, the Rāma Story in this Poem flows from the Platforms of Philosophy (Gyāna), Loving Devotion (Bhakti), Action (Kamma) and Dedication (Sharaṇāgatī). Bhagavān Shiva recites to Bhagavatī Pārvatī from the Platform of Philosophy, Kāka Bhushundi Mahārāja to Garura Mahārāja from the Platform of Bhakti, Sage Yāgyavalkya to Sage Bharadvāja from the Platform of Karma, and Gosvāmī Tulasī Dās to his audience or himself from the Platform of Loving Surrender. While Rāma is The Supreme Deity of all the four Speakers, Shiva's discourse has emphasis on Philosophy, Kāka Bhushundi on Devotion, Yāgyavalkya's on Action, and Tulasī's on Dedication. The Poem has thus a beautiful blend of Philosophy, Loving Devotion, Action and Loving Dedication. Based on the Vedic Litarature, Shrī Rāma Charita Mānasa Is philosophically monotheistic. The Poem has many enlightening philosophical narration. Instances :

जिन्ह के रही भावना जैसी । प्रभु मूरति तिन्ह देखी तैसी ॥

and

ईश्वर अंस जीव अबिनासी । चेतन अमल सहज सुखरासी ॥

Sometimes, Tulasī indicates an important feature simply by suggestion without describing it in clear terms :

निसि प्रवेस मुनि आयसु दीन्हा । सबहीं संध्यावंदनु कीन्हा ॥
कहत कथा इतिहास पुरानी । रुचिर रजनि जुग जाम सिरानी ॥

The Poem has splendid alliterations. For instance :

दो० बाँध्यो बननिधि नीरनिधि जलधि सिंधु बारीस ।
सत्य तोयनिधि कंपति उदधि पयोधि नदीस ॥5॥

'Bridged has indeed been the aqua-reservoir, the water-reservoir, the water-store, the sea, the master of waters, the store-house of waters, the water-keeper, the ocean, the water-container, and the master of rivers ?'

The ocean is mentioned by ten different names—five in each line. In each name, the Text has a different word for water.

The Poem is full of lofty discourses on morality, the Eternal Code for all for all times, the Sanātana Dharma. Instance :

पर हित सरिस धर्म नहिं भाई । पर पीड़ा सम नहिं अधमाई ॥
निर्नय सकल पुरान बेद कर । कहेउँ तात जानहिं कोबिद नर ॥
नर सरीर धरि जे पर पीरा । करहिं ते सहहिं महा भव भीरा ॥

Shrī Rāma Kathā is wonderfully efficacious for temporal as well as spiritual betterment :

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

रामकथा कलि कामद गाई। सुजन सजीवनि मूरि सुहाई ॥
सोइ बसुधातल सुधा तरंगिनि। भय भंजनि भ्रम भेक भुअंगिनि ॥
जग मंगल गुन ग्राम राम के। दानि मुकुति धन धरम धाम के ॥
मंत्र महामनि विषय ब्याल के। मेटत कठिन कुअंक भाल के ॥
मन कामना सिद्धि नर पावा। जे यह कथा कपट तजि गावा ॥
कहहिं सुनहिं अनुमोदन करहीं। ते गोपद इव भवनिधि तरहीं ॥

As stated in the cover of my book, 'Here is happiness for the afflicted' and 'Peace for the world torn with strife and quarrel.'

Many eastern and the western scholars, savants and saints have paid high tributes to this Poem and the illustrious author. Mahātma Gāndhī regarded this Rāmāyana as the greatest book in all devotional literature,

Friends ask me how did I happen to undertake this voluminous work. This was by Divine grace, Divine inspitation. The Rāma Navamī of Monday the 1st April, 1974, the 400th anniversary of the commencement of The Rāma Charita Mānasa by the Gosvāmī Jī, was celebrated at the national level. I began thinking in the morning of that auspicious day that as a superannuated man, I should try to remain somewhat detached. But how to remain mentally aloof ?

'Why not engage in some sacred writing that keeps you busy the whole day ? Translate Shri Rāma Charita Mānasa in English with annotations.' I started working and remained at my desk till late in the evening, but was able to translate only the first Shloka. I felt sad and dejected. Early next morning, while going through a magazine, I came across a proverb ; 'A thousand miles journey begins but with the first step.' That encouraged me. It took me eight years to complete the book. The entire task was a joy for me.

मूक होइ बाचाल पंगु चढ़इ गिरिबर गहन।
जासु कृपाँ सो दयाल द्रवउ सकल कलिमल दहन ॥
गरल सुधा रिपु करहिं मिताई। गोपद सिंधु अनल सितलाई ॥
गरुड़ सुमेरु रेनु सम ताही। राम कृपा करि चितवा जाही ॥

However, I have no hesitation in saying that I have not been able to bring to the dear reader the melody and the sweetness of the Original.

□

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

उड़िया में रामचरितमानस

डॉ० शंकर लाल पुरोहित

उड़ीसा में श्री जगन्नाथ के रूप में धर्म का एक कल्पवट विराजमान है। इसके आकर्षण से युग-युग में अनगिनत धर्माचार्य यहाँ आते रहे हैं। जगन्नाथ का रूप-रंग-रस हर धर्म-दर्शन के चौखटे के अनुरूप सिद्ध होता है। किसी में पूरी तरह समा भी नहीं पाता। संत तुलसीदास पुरीश्री क्षेत्र पधार कर जगन्नाथ को पहचान भावविभोर हो उठे थे। यहाँ उन्हें अपने मानस का निर्गुण-सगुण उभय ब्रह्म मिल गया। तुलसी की भावना और भक्ति उड़ीसा में अपने अगणित भावुक और भक्तों को देख कर निहाल हो उठी। रामचरित मानस की ओर अकल्पनीय आकर्षण के मूल में यही बात है। मानस की कथा और उसका दर्शन उसके प्राण हैं। बलराम दास की 'दांडी रामायण' से लेकर गंगाधर मेहेर रचित 'तपस्विनी' (सीता वनवास के करुण प्रसंग) तक के राम काव्यों में भक्ति की धारा प्रवाहित होती रही है। भाषाई बंधन और दुराव दोनों मानस को लोक जीवन से दूर रख रहे थे। अतः लोक हृदय तक पहुँचाने के बार-बार प्रयास होते रहे, बार-बार विविध प्रकार से रामचरित मानस उड़िया पाठकों के आगे प्रस्तुत किया गया। फिर भी पिपासा मिटी नहीं। उसका पूरी तरह परिवेषण तो तुलसी के शब्दों में ही किया जा सकता है, बाकी तो प्रयास मात्र हैं, कभी तृप्त नहीं कर पाते। परंतु मानस की इस लोकप्रियता के लिए कवि की काव्य प्रतिभा से अधिक उनकी सहज सुलभ सर्वप्रिय भक्ति भावना उत्तरदायी है।

इस दृष्टि से इतिहास ढूंढ़ना और मानस के अनुवादों की परंपरा का आदि स्रोत निकालना असंभव है। उपलब्ध सामग्री से लगता है कि उड़िया के आधुनिक युग के दिशा-निर्देशक राधानाथ राय ने मानस के दो अंश उड़िया में अनूदित किए थे। प्रकृति प्रेमी राधानाथ ने इसके लिए शरद् ऋतु और वर्षा ऋतु दोनों प्रसंगों को चुना था। इसके आगे उनके अनुवादों का प्रकाशन नहीं हो सका। यह कार्य 1894 ई० में प्रकाशित हुआ है। राधानाथ को इस छोटे-से कार्य ने भी अत्यंत महत्वपूर्ण भूमिका निभाई क्योंकि मूल के काव्य-रूप की उनकी पकड़ गहरी है और तदनुरूप भाषा में दक्षता स्पष्ट है।

इनसे कुछ समय पूर्व का एक और अप्रकाशित अनुवाद 'जयदेव उड़ीसा म्यूजियम' में उपलब्ध है। यह अप्रकाशित पोथी गद्य रूप में मानस का रूपांतर प्रस्तुत करती है। इस पोथी का केवल ऐतिहासिक महत्व है, क्योंकि यह न लोगों के सामने आई है और न इसकी कोई संभावना है।

एक प्रयास कवि गंगाधर मेहर कर रहे थे। मेहर जी ने प्रारंभ की कुछ चौपाइयों

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

का रूपांतरण किया, मगर बाद में जब उन्हें यह पता चला कि ऐसा ही कार्य कोई और मित्र भी कर रहे हैं, तब उन्होंने वह कार्य अधूरा छोड़ दिया। उनका देहावसान 1925 ई० में हुआ। यह कार्य उनके 'कवितामाला' नामक संग्रह में संकलित है। यह भी बीसवीं सदी के प्रारम्भ का कार्य है। वरपाली (मेहर का जन्म एवं कार्य स्थल) उन दिनों मध्यभारत का अंश था। मेहर हिंदी के विद्वान थे और हिंदी भाषी साहित्यकारों से अच्छा संपर्क था। कहते हैं पं० मुकुटधर पांडेय ने मानस का उड़िया में काव्यानुवाद किया था। अब उसका व्यौरा पाना कठिन हो रहा है। परंतु मेहर का वह अंश चर्चा के लिए उपलब्ध है। मानस के प्रारंभिक श्लोक का रूपांतर देखा जा सकता है।

करंति ये नाना अर्थं वर्ण समूहर । सीता राम गुण ग्राम अरण्य विहारी ।
नवराग सर्व छंद सार परिचर, कवीश्वर कपीश्वर बंदइं विचारि ।।

इन पंक्तियों में तुलसी के मूल पाठ के साथ कम से कम छेड़छाड़ की गई है, उसका काव्यात्मक सौंदर्य उसमें उड़िया का पुट देकर अक्षुण्ण रखा है। 'मानस' की पहली चौपाई को उड़िया में वह किस ललित ढंग से रूपांतरित कर रहे हैं आइए देखें :

बंदइं श्री गुरुदेव पंकज चरण। गुरु कृपा सिंधु नर रूपी नारायण।
बंदइं श्री गुरुपद कमल पराग। सुरुचि सुबास जहिं रस अनुराग।

इसी प्रकार बीस-पच्चीस दोहों में सर्वत्र समास पदों को अखंड रखते हुए अनुवाद कार्य किया गया अन्यथा जगह-जगह सरलता की ओर झुकाव रहा है।

काफी चर्चित और प्रसिद्ध अनुवादकों में पहला नाम आता है राजकिशोर कानूनगो का। वे कटक जिले के बालिकुदा हाई स्कूल में लंबे अर्से तक अध्यापक रहे। वह स्कूल में धार्मिक आचरण तथा अध्यात्म चर्चा के कारण सबके आदर के पात्र बन गए। कार्य मुक्त होने के बाद भी शिक्षक का कार्य करते रहे परंतु अनुवाद की ओर अधिक समर्पित भाव से जुट गए। पहले ती श्रीमद्‌भगवद्‌गीता का उड़िया में काव्यरूप किया, बाद में मानस की ओर उसके भक्तिभावों के कारण आकर्षित हुए। इसके प्रकाशन का भार भी स्वयं इनके परिवार-जनों ने ही उठाया। आगे चल कर उड़ीसा साहित्य अकादमी ने 1970 ई० में उन्हें इस अनुवाद कार्य के लिए प्रशस्ति-पत्र देकर विशेष तौर से सम्मानित किया था। 1981 ई० में नब्बे वर्ष की आयु में आपका देहावसान हुआ।

श्री कानूनगो ने मानस का काव्यानुवाद प्रस्तुत किया था। उन्होंने प्रति अर्धाली का अनुसरण करते हुए उड़िया छंद-रूप दिया। चौदह-चौदह अक्षरों के 'पद' में रूपांतरित किया है। राम कथा और कृष्ण कथा में भाषागत अंतर हो सकता है। उड़िया में कृष्णकथा का एक रूप जगन्नाथ दास के भागवत (मूल श्रीमद्‌भागवत का अनुवाद) में उपलब्ध है। परंतु रामकथा का भक्तिसिक्त रूप दुर्लभ है हालांकि 'दांडी रामायण' को (बलराम दास कृत वाल्मीकि रामायण का उड़िया में अनुवाद) उड़ीसा में यथेष्ट सम्मान प्राप्त है परंतु 'मानस' की भक्ति क्रमशः उड़िया भाषी पाठकों को अधिक आकर्षित करने लगी। अतः इस भक्तिरस में अवगाहन कराने के लिए अनेक समर्थ जनों ने भाषा का व्यवधान हटाने का प्रयास किया। तुलसी ने स्वयं जिस प्रकार वाल्मीकि से लेकर मानस की रचना की और उसमें अनेक भाव, अनेक रस, अगणित कथानकों का समावेश किया है, कानूनगो का उद्देश्य वैसा नहीं था। उन्होंने शुद्धतः तुलसी का चिंतन, तुलसी की भक्ति, तुलसी द्वारा

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

इष्ट कथा को उड़िया भाषा में पद्यबद्ध किया है। वह शुद्ध भक्तिभावना में उद्‌बुद्ध हैं। अतः मानस से किसी प्रकार का विचलन नहीं कर रहे हैं।

यहाँ एक बात स्पष्ट परिलक्षित होती है— भाषा का प्रयोग। इसमें शब्द गठन, वाक्य गठन, विभक्ति तथा प्रत्ययों का प्रयोग आदि बहुत मार्जित (Chaste Oriya) भाषा में नहीं किया। सुखद आश्चर्य है कि कानूनगो ने भी उसी लोकोन्मुखी भाषा को अपना आदर्श बनाया जो सहज बोधगम्य हो। तुलसी ने इसी उद्देश्य से बहुत सारे शब्दों को संस्कृत की बजाय लौकिक रूप देने के लिए ग्राम्य बनाया था परंतु कानूनगो ने यह प्रक्रिया नहीं अपनाई क्योंकि उड़िया भाषा का परंपरा के प्रति इतना अधिक आदर है कि ढेरों संस्कृत शब्द आज भी वैसे ही आम बोलचाल में उपलब्ध हैं, उनका तद्‌भवीकरण नहीं हो सका। अतः ऐसे शब्द हिंदी पाठक को बोझिल लग सकते हैं। पर उड़िया पाठकों को बिल्कुल सहज भाव से स्वीकार्य है। इस दृष्टि के कारण कानूनगो की यह कृति काफी लोकप्रिय हुई। कानूनगो जी ने अपना अनुवाद सानद्दता मठ (पुरी) के महंत श्री गंगादास जी महाराज को अक्षर सुनाया और संशोधन किया था। हाँ, भाषा की सजगता तुलसी के स्तर को नहीं पहुँच सकी। अनुवाद में ऐसा लालित्य संभव भी नहीं था।

अनुवाद के समय ऐसी छवि, जो मूल में हो, परंतु लक्ष्य भाषा में न हो, ज्यादा समस्या पैदा करती है। 'अरूप' शब्द के लिए उड़िया में 'सरूप' गढ़ लिया है। उसी प्रकार मिलते-जुलते प्रतीक अथवा उपमानों का सहारा लिया है। इस सिलसिले में लोकाचारों की बात भी आती है। राम विवाह के अवसर पर इनकी भरमार है। जन्म से मरण तक वैदिक कुलाचारों के अतिरिक्त लौकिक रीतियों और परंपराओं का विशेष वर्णन हुआ है। कुछ तो तुलसी के आसपास के क्षेत्र अथवा हिंदी भाषी क्षेत्र की सीमा में आते हैं। इनके रूपांतर में कानूनगो ने बहुत सतर्कता बरती है। वैदिक आचार (वेद विहित आचरण) की परंपरा तो भारत के हर कोने में हू-ब-हू मिल जाएगी क्योंकि वह सर्वमान्य हुआ करती हैं। परंतु क्षेत्रीय या आंचलिक परंपराओं का सम स्तर प्रस्तुत करना अनुवाद में बड़ी चुनौती होता है। इन्होंने 'फेरे लेना' का रूपांतर परिभ्रमण कर दिया है, परंतु 'शाखोच्चार' (शाखाचार) जैसी लौकिक परंपरा के लिए वे 'वेदमंत्र उच्चारण' कहते हैं। राम के दूल्हा बनते समय की विधियों का अनुवाद इस प्रकार है—'कोहबर आनि' (इष्ट मंदिर लेना)। लहकौरि गौरि सिखाव रामहि सीय सन सारद कहै—इसका रूपांतर है 'सीताकु सारदा रामकु सती। वर वधु ग्रास स्नेहे शिखांति ॥'

[अर्थात् सीता को शारदा, राम को पार्वती वर-वधु ग्रास की विधि स्नेह पूर्वक सिखा रही हैं] तुलसी के 'लोकाचार' को कानूनगो ने 'कुलाचार' (कुल परंपरा) कह कर बहुत निकट होने का परिचय दिया है। 'चालति न भुजबल्लि विलोकनि बिरह भय बस जानकी' वाला मार्मिक स्थल आलंकारिक सौंदर्य के लिए प्रसिद्ध है। इसके जरिए तुलसी मन के उल्लास, आनंद, प्रफुल्लता और स्नेह के पारावार को दिखा रहे हैं। कानूनगो जी ने इन सबका अनुभव तो किया, साथ में एक शब्द जोड़कर कुछ अंतर भी दिखा दिया है—

"दिव्य रूप निधि श्रीराम मूर्ति। निज कर मणिकंकण भाति ॥
वैदेही देखि ता उल्लासे भोल। काले न दिशिब भावि बिकल ॥

[दिव्य रूप निधि श्रीराम को कर कंकण में देख उल्लास मग्न हैं। कहीं वह दिखना

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

बंद न हो जाय यह सोच विकल हैं] यहाँ इस उल्लास में जो मग्न स्थिति है, कानूनगो जी ने वहाँ विकलता सन्निविष्ट कर दी है।

प्रतिशब्द (Equivalent words) प्रयोग में कानूनगो को महारत हासिल है। 'अशंका' (शंकारहित) के लिए वे 'निर्भय' जैसे सटीक शब्द का प्रयोग करते हैं। 'प्रभु प्रताप उर सहज असंका।' [अंगद प्रभु श्रीराम का प्रताप स्मरण कर अशंक हो लंका की ओर चला।] इस अर्धाली का कानूनगो ने जो उड़िया रूप दिया उसकी बानगी देखिए : 'स्वभावे निर्भय स्मरि महिमा प्रभुर' [प्रभु की महिमा स्मरण कर वह स्वभाव से निर्भय हो गया]। इस तरह समानार्थक धरातल है। एक और स्थल को लिया जा सकता है—

गयउ सभा दरबार तव, सुमिरि राम पद कंज।
सिंह ठवनि इत उत चितव धीर वीर बल पुंज ।।

अंगद की इस शोभा और कार्यक्षमता का परिचय कानूनगो इन शब्दों में देते हैं—

राम पद पद्म सुमरि सभाद्वारे आगत।
धीर वीर बली अंगद चांहे केशरीवत ।।

तुलसी के दोहे का कोई अर्थ या काव्यगत सौंदर्य क्षतिग्रस्त नहीं होता। इस दृष्टि से कानूनगो का अनुवाद प्रवहमान भाषा में बना है। ब्रज-अवधी से अपरिचित पाठक के लिए तद्नुरूप उड़िया का ऐसा रूप चुना है जो उड़ीसा के हर क्षेत्र के निवासी के लिए बोधगम्य होगा। आंचलिकता को सतर्कता से अपनी सीमा में रखा है। उसे पूर्णता साधु भाषा (Chaste Oriya) में भी नहीं रखा, वरना वह सिर्फ नागरी उड़िया (Urban Oriya) बनकर जन सामान्य की पहुँच से परे हो जाती। इस प्रकार का यह प्रयास काफी प्रसिद्ध हुआ।

इस युग में उड़ीसा के ठेठ पश्चिम इलाके में अनुवाद का उल्लेखनीय प्रयास हुआ। स्वपनेश्वर दास, बरगढ़ (जिला सबलपुर) में पैदा हुए और यहीं उनकी कर्म-स्थली थी। इनका राजकीय कार्य के नाते बामड़ा, बामंडा, कलाहांडी आदि राजघरानों से अच्छा संबंध था। मूलतः वे कवि थे। इनकी साहित्य प्रतिभा का राजघरानों ने बहुत आदर किया मगर स्वपनेश्वर तो जनता के कवि थे। वह निरभिमानी और मिष्टभाषी साहित्यकार थे। उनके योग्य पुत्र अनिरुद्धदास बहुत बड़े अनुसंधाता और वरिष्ठ प्रशासक (आई. ए. एस.) थे। संबलपुर में उन्होंने 'साधना' प्रेस स्थापित किया जो साहित्यिक कार्यकलापों का केंद्र रहा है। आगे चलकर वहीं से 'हीराखंड' मासिक पत्र निकला। दास जी ने यहीं रामचरित मानस का अनुवाद चार-पाँच वर्ष तक अनवरत मेहनत से संपन्न किया।

इनके अनुवाद का प्रकाशन 1921 ई० में हुआ। भूमिका में उड़िया के मधुसूदन राव जैसे महान् कवि ने अनुवाद की प्रशंसा की है। स्वपनेश्वर जी ने दोहों का क्रम तो रखा परंतु चौपाइयों के अनुसार वर्गीकरण नहीं किया। सीधे अनुवाद करते चले गए। इसी समय मानस का संपादन, मानक संस्करण का प्रयास चल रहा था। क्षेपक युक्त अनेक संस्करण बाजार में चल रहे थे। स्वपनेश्वर जी ने इसी की परंपरा में कुछ क्षेपक जोड़े हैं। अनुवाद के समय या तो वे स्वयं कुछ अंश रच कर सन्निविष्ट कर देते हैं अथवा किसी क्षेपक का अनुवाद कर रख देते हैं। परंतु उन्होंने ऐसे संभावित सभी क्षेपकों का उल्लेख कर दिया है। अतः मानस के अनुवाद और स्वपनेश्वर जी द्वारा जोड़े अंश पहचानने में कोई

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

कठिनाई नहीं होती। इस काव्यानुवाद में हर अर्धाली 14 अक्षरों की है। इसे तुकांत प्रस्तुत किया है। दोहे, सोरठे, छंद, चौपाई आदि का वैविध्य मिटा कर उड़िया में सिर्फ 'पद' रखा है। जहाँ संवाद आते हैं, वे उद्धरण चिन्ह लगाकर स्पष्ट कर देते हैं। इस प्रकार कथा और कथोपकथन में स्पष्टता बनी रही।

इनके अनुवाद के लिए आधार प्रति के संबंध में स्पष्ट सूचना नहीं मिलती। क्षेपकों का समावेश होने के कारण मूल का रूपांतर चाहने वाले दुविधा में पड़ जाते हैं। हर प्रसंग के अंत में 'स्वकृत' (अपना लिखा) जोड़ा गया है। इसमें अधिकतर स्थलों पर वंदना, किवदंतियाँ आदि आती हैं। मूल से जुड़ने वाला श्रद्धालु पाठक अन्य तत्व (उनका साहित्यिक स्तर कुछ भी हो) पाकर कठिनाई का अनुभव करता है। कहीं क्षेपकों को संक्षिप्त किया है तो कहीं परिवर्तित। कहीं क्षेपक अंशों को छोड़ भी दिया गया है। इस प्रकार काफी स्वतंत्रता से काम लिया है। परंतु मूल अंश के रूपांतर में एकदम वस्तुनिष्ठ रहे। लोकाचारों का रूपांतरण पूरी निष्ठा से किया है। बरगढ़ का इलाका हिंदी भाषी क्षेत्र की सीमा पर है उनका हिंदी ज्ञान काफी गहरा है। उस क्षेत्र, लोकाचार, लोकोक्तियाँ आदि भी उनके लिए अपरिचित नहीं। अतः मूल के यह काव्यानुवाद बहुत निकट रह सका है 'पीत उपरना काखा सोती···' इस प्रसंग में कहते हैं—

'पीत उपराण तहुँ दोषड़ा रूपरे,
रहिछि मणि युकत वेनि अंचलरे ॥'

उसी प्रकार विवाह में जेवनार के समय गाली का प्रसंग लिखा है। उसका वर्णन इस प्रकार है—

'भोजन काले दिअंति सुमधुर गाली।
नारि पुरुषंक नाम धरि बाली ॥
समयानुसार गालि मध्य लागे भल।
श्रवणे हसंति राजा सह निज दल ॥

इस प्रकार वह यहाँ मूल के काफी समानांतर स्थिति बनाए रखने में काफी सफल हुए हैं।

श्री कानूनगो के अनुवाद को ही आधार बनाकर श्री गणनाथ दास ने एक और अभिनव प्रयास किया है। दास जी (1913) उड़ीसा में प्रतिष्ठित साहित्यकार हैं। कटक जिले में जन्मे, किंतु लंबे अर्से तक प्रशासनिक पद पर पश्चिम उड़ीसा में रहे। अतः हिंदी से सीधा संपर्क रहा। कबीर और तुलसी के साथ प्रतिबद्धता होने के कारण उन्हें मानस ने खूब आकर्षित किया। तुलसी व कबीर के नैतिक मानदंडों में विशेष अंतर नहीं। अतः गणनाथ जी इन दोनों के गहन अध्येता बन गए। इसी दौरान उन्होंने मानस से सूक्तियाँ चुन-चुन कर संग्रह कर डाला। उन्हें काण्ड क्रमानुसार सजा कर मूल अर्थ कानूनगो से लिया है। चौपाइयों का लिप्यंतरण (उड़िया में) तथा काव्यार्थ (पंक्तिवारी) देने के बाद उसका मर्मार्थ स्पष्ट किया है। गणनाथ जी ने विश्लेषण के समय नीति संबंधी अंशों को सांप्रतिक सामाजिक स्थिति के संदर्भ में परख कर देखा है। मानस का यह दृष्टिकोण उसे और भी प्रांजल तथा प्रामाणिक बना देता है। गणनाथ जी की भाषा अत्यंत सरल, सहज और सुललित है ताकि सामान्य पाठक अपने लिए इन सूक्तियों की गूढ़ता को समझ सके।

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

इसी समय में एक और अनुवाद कार्य हुआ है। जंगबंधु महापात्र द्वारा। इनका जन्म 1904 ई. में गणेश चतुर्थी के दिन पुरी में हुआ। इनके प्रारंभिक दिन आर्थिक कठिनाई में बीते पर पढ़ाई में सदा प्रथम आते रहे। 1930 ई० में पटना विश्वविद्यालय से एम. ए. रिकार्ड नंबरों से पास किया। वह उसी वर्ष डिप्टी कलक्टर बने। 1960 में उड़ीसा के दक्षिण अंचल के R.D.C. पद से सेवा निवृत हुए। अर्थनीति पर उनकी पुस्तक A Treatision Indian Economics काफी प्रसिद्ध है। वह अंग्रेजी, उड़िया, हिंदी, संस्कृत के प्रकांड विद्वान थे। उनके दर्जनों उपन्यास, कविता संकलन प्रकाशित हुए हैं। अंग्रेजों ने उन्हें राय साहब की उपाधि से विभूषित किया। बाद में उड़ीसा साहित्य अकादमी ने उन्हें उनकी साहित्यिक कृतियों के लिए पुरस्कृत किया था।

बचपन से ही जगबंधु बाबू धार्मिक भावनाओं से ओत-प्रोत थे। उन्होंने मानस के रूपांतरण में चौपाई के लिए चौदह अक्षरों वाले 'पद' का प्रयोग किया है। दोहों के अनुवाद में बीस-बीस अक्षरों की दो-दो पंक्तियों का प्रयोग किया है। भावों के अनुकूल भाषा में परिवर्तन इनके अनुवाद की प्रमुख विशेषता है। वह बलराम दास की तरह अति ग्राम्य प्रयोगों से लेकर शिष्ट संस्कृतनिष्ठ पदावली का प्रयोग करते हैं। भाषा का प्रवाह पाठक को मुग्ध कर देता है। उन्होंने लोकाचार एवं लौकिक विधि-विधानों के अंतरण में काफी सहृदयता का परिचय दिया है। 'लहकौरि' के अवसर पर लिखते हैं—

इष्टदेवपुरे कुमर कुमारी
नेइ कुल कन्या गणे।
लोकाचार विधि कराइ मंगल
गाआंति हर्षित प्राणे॥

वह राम की छवि कंकण में देख कर सीता के स्थिर होने के दृश्य को कितनी सूक्ष्मता से रूपांतरित करते हैं—

श्रीरामंक छबि पड़ि थाए
सीता कर मणिपरे।
हात आखि तेणु स्थिर रखिष्यांति
दर्शन वियोग डरे॥

यहाँ महापात्र जी ने 'दर्शन' शब्द लाकर वियोग की ओर एक सार्थक संकेत किया है। इस प्रकार अनुवाद की संप्रेषणीयता में काफी वृद्धि हो जाती है। महापात्र अपनी कवि प्रतिभा के कारण अत्यंत दुरूह स्थलों को भी सहज उड़िया में रूपांतर कर लेते हैं। परंतु इस अनुवाद के प्रकाशन में सबसे खटकने-वाली बात है मुद्रण संबंधी असंख्य त्रुटियाँ। दस-बारह संस्करण के बाद तक संशोधन नहीं किया जा सका। अतः भावग्रहण में पाठक बहुत कठिनाई का अनुभव करता है। बीच-बीच में संश्लिष्ट भाव को उन्होंने व्यास पद्धति में अनूदित किया है। प्रारंभ में तो मानस के अनेक वर्णनात्मक अंशों को संक्षिप्त कर दिया था। बाद में काव्यसौंदर्य का अनुभव कर पूरी तरह संशोधित किया। अब गीताप्रेस संस्करण के अनुरूप काव्यांतरण उपलब्ध है। उसमें मूल मानस के अनुसार पारायणों की आश्यकता के आधार पर विभाजन नहीं मिलता।

एक और गद्यानुवाद उपलब्ध है साधुचरण मिश्र का। इसे राधारमण पुस्तकालय ने

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

प्रकाशित किया है। इसमें न तो लेखक परिचय है और न प्रकाशक की सूचना। अनुवादक ने गद्यरूप में उड़िया अर्थ जोड़ते हुए मूल का उड़िया लिप्यंतरण दिया है। काव्य छटा के लिए किसी जोड़-घटाव की ज़रूरत नहीं पड़ी। न कहीं कोई टीका-टिप्पणी की गई है। मानस से जुड़ने का यह सीधा प्रयास है। अनुवादक बीच में भाषा को हटा कर पाठक को कहीं कोई निर्देश नहीं देता।

श्रीनाथ मिश्र और बिछंद चरण पट्नायक के अनुवाद अत्यंत उच्चकोटि के हुए हैं। बिछंद बाबू अपने व्यस्त जीवन से मानस के लिए इतना समय निकाल खूब सटीक अनुवाद कर सके हैं, यह आश्चर्य की बात है। उड़िया भाषा का लालित्य उनके अनुवाद में पग-पग पर झलकता है। एक गद्यानुवाद किसी अपरिचित संत ने भी किया था। वह अपने पीछे अपना कोई परिचय नहीं छोड़ गए हैं। इस पांडुलिपि को सही रूप डा. सुरेशचंद्र नंद ने प्रदान किया। सम्पूर्ण देवनागरी लिपि में एवं इसका उड़िया अनुवाद भी देवनागरी लिपि में भुवनवाणी ट्रस्ट, लखनऊ द्वारा प्रकाशित हुआ है।

ब्रह्मपुर (गंजाम) के पंचानन मिश्र एवं जगन्नाथ मिश्र द्वारा किये गये अप्रकाशित अनुवादों की सूचना भी मिलती है। ऐसी अनेक अप्रकाशित पांडुलिपियां उड़ीसा के विभिन्न भागों में उपलब्ध हैं जिनका सर्वेक्षण और परिगणना होना बाकी है। परंतु इनमें बी.सी. पाणी महोदय का अनुवाद अत्यंत मौलिक है। ढेंकानाल जिले के इस वैज्ञानिक ने शुरु में तो पश्चिम उड़ीसा में व्यास कार्य किया। सन 1973 से वह मानस के प्रचार कार्य में लग गए। मानस में जिन्हें रुचि होती उन्हें वे देवनागरी लिपि सिखाते, घर में बैठकर कक्षाएं लेते क्योंकि इनका कहना है—भाषा से ही भाव आता है। देवनागरी लिपि में मात्रा प्रयोग बना रहता है। ज्यादातर अनुवादों में, उन्हें लगता है मानस का सूक्ष्म मात्रा प्रयोग उपेक्षितरह जाता है। ध्वनि तत्व के मर्मज्ञ पाणी जी का 'हनुबाहुक' के अनुवाद की साठ हज़ार प्रतियाँ तो हाथों हाथ समाप्त हो गईं। मानस का 'उत्तर कांड' उन्होंने गद्य रूप में किया, पर संतोष नहीं हुआ। बाद में पूरी सतर्कता से उसका काव्य रूप प्रकाशित हुआ। वह बाकी मानस का रूपांतरण करने में लगे हैं।

रामचरित मानस का उड़िया भाषा में इतनी बार अनुवाद हो चुका है कि कोई भी अध्येता अचंभे में पड़ जाता है। हरेक श्रद्धालु कुछ न कुछ नवीनता रखना चाहता है। साथ में यह प्रवृत्ति भी है कि प्रत्येक अनुवादक मूल मानस को या तो देवनागरी में रखता है या फिर उड़िया लिपि में। सिर्फ़ उड़िया में रूपांतर अथवा गद्य व पद्य में अनुवाद करने की ओर रुचि बहुत कम लोगों में दिखाई देती है। इन सभी में मानस के प्रति अत्यंत आदर का भाव है और भक्ति पूत हृदय से मानस के रूपांतरण में मन लगा हुआ है। कभी उड़ीसा ही भक्ति, वह भी सगुण भक्ति, राम की भक्ति का केंद्र था। समूचा राज्य राम के जीवन संबंधी स्मृति चिन्हों (जैसे वनवास में यात्रा, सीता के वनवास में अनेक स्थल जुड़े हैं) को जीवंत रूप में समाये हुए है। आज भी हर अध्येता यह कहते नहीं थकता—'एहि महँ रघुपति नाम उदारा' और उसे मानस के अनुवाद से उस समूची रघुनाथ भक्ति पद्धति की प्रक्रिया से जीवंत होकर गुज़रना पड़ता है।

मानस का आदर उड़ीसा के सामान्य जन के हृदय में है। सारा कार्य जगन्नाथजी की प्रीत्यर्थ किया जा रहा है।

□

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

कन्नड़ में मानस के अनुवाद

सु. रामचन्द्र

लगभग चालीस साल पहले की बात है। मैं काशी में राजघाट स्थित बेसेंट कालेज में अध्यापक था। एक दिन वयोवृद्ध कन्नड़भाषी हिन्दी विद्वान मान्यवर शंभु भट्ट मुझसे मिले और 'मानस' के बाल काण्ड का कन्नड़ अनुवाद दिखाया। मुक्त छंद का यह अनुवाद छप गया था। बिहार के तत्कालीन राज्यपाल स्व. श्री रं. रा. दिवाकरन ने अनुवाद की सराहना की थी। मुझसे भी अनुवादक महोदय ने कुछ लिखने को कहा। 'मानस' का यह पहला कन्नड़ अनुवाद मेरे देखने में आया था। पुस्तक की एक प्रति उन्होंने प्रेम से भेंट की थी।

श्री शंभु भट्ट दक्षिण कन्नड़ ज़िले के निवासी थे। हिन्दी पर उनका अच्छा अधिकार था और कन्नड़ के प्रसिद्ध विद्वान थे। वह भावानुवाद था। साँस्कृतिक और साहित्यिक आदान-प्रदान द्वारा भावैक्य को बल प्रदान करने का यह सत्प्रयास था।

मैसूर रियासत में विश्वविद्यालय स्तर पर श्रद्धेय गुरुवर ना. नागप्पाजी के अथक परिश्रम से 1938 ई. में हिन्दी ऐच्छिक विषय स्वीकृत हुई। तब से मध्यकालीन हिन्दी साहित्य के विशेष अध्ययन की ओर हम कन्नड़भाषियों का ध्यान गया। अयोध्याकाण्ड पाठ्यक्रम में था। पूज्य नागप्पाजी ने अवधी की विशेषताओं से हमें परिचित कराया और मानस के अध्ययन में हमारी अभिरुचि जगाई। नागप्पाजी की प्रेरणा से पहले सत्र के जो दो छात्र हिन्दू विश्वविद्यालय एम. ए. करने 1942 में गए उनमें मेरे सहपाठी डॉ. एम. के. भारती रमणाचार्य थे। काशी में कीर्ति शेष आचार्य विश्वनाथ प्रसाद मिश्र जी की कृपा से तुलसी, जायसी, सूर, बिहारी आदि कवियों की रचनाओं का बोध हुआ। एम.ए. में मानस के प्रथम और अंतिम सोपान पाठ्यक्रम में थे। परीक्षा की दृष्टि से हुए अध्ययन के परिणामस्वरूप मानस का 'दरस' भर हुआ। 'परस, मज्जन अरु पाना' संभव न था। परम आदरणीय पं. विजयानंद त्रिपाठी द्वारा संपादित मानस के बारे में श्रद्धेय आचार्यवर केशवप्रसादजी के व्याख्यान सुनने का सौभाग्य मिला। धीरे-धीरे उसके दर्शन और काव्य सौंदर्य को पहचानने की कोशिश शुरू हुई। गीता प्रेस द्वारा समय-समय पर प्रकाशित 'कल्याण' विशेषांकों से इस दिशा में गति बढ़ी। गीता प्रेस को ही यह श्रेय मिलना चाहिए कि उसके प्रकाशनों से प्रभावित होकर पूज्य बापू द्वारा रामराज्य का जो आदर्श अपनाया गया था उसकी खोज 'तुलसी' में करने की ओर भारतवासी प्रवृत्त हुए।

 Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

कन्नड़ में 'श्रीरामचरितमानस-बालकाण्ड (पूर्वार्ध)' का गद्यानुवाद कर्नाटक हिन्दी प्रचार सभा, गुलबर्गा से 1965 ई. में प्रकाशित हुआ। गुलबर्गा स्थित नूतन विद्यालय के शिक्षक स्व. दत्तात्रेय सुब्बराव हेरूर इसके अनुवादक हैं।

'हेरूर मास्तर' के नाम से लोकप्रिय कन्नड़-हिन्दी के विद्वान दत्तात्रेय जी का जन्म इस सदी के पहले दशक में गुलबर्गा ज़िले में हुआ था। मराठीभाषियों द्वारा स्थापित नूतन विद्यालय में हेरूर मास्तर कन्नड़ के शिक्षक नियुक्त हुए। गुलबर्गा उन दिनों निजामशाही में था जहां उर्दू, मराठी और अंग्रेज़ी का ही मान था। कन्नड़ कोने में पड़ी सिसक रही थी।

हेरूर मास्तर कन्नड़-मराठी के प्रेमी थे। हिन्दी के जानकार थे। उर्दू से वाक़िफ़ थे। संस्कृत से परिचित थे ही। नागरी लिपि और हिन्दी से उनका गहरा लगाव था। यहां तक वह बढ़ा-चढ़ा था कि वे देवनागरी लिपि को ही कन्नड़ लिपि का मूल साबित कर देते थे और हिन्दी को भारत-भारती मानते थे। उन्होंने कन्नड़-मराठी और कन्नड़-हिन्दी इन भाषाओं मे उपलब्ध शाश्वत साहित्य के आदान-प्रदान से भावैक्य को पोषित करने और संस्कृति-सेतु बनाने का सतत प्रयास किया। समर्थ रामदास रचित-मराठी 'मना चे श्लोक' का 'मनोबोधे' नाम से कन्नड़ में रूपांतर किया। कन्नड़ के बहुश्रुत आशुकवि सर्वज्ञ की द्विपदियों को उसी छंद में हिन्दी में उतारने का उद्योग किया। तुलसी के मानस के बालकाण्ड का पूर्वार्ध मूल के साथ दोहा-चौपाई पद्धति पर अनूदित किया। सूर के चुने हुए पदों को पदशैली में ही कन्नड़ में रूपान्तरित किया। सूर के पद पांडुलिपि की सीमा पार न कर सके। बाकी तीनों प्रकाशित हैं।

गुलबर्गा के ब्रह्मपुर मुहल्ले के निवासी हेरूर मास्तर का मानस का कन्नड़ पद्यानुवाद कहीं भाव-अनुवाद है तो कहीं पूर्ण अनुवाद है। इसमें उन्होंने आरम्भ से 183 सोरठों का अनुवाद किया है। मूल नागरी लिपि में है और अनुवाद कन्नड़ में है। अनुवादक ने मूल छंद को ही क़न्नड़ में खपाने की कोशिश की है। दोहों के अनुवाद में कहीं-कहीं इनकी पकड़ गज़ब की मिलती है। अर्धालियों के अनुवाद में वह रवानगी नहीं है। कुछ उदाहरणों से यह बात स्पष्ट हो जाएगी :—

मूल— भाग छोट अभिलाषु बड़ करउँ एक बिस्वास।
पैहहिं सुख सुनि सुजन सब खल करिहहिं उपहास॥

कन्नड़— भाग्य अल्प अभिलाषे घन इहुदु ओंदु विश्वास।
योग्य जनरू सुखिपरु खलरू गेवरूपहास॥

× × ×

मूल— प्रभु तरु तर कपि डार पर किए आपु समान।
तुलसी कहूँ न राम से साहिब सील निधान॥

कन्नड़— मरदडि प्रभु कपि टोंगेयलि बगेदनु तन्न समान।
ओरेद तुलसि दोरे राम सम इररै शील निधान॥

× × ×

मूल — मज्जहिं सज्जन वृंद बहु पावन सरजू नीर।
जपहिं राम धरि ध्यान उर सुन्दर स्याम सरीर॥

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

कन्नड़— मीवरू सज्जन वृंद वहु पावन सरयू नीर।
भावदि ध्यानिसि जपि सुवरु सूंदर श्याम शरीर ॥

× × ×

मूल— अब तें रति तब नाथ कर होइहि नामु अनंगु।
बिनु बपु ब्यापिहि सबहि पुनि सुनु निज मिलन प्रसंगु ॥

कन्नड़— इंदिर्निद रति तव पतिगे अप्पुदु नाम अनंग।
पोंददे वपुव व्यापिसुवनु आलिसु मिलन प्रसंग ॥

ऊपर जो नमूने हैं वे इस बात के सबूत हैं कि हिन्दी की समूची पदावली कन्नड़ में ज्यों की त्यों ली जा सकती है। कारक और क्रिया प्रत्यय मात्र वदल जाते हैं। अर्धालियों के अनुवाद में कहीं-कहीं इसकी झलक मिलती है :—

मूल— कीन्ह प्रस्न जेहि भांति भवानी। जेहि विधि संकर कहा बखानी॥
सो सब हेतु कहब मैं गाई। कथा प्रबंध विचित्र बनाई ॥

कन्नड़— गिरिजेयु प्रश्नेय केलिदलेंतु। परशिव उत्तर हेलिदनेंतु ॥
सरसदि एल्लव हेलुवे हाडि। वरकथे प्रवंध विचित्र रचिसि॥

मूल— मनु हठ परनि सुनइ सिखावा। चहत वारि पर भीति उठावा ॥
नारद कहा सत्य सोइ जाना। बिनु पंखन्ह हम चहहिं उड़ाना ॥

कन्नड़— धरिसिदे हट मन हेललु केलदु। नीरलि गोडेय निलिसलु बयसिदे ॥
नारद हेलिदुद निज बगेदु । हारलु बयसुवे रेक्केगबल्लिदे ॥

मूल— नारद बचन सगर्भ सहेतू। सुंदर सब गुन निधि बृषकेतू ॥
अस बिचारि तुम्ह तजहु असंका। सबहि भांति संकरु अकलंका ॥

कन्नड़— सुरमुनि वचन सगर्भ सहेतु। चारु सर्वगुण निधि वृषकेतु ॥
परियालोचिसि बिडु भय शंका। सरुव विधदि शकर अकलंक ॥

ये उदाहरण इस बात के द्योतक हैं कि कन्नड़ में हिन्दी छंदों का निर्वाह करने का प्रयास हुआ है और अच्छा हुआ है।

कन्नड़ में उपलब्ध दूसरा अनुवाद 'श्रीरामचरितमानस' (संक्षिप्त तुलसी रामायण) है। इसके अनुवादक श्रद्धेय स्व. गुरुनाथ जोशी जी हैं। यह गद्यानुवाद भारतीय साहित्य मंदिर नाना दीक्षित वाड़ा, लैन बाज़ार, धारवाड़ से 1974 ई० में दुबारा मुद्रित-प्रकाशित है। इसका पहला संस्करण 1968 ई० में निकला था। उस समय यह मिंचिन वल्लि, धारवाड़ से प्रकाशित हुआ था। जोशीजी ने अपनी षष्टिपूर्ति के पावन पर्व पर यह अनुवाद पूरा किया था।

स्व. गुरुनाथ जोशीजी धारवाड़ जिले के कलघटगि के निवासी थे। धारवाड़ में विद्वान् परीक्षा पास करने के बाद आप टीचर्स ट्रेनिंग कालेज में हिन्दी के शिक्षक नियुक्त हुए। इस पद पर काम करते हुए आपने स्वतंत्रता आंदोलन में सक्रिय भाग लिया। अकोला नमक सत्याग्रह के मौक़े पर आप बंदी बनाए गए और कारावास में रहे। जेल में रहते समय आपने साथी सत्याग्रहियों को हिन्दी सिखाई। प्रेमचन्द जी के कथा साहित्य को पहली बार कन्नड़ में अनूदित करने का श्रेय आप ही को है। शरत् वाबू की कृतियों का भी कन्नड़ में

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

रूपांतर किया है । आप कन्नड़, हिन्दी, मराठी, बाङ्ला, संस्कृत, अंग्रेज़ी के अच्छे ज्ञाता थे। आपने शिक्षा विभाग की सेवा से अवकाश ग्रहण करने के बाद हिन्दी में एम. ए. पास किया और धारवाड़ में जनता शिक्षण संस्था द्वारा संचालित कालेज में प्राध्यापक नियुक्त हुए। आप देश भर घूमे । समकालीन साहित्यकारों और जाने माने नेताओं से आपका निकट का सम्पर्क था । काशी विद्यापीठ के स्नातक होने के नाते आपका वर्चस्व राष्ट्रीय स्तर पर अंत तक बना रहा । साहित्य अकादेमी और नेशनल बुक ट्रस्ट की ओर से आपके अनेक अनूदित ग्रन्थ प्रकाशित हैं । इनके अनुवाद डा. शिवराम कारन्त 'फिर मिट्टी की ओर' और डॉ. के. वि. पुट्टप्पा का 'कानूर चौधरानी' बड़े सफल अनुवाद माने जाते हैं। कबीर और नानक के पदों का कन्नड़ में अनुवाद किया है । कन्नड़-हिन्दी भाषा-साहित्य को निष्ठा के साथ एक दूसरे के निकट लाने का सत्प्रयास आजीवन आपकी साधना रही है ।

प्रथम संस्करण के संपादक बुलि विदुमाधवाचार्य कर्नाटक के आस्थावान् साहित्यसेवी और प्रसिद्ध देशभक्त थे । उन्होंने लिखा है '1932 ई. में यरवडा जेल में मेरी भेंट साबरमती आश्रमवासी रमणीकलाल मोदी से हुई । हम दोनों ने तुलसी रामायण पढ़ी । तभी कन्नड़ में इसका अनुवाद करने की प्रबल इच्छा हुई । प्रिय जोशी जी ने यह महत्वपूर्ण कार्य 1968 ई. हमारे लिए पूरा किया । मैं षष्टिपूर्ति के इस पावन पर्व पर जोशीजी का हार्दिक अभिनंदन करता हूँ और पुस्तक माला के लिए अनुवाद सुलभ कराने हेतु उनका बड़ा ऋणी हूँ ।'

यह गद्यानुवाद है और लगभग 300 पृष्ठों में है । इसमें प्रथम सोपान से सप्तम सोपान तक पुनर्कथन से बचते हुए बड़ा सुवाच्य अनुवाद कन्नड़भाषियों को मिला हैं । हर सोपान में मूल की कतिपय पंक्तियों का कन्नड़ में लिप्यंतरण भी है । इससे अवधी भाषा की उच्चारण संबंधी विशेषताओं का भी थोड़ा बहुत ज्ञान सुलभ हो सका है ।

कन्नड़ का दूसरा गद्यानुवाद डॉ. एन. एस. दक्षिणमूर्ति का है । आप मैसूर जिले के नंजनगूड के निवासी है । इस समय मैसूर विश्वविद्यालय में हिन्दी के रीडर हैं । कन्नड़, तेलुगु, हिन्दी, संस्कृत, अंग्रेज़ी के प्रकांड पंडित हैं । आपने तेलुगु उपन्यास सुमति' का कन्नड़ में अनुवाद किया है । हिन्दी में आपकी रचनाएँ हैं—(1) पंप रामायण की कथा (इस पर केंद्र सरकार का पुरस्कार मिला है) (2) हिन्दी और तेलुगु कहावतों का तुलनात्मक अध्ययन (3) भास का नाट्यलोक (4) राष्ट्र की वेदी पर (5) साहित्य सरिता और (6) मूर्तिशतक ।

आपने मानस के 'सुंदरकाण्ड' का अनुवाद किया है जो 'तुलसीदासर श्रीरामचरित मानस सुंदरकाण्ड' शीर्षक से प्रकाशित है । इसका प्रकाशन श्री प्रकाशन, विजय निवास, राष्ट्रपति रोड, नंजनगूड (मैसूर ज़िला) ने 1977 ई. में किया । इस अनुवाद की यह विशेषता है कि इसमें सुन्दरकाण्ड का कन्नड़ में अविकल अनुवाद दिया है और साथ में 'मानस सुधा' के नाम से प्रबुद्ध आलोचनात्मक टिप्पणियाँ हैं । इन टिप्पणियों में मूल की पंक्तियों के आशय को वाल्मीकि और अध्यात्मरामायणों के श्लोकों का हवाला देते हुए स्पष्ट किया गया है । यह कोरा अनुवाद न होकर तुलसी का शास्त्रीय मूल्यांकन भी है । इस संदर्भ में विद्वान् अनुवादक की भूमिका से यह उद्धरण उनकी इस नई दृष्टि को स्पष्ट करता है । वे लिखते

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

हैं—'सुंदरकाण्ड 'मानस' का ज्ञान-सोपान है। इसमें श्रीराम का दिव्य चरित है ही। आदर्श भक्त हनुमान और विभीषण के भी वृत्तों से वह अनुस्यूत है। अतः यह अतिरम्य है, त्रिवेणी की भांति परम पवित्र भी। गंगा-से निर्मल, हिमगिरि-से उन्नत और सागर-से गंभीर इस ग्रंथ के अध्ययन में मानस सुधा की टिप्पणियाँ सहायक होंगी, ऐसा मैं मानता हूँ। श्रीराम की कृपा से यह प्रकट हो पाया है। सदस्यों का इससे यह परितोष हो तो मेरा श्रम सार्थक होगा। 'सियाराममय सब जग जानी करउँ प्रनाम जोरि जुग पानी।'

अनुवादक ने मूल वाल्मीकि, अध्यात्म रामायण, हनुमन्नाटक, भागवत गीता आदि का हवाला देकर यह प्रमाणित किया है कि कलियुग के वाल्मीकि तुलसी ने आदिकवि की आर्ष परंपरा को युगीन संदर्भ में अधिक प्रासंगिक बनाया है और उसे आगे बढ़ाने में काफी सूझ-बूझ दिखाई है।

कन्नड़ का तीसरा गद्यानुवाद डॉ. एम. के· भारतीरमणाचार्य जी का है। कर्नाटक के शिमोगा ज़िले में पैदा हुए भारतीरमणाचार्य जी मैसूर विश्वविद्यालय में इंटरमीडिएट और बी.ए. में मेरे सहपाठी थे। दोनों एक ही विषय लेकर पास हुए और 1942 ई. में एम. ए. हिन्दी का अध्ययन करने काशी हिन्दू विश्वविद्यालय गए। हम दोनों को श्रद्धेय गुरुवर नागप्पा जी के मार्गदर्शन में मैसूर में अध्ययन करने का सौभाग्य मिला।

कन्नड़, हिन्दी, संस्कृत, बाङ्ला, अंग्रेजी आदि के मर्मज्ञ भारतीरमणाचार्य जी ने 'रामकथा की परंपरा और तुलसी' विषय पर अनुसंधान किया और नागप्पाजी के मार्गदर्शन में पीएच.डी. हुए। कन्नड़-हिन्दी के बीच स्नेह-सेतु मज़बूत बनाने में आपका योगदान सराहनीय है। कर्नाटक के--पुराने मैसूर के—कई जिलों में सरकारी कालेज में हिन्दी के वरिष्ठ अध्यापक का पद विभूषित करने के बाद आपने बंगलोर विश्वविद्यालय में हिन्दी एम.ए. की पढ़ाई का प्रबंध करने हेतु अपना सर्वस्व होम दिया। उन्हें यही तसल्ली हुई कि बंगलोर विश्वविद्यालय में भी हिन्दी में स्नातकोत्तर अध्ययन-अध्यापन चालू हो गया।

भारतीरमणाचार्य ने मानस के आधार पर 'अंगद दौत्य' लिखा। यह लघु कृति सबको पसंद आई। मानस में उनकी गहरी पैंठ का संकेत इसमें मिला।

1987 ई. में 'श्रीतुलसीदासर रामचरितमानस (किरु परिचय) [श्री तुलसीकृत रामचरित मानस (एक लघु परिचय)]' शीर्षक की 208 पृष्ठोंवाली पुस्तक आपने प्रकाशित कराई। अपने ढंग के इस अनोखे गद्यानुवाद का प्रकाशन श्री तुलसी प्रकाशन, श्री हेमा प्रिंटर्स, ईस्ट आंजनेय टेंपुल स्ट्रीट, बसवनगुडि, बेंगलूर-4 द्वारा हुआ है। श्रद्धेय गुरुवर नागप्पा जी के आशीर्वचन से सुशोभित यह कृति सचमुच रामरसायन है। तुलसी ने स्वांतः सुखाय 'भाषा' (अवधी) में रघुनाथ गाथा लिखी। इसमें परंपरा से प्राप्त रामकथा का अनुगमन है। गोस्वामीजी ने लोक-परलोक को बनाने वाली इस पुनीत गाथा को बाइबल और कुरान के समकक्ष उठाने का जो कौशल दिखाया है उसकी व्याख्यात्मक आलोचना इस कन्नड़ गद्यानुवाद में पहली बार देखने को मिलती है। 'श्रुतिसम्मत हरिभक्ति' का काव्यात्मक निरूपण इस अद्भुत ग्रंथ में हुआ है पर यह किसी विशिष्ट संप्रदाय के घेरे में बँधा नहीं। इसमें सभी संप्रदायों और धर्म-दर्शनों के समन्वय का साधु प्रयास हुआ है। लोक-हित चाहने वाले प्रत्येक जिज्ञासु को इसमें निजी और सामाजिक जीवन की गुत्थियों को

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

धीरज से, आत्मविश्वास के साथ सुलझाने का उपाय हाथ लगता है। अनुवादक महोदय ने इन सारी बातों का सहज, सरस चेतोहारी विश्लेषण किया है जिसे पढ़ने के बाद सहृदय को मूल 'रामचरितमानस' देखने की उत्कंठा होती है।

पुस्तक में क्रम से सप्तसोपानों का कथासार सात काण्डों में प्रस्तुत है। चुनी हुई मूल पंक्तियों का कन्नड़ में लिप्यंतरण है और उनका भाव, आशय स्पष्ट किया गया है। शिव-पार्वती संवाद को केंद्र बिंदु मानकर इतर कथा प्रसंगों का उसके साथ तालमेल बैठाने के लिए मूल में गोचर प्रबंध-पटुता अनुवाद में खूबी के साथ उभारी गई है। शैलकुमारी ने लोकहित की साधना के लिए शंभु के सामने जो प्रश्न उठाए उनकी सूची पहले दी गई है :—

1. निर्गुण ब्रह्म सगुण या साकार रूप धारण कैसे करता है ?
2. राम के अवतार की कथा, उनकी बाल लीलाएँ
3. राम-जानकी विवाह
4. वनवास के समय की लीलाएँ और रावण-वध
5. राम राज्य का स्वरूप
6. रघुकुलतिलक का निज धाम को लौटना
7. मुनि तथा ज्ञानी जिन तत्वों का साक्षात्कार कर सकें उन तत्वों का मर्म क्या है ?
8. ज्ञान, भक्ति, विरक्ति, विज्ञान आदि का विवरण
9. राम-रहस्य की अन्य विशेषताएँ
10. जो प्रश्न मुझे सूझे न हों, किंतु जिन बातों की जानकारी अनिवार्य हो, उन सबका परिचय।

शिवजी ने पार्वती के इन प्रश्नों का उत्तर क्रम से दिया। शिव-पार्वती संवाद में वर्णित रामकथा पहले काग भुशुंडि को सुनाई गई और उसी को याज्ञवल्क्य ने भरद्वाज के सम्मुख दुहराया। तुलसी को परंपरा से मिली यह कथा गुरु ने सुनाई। गुरु की कृपा से मिली यह कथा संतों को तुलसी ने सुनाई।

अनुवाद में कई शीर्षकों में यह कथन-चातुरी स्पष्ट की गई है। तुलसी के वर्णन-कौशल की ओर ध्यान आकृष्ट किया गया है। रामकथा साहित्य में परंपरा के निर्वाह के अलावा तुलसी ने नई कड़ियाँ जोड़ी हैं, इसका उल्लेख ऊपर हुआ है। नीचे की चंद बातें इसकी पुष्टि करती हैं :—

(1) लक्ष्मण राम के साथ वन जाने के लिए आतुर है। राम के सामने यह समस्या है कि सुमित्रा जी की अनुमति बिना लक्ष्मण को साथ कैसे ले चलें। राम उनसे अपनी माता की अनुमति माँगने के लिए कहते हैं। लक्ष्मण को यह सलाह देकर राम ने सुमित्रा के अधिकार को माना है और उनका गौरव बढ़ाया है। यह तुलसी की निराली सूझ है।

(2) राम हनुमान के हाथों सीताजी को मुद्रिका भेजते हैं। वनगमन से पहले ही कैकेयी ने राम की वेशभूषा व आभूषण उतरवा लिए थे और उन्हें वल्कल पहनने के लिए विवश किया था। यह मुद्रिका राम के पास रह कैसे गई। इसका कोई प्रत्यक्ष या परोक्ष संकेत राम साहित्य में नहीं है। मानसकार ने यह कमी पूरी की है।

(3) राजा दशरथ की उतावली से कोसल में जो अघटित घटनाएँ हो गईं, इन पर

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

उनके समधी मिथिला नरेश की प्रतिक्रिया अन्यत्र वर्णित नहीं मिलती। तुलसी ने चित्रकूट में जनक महाराज के आगमन का प्रसंग तो अवश्य उठाया, किंतु उनके मुँह से यह कहला दिया कि 'आए इहाँ कीन्ह भल नाहीं'। प्राचीन काव्यों में इस प्रसंग के न होने का औचित्य इस कथन से सिद्ध कर दिया। तुलसी कहते हैं कि भरत के साथ जनक अयोध्या जाएँ, शासन के संचालन का पूरा प्रबंध किया और वे सब मिथिला लौटते हैं।

(4) अरण्यकाण्ड में जयंत का वध करने के बाद राम ने फूलों से सीताजी की वेणी सजाई। यह तुलसी की मौलिक उद्भावना है। इस प्रसंग को और बढ़ाना ठीक नहीं। यहाँ बात मानस के अनुवाद की है। पर अनुवाद को हृदयंगम बनानेवाली इन विशेषताओं के उल्लेख से विद्वान अनुवादक महोदय ने भक्त-कवि तुलसी के कृतित्व की गरिमा का बोध हिन्दीतर-भाषियों को कराया है।

कागभुशुंडि-गरुड़ संवाद का एक मनोरम चित्र भी इस पुस्तक में दिया गया है।

श्रद्धेय गुरुवर नागप्पा जी ने 12.11.90 के अपने कृपापत्र में सूचित किया था कि हाल में मानस पर एक बेजोड़ रचना कन्नड़ में प्रकाशित हुई है। उसका नाम है—'श्रीरामचरितमानस—एक रसयात्रा' यात्रिक एच.वी. रामचन्द्र राव'। अभिरुचि प्रकाशन, 'आश्रय' कोट्टे' चिक्कबल्लापुर (कोलार जिला) 560201 द्वारा इसका प्रकाशन हुआ है। तीन सौ पृष्ठों का यह ग्रंथ कन्नड़ का मानस पर अनुपम बताया गया है। इसमें मानस का सुंदर सरस अनुवाद देखते ही बनता है, यह नागप्पा जी का अभिमत है। श्री एच. वी. रामचन्द्रराव कन्नड़, हिन्दी व अंग्रेजी के जाने-माने विद्वान हैं। अपनी असाधारण योग्यता-क्षमता के बूते पर आपकी आकाशवाणी में पदोन्नति हुई। बंगलौर केंद्र में निदेशक के पद की शोभा बढ़ाकर आपने अवकाश ग्रहण किया। कन्नड़ उपन्यास 'ग्रामायण' का हिन्दी में बहुत ही सार्थक अनुवाद आपने किया है।

□

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

'रामायण-इ-शर्मा' तथा अन्य राम साहित्य

डॉ॰ शिबन कृष्ण रैणा

उन्नीसवीं शताब्दी तक कश्मीरी साहित्य में रामकथा संबंधी किसी भी काव्य-रचना की सूचना नहीं मिलती है। यहां यह उल्लेखनीय है कि कश्मीर के प्रसिद्ध, प्रजावत्सल एवं विद्यानुरागी शासक सुलतान जैनुलाबद्दीन 'बड़शाह' (1420-1470 ई.) के राज्यकाल में जिन पौराणिक-ऐतिहासिक आख्यानों को आधार बनाकर विभिन्न प्रबंधकाव्य लिखे गए, उनमें भी रामकथा को स्थान नहीं मिला। (बड़शाह के दरबारी कवि भट्टावतार ने अपनी प्रबंधकृति 'बाणासुर वध' में कृष्ण कथा का उपयोग किया है।) इससे पूर्व कश्मीर में ग्यारहवीं शती में आचार्य क्षेमेन्द्र ने अपनी रचना 'दशावतार-चरित' तथा 'रामायण-मंजरी' में राम-कृष्ण संबंधी कतिपय कथा-प्रसंगों को संस्कृत में पद्यबद्ध कर कुछ सुन्दर कविताएँ रची थीं। परन्तु इस अत्यल्प सामग्री को कश्मीरी में रामकाव्य की परम्परा में इसलिए सम्मिलित नहीं किया जा सकता क्योंकि एक तो इन कविताओं की भाषा कश्मीरी नहीं, संस्कृत है और दूसरा यह कि यह सामग्री इतनी ज्यादा नहीं है कि रामकाव्य की कश्मीरी-परम्परा का अध्ययन करने के लिए उससे कुछ निष्कर्ष सामने आते हों। इन कविताओं की संख्या एक या दो बताई जाती है।

कश्मीरी साहित्य में रामकथा-काव्य रचने की सुस्पष्ट परम्परा 19वीं शताब्दी के आसपास शुरू होती है। कश्मीरी में अब तक सात रामायणें लिखी गईं। इनके नाम तथा अन्य विवरण इस प्रकार हैं—

रामायण का नाम	लेखक का नाम	रचना काल	प्रकाशन वर्ष
रामावतारचरित	प्रकाशराम	1847 ई.	1910, 1930, 1965ई.
शंकर रामायण	शंकर जू	1870 ई.	अप्रकाशित
आनंद रामावतारचरित	आनन्दराय राजदान	1888 ई.	,,
विष्णु प्रताप रामायण	विष्णु कौल	1913 ई.	,,
रामायण-इ-शर्मा	पं. नीलकंठ शर्मा	1926 ई.	,,
ताराचंद रामायण	पं. ताराचंद	1927 ई.	,,
अमर रामायण	अमरनाथ 'अमर'	1940 ई.	,,

कश्मीरी रामायणों की परम्परा में 'रामायण-इ-शर्मा' तथा 'ताराचंद रामायण' दो ऐसी रामायणें हैं जिन पर 'रामचरितमानस' का यथेष्ट प्रभाव बतलाया जाता है। चूंकि

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

'ताराचंद रामायण' अप्रकाशितऔर अनुपलब्ध है इसलिए उस पर मानस के प्रभाव का चर्चा करना संभव नहीं है। 'रामायण-इ-शर्मा' यद्यपि अप्रकाशित है किन्तु कुछेक विद्वानों, शोध-कर्मियों ने इस रामायण पर स्फुट लेख लिखे हैं, अतः उस पर मानस के प्रभाव आदि पर विचार किया जाना संभव है। यद्यपि यह सामग्री पर्याप्त नहीं है, तथापि उस पर मानस की छाप को स्पष्टतया रेखांकित किया जा सकता है।

'रामायण-इ-शर्मा' के लेखक कश्मीर-निवासी पं. नीलकंठ शर्मा हैं जिनका जन्म 1888 ई. में हुआ था। निम्न मध्यवर्गीय हिन्दू परिवार में जन्मे पं. नीलकंठ एक आस्था-वादी भक्त, हिन्दी-उर्दू-फारसी के ज्ञाता तथा ज्योतिष-शास्त्र के पंडित थे। शिव, राम और कृष्ण की निष्काम भक्ति में उन्होंने अपने मन को रमाया और इन्हीं में अपने आराध्य के दर्शन किए। भगवद्भक्ति में विभोर होकर उन्होंने सुन्दर भक्तिपरक रचनाएँ लिखीं। 'शिव-महात्म्य', 'श्रद्धांजलि', 'रामायण-इ-शर्मा' आदि कवि की इसी अनन्य-अगाध भक्ति-भावना के परिणाम हैं। हिन्दी, संस्कृत और फारसी का ज्ञान होने के कारण उक्त रचनाओं में इन भाषाओं में प्रचलित प्रबंध-काव्य-शैली का कवि ने यथास्थान प्रभाव ग्रहण किया है। 'रामायण-इ-शर्मा' शीर्षक अपने आप में इस बात का प्रमाण है।

'रामायण-इ-शर्मा' पं. नीलकंठ शर्मा की सर्वाधिक लोकप्रिय और प्रसिद्ध रचना है। फारसी लिपि में लिखित इस बृहताकार रामायण में 16,000 छंद हैं जिनमें श्रीराम के जीवन और उनकी साहसिक घटनाओं का सजीव वर्णन मिलता है। यह सारा वर्णन वाल्मीकि रामायण, पद्मपुराण तथा खास तौर पर तुलसीकृत 'रामचरितमानस' पर आधा-रित है। इस कृति के संबंध में प्रो. जे. एन. शर्मा की निम्नलिखित टिप्पणी दृष्टव्य है—

The Ramayana—or, to give it its full title, Ramayan-i-Sharma—is the most typical of the poet's earlier works ; its style and vocabulary are as much Persianised as the title. This enormous work, comprising about 16,000 couplets, is based on the account of the life and adventures of Sri Rama as found in the Ramayana of Valmiki, Padam Purana and especially Ramcharit manasam of Tulsi Das.

इस ग्रन्थ को कवि पं. नीलकंठ शर्मा ने सात वर्षों (संवत 1976 से 1983 विक्रमी तक) के अथक परिश्रमोपरान्त पूरा किया। इस काव्य-ग्रंथ में काण्डों की कुल संख्या सात है जो मानस के काण्डों से मेल खाती है। काण्डों के शीर्षक हैं—बाल-काण्ड, अयोध्या-काण्ड, किष्किन्धा-काण्ड, सुन्दर-काण्ड, लंका-काण्ड, उत्तर-काण्ड तथा लवकुश-काण्ड। कश्मीरी रामायणकार ने संभवतः मानस के 'अरण्य काण्ड' की संक्षिप्तता को मद्देनज़र रखते हुए इस काण्ड को घटा दिया है तथा अपनी रामायण के अन्त में अतिरिक्त 'लवकुश-काण्ड' जोड़ कर अपनी मौलिकता का परिचय दिया है। ऐसा करने से जहाँ 'मानस' की तरह 'रामायण-इ-शर्मा' में काण्डों की संख्या सात ही है, वहाँ 'लवकुश-काण्ड' जुड़ने से उसका महत्व बढ़ गया है। 'लवकुश-काण्ड' के लिए कवि ने प्रकाशराम के 'रामावतारचरित' में सम्मिलित 'लवकुशचरित' से कथानक लिया है।

जैसा कि पहले कहा जा चुका है तुलसी के 'मानस' का 'रामायण-इ-शर्मा' पर यथेष्ट प्रभाव है। कवि ने इस बात को स्वयं स्वीकार किया है। डॉ. शशि शेखर तोषखानी का कथन है

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

भक्ति-भावना से प्रेरित यह रामायण स्वयं कवि की स्वीकारोक्ति के अनुसार तुलसी के 'रामचरितमानस' के विशेष रूप से प्रभावित है। यह प्रभाव घटना-प्रसंगों के अनुकरण में ही नहीं, बल्कि संवादों और वर्णनों तक में व्याप्त है। कहीं-कहीं सीधा अनुवाद भी है, जैसे किष्किंधाकाण्ड में वर्षा-वर्णन की ये पंक्तियाँ लीजिए—

घन घमंड नभ गरजत घोरा। प्रिया हीन दरपत मन मोरा॥
दामिनी दमक रह न घन माहीं। खल कै प्रीति जथा थिर नाहीं॥

पं. नीलकंठ शर्मा ने ये पक्तियाँ अपनी रामायण में जस-की-तस कश्मीरी में रूपांतरित की हैं—

छि बड़ि प्रबुद क्याह गगरायि गछ़ान
छु सीतायि रीस म्योन दिल गाबरान,
छि वुज़मल प्रज़लान कूच नबस अन्दर
यिथ केन्य हलिस सुन्द प्रेम छुन थर।

(आकाश में ज़ोर-ज़ोर से गर्जना हो रही है और मेरा दिल सीता के बिना घबरा रहा है। आकाश में बिजली रह-रह कर प्रज्ज्वलित हो रही है—क्षण-मात्र के लिए चमकती है, वैसे ही जैसे दुष्ट व्यक्ति का प्रेम स्थिर नहीं होता।)

उक्त उदाहरण से यह स्पष्ट हो जाता है कि जिस समय पं. नीलकंठ शर्मा ने 'रामायण-इ-शर्मा' की रचना की, उस समय तक तुलसी के 'रामचरितमानस' की महिमा और लोकप्रियता से कश्मीरवासी पूर्णरूपेण परिचित हो चुके थे। देश-भेद, भाषा-भेद और वातावरण-भेद की परिधि को लाँधकर 'मानस' ने सुदूर उत्तरांचल में स्थित कश्मीर की सुरम्य घाटी में प्रवेश किया, यह निःसन्देह 'मानस' की महिमा और गरिमा का सुपरिणाम है। दरअसल, उत्तर भारत के भक्ति-साहित्य से इस भू-खंड के भक्त-कवि और अन्य सुधी-जन सत्रहवीं-अठाहरवीं शती से ही परिचित हो प्रभाव ग्रहण करने लग गए थे। उन्नीसवीं-बीसवीं शताब्दी में भक्ति की इस धारा ने कश्मीरी काव्य में और अधिक विस्तार पाया। प्रो. श्यामलाल साधू अपनी पुस्तक 'हब्बा खातून' में लिखते हैं। 'कविता के माध्यम से जिस भक्तिधारा को कबीर, सिख-गुरुओं, तुलसी, सूर, मीरा आदि ने प्रवाहित किया था, वह धारा कश्मीर में भी पहुँची। उसे कश्मीर पहुँचाने में तीर्थ-यात्रियों, सैलानियों तथा रमते-फिरते, जोगियों-संतों की खासी भूमिका रही।…'

एक और उदाहरण प्रस्तुत है। मानसकार के राम अरण्यकाण्ड में 'हे खग मृग हे मधुकर श्रेनी, तुम्ह देखी सीता मृगनैनी' कहकर जिस प्रकार अपनी तीव्र विरह-वेदना का परिचय देते हैं, कुछ-कुछ उसी तरह 'रामायण-इ-शर्मा' में रामचंद्र जी अपनी व्यथा का परिचय देते हुए जंगली फल-फूलों से सीता जी का पता यों पूछते हैं—

असोनी चमन दर चमन अय समन !
खयालन कमल छरव बमन पय च वन,
गुलालो दिलस दाग़ छुम चोन हयुं
निशाना तसुन्द वन तु कथ जायि छु ?
(रे बेला पुष्प ! किन विचारों में डूब
इस चमन में, मेरी बेबसी पर मुस्करा रहा है तू ?

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

रे गुले-लाला! दिल पर तेरे भी इक दाग़ है—
मेरी सीता की कोई निशानी बता दे तू)

राम-रावण-युद्ध प्रसंग में वानरों और राक्षसों की भिड़ंत का वर्णन जिस सजीवता के साथ हुआ है उससे कवि पं. नीलकंठ शर्मा की अपूर्व कवित्व-शक्ति का परिचय मिल जाता है। पंक्तियाँ इस प्रकार हैं—

असर ओस्य गौरज़व सूतिन जंग करान
गरान जन अहन ओस्य आहंगरान।
वनन यी अकिस अख रटुन हा रटुन,
ब खंजर चटुन तय खोरनतल खटुन।
× × ×
यि वान्दर वनान ज़ोरु लायुस चुलेट,
करुन बंद लचि सत्य करुस चेट त म्येट।
करुस कुशत यखदैम च, मुशतु दिथ
तुलुन पुशतु रेटिप्प्युय पथर दिन वरिथ।

(असुर गदाओं से जंग लड़ रहे थे। उनकी गदाओं के टकराने से ऐसी आवाज़ आती थी मानो लोहार लोहे को पीट रहे हों। असुर एक-दूसरे से कहते—'इसे पकड़ो, उसे पकड़ो। खंजर से इसे काटो, पैरों तले उसे कुचलो। उधर वानर एक-दूसरे से कहते—असुरों को पूंछ से बाँध कचूमर निकाल लो, मुक्के मार-मार कर इनका भुरकुस निकाल दो, पीठ से पकड़ कर इन्हें ज़मीन दिखा दो।)

इन पंक्तियों की तुलना मानस की निम्नलिखित चौपाई से की जा सकती है—

मुठिकन्ह लातन्ह दातन्ह काटहिं। कपि जयसील मारि पुनि डाटहिं॥
मारु मारु धरु धरु धरु मारू। सीस तोरि गहि भुजा उपारू॥
(लंका काण्ड 52/3)

ऊपर कुछ उदाहरण देकर यह स्पष्ट करने की चेष्टा की गई है कि कश्मीरी रामायण-कार पं. नीलकंठ शर्मा ने अपनी रामायण का प्रणयन करते समय 'मानस' का पारायण अवश्य किया होगा। यही कारण है कि 'मानस' का प्रभाव 'रामायण-इ-शर्मा' में यत्र-तत्र दिखाई पड़ता है। डा. तोषखानी का कहना है—'जिन अन्य प्रसंगों पर 'मानस' की स्पष्ट छाया है, उनमें जनक की पुष्प वाटिका में राम-सीता का पूर्वानुराग, धनुर्भंग, वनगमन काल में राम-सीता की अत्रि मुनि से भेंट, अनुसूया का सीता को पतिव्रत और नारी धर्म का उपदेश, निषादराज प्रसंग, शबरी प्रसंग आदि मुख्य हैं। इन प्रसंगों के वर्णन में भी कवि ने कहीं-कहीं अपनी ओर से कुछ रंग छवियाँ जोड़ी हैं, जिससे उनका दृष्टि-विन्दु भी सामने आ जाता है।' इन कृतियों के अतिरिक्त अन्य कृतियों पर रामचरितमानस के बजाय अध्यात्म रामायण, वाल्मीकी रामायण आदि का प्रभाव है। इसमें मुख्य है 'रामावतारचरित'।

'रामावतारचरित' कश्मीरी में रचित प्रथम रामायण एवं अपेक्षाकृत अधिक लोक-प्रिय है। इसके रचयिता कुर्यगाम (कश्मीर) के निवासी पं. प्रकाशराम (1819-1886 ई.) हैं। प्रकाशराम देवी त्रिपुर-सुन्दरी के अनन्य भक्त थे और उन्हीं की कृपा से उन्हें वाक्-शक्ति का अपूर्व वरदान प्राप्त हुआ था। वे नित्य देवी की पूजा करते तथा घंटों उनकी आराधना

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

में विताते । कहते हैं एक दिन खूब वर्षा हो रही थी, प्रकाशराम को दूर से एक डोली अपनी ओर आती हुई दिखाई पड़ी । डोली के वाहनों ने प्रकाशराम को आवाज़ दी । प्रकाशराम जब डोली के निकट पहुँचे तो उसका पर्दा ऊपर उठा —डोली में साक्षात् देवी विराज रही थीं । प्रकाशराम के नेत्र दर्शन-सुख से प्रफुल्लित हो उठे । कुछ ही क्षणों के बाद देवी अन्तर्धान हो गई और प्रकाशराम का मन देवी-दर्शन का अनूठा प्रसाद पाकर भगवद्भक्ति में रम गया । 'रामावतार चरित' प्रकाशराम की सर्वाधिक लोकप्रिय काव्यकृति है । सात काण्डों में विभक्त इस प्रबंधकृति का रचनाकाल 1847 ई. है । कथानक 'बाल्मीकि रामायण' तथा 'अध्यात्म रामायण' से गृहीत है । संपूर्ण काव्य महाकाव्योचित लक्षणों से युक्त है । प्रारंभ में ईश-वंदना इस प्रकार की गई है—

नमो नमो गजेन्द्राय एक दंत धराय च
नमो ईश्वर पुत्राय श्री गणेशाय नमो नमः ।
गोडन्य सपनुन शरन श्री राज़गणीशस
करान यूस छु रख्या यथ मनुष्य लूकस,
दोयिम कर सतगौरस पननिस नमस्कार
दियि सुय गौर पनुन येमि मवसरि तार ।

(सर्वप्रथम गणेश जी की शरण में जाएँ जो इस मनुष्य-लोक की रक्षा करते हैं। तत्पश्चात् सतगुरु को नमस्कार करें जो इस भवसागर को पार करने में सक्षम हैं ।)

प्रकाशराम की भक्ति तुलसी की तरह दास्य-भाव की है । इसी से वे पूरी रामायण में कवि कम, भक्त अधिक दीखते हैं । यह बात'रामावतार चरित' में सम्मिलित स्तुतियों, भक्ति गीतों, प्रार्थनाओं से स्पष्ट हो जाती है । डॉ. तोषखानी के अनुसार, 'प्रकाशराम ने संपूर्ण राम कथा को एक आध्यात्मिक रूपक के रूप में परिकल्पित किया है जिसके अनुसार पात्र और कथा प्रसंग प्रतीकात्मक आयाम ग्रहण करते हैं और जिसके केन्द्र में सत् और असत् का शाश्वत् द्वन्द्व है' । 'रामायनुक मतलब' (रामायण का अर्थ) प्रसंग में कवि की ये पंक्तियाँ द्रष्टव्य हैं—

गौरव गेंडमच् छि वथ बोज़ कन दार ।
छु वयाह रोज़ुन छु बोज़ुन रामावतार ।।
ति बोज़न सूत्य वोन्दस आनंद आसी ।
यि कथ रठ याद ईशर व्याद कोसी ।।
ति ज़ानख पानु दयगत क्या चेह हावी ।
कत्युक ओसुख चेह कौत-कौत 'वातुनावी ।।

(गुरुओं ने एक सत्पथ तैयार किया है, ज़रा कान लगाकर सुन । यहाँ कुछ भी नहीं रहेगा, बस रहेगी रामावतार की कथा । इसे सुनकर हृदय आनंदित हो जाएगा, यह बात तू याद रख । इससे तेरी सारी व्याधियाँ दूर हो जाएँगी । तू स्वयं जान जाएगा कि प्रभु कृपा से तू कहाँ से कहाँ पहुँच जाएगा ।)

जैसा कि पहले कहा जा चुका है, 'प्रकाशराम ने रामवृत्त को एक वीरगाथा के रूप में नहीं देखा अपितु रामचरित को केन्द्र में रखकर इसे सत् और असत् के द्वन्द्व का रूपक बना कर प्रस्तुत किया है । पौराणिक विषय-वस्तु के कारण उस पर बहुत गहरी धार्मिक

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

छाया है और उसका प्रयोजन है राम के लोक-रक्षक, भू-उद्धारक ईश्वरीय स्वरूप के प्रति एकनिष्ठ आस्था का प्रसार। सारी कथा पौराणिक श्रोता-वक्ता के विधान द्वारा शिव-पार्वती के संवाद रूप में कही गई है। इस दृष्टि से यह कृति 'मानस' के रूपगठन को अपनाती है। 'रामावतारचरित' में कथा का सात काण्डों—बालकाण्ड, अयोध्याकाण्ड, अरण्यकाण्ड, किष्किन्धाकाण्ड, सुन्दरकाण्ड और उत्तरकाण्ड—में विभाजित रूप उसे भारतीय परंपरा के अन्य राम-काव्यों का-सा विन्यास देता है। इन काण्डों के अन्तर्गत मुख्य कथा-बिन्दुओं को मसनवी शैली के अनुरूप उपशीर्षकों में विन्यस्त किया गया है। इन उपशीर्षकों की कुल संख्या 56 है। कुछ उपशीर्षक देखिए—

'विश्वामित्र संदि येग्यनच रख्य' (विश्वामित्र के यज्ञ की रक्षा) 'बरथस खाव दिन्य' (भरत को खड़ाऊँ देना), 'शप नखि सज़ा धुन' (शूर्पणखा को सज़ा देना), 'लंकापि प्यठ फौजकशी' (लंका की ओर फौज कशी)।

'लवकुश चरित' में काण्ड नहीं हैं, केवल उपशीर्षक हैं। 'प्रकाशरामायण' में वस्तुतः मसनवी और भारतीय महाकाव्य दोनों के तत्त्वों का समावेश है।

'रामावतारचरित' में वर्णित अधिकांश प्रसंग अतीव मार्मिक हैं। अयोध्यापति दशरथ की संतान-कामना, कामनापूर्ति के लिए व्रत आदि रखना, स्वप्न में भगवान विष्णु द्वारा वरदान देना आदि प्रसंग बड़े ही स्वाभाविक और भावपूर्ण हैं—

वोथन सुलि प्रथ प्रबातन नित्य करान श्रान
रछन जोगॅन गोसानेन सत्य थवान ओस ज़ान,
स्यठा रातस-दोहस लीला करान ओस
शरन सपनुन नारायण पानय रोठ्योस।

(राजा दशरथ नित्य प्रभात बेला में जागकर स्नानादि करते तथा साधु-संतों और जोगियों के पास आशीर्वाद लेने जाते। पुत्र-सुख के अभाव में उनका मन सदैव चंचल रहता। कहते हैं, एक रात सपने में नारायण (विष्णु) ने उन्हें दर्शन दिए तथा कहा कि मैं शीघ्र तुम्हारे घर में जन्म लूंगा।)

पूरा प्रसंग इस प्रकार है—'तब देवी ने कहा—हे शिवजी, दया कीजिए और मुझे रामावतार की आगे की कथा सुनाइए ताकि मेरे हृदय का दारुण संताप दूर हो जाए।··· वे कहने लगे—(सुनो देवी!) दशरथ नाम का एक राजा था जो सकल संसार का मालिक व पालनहार था। सत्व गुण से युक्त वह राजा शिव का अनन्य भक्त था। इस राजा ने प्रजा के हित के लिए अनेक सत्कार्य किए। उनकी एक नगरीथी जिसका नामअयोध्या था।··· उसके कोई संतान न थी जिसके कारण उसका मन सदैव चंचल रहता, वैसे ही जैसे पानी में सूर्य। वह रात दिन भगवद्भक्ति में तल्लीन रहता।'

वचनबद्धता के प्रश्न को लेकर दशरथ और कैकेयी के बीच जो परिसंवाद होता है, वह एक पितृहृदय की शोकाकुल और स्नेहिल भावभिव्यक्तियों का सुन्दर उदहरण है—

त्युथुय वूज़िथ राज़ बुथकिन्य पथर प्यव
त्युथुय युथ साखि ज़ोनुख सपुन शव,
अमा करुन ख्यमा सोज़न न राम वनवास
मरअ तस रौस वन्य करतम तम्युक पास,

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

थि कोंछा छुम ति सोहय दिम व तस
मैं छुम अख रामजुव, छुम त्युतुय बस ।

(कैकेयी का अंतिम कथन सुनते ही राजा लड़खड़ाते हुए अचेतावस्था में मुँह के बल ज़मीन पर गिर पड़े । दयार्द्र स्वर में उन्होंने कैकेयी से विनती की—मुझ पर दया कर, राम को वनवास न दिला । मैं उसके बिना ज़िन्दा न रह सकूँगा । मैं वचन देता हूँ कि मेरे पास जो कुछ भी है, वह भरत को दे दूंगा । मेरा तो बस एक रामजी ही सब-कुछ है, बस एक रामजी !)

वनगमन-प्रसंग के अन्तर्गत माता कौशल्या की विरह-व्यथा को जिस तन्मयता के साथ कवि ने वर्णित किया है, उससे मातृहृदय की गूढ़ संवेदनाओं का परिचय मिलता है—

कौशल्या हुंदि गोबरो, करयो गरु गूरो
परयो रामु रामो, करयो गुरु गूरो ।
कोतू गोहम चु त्रोविथ, कस ह्यक हाल बोविथ
अनी कुस मननोविथ, करयो गुरु गूरो...।

(रे कौशल्या के नन्दन!
आ, तुझे पालने में झुलाऊं,
राम-राम पुकारूं
आ, तुझे पालने में झुलाऊं ।
अकेला मुझे छोड़ कहाँ गया रे तू ?
अब यह हाल मैं अपना किसे सुनाऊं ?
मनाकर तुझे वापस कैसे मैं बुलाऊं ?
आ, तुझे पालने में झुलाऊं ।)

जटायु-रावण-युद्ध वर्णन में कवि की सजीव वर्णन-शैली द्रष्टव्य है—

खबर बूज़िथ जटायन गव खबरदार
कफ़स फुटरुन तु लारान गव ब यक़बार,
पुनुम चन्द्रस येलि वुछुन ह्यथ चलान कीत
दोपुन तस ओय मरुत पापुक गोय हीत
परकि दक सूत्य छुस आकाशि त्रावान
ज़मीनस व्यठ अंडजि छुस ज़ोरअ फुटरावान ।

(खबर सुन सीता हरण की
हुआ जटायु खबरदार,
पूनम-चन्द्र को सेतु द्वारा ग्रसित जो देखा
तो छेड़ दिया
पापी से युद्ध ज़ोरदार ।
'पाप करके मृत्यु को
क्यों बुला रहा है रे मूर्ख!
आज होगा अंत तेरा
मिटेगा तू रे धूर्त!'

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

आकाश में उछाला, भू पर पटका
पंख के धक्कों से उसने
कर दिया रावण का बुरा हाल,
हड्डियों का भुरकुस निकाला
कर दिया उसका हाल बेहाल।)

यद्यपि 'रामावतारचरित' की मुख्य कथा का आधार बाल्मीकि कृत रामायण है, तथापि मूल कथासूत्र को कवि ने अपनी प्रतिभा और दृष्टि के अनुरूप ग्रहण किया है। दो-तीन स्थानों पर काव्यकार ने कथा-संयोजन में किन्हीं नूतन (विलक्षण अथवा मौलिक ?) मान्यताओं की उद्घोषणा की है। सीता-जन्म के संबंध में कवि की मान्यता यह है कि सीता, वास्तव में रावण-मंदोदरी की पुत्री थी। मन्दोदरी एक अप्सरा थी जिसकी शादी रावण से हुई थी। उनके एक पुत्री हुई जिसे ज्योतिषियों ने रावण-कुल के लिए घातक बताया। फलस्वरूप मन्दोदरी उसके जन्म लेते ही अपने पति रावण को बताए बिना, उसे एक सन्दूक में बंद कर नदी में फिकवा देती है। बाद में राजा जनक यज्ञ के दौरान नदी-किनारे उसे पाकर उपकृत होते हैं। लंका में मन्दोदरी अपहृत सीता को देखकर वात्सल्याधिक्य से विभोर हो उठती है। पंक्तियाँ देखिए—

तुजिन तमि कौछि क्यथ ह्यथ ललनोवन
गेमच कौलि येलि लेबन लौलि क्यथ सोबन,
वुछिव तस माजि मा माजुक मुशुक आव
लवन येलि छस बबन दौद ठीचि तस द्राव।

(तब उस मन्दोदरी ने उसे गोद में उठाकर झुलाया तथा पानी में फेंकी उसको पुनः पाकर अपने अंक में सुलाया। दैव की गति देखिए अपने रक्त की गंध पाकर माँ मन्दोदरी के स्तनों से दूध की धारा द्रुत गति से फूट पड़ी।)

'रामावतारचरित' में आई दूसरी कथा-विलक्षणता राम द्वारा सीता के परित्याग की है। सीता को वनवास दिलाने में रजक-घटना को मुख्य कारण न मानकर कवि ने सीता की छोटी ननद (?) को दोषी ठहराया है जो पति-पत्नी के पावन प्रेम में यों फूट डालती है—

दोपुन तस कुन यि कुछ बायो यि क्याह छुय
दोहय सीता यथ कुन वुछिथ तुलान हुय,
मैं नीमस चरि पतह आसि परन मारान
वदन वाराह त नेतरव खून हारान।

(रावण का चित्र दिखाकर-देखो भैया, यह क्या है ! सीता इसे देख-देख रोज विलाप करती रहती है। जब से मैंने यह चित्र चुरा लिया है तबसे उसकी आँखों से अश्रुधारा बहे जा रही है। यदि वह यह सुन ले कि ननद ने उसका यह काग़ज़ (चित्र) चुरा लिया है तो मुझे ज़िन्दा न छोड़ेगी।)

'रामावतारचरित' के युद्धकाण्ड प्रकरण में उपलब्ध एक अत्यन्त अद्भुत और विरल प्रसंग 'मक्केश्वर-लिंग' से सम्बन्धित है जो प्रायः अन्य रामायणों में नहीं मिलता है। यह प्रसंग जितना दिलचस्प है, उतना ही गुदगुदाने वाला भी। रावण की याचना करने पर

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

शिव उसे विजयी होने के लिए एक लिंग (मवकेश्वर) दे देते हैं और कहते हैं कि जा, यह तेरी रक्षा करेगा, मगर इसे मार्ग में कहीं पर भी धरती पर न रखना। लिंग को हाथों में आदरपूर्वक थामकर रावण आकाशमार्ग से लंका की ओर चल पड़ता है। रास्ते में उसे लघु-शंका होती है। वह आकाश से नीचे उतरता है और इस असमंजस में पड़ता है कि लिंग को वह कहाँ रखें? तभी ब्राह्मण के रूप में नारदमुनि वहाँ पर प्रगट होते हैं जो रावण की दुविधा भाँप जाते हैं। रावण लिंग उनके हाथों में यह कहकर थमा जाता है कि वह अभी निवृत होकर आ रहा है। विधाता की लीलावश रावण लघु-शंका से निवृत्त हो ही नहीं पाता! धारा रुकने का नाम नहीं लेती। (संभवत: यह प्रभु की माया थी।) बहुत देर हो जाने पर नारद जी लिंग को धरती पर रखकर चले जाते हैं। तब रावण के भरसक प्रयत्न करने पर भी वह लिंग उस स्थान ले नहीं हिलता है। और इस प्रकार शिव द्वारा प्रदत्त लिंग की शक्ति का प्रयोग करने से रावण वँचित हो जाता है।

'रामावतारचरित' में कुछ ऐसे कथा-प्रसंग भी हैं जो तनिक भिन्न रूप में प्रस्तुत किए गए हैं। उदाहरण के तौर पर रावण-दरबार में अंगद के स्थान पर हनुमान के पैर को असुर पूरा ज़ोर लगाने पर भी उठा नहीं पाते। एक अन्य स्थान पर रावण युद्धनीति का प्रयोग कर सुग्रीव को अलग से एक ख़त लिखता है और अपने पक्ष में करना चाहता है। तर्क वह यह देता है कि क्या मालूम किसी दिन उसकी गति भी उसके भाई जैसी हो। वह भाई के वध का प्रतिशोध लेने के लिए उसे प्रेरित करता है और लंका आने का निमंत्रण देता है जिसे सुग्रीव ठुकरा देता है। इसी प्रकार महिरावण (अहिरावण) का राम और लक्ष्मण को उठाकर पाताल-लोक ले जाना और बाद में हनुमान द्वारा उसे युद्ध में परास्त कर दोनों की रक्षा करना—प्रसंग भी 'रामावतार चरित' का एक रोचक प्रकरण है।

'रामावतारचरित' के लवकुश-कांड में भी कुछ ऐसे कथा-प्रसंग हैं जिनमें कवि प्रकाशराम की मौलिक उद्भावनाओं का परिचय मिल जाता है जैसे—लवकुश द्वारा युद्ध में मारे गए राम, लक्ष्मण, भरत तथा शत्रुघ्न के मुकुट देखने पर सीता को विलाप करते हुए दिखाया गया है। उनके रुदन से दुखी वशिष्ठ अमृत वर्षा कराते हैं और सेना सहित राम और उनके भाई पुनर्जीवित हो उठते हैं। इस प्रसंग के अनन्तर राम सीता से अयोध्या लौट चलने का अनुरोध करते हैं, किन्तु सीता अपनी कुटिया का द्वार बंद करके राम से मिलने तक से इनकार करती है। अंत में वशिष्ठ के आग्रह पर वह अयोध्या जाती तो हैं, किन्तु वहाँ राम द्वारा पुन: अग्नि-शुद्धि की माँग करने पर भूमि-प्रवेश करती हैं।

डॉ. तोषख़ानी के अनुसार 'रामावतारचरित' की सबसे बड़ी विशेषता है—स्थानीय परिवेश की प्रधानता। अपने युग के सामाजिक, सांस्कृतिक व भौगोलिक परिवेश का कृति पर इतना गहन प्रभाव है कि उसका स्थानीय तत्वों के समावेश से पूरा कश्मीरीकरण हो गया है। ये तत्व इतनी प्रचुर मात्रा में कृति में लक्षित होते हैं कि अनेक पात्रों के नाम भी कश्मीरी उच्चारण के अनुरूप ही बना दिए गए है। जैसे जटायु यहाँ पर 'जटायन' है, कैकेयी 'कीकी', इन्द्रजीत 'इन्द्रजेट' है और सम्पाति 'सम्पाठ' आदि। रहन-सहन, रीति-रिवाज, वेषभूषा आदि में स्थानीय परिवेश इतना अधिक बिम्बित है कि 19वीं शती के कश्मीर का जन-जीवन साकार हो उठता है। राम के वनगमन पर विलाप करते हुए दशरथ कश्मीर के परिचित सौन्दर्य-स्थलों और तीर्थों में राम को ढूंढते हुए व्याकुल दिखाए गए हैं। लंका के

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

अशोक वन में कवि ने गिन-गिनकर उन तमाम फूलों को खिलाया है जो कश्मीर की घाटी में अपनी रंग-छवि बिखेरते हैं। राम का विवाह भी कश्मीरी हिन्दुओं में प्रचलित द्वार-पूजा, पुष्प-पूजा आदि रीतियों और रस्मों के अनुसार ही होता है। 'लवकुश चरित' में सीता को कश्मीर के एक गाँव 'शंकरपुर' में पृथ्वी में प्रवेश करते हुए दिखाया गया है।

प्रकाशराम की भाषा प्रायः संस्कृत-निष्ट है जिसमें कहीं-कहीं पर उर्दू-फारसी शब्दों का प्रयोग प्रचुरता से मिलता है। खून, जिगर, मलाल, शादमानी, लाचार, ग़म, बाज़ीगरी, हुक्मरानी आदि कुछ ऐसे ही शब्द हैं। अप्रस्तुत-विधान के लिए कवि ने उपमा, उत्प्रेक्षा आदि का बहुलता से प्रयोग किया है।

□

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

मानस का कुमाउँनी अनुवाद

डॉ. रुक्मिणी

गोस्वामी तुलसीदास का 'रामचरितमानस' विश्व का एक श्रेष्ठ ग्रन्थ है। इसके देश-विदेश की विभिन्न भाषाओं में लगभग दो सौ अनुवाद प्रकाशित हो चुके हैं। इनमें कुमाउँनी भाषा में 'रामचरितमानस' के बालकाण्ड एवं सुंदरकाण्ड का भी अनुवाद है। 'रामचरितमानस' के कुमाउँनी अनुवादक श्री विशनदत्त जोशी 'शैलज' एक प्रसिद्ध साहित्यकार हैं। इनका जन्म उत्तर प्रदेश, अलमोड़ा जिला, रानी खेत, बजीना ग्राम के साधारण परिवार के 13 दिसम्बर सन 1940 को हुआ। जैसे रमणीय स्थान में इनका जन्म हुआ वैसी ही रमणीय इनकी रुचि भी है। ये उत्तराखण्ड के निवासी हैं, इसलिए इनका अपनी मातृभाषा कुमाउँनी से प्रेम होना स्वाभाविक है। इन्होंने कुमाउँनी में रामायण के अभाव को देखकर 'रामचरितमानस' का कुमाउँनी में अनुवाद कर साहित्य की सेवा की है। इन्होंने फिलहाल सम्पूर्ण रामचरितमानस का अनुवाद न कर केवल दो काण्डों (बालकाण्ड एवं सुंदरकाण्ड) का अनुवाद किया है। यह 'रामचरितमानस' का कुमाउँनी में पद्यानुवाद है।

मानस का प्रारम्भ संस्कृत श्लोकों से होता है। जोशी जी ने संस्कृत छन्दों का भी कुमाउँनी में अनुवाद किया है। संस्कृत छन्दों को हिन्दी छन्द में परिणत करके भाव यथावत ही रहने दिए हैं जैसे मानस का प्रारम्भ अनुष्टुप छन्द से होता है, इन्होंने कुमाउँनी रामायण सवैया में छन्दोबद्ध करके प्रारम्भ की है—

वर्णानामर्थसंघानां रसानां छन्दसामपि।
मङ्गलानां च कर्त्तारौ वन्दे वाणीविनायकौ॥ —मानस

आँखर जो अरथों के समूह रसोंक सुछन्द प्रबन्ध बिधाना।
मंगल का करनेर विनायक बन्दनु वाणि हृदै करि घ्याना॥
—कुमाउँनी रामायण

श्लोक का छन्द बदलने पर इन्होंने भी कुमाउँनी में छन्द परिवर्तित कर दिया है। उदाहरणार्थ, निम्न श्लोक शार्दूलविक्रीडित छन्द में है, इसे दोहा में छन्दोबद्ध किया है—

यन्मायावशवर्ति विश्वमखिलं ब्रह्मादिदेवासुरा।
यत्सत्त्वादमृषैव भाति सकलं रज्जौ यथाहेर्भ्रमः॥ —मानस

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

जै माया बस से सदा, देव असुर सब रौंनि ।
जैक सतल सब असत जग, ज्यौड़ स्याप भ्रम पौंनि ।।

—कुमाउँनी रामायण

जोशी जी ने संस्कृत श्लोकों का पंक्ति-पंक्ति अनुवाद न कर छोड़-छोड़कर किया है जैसे, मानस के प्रारम्भ के सप्तश्लोकी मंगलाचरण में इन्होंने तीसरे तथा सातवें श्लोक को कुमाउँनी में नहीं लिया है । कतिपय स्थलों पर जोशी जी ने संस्कृत श्लोकों का पंक्तिबद्ध अनुवाद किया है यथा, सुंदरकाण्ड के प्रारम्भ के तीनों श्लोकों (रामस्तुति तथा हनुमान स्तुति) का पूर्ण अनुवाद किया है—

शान्तं शाश्वतमप्रमेयमनघं निर्वाणशान्तिप्रदं ।
ब्रह्माशम्भुफणीन्द्रसेव्यमनिशं वेदान्तवेद्यं विभुम् ।। —मानस

शान्तमूरति छड सनातन निरकवल मुक्ति दिनेर जो ।
ब्रह्म शिव हरि करनि सेवा नित वेद भेद बतूं अहो ।।

—कुमाउँनी रामायण

जोशी जी मात्र अनुवादक ही नहीं लेखक भी हैं । कुमाउँनी में रामायण लिखने की अपनी प्रबल इच्छा को उन्होंने तीनों देवताओं के समक्ष प्रकट किया है—

बोलि कुमाउँ काव्य की, रचूं एक बड़ि आस ।
सब आपण सक्तिन दगाड, तीनों देव दयाल ।
दीन जाणि अब बिसन पर, है जें नाथ कृपाल ।।

—कुमाउँनी रामायण

जोशी जी का यह अनुवाद-कार्य उद्देश्य विहीन नहीं है प्रत्युत इसका भी लक्ष्य है, राम नाम का आस्वादन सबको सुलभ हो । इसके लिए वे गोस्वामी तुलसीदास से अनुमति माँगते हैं—

तुमरै सब्दोंक करनु मैं, अपण बोलि अनुवाद ।
भाइ बेंणि सब चखि सकीं, राम नाम कौं स्वाद ।।

—कुमाउँनी रामायण

जोशी जी ने पंक्तिबद्ध अनुवाद न करके छोड़-छोड़ कर किया है, लेकिन कोई भी प्रसंग छूटने नहीं पाया है । उदाहरणार्थ—

मुद मंगलमय संत समाजू । जो जग जंगम तीरथराजू ।।
राम भक्ति जहँ सुरसरि धारा । सरसइ ब्रह्म विचार प्रचारा ।।

—मानस

सन्तन हूल अनन्दक करणी । तीर्थराज छन चलणी फिरणी ।
राम भगति छू गंग की धारा । जमुना सरस्वति संगम प्यारा ।।

—कुमाउँनी रामायण

यहाँ जोशी जी ने संत लक्षण की इससे पूर्व तथा उत्तर की कुछ चौपाइयों का अनुवाद नहीं किया है ।

कतिपय स्थलों पर, जोशी जी ने प्रसंग का सोपान बदल दिया है । उदाहरणार्थ—जाम्वन्त द्वारा हनुमान को प्रबोधन मानस के किष्किन्धाकाण्ड में है, लेकिन जोशी जी ने यह

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA).

प्रसंग सुंदरकाण्ड में लिया है। हो सकता है, जोशी जी की रुचि इस प्रसंग में विशेष रही हो तथा चूँकि उन्होंने किष्किंधाकाण्ड का अनुवाद अभी नहीं किया है, इसलिए इसके मोह का त्याग न कर सके हों—

कवन सो काज कठिन जग माहीं। जो नहिं होइ तात तुम्ह पाहीं।
राम काज लगि तव अवतारा। सुनतहिं भयउ पर्वताकारा॥
—मानस

को यस काज कठिन बड़ भारी। करि न सकौ जो तुम बलधारी॥
राम काज करहुँणि औतारा। तुमर भयो, सुणि भारि अकारा॥
कुमाउँनी रामायण

कतिपय स्थलों पर जोशी जी ने अर्थ परिवर्तित कर दिया है, जैसे—

परदोष लखहिं सहसाखी। परहित घृत जिन्ह के मन माखी॥
—मानस

पर दोषन देखनि सौ आखीं। परहित घ्यू तनरी मन माँखी॥
—कुमाउँनी रामायण

यहाँ इन्होंने 'सहसाखी' के स्थान पर 'सौ' किया है। इसमें एक दोष है—सहस (हजार) के स्थान पर सौ (शत) आया है। शायद मात्राओं की सीमा के कारण ऐसा करने के लिए अनुवादक बाध्य था।

जोशी जी ने बालकाण्ड में प्रारम्भ में कुछ छंदों में संख्या दी है, बाद में नहीं दी है। सुन्दरकाण्ड में दो संख्याएँ एक साथ चल रही हैं, जो बहुत भ्रमित करती हैं। मात्र संख्या से अनुमान नहीं लगाया जा सकता कि यह अनुवाद मानस की किस पंक्ति का है। जोशी जी ने कुमाउँनी के कठिन शब्दों का अर्थ पादटिप्पणी में दिया है, जिससे पाठकों को रसास्वाद करने में आसानी होती है।

जोशी जी ने कुछ स्थलों पर हिन्दी में छंद परिवर्तित किए हैं जैसे, ईश्वर स्तुति सम्बन्धित सोरठा का अनुवाद दोहा छंद में किया है—

मूक होइ बाचाल पंगु चढ़इ गिरिबर गहन।
जासु कृपाँ सो दयाल द्रवउ सकल कलि मल दहन॥ —मानस
गूंगो मुखरित है सकुंछ, लूलो चठुंछ पहाड़।
तुमरि दया लै गणपति ज्यु ठुङ तरि सकनी गाड़॥
—कुमाउँनी रामायण

इन्होंने अधिकांश स्थलों पर उसी छन्द में अनुवाद किया है जैसे, चौपाई को चौपाई में ही छन्दोबद्ध किया है।

नाथ नील नल कपि द्वौ भाई। लरिकाई रिषि आसिष पाई।
तिन्ह कें परस किएँ गिरि भारे। तरिहहिं जलधि प्रताप तुम्हारे॥
—मानस

छन नल नील कि बानर भाई। तनुल एक रिषि आशिष पाई॥
तनर परस पँ सकन न डूबी। पेड़ पहाड़ तँरु बड़ि खूबी॥
—कुमाउँनी रामायण

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

जोशी जी का अनुवाद उच्च स्तर का है। इन्होंने मात्र अनुवाद पर ही ध्यान नहीं दिया प्रत्युत यह भी ध्यान रखा है कि मानस की रोचकता बनी रहे और उसके मार्मिक प्रसंगों को ठेस न पहुँचे, उदाहरणार्थ —

देखन बागु कुँवर दुइ आए। बय किसोर सब भाँति सुहाए॥
स्याम गौर किमि कहौं बखानी। गिरा अनयन नयन बिनु बानी॥
—मानस

देखन बाग कुँवर द्वी आई। सखि किशोर सुन्दर तों भाई।
हर्रि पिंगली छबि कई नि जानी। डिठि न मुख, निछ आँखन बाणी॥
—कुमाउँनी रामायण

जोशी जी का प्रयास सफल है, वह अपने उद्देश्य में भी सफल हुए हैं। इससे अल्मोड़ावासी तो अपनी भाषा में 'रामचरितमानस' का आस्वादन सुरुचिपूर्ण ढंग से करेंगे ही तथा हिन्दी-साहित्य भी अपनी क्षेत्रीय भाषा की समृद्धि पर हर्षित होगा। जोशी जी सम्पूर्ण मानस का अनुवाद कुमाउँनी में करें, यही मेरी शुभ कामना है।

□

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

रामायण तुलसीदल

डॉ. रामनिरंजन पांडेय

'रामायण तुलसीदल' लगभग 22-22 पंक्तियों के 837 पृष्ठों का ग्रंथ है। इसका हर सोलहवाँ छन्द दोहा है। प्रत्येक काण्ड के आरम्भ और अन्त में प्रायः सोरठा छन्द का प्रयोग हुआ है। प्रत्येक विश्राम-स्थल पर दोहा या सोरठा छन्द है। इसमें मास-पारायण के और नवाह्न पारायण के क्रमशः 30 और 9 विश्राम-स्थल हैं। यह लगभग पूर्णानुवाद है, पर कठिन स्थलों को बोध-गम्य बनाने के लिए अधिक छन्द लिखे गए हैं। ऐसे स्थल 'रामचरित मानस' के संक्षिप्त भाष्य के समान हो गए हैं। संस्कृत के छन्दों को अविकल उद्धृत करके उनका खड़ी बोली में छन्दानुवाद भी रखा गया है। 'रामचरितमानस' महाकाव्य होने के अतिरिक्त उपासना-ग्रन्थ भी है। उसके इस स्वभाव की रक्षा भी 'रामायण तुलसीदल' में की गई है। 'रामचरितमानस' के सब दोहों के स्थान पर 'रामायण तुलसीदल' में दोहा नहीं है, चौपाई है। ऐसे स्थानों में मानस के दोहे की संख्या दी गई है। इस प्रक्रिया में 'रामायण तुलसीदल' में मानस के सब दोहों की संख्या दिखलाई पड़ती है।

अनुवाद का यही नाम रखना उचित जान पड़ा। 'रामचरितमानस' का महत्त्व वेदों के समान है। 'तुलसीदल' में उसकी भाषा बदल गई है तथा कहीं-कहीं भाव स्पष्ट करने के लिए छन्द बढ़ा दिए गए हैं। अतः नाम बदलना आवश्यक हो गया।

गोस्वामी तुलसीदास का नाम पूज्य है, अतः तुलसीदल' नाम में वह पूज्य नाम आ गया है। अनुवाद होने के कारण 'रामायण तुलसीदल' मूल नहीं है, दल ही है। तुलसीदल में पवित्रता की व्यंजना है। 'रामचरितमानस' पवित्र एवं राम-ब्रह्म का नादावतार माना जाता है। उस पवित्रता की अभिव्यक्ति के लिए भी अनुवाद का नाम 'रामायण तुलसीदल' रखा गया। तुलसी नारायण-प्रिया है। राम, नारायण के अवतार हैं, इसीलिए भी इस अनुवाद के नाम में 'तुलसी' का नाम रख लेना संगत जान पड़ा।

'रामायण तुलसीदल' में एक संख्या के साथ एक चौपाई नहीं, अपितु कई स्थानों पर चौपाई-गुच्छ हैं। संख्या पहले निश्चित हो गई थी। बाद में अधिक चौपाइयाँ जोड़नी पड़ीं, इसीलिए एक संख्या के साथ कई जगह चौपाई गुच्छ आ गए हैं।

छपने के समय सामग्री के अस्त-व्यस्त हो जाने के डर से प्रत्येक चौपाई पर संख्या लगाई गई। इतने पर भी प्रेस वाले एक स्थल पर चूक गए और कठिनाई उठानी पड़ी।

अवधी से खड़ी बोली में अनुवाद करना था, इसीलिए किसी अनुवाद से अनुवाद

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

करने की आवश्यकता नहीं पड़ी। सीधे 'रामचरितमानस' के आधार पर ही 'रामायण तुलसीदल' को खड़ी बोली में ढाला गया। ग्राउज़ का अनुवाद मुझे अच्छा नहीं लगा। एटकिंस का अंग्रेज़ी में छंदानुवाद काफी अच्छा लगा। मुझे रूसी भाषा का ज्ञान नहीं है, अतः वारान्निकोव के अनुवाद पर कोई अभियत नहीं प्रकट कर सकता। यद्यपि इस चर्चा की यहाँ उतनी आवश्यकता नहीं थी फिर भी इन दो अनुवादकों के प्रयास पर संक्षिप्त दृष्टि डाल दी गई है। ग्राउज़ के अनुवाद पर, अपनी 'राम-भक्तिशाखा' में अधिक प्रकाश डाला है, क्योंकि वह अनुसन्धानात्मक ग्रन्थ है।

'रामचरितमानस' को खड़ी बोली में रूपान्तरित करने की आवश्यकता इसलिए जान पड़ी कि लगभग पूरा दक्षिण भारत अवधी के व्याकरणात्मक रूपों से भयभीत हो जाता है और 'रामचरितमानस' से हृदय और बुद्धि की तृप्ति पाने में असमर्थ रह जाता है। एक दिन एक पर्याप्त प्रबुद्ध वृद्ध सज्जन मेरे पास आए और तुलसी-रामायण देखने की आकांक्षा व्यक्त की। आंध्र-प्रदेश में 'रामचरितमानस' को प्रायः तुलसी-रामायण के नाम से पहचाना जाता है। उत्तर में भी यह ग्रन्थ 'रामायण' नाम से ही प्रायः अभिहित किया जाता है। काशी के बाबू बैजनाथ प्रसाद द्वारा सन 1935 में प्रकाशित ग्रन्थ पर 'रामचरित मानस' छोटे अक्षरों में छपी है और 'रामायण' नाम कई गुने बड़े अक्षरों में। इस संस्करण में एकाध स्थानों में 'मानस-रामायण' अभिधान का भी प्रयोग हुआ है। जहाँ से ग्रंथ आरम्भ हुआ है वहाँ के शीर्षक-स्थान पर उन्हीं बड़े अक्षरों में केवल 'रामायण' नाम का प्रयोग हुआ है। आज से 49 वर्ष पूर्व का गीताप्रेस का एक संस्करण मेरे पास है। उसके प्रकाशकीय वक्तव्य में 'रामचरितमानस' नाम का प्रयोग हैं। परन्तु रामायण की आरती में 'रामायण' शब्द का प्रयोग हुआ है। उसकी प्रथम पंक्ति में 'आरती श्रीरामायण जी की' में 'रामायण' शब्द का ही प्रयोग हुआ है। वाल्मीकि के ग्रंथ का नाम 'रामायण' है। गोस्वामी जी ने भी 'यद्रामायणे निगदितं' में वाल्मीकि के ग्रंथ का नाम 'रामायण' ही उल्लिखित किया है। 'रामचरितमानस' नाम लम्दा है; लगता है इसीलिए जन-साधारण में 'रामायण' नाम अधिक प्रचलित हो गया। अस्तु तेलुगु-भाषी उक्त वृद्ध सज्जन गोस्वामी तुलसीदास जी के व्यक्तित्व से वे परिचित थे। उनकी आकांक्षा थी कि वे 'तुलसी-रामायण' पढ़ें। बड़ी लालसा से वे मेरे पास से 'रामचरितमानस' की एक प्रति ले गए, पर एक ही दिन के बाद लौटा गए। उन्होंने कहा—इस ग्रन्थ की एक भी पंक्ति मैं नहीं समझ सका। कारण स्पष्ट था। अवधी के व्याकरणात्मक रूपों से अनभिज्ञ होने के कारण उनकी लालसा रह गई। उसका सारा उत्साह भंग हो गया। इस स्थिति से मेरा परिचय, इस घटना से भी बहुत पुराना था और अनुवाद कार्य आरम्भ हो चुका था।

'रामचरितमानस' महाकाव्य तो है ही पर उससे अधिक वह उपासना-ग्रंथ बनकर हिन्दी प्रान्तों में घर-घर पहुँच गया। लोगों की यह धारणा है कि मन्त्र का अर्थ चाहे समझ में न आया हो फिर भी उसके जप से सिद्धि प्राप्त हो जाती है। शाबर मन्त्रों के सम्बन्ध में गोस्वामी जी की भी ऐसी ही धारणा है। 'रामचरितमानस' का पाठ करने वाले अधिकांश लोग उसका पूरा अर्थ नहीं समझते। पाठ करने से पुण्य होता है, यही धारणा लेकर लोग पाठ करते हैं, अर्थ पर अधिक ध्यान नहीं देते। उत्तर प्रदेश के एक साधारण पढ़े-लिखे सज्जन 'मानस' का नित्य पाठ करते थे। उन्होंने 'तवानन-चन्द्र' का अर्थ पूछते हुए कहा, यहाँ का

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

'तवा' रोटी सेंकने वाला तवा है क्या ? वे 'तब-आनन-चन्द्र' तुम्हारा मुख-चन्द्र नहीं समझ पाते थे। उन्होंने मुझे यह भी बताया कि यहाँ के 'तवा' को एक सज्जन ने मुझे रोटी सेंकने वाला तवा ही बताया।

'रामचरितमानस' को भिन्न-भिन्न स्तर के लोग भिन्न-भिन्न प्रकार से समझते हैं। 'ढोल-गँवार-शूद्र-पशु-नारी' में क्रम से आकाश, अग्नि, वायु, पृथ्वी और जल के पाँच तत्वों के उदाहरण हैं, पर बे-समझे लोग इस अर्धाली पर झगड़ा करते हैं। इस अर्धाली में राम-चरित मानस द्वारा प्रचारित विश्व-जीवन के आदर्शों की संक्षिप्त प्रक्रिया वर्णित है। इसमें रामचरित-मानस को समझने की कुंजी है।

नाना पुराण, निगम, आगम और स्वस्थ लोकमत को आधार बनाकर गोस्वामी जी ने 'रामचरितमानस' का प्रणयन किया। पराजित हिन्दू जाति में आत्म-विश्वास और तेज का आधान करने के लिए उन्होंने उदार-चरित रघुपति का, मर्यादापुरूषोत्तम श्रीरामचन्द्र का यशोगान किया। 'रामचरितमानस' की संस्कृत-निष्ठ अवधी चार सौ वर्षों के अन्तराल के कारण बोध-गम्य नहीं रह गई। उससे उपासना तो होती है, पर मानस के मर्म का ज्ञान नहीं होता, अतः उपासना भी पूरी नहीं होती। 'सप्त प्रबन्ध सुभग सोपाना। ज्ञान-नयन निरखत मन साना' जीवन के सात आदर्श प्रबन्धों और चेतना के पूर्ण विकास को सम्भव बनाने वाले सात सोपानों वाले 'रामचरितमानस' को, गोस्वामी जी ने ज्ञान-नयन से निरीक्षण करने को कहा। सिद्धि का आनन्द इसी प्रकार के अवधान से प्राप्त होगा, अनुशीलन और चिन्तन का विकास इसी प्रक्रिया से प्राप्त होगा, यही तुलसी का लक्ष्य है। 'रामचरितमानस' इसी पूर्णता की हामी भरता है। जीवन और चिन्तन के विकास को पराकाष्ठा तक पहुँचाने वाला ग्रंथ, 'रामचरितमानस' अनुभूति और चिन्तन के सुलभ और बहुमूल्य रत्नों से भरा हुआ है। ऐसे अद्‌भुत ग्रन्थ को अधिक लोकप्रिय और अधिक लोक हितकारी बनाने के लिए, उसके खड़ी बोली रूपान्तरण का यह विनम्र प्रयास: 'रामायण-तुलसीदल' प्रकाशित हो चुका है। पूज्य स्वामी रंगनाथानन्द जी ने 1990 की तुलसी जयन्ती को इसे लोकर्पित किया था। दूसरे संस्करण के लिए इस ग्रन्थ के परिवर्धन और संशोधन का काम अयोध्या काण्ड के 291 दोहे तक पूरा हो चुका है। पूरे ग्रंथ की सज्जा में लगभग सात महीने और लग जाएँगे।

पूरे भारत में लगभव एक ही सांस्कृतिक परिवेश है। लगभग सब प्रान्तों में रामायण, महाभारत, श्रीमद्‌भागवत ग्रन्थ प्रान्तीय भाषा में आ चुके हैं। अतः 'रामचरितमानस' की अविकल सांस्कृतिक छवि 'रामायण-तुलसीदल' में अनायास उतर आई है। भारत के बाहर की भाषाओं में भी इस संस्कृति की अविकल अवतारणा की जा सकती है। इन देशों की जनता इस अवतारणा में भारतीय संस्कृति की छवि का दर्शन करेगी।

'रामायण तुलसीदल' की विशेषता यही है कि वह अधिक बोध-गम्य है और स्थल-स्थल पर 'रामचरित मानस' के संक्षिप्त छन्दोमय भाष्य का काम भी करता है। इसमें लगभग वही छन्द हैं जो 'रामचरितमानस' में हैं। इसमें तुलसी के मानस के सार्थक एवं साभिप्राय शब्दों की रक्षा का प्रयास किया गया है।

नीचे 'रामायण तुलसीदल' के कुछ उद्धरण प्रस्तुत हैं :—

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

॥ बाल-काण्ड ॥

विप्र-धेनु-सुर-सन्त-हित, लिया मनुज अवतार।
निज-इच्छा-निर्मित-तन, माया-गुण-गो-पार ॥
छन्द सं. 1248 तु. द. दोहा 78 मानस दोहा ॥ 192 ॥

सुन-शिशु-रुदन-परम-प्रिय-वाणी। आनन्दित हैं अति, सब प्राणी ॥
तुरत वेग से आयीं रानी। सबके मन की अकथ कहानी ॥
हर्षित स्थल-स्थल दौड़ीं दासी। सुख में मग्न सफल पुर वासी ॥ 1249 ॥

इस उद्धरण की यह विशेषता है कि इसकी पहली और दूसरी पंक्तियों की पहली चतुर्थालियाँ मानस की हैं, परन्तु दूसरी और चौथी चतुर्थालियाँ केवल इसलिए जोड़ी गई हैं कि 'वाणी' की 'प्राणी' से और 'रानी' की 'कहानी' से तुक मिल जाए। इस परिवर्तन से तुलसी के अभिप्राय को कोई धक्का नहीं लगा है, अपितु समर्थन ही प्राप्त हुआ है।

दशरथ, पुत्र-जन्म-सन्देश। पा ज्यों ब्रह्मानन्द-प्रवेश ॥
परम-प्रेम मन, पुलक शरीर। चाहें उठना, कर मति धीर ॥ 1250 ॥

'मानस' में विरामादि के चिह्न नहीं के बराबर हैं। उस युग की लेखनशैली ही इसी तरह की थी। इस उद्धरण में तिल और विराम के प्रयोग से अर्थाभिव्यक्ति में सौकर्य उत्पन्न हुआ है।

जिसका नाम सुने, शुभ छाये। वे ही प्रभु मेरे गृह आये।
परमानन्द-पूर्ण-मन राजा। बोला बुला, बजाओ बाजा ॥ 1251 ॥

मानस में यहाँ की प्रथम पंक्ति में 'होई' और 'सोई' से तुक बिठाया गया है, यहाँ 'छाये' और 'आये' से। इस तुक से तुलसी के मर्म को अधिक चित्रात्मकता प्राप्त हो गई है— 'छाये' के प्रयोग से।

गुरु वसिष्ठ को गयी पुकार। आये द्विज-गण-सह नृप द्वार ॥
अनुपम बालक देखा जाकर। रूप-राशि-गुण चुके न गाकर ॥ 1252 ॥

ऊपर की चौथी चतुर्थाली में मानस में 'कहि न सिराई' है। यहाँ 'चुके न गा कर' है। 'बाल-चरित अति सरल सुहाये। सारद सेष संभु श्रुति गाये', 'यह सब चरित कहा मैं गाई' इत्यादि अनेक भावात्मक स्थलों का तुलसी गान ही करते हैं। उपर्युक्त स्थल भी भावात्मक स्थल है। इसीलिए तुलसी की शैली में यहाँ 'चुके न गा कर' अभिव्यक्ति का प्रयोग किया गया है।

॥ अयोध्या-काण्ड ॥

पाप-पुंज-कुंजर-मृगराज। शमन सकल-संताप-समाज ॥
जन-रंजन, भंवर भवभार। स्नेह-सुराम-सुधाकर-सार ॥
राम-स्नेह ही सुखद सुधाकर। भरता सुधा भरत-उर आ कर ॥
भरत-चरित है उसका सार। अमर करे, जग-शुभ-आचार ॥ 2204 ॥
सीता-राम-सु-रति वह सुधा। रहे भरत-उर जिसकी क्षुधा ॥
उससे पूरित भरत हृदय है। रहता जग-हित सदा सदय है ॥
ऐसे भरत न जग में आते। तो उसके सद्गुण मर जाते ॥
मुनि-मन-अगम-नियम-व्रत-शम-दम। का कैसे होता व्रत सुविषम ॥ 2205 ॥

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

दुक्ख-दाह-दारिद्रय सुमौन । सुयश-बहाने, हरता कौन ॥
जग के दम्भ, कौन जब हरता । कौन विश्व को पावन करता ॥
जो कवि भरत-सुयश है गाता । जग के ये सब दोष मिटाता ॥
भरत-चरित जब वाणी गाती । अतिशय उक्ति खोज थक जाती ॥
अतिशयोक्ति भी है रुक जाती । नहीं चरित को है छू पाती ॥ 2206 ॥
तुलसी से शठ, हठ कलिकाल । रामोन्मुख करता लख हाल ॥
तुलसी का करके उद्धार । की सु-भरत ने कृपा अपार ॥ 2207 ॥
मन-तन-पावन-नियम से, जो जीवन को साध ।
भरत-चरित के लीन हों, पायें पावन साथ ॥ (क) ॥
तुलसी जो सादर सुनें, भरत-चरित अति जाग ।
हो अवश्य भव-रस-विरति, श्री-प्रभु-पद-अनुराग ॥ (ख) 2208 ॥ 38 ॥ 326 ॥

उपर्युक्त छन्दों की सामग्री 'मानस' में 8 पंक्तियों में व्यवस्थित है पर तुलसी के मार्ग को छूने के लिए 'रामायण-तुलसीदल' में 21 पंक्तियाँ लिखनी पड़ी हैं । मानस की 'करिनेमु' अभिव्यक्ति को विश्लेषित करने के लिये उपरिलिखित एक पूरा दोहा प्रयुक्त हुआ है । भरत 'अयोध्याकाण्ड' के अप्रतिम नायक हैं । उनके शील के मर्म की जो व्यंजना, 'मानस' में गोस्वामीजी ने की है, उसे रूपायित करने के प्रयास में, उपरिलिखित अभिव्यक्ति को विस्तार प्रदान करना पड़ा हैं । आशा है कि इससे भरत-चरित को और अधिक समझने में सहायता मिलेगी ।

॥ अरण्य-काण्ड ॥

कानों में निज गुण पड़े, जिन्हें अधिक संकोच ।
परगुण सुनते ही अधिक, जिनमें हर्ष-सुलोच ॥ (क) ॥
ऐसे नर मम प्राण-सम, नहीं तनिक सन्देह ।
उन पर नारद ! मैं करूँ, उर से अति ही स्नेह ॥ (ख) ॥ 400 ॥ 25 ॥
सम-शीतल, जो मानें नीति । सरल स्वभाव, सभी से प्रीति ॥
जप-तप-व्रत-दम-नियम-सुसंयम । गुरु-गोविन्द-विप्र-पद-रति सम ॥ 401 ॥
दया-क्षमा-मैत्री-शुभ-श्रद्धा । मुदिता रहे सदा अविरुद्धा ।
उर में मम-पद-प्रीति-अमाया । करुणा की शुभ-शीतल-छाया ॥ 402 ॥
विरति-विवेक - विनय - विज्ञान । वेद- पुराण-अर्थ-शुभ-ज्ञान ।
दम्भ-मान-मद कभी न करते । भूल, कुमार्ग न निज पद धरते ॥ 403 ॥
गायें सुनें सदा मम लीला । हेतु-रहित पर-हित-रत-शीला ।
मुझसे वे न कभी कुछ चाहें । केवल रति-सम्बन्ध निबाहें ॥
सुन मुनि ! विश्व-साधु-गुण जितने । कह न सकें वाणी-श्रुति उतने ॥ 404 ॥
कह थकें वाणी-शेष, नारद सुन, सु-पद-पंकज धरे ।
दीने-बन्धु कृपालु कह मुख, स्व-जन-गुण-गण-हों हरे ॥
सिर झुका, बारम्बार पद पर, ब्रह्म-पुर नारद चले ।
वे धन्य ! तुलसीदास ! आशा छोड़, जो हरि-रँग गले ॥ 405 ॥

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

रावणारि-यश पावन, गायें सुनें सुलोग ।
राम-भक्ति पायें सुदृढ़, तज विराग-जप-योग ॥ (क) ॥
दीप-शिखा युवती-सु-तन, मन मत बनो पतंग ।
भजो राम, तज काम-मद, करो सदा सत्संग ॥ (ख) ॥ 406 ॥ 46 ॥

'मानस' में, इस उद्धरण की प्रथम पंक्ति में केवल 'सकुचाहीं' शब्द है । 'रामायण-तुलसीदल' में 'अधिक संकोच' हो गया है । उद्धरण का दोहा ॥ (ख) ॥ मानस में नहीं है । मर्यादा पुरुषोत्तम भगवान राम में गोस्वामी जी की अपार भक्ति है । उसी भक्ति की प्रगाढ़ता की व्यंजना करने के लिये, मर्यादा पुरुषोत्तम के शील-निरूपण में, इस ग्रन्थ में यह दोहा जोड़ दिया गया है । मानस में 'गुरु गोविन्द विप्र प्रेमा' है । इस उद्धरण की छठवीं पंक्ति में 'रति सम' हो गया है । इससे प्रेम की समानता व्यक्त होती है । गोस्वामीजी के अभिव्यक्ति-प्रयोग अद्‌भुत हैं । केवल 'प्रेमा' में प्रेम का तारतम्य देखने की छूट है । कबीर ने और तुलसी ने भी भक्त को भगवान से अधिक गौरव प्रदान किया है । 'बलिहारी गुरु आपणी जिन गोविन्द दीन दिखाइ' कबीर । 'मोते संत अधिक करि लेखा' तुलसी । तुलसीदल में भक्त और भगवान की समानता व्यक्त हुई है । गोस्वामी जी के 'कहियत भिन्न न भिन्न' मत का सहारा ले कर 'तुलसीदल' में व्यक्त गुरु-गोविन्द की समानता, एक विकल्प के रूप में स्वीकृत हो सकती है ।

उद्धरण की आठवीं पंक्ति में 'करुणा की शुभ-शीतल-छाया' अभिप्राय की पुष्टि के लिए जोड़ा गया है । यह अभिव्यक्ति मानस में छिपी हुई है । विस्तार के भय से यहाँ केवल संकेत का सहारा लेता हूँ । यहाँ की बारहवीं पंक्ति, ग्यारहवीं के अर्थ को अधिक बोध-गम्य बनाने के लिए जोड़ी गई है । पन्द्रहवीं पंक्ति में 'हों हरे' प्रयोग से गोस्वामी जी के राम-गुण-गान को रूपात्मकता प्राप्त हुई है राम की भक्त वत्सलता को आकार की मधुरता मिली है । तुलसी का अभिप्राय भी यही है ।

॥ किष्किन्धा काण्ड ॥

भाग्य बड़ा है हुआ दास का । बना आज प्रभु-चरण-पास का ॥
प्रभु की कृपा मिली है उसको । डर कर छोड़ा जग ने जिसको ॥ 239 ॥
भव-भेदज रघुनाथ यश, करें नर-नारी पान ।
पाते सकल मनोरथ, करें राम-प्रभु दान ॥ (क) ॥
परम बली रघुनाथ-राम-यश । सब-जग रोगों का करता वश ॥
कोई अन्य न ओषधि उस-सम । जो बनती सब रोगों का यम ॥
उसको सुनते जो नर-नारी । प्रभु साधें इच्छाएँ सारी ॥ (ख) ॥
उनके सकल मनोरथ. त्रिसिरा-शत्रु तुरन्त ।
सिद्धि करेंगे ही स्वयं, यह कहते सब सन्त ॥ (ग) ॥
नीलकमल-तन-श्याम, काम-कोटि-शोभा अधिक ।
सुनिए प्रभु-गुण-ग्राम, राम-नाम अघ-खग बधिक ॥ (घ) ॥
धन्य राम का नाम है, पाप-कुपक्षी-मार ।
जितने जग के पुण्य हैं, वह है सबका सार ॥ (ङ) ॥ 240 ॥ 51

ऊपर के उद्धरण में 239वाँ छन्द गोस्वामी जी के द्वारा उत्पन्न किए गए भक्ति के

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

वातावरण को रूपायित करने के लिए जोड़ा गया है। यह छन्द मानस में नहीं है। छन्द संख्या 240 में 'करें नर-नारी पान', 'करें राम-प्रभु दान', 'यह कहते सब सन्त', 'पाप-कुपक्षी-मार' और (ङ) की अंतिम पंक्ति, तुक के आग्रह से और अर्थ को सरल बनाने के लिए तथा तुलसी के भाव को गौरव प्रदान करने के लिए जोड़ी गई है। अत: 'रामायण तुलसीदल' में 'मानस' के सब साभिप्राय शब्दों को समेटने का प्रयास किया गया है तथा कुछ अंश गोस्वामी जी के काव्य के मर्म को उद्घाटित करने के लिए जोड़े गए हैं। यहाँ 3 दोहे, 3 चौपाई-पंक्तियाँ तथा 1 सोरठे का गुच्छ सहज रूप से बन गया है। इसके लिए संकल्प-जन्य प्रयास नहीं करना पड़ा है।

॥ सुन्दर काण्ड ॥

मैं फिर उर धर प्रभु की प्रभुता। पाऊँ कुछ प्रभु की ही विभुता॥
निज-बल-भर मैं बनूँ सहायक। कहूँ यही मैं, हे रघुनायक॥ 424 ॥
इस विधि, नाथ पयोधि बँधायें। तीन लोक प्रभु का यश गायें।
जो नर मम उत्तर-तट-वासी। उनमें पाप-राशि है खासी॥
नाथ इसी से उनको मारें। इस निज सर में उनको तारें॥ 425 ॥
सुनी राम ने, जो रण-धीर। सागर के मन की यह पीर॥
हरी तुरत ही प्रभु कृपालु ने। अखिल विश्व के जन-दयालु ने॥ 426 ॥
भारी देख राम-पौरुष-बल। हर्षित जल-निधि पा सेवा-फल॥
प्रभु को सारे चरित सुनाकर। पद-वन्दन कर जलधि गया घर॥ 427 ॥
निज-भवन-प्रस्थित सिन्धु, श्री-रघुबीर-मन मत भा रहा।
यह चरित कलि-मल-हर, यथा-मति दास तुलसी गा रहा॥
सुख-भवन, संशय-शमन, दुमन-विषाद, रघुपति-गुण घना।
तज सकल-आशाधार, गा ! सुन ! निरन्तर शठ मना॥ (अ) ॥
सकल-सुमंगल-दायक, रघुनायक-गुण-गान।
सादर-श्रोता तरें भव, सिन्धु बिना जल-यान॥ (अ) 428 ॥ 160 ॥

यहां की प्रथम पंक्ति का 'पाऊँ कुछ प्रभु की ही विभुता' अंश 'मानस' में नहीं है। प्रभुता के बाद वाली 'मानस' की सामग्री, तुक नहीं दे रही थी इसलिए यह अंश लिखना पड़ा, जो तुलसी का समर्थन प्राप्त कर सकता है, 'जाने तुमहि, तुमहि ह्वै जाई' के अनुसार।

इसका 'कुछ' शब्द, सागर की नम्रता प्रदर्शित करने के लिए प्रयुक्त हुआ है। 'सहायक' के बाद की मानस-सामग्री भी तुक नहीं दे रही थी, इसीलिए 'कहूँ यही मैं, हे रघुनायक' लिख दिया गया। पाँचवी पंक्ति में 'मारें' के अर्थ वाली मानस की सामग्री के बाद वाली सामग्री तुक के अनुकूल नहीं थी; इसलिए 'इस निज शर से उनको तारें' लिखना पड़ा। लंका कांड में इस प्रकार के तारण का सिद्धान्त बार-बार गोस्वामी जी ने दुहराया है। अत: यह अंश तुलसी-सिद्धान्त का पोषक है। आठवीं पंक्ति में 'पा सेवा फल' अंश अनुवादक की निजी सृष्टि है—'बल' को तुक देने के लिए। यह अंश भी तुलसी सिद्धान्त के अनुकूल है। सेवा-धर्म तुलसी-सिद्धान्त में बड़ा महत्त्वपूर्ण है। सेवा करने से ही सेवक भक्त बनता है-अवतारी ब्रह्म के विश्व-मंगल-विधान में सहायक बनकर। बारहवीं पंक्ति में

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

मानस के 'गना' के स्थान पर 'घना' लिखना पड़ा, क्योंकि 'गना', अवधी में प्रयुक्त, गणा-तत्सम का रूप है और 'मना' को तुक देता है। इसीलिए यहाँ 'घना' लिखना पड़ा-अवधी से बचने के लिए।

अन्तिम से ऊपर वाली पंक्ति में 'गुण' के स्थान में मानस में 'गुन' है। उपर्युक्त कारण के समान ही 'तुलसीदल' में 'गुन' को 'गुण' बनाना पड़ा। शेष पूरी पंक्ति अविकल सुरक्षित है, क्योंकि खड़ी बोली में भी यह अभिव्यक्ति ऐसी ही रखी जा सकती है।

॥ लंका-काण्ड ॥

सुनते गुह दौड़ा प्रेमाकुल। आया निकट परम-सुख-संकुल॥
सीता-संहित विलोक प्रभु को। भू पर पड़ा, न तन-सुधि थोक॥ 950॥
दास दशा स्वामी ही जाने। अन्य उसे कैसे पहचाने॥
परम प्रीति उसकी यह देख। रघुपति का है हर्ष अलेख॥
दास-विलोकन का सुख पाया। हरि ने उसको हृदय लगाया॥ 951॥
निज हृदय भेंट, कृपा-निधान, सुजान-राज, रमा-धनी।
ले उसे, परम-समीप, पूछा कुशल, गुह-कृत-स्तुति-घनी॥
अब कुशल, पद-पंकज विलोक, विरंचि-शंकर-सेव्य ये।
सुख-धाम ! पूर्ण अकाम ! राम ! नमामि राम ! नमामि ते॥ 952॥
सब-दृष्टि-अधम-निषाद, हरि ने भरत-सम उर में लिया।
मतिमन्द तुलसीदास, प्रभु को, मोह-वश, भूला किया॥
यह रावणारि-चरित्र पावन, राम-पद-रति-प्रद सदा।
कामादि-हर, विज्ञान-कर, सुर-सिद्ध-मुनि गायें मुदा॥ 953॥
समर-विजय, रघुवीर के, सुनते चरित सुजान।
विजय-विवेक-विभूति-स्थिर, उनको दें भगवान॥ (क)॥
यह कलिकाल मलायतन, मन ! कर देख विचार।
श्री-रघुनाथ-नाम तज, नहीं अन्य आधार॥ (ख)॥ 954॥ 121॥ 60॥

मूल 'मानस' में इस उद्धरण के स्थान पर 15 पंक्तियाँ हैं, यहाँ 18 उद्धरण की तीसरी पंक्ति मूल में नहीं है। दास के लिए स्वामी की प्रीति की गहराई इस पंक्ति से अधिक मधुर हो जाती। गोस्वामी जी का अभिप्राय भी यही है। पाँचवीं पंक्ति में 'हरि ने उसको हृदय लगाया' अभिव्यक्ति है। इसको पूर्व-तुक देने के लिए 'दास-विलोकन का सुख पाया' लिखा गया है। इससे भी आदर्श स्वामी राम की दास के प्रति प्रीति रूपायित हो उठती है। बाद की चतुर्थाली से उसकी संगति भी बड़े स्वाभाविक ढंग से बैठ जाती है। मानस के केवल हरषि' शब्द के लिए 'रघुपति का है हर्ष अलेख' चतुर्थाली लिखनी पड़ी है। उद्धरण की चौथी पंक्ति के 'परम प्रीति उसकी यह देख' को अच्छी साभिप्राय तुक भी इससे मिल जाती है।

मूल में छन्द 153 के 'भूला किया' के स्थान पर 'बिसराइयो' अभिव्यक्ति है। यद्यपि 'बिसराइयो' से एक बार भूलने का भान होता है, पर तुलसी का भाव बार-बार भूलने का ही है। 'भूला किया' अभिव्यक्ति से भाव स्पष्ट हो गया है।

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

॥ उत्तर-काण्ड ॥

जो पहले दुर्गम रायायण । सुकवि शम्भु, प्रभु-राम-परायण ॥
राम-पदाब्ज-भक्ति पाने को । उसको स्थिर कर, उर लाने को ॥ 1038 ॥
रचनाकार बने अति पावन । भक्ति-सुरस-वर्षा-शुभ-सावन ॥
शिव-कृत-मानस राम-नाम-रत । उससे होते सभी पाप हत ॥
मानस का यह गौरव जान । उर से दे उसको सम्मान ॥
करने शान्त स्व-उर का तामस । तुलसी ने रचना की मानस ॥ 1039 ॥
बाँधा उसे दास तुलसी ने । भाषा में, इस मति-हुलसी ने ॥
पुण्य, पाप-हर, सदा शिवंकर । देता सदा भक्ति उर में भर ॥
ज्ञानी का पावन विज्ञान । उसका भी जन को दे दान ॥ 1040 ॥
माया-मोह-कुमल का नाश । इसमें रहता शुभ का वास ॥
सुविमल-प्रेम-सुजल-भर-पूर । कलुष सभी करता अति चूर ॥ 1041 ॥

श्रीमद राम-चरित्र का, मानस, भरा-सुभाव ।
इसके सुख-कर-स्नान से, मिलता भक्ति-स्वभाव ॥ (क) ॥
उर को भर कर भक्ति से, इसमें जब हो स्नान ।
पावन बन जन सर्वथा, बनता परम महान ॥ (ख) ॥
घोर-सूर्य-संसार की, किरणें घोर-प्रभाव । 65 ।
मानस नर-रक्षा करे, दे शुभ-शीतल-भाव ॥ (ग) ॥ 1042 ॥

संस्कृत के दो शार्दूल-विक्रीडित छन्दों से, उत्तर काण्ड के अन्त में 'रामचरित-मानस' को सम्पूर्णता प्रदान की गई है । इन दो श्लोकों में पन्द्रह समस्त पदों का प्रयोग हुआ है । इन समस्त पदों के कारण अभिव्यक्ति अत्यन्त संक्षिप्त हो गई है । 'रामायण तुलसीदल' में समस्त पदों को तोड़कर अर्थ समझाने के प्रयत्न में 11 अर्धालियों और 3 दोहों की 62 पंक्तियों का प्रयोग हुआ है । इस प्रकार मानस की 8 पंक्तियों का पद्यानुवाद 17 पंक्तियों में सम्भव हुआ है ।

उद्धरण की पहली पंक्ति में 'प्रभु-राम-परायण' अभिव्यक्ति उसी पंक्ति में 'रामायण' शब्द को तुक देने के लिए प्रयुक्त हुई है । 'मानस' में न रहने पर भी, यह तुलसी की विचार-धारा का पोषण करती है। दूसरी पंक्ति की द्वितीय चतुर्थाली, प्रथम चतुर्थाली की तुक देने के लिए प्रयुक्त हुई है, पर है सार्थक एवं संगत । तृतीय पंक्ति की प्रथम चतुर्थाली लगभग मौलिक है । उसी पंक्ति की द्वितीय चतुर्थाली, प्रथम को तुक देने के लिए प्रयुक्त हुई है । एकदम मौलिक होते हुए भी यह सार्थक एवं संगत है ।

चतुर्थ पंक्ति की द्वितीय चतुर्थाली, प्रथम को तुक देने के लिए लिखी गई है, पर संगत है। पंचम अर्धाली, केवल 'मत्वा' शब्द जो मानस में है, उसी के लिए लिखी गई है, पर सन्दर्भ-संगत है । सातवीं पंक्ति की द्वितीय चतुर्थाली की 'इस मति-हुलसी ने' अभिव्यक्ति, प्रथम चतुर्थाली को तुक देने के लिए प्रयुक्त हुई है, पर सार्थक है। दसवीं पंक्ति की द्वितीय चतुर्थाली प्रथम को तुक देने के लिए लिखी गई है । ग्यारहवीं पंक्ति की द्वितीय चतुर्थाली प्रथम के तुक के लिए प्रयुक्त होकर भी तुलसी की धारणा का अनुसरण करती है ।

'रामायण तुलसीदल' के इस उद्धरण की बारहवीं पंक्ति में 'भरा-सुभाव' नूतन

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

अभिव्यक्ति है। 'मानस' में नहीं है पर तुलसी-द्वारा ग्राह्य हो सकता है। तुलसी के 'प्रेमाम्बु' का 'प्रेम' सुभाव ही है। तेरहवीं पंक्ति में 'सुख-कर' अभिव्यक्ति मौलिक है पर तुलसी द्वारा समर्थित है—'स्वान्तः सुखाय' में तुलसी सुख को ही परम महत्त्व देते हैं। आत्मा का आनन्दात्मक रसात्मक धर्म मानते हैं। मानस की 'भवतया' अभिव्यक्ति के लिए यहां 'उर को भर कर भक्ति से' चौदहवीं पंक्ति में कहा गया हैं। भक्ति हृदय-धर्म है। इसीलिए यह स्वतन्त्रता ली गई है। मानस हृदय-स्थान ही है। पूरी पन्द्रहवीं पंक्ति तुलसी की भावना के समर्थन के लिखी गई है और चौदहवीं को तुक भी देती है। इसी प्रकार सत्रहवीं अन्तिम पंक्ति तुलसी की अन्तिम पंक्ति का भावात्मक अनुवाद है। मानस के आरम्भ और अन्त में 'व' अक्षर है। 'तुलसीदल' के आरम्भ के 'वाणी' और 'वर्ण' शब्दों में तथा यहाँ की सत्रहवीं पंक्ति के अन्तिम शब्द 'भाव' में भी 'व' अक्षर है। इससे तुलसी की निर्धारित धारणा का संगत समर्थन हो जाता है।

इस विश्लेषण से इस अनुवाद की प्रक्रिया और उसकी विशेषता पर लगभग पूरा प्रकाश पड़ जाता है। 'रामायण तुलसी दल' में आदि से अन्त तक यही प्रक्रिया सतत प्रवाहित है। बालकाण्ड से ले कर लंकाकाण्ड तक, मानस में, इन काण्डों का आरम्भ संस्कृत श्लोकों से विभूषित हैं। 'रामचरित मानस' के उन सब श्लोकों से 'तुलसीदल' का श्रृंगार यथा-स्थान कर लिया गया है। रामचरित-मानस के समान ही 'रामायण तुलसीदल' भी उसका पूर्णानुवाद होने के कारण, उसके लगभग सब छन्दों का अनुसरण करने के कारण भी उपासनात्मक ग्रन्थ बन गया है। मुझमें कवि के कलात्मक स्वभाव का अभाव है इसलिए 'रामायण तुलसीदल' में मौलिकता का दुराग्रह नहीं है। आवश्वकता की बाध्यता के कारण जो कुछ अधिक लिखा गया हैं वह केवल 'मानस' को बोध-गम्य बनाने के लिए ही हुआ है।

चार सौ वर्षों के दीर्घकाल में 'रामचरित-मानस' प्रचारित होकर लोकप्रिय हो गया। यह ग्रन्थ तो स्वयं राम है। उनके सौन्दर्य से स्वाभाविक रूप से आकर्षित हो जाना अत्यन्त स्वाभाविक है। 'रामायण तुलसीदल' में मेरी अक्षमता प्रविष्ट हो गई है। उसका लोकार्पण केवल दस मास पूर्व हुआ। 'रामायण तुलसीदल' महिलाओं और पुरुषों को समान रूप से आकर्षित कर रहा है और उपासना-ग्रन्थ बनता चला जा रहा है। नित्य पाठ करने वाले इस ग्रन्थ से पाठ करने लगे हैं। आधुनिक वैद्युतिक प्रचार-तन्त्र से जुड़ जाने पर ग्रन्थ अधिक लोकप्रिय हो जाएगा, ऐसी आशा है। इस ग्रन्थ का प्रकाशन रामायण मेला समिति, हैदराबाद ने किया है। हैदराबाद की सम्पन्न जनता ने उदारतापूर्वक, इस दिशा में समिति की सहायता की है।

□ □ □

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

मानस का गुजराती काव्यानुवाद

डॉ. अम्बा शंकर नागर

गोस्वामी तुलसीदास-कृत 'रामचरितमानस' मध्यकालीन हिन्दी-साहित्य का कीर्ति-कलश है। देश और काल की सीमाओं को लाँघकर यह ग्रन्थ आज सार्वदेशिक और सार्वकालिक हो गया है। गुजरात में 'मानस' अपने रचना-काल से ही लोकप्रिय बना हुआ है। इस ग्रंथ से प्रेरणा प्राप्त करके गुजरात के अनेक कवियों ने गुजराती में रामकाव्य रचे हैं। प्रकाशकों ने गुजराती लिपि में इस ग्रन्थ को प्रकाशित किया है। इस पर टीकाकारो ने गुजराती में टीकाएँ लिखी हैं। इतना ही नहीं, उल्लेखनीय बात तो यह है कि आज से करीब दो-ढाई सौ वर्ष पूर्व कच्छ के महाराव लखपत सिंह द्वारा भुज (कच्छ) में स्थापित ब्रज-भाषा-पाठशाला में दो सौ वर्षों तक 'रामचरितमानस' पाठ्यपुस्तक के रूप में पढ़ाया जाता रहा है।

गुजराती में 'रामचरितमानस' का समश्लोकी काव्यानुवाद केवल एक ही उपलब्ध हुआ है। इसके कर्ता हैं, नड़ियाद-निवासी श्री शंकरभाई त्रिकमभाई पटेल। इन्होंने ई. सन् 1954 में अहमदाबाद के डायमंड ज्युबिली प्रेस से रामचरितमानस का समश्लोकी गुजराती अनुवाद प्रकाशित किया। प्रस्तुत लेख में हम इस अनुवाद का सविस्तार, सोदाहरण अवलोकन करेंगे।

ग्रन्थारम्भ में अनुवादक ने गुजराती भाषा में लिखे 'निवेदन' में 'रामचरितमानस' की महत्ता तथा अपनी अल्पज्ञता पर प्रकाश डाला है। इसके पश्चात् इस महान ग्रन्थ का गुजराती में अनुवाद करने की प्रेरणा उन्हें क्यों और कैसे हुई, इसका उल्लेख किया है। रामचरितमानस की महत्ता का उल्लेख करते हुए अनुवादक ने कहा है—

श्रीरामचरितमानस (तुलसीकृत रामायण) हिन्दी साहित्य उपवन का एक विशाल वट-वृक्ष है। इसकी छाया त्रिताप को दूर करके सुख, शांति, भक्ति और शक्ति प्रदान करती है। इसके आध्यात्मिक आचमन से तुष्टि एवं पुष्टि प्राप्त होती है। इसमें कर्म, उपासना और ज्ञान का जो त्रिवेणी संगम है उसमें स्नान करने से कायिक, वाचिक और मानसिक मलिनता दूर होती है। रामायण (राम+अयन) में राम का अधिवास होने से उसके द्वारा ईश्वर का साक्षात्कार भी सम्भव है। राम-नाम रूपी कल्पतरु के सान्निध्य से मन-वांछित फल प्राप्त होता है।

अनुवादक ने निवेदन में यह भी कहा है कि 'गृहस्थ धर्म का निर्वाह करने वालों के

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

लिए 'तुलसी कृत रामायण' के जैसा उपयोगी ग्रन्थ, अन्य नहीं है। यह ग्रन्थ महाकाव्य है किन्तु धर्मग्रन्थ के रूप में इसकी महत्ता सर्वाधिक है।'

ग्रन्थ के समश्लोकी अनुवाद करने के हेतु को स्पष्ट करते हुए अनुवादक ने कहा है—

मेरा वानप्रस्थ जीवन आनन्द पूर्वक व्यतीत हो सके इस हेतु से मैंने 'मानस' के स्नान, पान एवं मज्जन का निश्चय किया।

अपनी असमर्थता और सीमाओं को अनुवादक ने स्पष्ट शब्दों में स्वीकार किया है। 'ब्रजभाषा और अवधी' के सूक्ष्म भेद से अपरिचित होने के कारण अनुवादक ने भूल से रामचरितमानस को 'ब्रजभाषा' का ग्रन्थ बताया है। अनुवादक के शब्दों में—

मूल ग्रन्थ के ब्रजभाषा में होने के कारण, मैं उससे पूरी तरह लाभान्वित नहीं हो सका। इसलिए मैंने हिन्दी-गुजराती भाषांतरों तथा टीकाओं की सहायता से उसका अध्ययन किया। किन्तु सभी भाषांतर गद्य में थे, इसीलिए मूलग्रन्थ की गेयता और श्रुति-मधुरता से मैं वंचित रहा और इसीलिए मुझे जो आनन्द प्राप्त होना चाहिए था, नहीं हुआ। इसीलिए मैंने मूलग्रन्थ के दोहा, चौपाई, हरिगीतिका आदि का समश्लोकी अनुवाद करने का निश्चय किया। इसी निश्चय का परिणाम यह ग्रन्थ है।

अनुवादक ने तुलसीदास की महानता और अपनी अल्पज्ञता का उल्लेख इस प्रकार किया है—

'कहाँ ईश्वर का साक्षात्कार करने वाले कवि शिरोमणि तुलसीदास, और कहाँ मैं पामर अज्ञानी जीव! मैं उनकी नकल करने में कैसे सफल हो सकता हूँ? मैंने तो अपने आनन्द के लिए यह प्रयास किया है। जैसे बालक हाथ में आए सुन्दर खिलौने को अपने खेल के आनन्द के लिए खराब कर देता है, वैसे ही मेरे हाथों इस श्रेष्ठ ग्रन्थ की दुर्दशा हुई है। किन्तु जैसे बालक का यह कार्य क्षम्य समझा जाता है, वैसे ही आशा है मुझे भी सब लोग क्षमा करेंगे।'

अपने अनुवाद कार्य के बारे में स्पष्टता करते हुए अनुवादक ने कहा है—

मूलग्रन्थ में जो पदलालित्य और अर्थ गौरव है, वह सुरक्षित रहे, इस हेतु से जहाँ तक हो सका कवि के शब्दों को मैंने यथावत रखा है। कठिन शब्दों के अर्थ दिए हैं। सामासिक शब्दों को अलग-अलग करके लिखा है। अर्थ स्पष्ट करने के लिए विराम चिह्नों का प्रयोग किया है। अस्पष्ट अंशों को स्पष्ट करने के लिए 'स्पष्टीकरण' दिया है तथा पौराणिक सन्दर्भों को भी यथास्थान पाद टिप्पण में दिया है। वर्तनी की शुद्धि की सुरक्षा के लिए मैंने ह्रस्व-दीर्घ सूचित करने के लिए यथास्थान विशेष चिह्नों (अल्पविराम, डैश आदि) का प्रयोग किया है। साधारण पाठकों को ध्यान में रखकर मैंने अनुवाद को सरल बनाने और साथ ही मूलग्रन्थ की विशेषता को बनाए रखने का यथासम्भव प्रयत्न किया है। यदि मैं यह आशा करूँ कि मेरे द्वारा किया गया यह अनुवाद, भावुक भक्तों और विद्धजनों के लिए समान रूप से उपयोगी सिद्ध होगा, तो अनुचित न होगा।

अनुवादक के द्वारा ग्रन्थारंभ में गुजराती भाषा लिपि में किए गए इन निवेदनों को मैंने यहाँ साभिप्राय उद्धृत किया है, जिससे अनुवादक की शक्ति और सीमाओं का

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

प्रत्यक्ष परिचय जिज्ञासु पाठकों को मिल सके। इतनी स्पष्टता के बाद अब हम 'मानस' के इस समश्लोकी गुजराती अनुवाद का अवलोकन करेंगे।

एक भाषा से दूसरी भाषा में समश्लोकी पद्यानुवाद करना अत्यन्त दुरूह एवं दुस्तर कार्य है क्योंकि प्रत्येक भाषा की प्रकृति दूसरी भाषा से भिन्न होती है। कुछ भाषाएँ अकारांत होती है, कुछ आकारांत और कुछ ओकारांत। प्रकृति की इस भिन्नता के कारण समश्लोकी अनुवाद में छन्दों के निर्वाह में, पद-पद पर कठिनाई उपस्थित होती है। उदाहरणार्थ रामचरितमानस की प्रथम चौपाई को ही लीजिए—

बंदऊँ गुरु पद पदुम परागा। सुरुचि सुबास सरस अनुरागा।।

इसका गुजराती में समश्लोकी अनुवाद करना कठिन कार्य है। या तो इन शब्दों को इसी प्रकार, यथावत् रखना होगा, यदि इन्हें गुजराती भाषा की प्रकृति के अनुसार ढाला जाएगा तो छन्द बदल जाएगा। गुजराती और हिन्दी चाहे जितनी निकट की भाषाएँ हों, और बनकी शब्द-सम्पदा में चाहे जितना साम्य हो, फिर भी क्रियापद और विभक्तियाँ तो भिन्न ही रहेंगी। गुजराती में 'परागा' और 'अनुरागा' नहीं चलेगा। उनको 'पराग' और 'अनुराग' करना ही होगा। रामचरितमानस के गुजराती अनुवादक श्री शंकरभाई पटेल ने विवश होकर ऐसा ही किया है। उन्होंने इस पंक्ति का गुजराती अनुवाद इस प्रकार किया है—

वंदु गुरुपद पद्म पराग, सुरुचि सुवासित दे अनुराग।

पहले ग्रास में ही मक्खी आ गई। 'वन्दु' के 'उ' को दीर्घ मान लिया जाय, तो भी दोनों चरणों में 15-15 मात्राएँ ही हुईं। चौपाई छन्द तो हुआ नहीं, इसे चौपाई कहिए, चाहे कोई अन्य नाम दीजिए। जो भूल पहली पंक्ति में है, वह आगे भी, इसी तरह, पूरे ग्रंथ में व्याप्त है। ऐसा लगता है, जैसे अनुवादक चौपाई छन्द की प्रकृति से नितांत अपरिचित है। पहली पंक्ति के बाद अब दूसरी पंक्ति पर दृष्टिपात कीजिए—

अमिय मूरिमय चूरन चारू। समन सकल भव रुज परिवारू।।

गुजराती अनुवाद

अमर वल्ली-मूली-चूर्ण सुहावे। भव व्याधि परिवार समावे।

छन्द की दृष्टि से देखें तो पहली अर्धाली में 19 मात्राएँ हो गईं, दूसरी अर्धाली में केवल 15 मात्राएँ रह गई हैं।

'रामचरितमानस' के इस समश्लोकी गुजराती अनुवाद में छन्द-दोष, प्रारम्भ से लेकर अन्त तक व्याप्त है। अनुवादक की कठिनाई को समझते हुए भी, छन्द के साथ किए गए इस खिलवाड़ को देखा-अनदेखा नहीं किया जा सकता। अनुवादक को या तो चौपाई की मात्रा, यति, गति आदि का निर्वाह सुचारु रूप से करना चाहिए था या समश्लोकी अनुवाद का आग्रह न रखकर अपने बूते का कोई अन्य छन्द चुनना चाहिए था। इत छन्द-दोष के कारण सारा काव्यानुवाद पंकिल एवं दूषित हो गया है। चौपाई की तुलना में दोहों का अनुवाद अपेक्षाकृत सन्तोषजनक है—

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

मूल

जथा सुअंजन आंजि दृग, साधक सिद्ध सुजान ।
कौतुक देखत सैल बन, भूतल भूरि निधान ।।

गुजराती अनुवाद

आंजे अंजन आँख माँ, साधक सिद्ध सुजाण;
थाय शैल वन भूमिनाँ, कौतुक केरु ज्ञान ।

अनुवादक की एक दूसरी बड़ी भूल, मूल दोहे-चौपाइयों को यथावत् उद्धृत करते जाना है । अनुवादक ने कुछ भी बदले बिना, अधिकांश पंक्तियों का केवल लिप्यंतरण कर दिया है । उदाहरणार्थ—

मूल

जड़ चेतन गुण दोषमय, बिस्व कीन्ह करतार ।
संत हंस गुन गहहिं पय, परिहरि बारि बिकार ।

गुजराती अनुवाद

जड़-चेतन-गुण दोषमय, विश्व रचे करतार ।
संत हंस गुण क्षीर ग्रहे, परिहरि वारि विकार ।

इसमें प्रथम और चतुर्थ चरण तो यथावत् हैं । द्वितीय और तृतीय चरण में क्रमशः 'कीन्ह' की जगह 'रचे' और 'गहहिं पय' के स्थान पर 'क्षीर गहे' कर दिया गया है । दोहों की तरह चौपाइयों को भी कवि ने यथावत रखा है । एक उदाहरण दृष्टव्य है । प्रसंग लंकाकाण्ड में 'विजयरथ' के रूपक का है—

मूल

रावण रथी बिरथ रघुवीरा देखि विभीषण भयउ अधीरा ।।

गुजराती अनुवाद

रावणरथी बिरथ रघुवीर, देखि विभीषण थया अधीर ।।

अनुवादक ने केवल 'भयउ' के स्थान पर 'थया' किया है और अर्धालियों के अन्तिम अक्षर को आकारांत से अकारांत ('रघुवीर' और 'अधीर') कर दिया है, जिससे 16 मात्रा की चौपाई बदलकर, अनजाने ही 15 मात्रा की चौपाई हो गई है । उदाहरण तो और भी दिए जा सकते हैं । किन्तु, यह सिद्ध करने के लिए ऊपर दिए गए उदाहरण पर्याप्त हैं कि अनुवादक को छन्द-योजना पर अधिकार नहीं था और उसने अनुवाद करने के बजाय अनेक अंशों को यथावृत उद्धृत कर दिया है ।

'मानस' के प्रस्तुत गुजराती काव्यानुवाद का प्रत्यक्ष परिचय प्राप्त करने के लिए अयोध्याकाण्ड के राम वन गमन प्रसंग के कुछ नातिदीर्घ अंश यहाँ उद्धृत किए जा रहे हैं—

गुजराती अनुवाद

दो० प्राणनाथ करुणा-निधि, सुन्दर, सुखद, सुजाण;
रघुकुल-कुमुद-विधु विना, सुरपुर नरक समान ।

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

चौ० पिता, भगिनी, अति प्रिय भ्राता, प्रिय परिवार, सुहृद वकी माता :
सासु, श्वसुर, गुरु, सज्जन सहायक, सुशील, सुन्दर सुत सुखदायक।
जयां लगी नाथ, नेह वली नातो, पियु विण तरणीथी स्त्रीने तातो;
तन, धन, घाम, धरणी, पुर-राज, पति-विहीन सहु शोक-समाज।
भोग रोग, सम, भूषण भार, यमपुर सम लागे संसार;
प्राणनाथ ! तम विण जग मांही, मने सुखद कोई कदी नाहीं
जीव विण देह, नदी विण वारी, तेमज नाथ ! पुरुष विण नारी:
नाथ ! सकल सुख जगमां मारे, शरद-विमक विधु-वदन निहालये।

दो० खग मृग परिजन, नगर वन, वल्कल विमल दुकूल;
नाथ साथ सुर-सदन सम, पर्णकुटी सुख-मूल।

चौ० वनदेवी, वनदेव उदार, करशे सासु, श्वसुर सम प्यार;
कुश, किशलयनी शैयां कांइ, पति सह मुंजुं मनोज-तलाइ।
कंद-मूल-फल, अमृत भोजन, ल्हाड, अवध-प्रासाद समा मन;
क्षण-क्षण प्रभु पद कमल विलोकी, रहीश मुदित, दिवसे जयम कोकी,
वननां दुःख जे कहो छो आप, भय, विषाद, परिताप अमाप;
प्रभु वियोग-लवलेश समान, सहु मली थाय न, कृपा निधान।
जाणी अेम चतुर महाभाग, लोसाथे, करशो नव त्याग,
करुं वधु विनति शुं स्वामी ? करुणामय उर-अन्तर्यामी।

दो० राखो अवध, अवधि लगी, रहे तम विण जो प्राण;
दीनबन्धु, सुन्दर, सुखद, शील-सनेह-निधान।

इस अवलोकन से स्पष्ट हैं कि 'रामचरितमानस' का श्री शंकरभाई पटेल द्वारा किया गया यह समश्लोकी काव्यानुवाद अत्यन्त साधारण कोटि का है। अच्छे गुजराती काव्यानुवाद की आवश्यकता अभी भी बनी हुई है। इसलिए गुजराती के किसी सशक्त कवि को इस दिशा में प्रयास करना चाहिए।

'रामचरितमानस' का गुजराती लिपि में लिप्यंतर और मूल पाठ के साथ गुजराती गद्य में उसकी टीकाएँ—सस्तुं साहित्य वर्धक कार्यालय, नवजीवन ट्रस्ट, महादेव रामचन्द जागुष्टे आदि अनेक प्रकाशकों ने प्रकाशित की है। किन्तु उन सबका आधार गीता प्रेस, गोरखपुर-द्वारा प्रकाशित मानस की टीका है। इसलिए साहित्यिक दृष्टि से उनमें कुछ भी नवीन एवं उल्लेखनीय नहीं है। उनसे केवल इतना ही सिद्ध होता है कि गुजरात की धर्मप्राण जनता में रामचरितमानस अत्यन्त लोकप्रिय हैं।

सारांशत: इस अध्ययन से यह सिद्ध होता है कि गुजरात में रामकाव्य की परम्परा रही है और उस पर 'रामचरितमानस' का पर्याप्त प्रभाव है। गुजरात के जनजीवन पर भी 'रामचरितमानस' का सशक्त प्रभाव है। आज का प्रत्येक गुजराती पाठक 'मानस' का अनुवाद पढ़ने की अपेक्षा उसे मूल रूप में पढ़ना अधिक पसन्द करता है।

□

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

रामचरितमानस का तमिल अनुवाद

डॉ. रवीन्द्र कुमार सेठ

तमिल के संघयुगीन काव्य में 'विष्णु' के अनेक भावपूर्ण गीत उपलब्ध हैं। 'पुरनानूरु' के एक गीत में रामकथा प्रसंग का उल्लेख है—

'राम के साथ भी सीता वनवास गईं। राम की अनुपस्थिति में रावण ने सीता का हरण कर लिया। सीता ने अपने आभूषण यत्र-तत्र फेंक दिए। सुग्रीव पक्ष के वानरों ने ये आभूषण उठाए और उन्हें देखकर आश्चर्य व्यक्त करने लगे।'

इसी कृति के एक अन्य प्रसंग में श्रीराम पाण्ड्य देश के समुद्रतट पर एक वटवृक्ष के नीचे युद्ध-विषयक मंत्रणा कर रहे थे तो पक्षियों के कलरव के कोलाहल से उसमें विघ्न हुआ। श्रीराम ने हस्त-संकेत द्वारा पक्षियों के कलरव को शांत किया। 'पुरनानूरु' का रचनाकाल प्रायः प्रथम से द्वितीय शती माना जाता है। इस भाँति संघकालीन 'मदुरैक्कांची' में भी रामकथा के प्रसंग मिलते है। तमिल के प्राचीन, प्रथम महाकाव्य 'शिलप्पदिकारम्' के 'आय्च्चियर कुरवै' तथा 'ऊर काण् कादै' प्रसंगों में राम-विषयक उल्लेख उपलब्ध हैं। इसका रचनाकाल ईसा की द्वितीय से पाँचवीं शती के मध्य माना जाता है। 'मणिमेकलइ' नामक महाकाव्य में भी रामकथा के प्रसंग मिलते हैं। उल्लेख्य है कि यदा-कदा इन उल्लेखों में वर्ण्य-विषय रामकथा से सम्बद्ध होते हुए भी 'वाल्मीकि रामायण' से तत्त्वतः भिन्न सामग्री हमारे समक्ष आती है।

तमिल प्रदेश में वैष्णव संत का सामान्य अभिधान 'आल्वार' है। 'भगवद्भक्ति के रस में लीन', अध्यात्मज्ञान रूपी सागर में गहरा गोता लगाने वाले' ये बारह आल्वार 'परमात्मा का साक्षात्कार करके उसके सौलभ्य, परत्व गुणों के अनुभव को व्यक्त करने वाले संत, भारतीय चिंतन-धारा के आधार-स्तम्भों में से हैं। कुलशेखर आल्वार रचित 'पेरुमालि तिरुमोलि' में कृष्ण की बाल-लीलाओं से वंचित देवकी का करुण विलाप, कवि द्वारा दशरथ-पुत्र राम को लोरी गाकर सुलाना तथा संक्षिप्त रामकथा का वर्णन है। 'कोदण्डधारी', 'अपनी विमाता के वचन को मानने वाले', 'महाविष्णु के अवतार', 'केवल चट्टानों द्वारा सेतुबंध बनाकर श्रीलंका को नष्ट करने वाले', 'भरत को राज्य प्रदान कर छोटे भाई लक्ष्मण के साथ वनगमन करने वाले राम का वर्णन करते हुए कुलशेखर आल्वार रामकथा के साथ अपने गहन और निकट के परिचय को उद्घाटित करते हैं। अंतर्कथाओं सहित राम-कथा

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

के प्रायः सभी प्रसंग कुलशेखर आल्वार के समक्ष उजागर हैं। 'कौशल्या के मणि-उदर में निवास करने वाले', 'दृढ़ पराक्रम युक्त ताड़का का वध करने वाले', 'जनक के श्री दामाद', 'दशरथ के उत्तम बालक', 'मैथिली के दूल्हा', आदि इस कथन की पुष्टि करते हैं। समग्रतः कुलशेखर ने रामकथा का सूक्ष्म परन्तु विस्तृत चित्रण किया है। पेरियाल्वार ने भी रामकथा के परिचय के पर्याप्त प्रमाण दिए हैं। 'पेरियाल्वार तिरुमोलि' में सीता को राम की अँगूठी देते हुए हनुमान रामकथा के अनेक प्रसंगों का उल्लेख करते हैं। 'धनुष-भंजन कर राम का सीता को प्राप्त करना', 'परशुराम प्रसंग', 'राम वन-गमन के शोक के कारण दशरथ की अचेतावस्था', 'गंगा-तट पर राम-गुह मैत्री', 'चित्रकूट की तराई में गुण-सम्पन्न भरत का आकर राम के चरणों में प्रणाम' इत्यादि। वाल्मीकि रामायण में अनुपलब्ध एक प्रसंग का उल्लेख है जिसमें रात्रिकाल की मनोहर, मादक परिस्थितियों में प्रणय-प्रसंग में राम को सीता ने उत्तम मल्लिका पुष्पों की माला से बंधन में बाँधा था। राम द्वारा गोपनीय संकेत देकर हनुमान के दूतरूप को प्रामाणिकता देने का यह कवि उपक्रम श्लाघ्य है पेरियाल्वार के अतिरिक्त तिरुमंगै आल्वार तथा नम्माल्वार ने भी रामकथा के विशिष्ट प्रसंगों को कुछ विस्तार से अपने काव्य में प्रस्तुत किया है।

यदि 'नालायिर दिव्य प्रबन्धम्' में उपलब्ध विविध रामकथा-प्रसंगों को एक साथ क्रम-बद्ध रूप में रखा जाए तो पूरी रामकथा मिल जाती है। 'दिव्य-प्रबन्धम्' के टीकाकार श्री पेरियवाच्चान पिल्लै ने प्रबन्धम् में उपलब्ध रामकथा को व्यवस्थित रूप देकर 'पाशुरप्पडी रामायण' नाम दिया।

तमिल के शैव-भक्तों को नायन्मार कहते हैं। इन्होंने अपने काव्य में शिव के महत्व को प्रतिपादित करने के लिए रामायण के प्रसंगों को ग्रहण किया है। शैव-संत तिरुज्ञान सम्बन्धर ने 'रामेश्वर पदिकम्' शीर्षक के दस पदों में भगवान् रामलिंग की स्तुति गाई है। तिरुनावुक्करसर ने भी इसी भाँति रामेश्वर-मंदिर की महिमा-विषयक गीतों की रचना की है। मूल भाव प्रायः शिव-महिमा का गायन रहा—'दस शीश और बीस कर वाले राक्षस रावण के कैलाश पर्वत को उठाने का प्रयत्न करते समय उसके अहंकार का दमन करने वाले परमेश्वर।' रामायण की घटनाओं एवं पात्रों का सम्बन्ध शिव के साथ जोड़कर शिव-स्तुति करना ही इनका लक्ष्य था।

रामकथा को 'शडयप्पवल्लल्' नामक दानी एवं यशस्वी व्यक्ति के गाँव 'तिरुवेण्णै-नल्लूर' में रचना करने वाले 'कम्बन' ने कम्बरामायण का नाम मूलतः 'इरामावतार' रखा था। उन्होंने वाल्मीकि की मूल कथा को ग्रहण किया, तमिल साहित्य और सांस्कृतिक चेतना के अनुसार अपनी प्रतिभा के योगदान द्वारा एक नवीन सृष्टि की। घटना-चित्रण, पात्रों का अन्तर्द्वन्द्व, प्रकृति और मानव के सम्बन्ध आदि में एक नवीनता दृष्टिगत होती है। तमिल भाषा की परम्परागत रूढ़ियों, शृंगार-वर्णन तथा पात्रों के पुनःसृजन में सामाजिक परिवेश और युगीन चिंतन सहज ही समन्वित हो गया है। कम्बन की रामायण के 'राम' 'अरुण नयन वाले विष्णु' के अवतार हैं जो वेदों के लिए भी अग्राह्य (अरुमरैक्कु उणरवु अरुम्) है तथा जिन्होंने प्रलय के अवसर पर समस्त लोकों को उदरस्थ कर लिया था। कम्बन ने रामकथा को तमिल में रचकर एक विस्तृत परम्परा को सशक्त भाषा-शैली और

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

मौलिक चिंतन का आयाम प्रदान किया।

इस विस्तृत साहित्यिक परम्परा के संदर्भ में आइए हम तुलसीकृत 'रामचरितमानस' के तमिल अनुवाद पर विचार करें।

तमिल में 'रामचरितमानस' का अनुवाद भारत सरकार के वित्त मंत्रालय में भूतपूर्व अवर सचिव श्री श्रीनिवास जगन्नारायण ने किया है। श्री श्रीनिवास जगन्नारायण संस्कृत, तमिल, हिन्दी, अंग्रेजी भाषा के विद्वान् हैं। रामकथा के प्रति समर्पित 'भक्त' के रूप में आपने वाल्मीकि रामायण, कम्बरामायण, रामचरितमानस का गम्भीर अध्ययन किया है। उन्होंने 'रामायण त्रिवेणी' नामक अपनी एक कृति में वाल्मीकि रामायण, कम्बरामायण एवं रामचरित मानस का तुलनात्मक रीति से विवेचन भी प्रस्तुत किया है।

श्री श्रीनिवास जगन्नारायण कृत यह अनुवाद पाँच भागों में 1971-72 के आसपास केन्द्रीय शिक्षा मंत्रालय के अनुदान से प्रकाशित हुआ है। यह गद्यानुवाद है लेकिन हिन्दी-तमिल सम्बन्धों तथा रामकथा के प्रचार की दृष्टि से इसका विशिष्ट महत्व है। इसके प्रथम खण्ड में बालकाण्ड, द्वितीय खण्ड में अयोध्याकाण्ड एवं अरण्यकाण्ड, तृतीय में किष्किन्धा एवं सुन्दर काण्ड, चतुर्थ खण्ड में लंकाकाण्ड तथा पंचम खण्ड में उत्तरकाण्ड की कथा है। यह क्रम 'रामचरितमानस' के क्रम से थोड़ा हटकर है। समग्र रामचरितमानस के 6000 से अधिक पदों के सात सोपानों का अनुवाद 2420 पृष्ठों में है।

इसमें तुलसी-काव्य के दोहा एवं चौपाई के अतिरिक्त सोपान के प्रारम्भ में रचे गए संस्कृत श्लोकों का भी तमिल पाठ मिलता है। इन श्लोकों का अनुवाद न कर उन्हें यथावत् तमिल लिपि में प्रस्तुत किया गया है। यह केवल तमिल अनुवाद नहीं है वरन् इसमें अनुवादक ने अपनी टिप्पणियाँ भी दी हैं। विद्वान अनुवादक ने तुलसी-काव्य का गहन-गम्भीर अध्ययन कर व्याख्या एवं विश्लेषणात्मक अध्ययन प्रस्तुत किया है। अनुवादक ने स्थान-स्थान पर रामायण, संत साहित्य एवं भक्ति-परक साहित्य के अपने विस्तृत ज्ञान का सम्यक् उपयोग इस अनुवाद एवं टीका में किया है।

इस प्रकार का अनुवाद एवं परम्परा से प्राप्त सामग्री के आधार पर किया गया विश्लेषण सहृदय पाठक को प्रभावित करने में सक्षम होता है। संस्कृत के आदिकवि 'वाल्मीकि', तमिल के महाकवि 'कम्बन', तेलुगु के रामनाम-गायक संत त्यागराज, तमिल के आल्वार भक्तों की सूक्तियाँ एवं गीतों द्वारा लेखक ने रामकथा के विभिन्न संदर्भों को स्पष्ट किया है, तुलसीदास के विचारों एवं भावों की तुलना भी प्रस्तुत की है। इस प्रकार तुलनात्मक दृष्टि से किया गया यह अध्ययन प्रशंसनीय है।

प्रथम खण्ड—बालकाण्ड—के प्रारम्भ में लगभग 102 पृष्ठों की एक भूमिका भी है। श्री श्रीनिवास जगन्नारायण ने इसके अंतर्गत राम-सीता-लक्ष्मण के मानव-लोक में अवतरित होने के उद्देश्य अर्थात् 'अवतार-रहस्य' को निरूपित किया है। राम की महिमा के गुणगान के साथ ही राम-नाम की महत्ता की सुष्ठु व्याख्या की है तथा आधुनिक-युग के संदर्भ में राम-काव्य की प्रासंगिकता और उपादेयता पर विवेचन किया है। इस भूमिका का राम के प्रति श्रद्धा और भक्ति की अभिव्यक्ति के साथ ही साहित्यिक दृष्टि से भी महत्त्व है। इसी भूमिका के दूसरे अंश में गोस्वामी तुलसीदास की संक्षिप्त जीवनी प्रस्तुत की गई है, साथ ही श्रद्धालु पाठकों के लिए पारायण-विधि स्पष्ट की गई है, नित्यपाठ की विधि को

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

समुचित ढंग से संक्षेप में वर्णित किया है। 'रामचरितमानस' के अतिरिक्त गोस्वामी तुलसीदास के अन्य ग्रंथों का भी साररूप में परिचय दिया है। तदुपरान्त मानस के साथ इतर रामायण-ग्रंथों की भी संक्षिप्त चर्चा की है।

इस भूमिका में मानस की कतिपय विशेषताओं को भी स्पष्ट किया गया है। तमिल प्रदेश के तिरुवारूर में जन्मे दो सौ वर्ष पूर्व संत त्यागराज ने संत तुलसीदास को अपना गुरु स्वीकार कर उनके प्रति कृतज्ञता ज्ञापित करते हुए अपनी मातृ-भाषा तेलुगु में गीत लिखे। संत त्यागराज के कीर्तन एवं गीतों की तुलना तुलसीदास के विचारों एवं भावों से कर दोनों का हृदयग्राही चित्रण पाठकों को करवाने में इस भूमिका का योगदान सराहनीय है।

समस्त ग्रंथ के अवलोकन से स्पष्ट हो जाता है कि विद्वान् अनुवादक का मूल ध्येय कवि तुलसीदास के भक्त-रूप का परिचय पाठकों को उपलब्ध करवाना रहा है। इस कारण विषय के स्पष्टीकरण के अनुकूल संस्कृत भाषा के शब्दों का प्रचुर प्रयोग निःसंकोच किया गया है। अनुवाद की भाषा में सरल, बोलचाल की तमिल के साथ-साथ अनेक प्रचलित और अप्रचलित संस्कृत शब्दों का प्रयोग हुआ है। संस्कृत से अनभिज्ञ तमिलभाषी पाठक के लिए संस्कृत का यह प्रयोग अनुवाद की उपादेयता कम कर देता है। विचारों का तारतम्य, अनूदित अंश की बोधगम्यता दोनों में इससे प्रभाव पड़ता है। लेखक की भाषा-सम्बन्धी सीमा भी मान लें तो भी तमिल भाषी पाठक को तुलसी रामचरितमानस को आत्मसात् करने में यत्किंचित व्यवधान तो पड़ता ही है।

इस कृति का विवेचन करते हुए तमिलनाडु के हिन्दी विद्वान् एम. शेषन ने टिप्पणी की है—'कुल मिलाकर यह माना जा सकता है कि अनुवादक श्री श्रीनिवास जगन्नारायण को मूल काव्य के विचारों एवं भावों को समझने तथा कवि के प्रति पाठकों के मन में श्रद्धा-भाव उत्पन्न कराने में पर्याप्त सफलता प्राप्त हुई है। मेरी जानकारी में गोस्वामी तुलसीदास कृत मानस का यह पहला तमिल अनुवाद है जिसे पढ़कर तमिल-पाठक हिन्दी के महाकवि एवं 'मानस' के रचयिता 'तुलसी' के विचारों से अवगत हो सकते हैं।'

हिन्दी के इस विशाल, अद्वितीय रामकाव्य के तमिल अनुवाद का हम सादर स्वागत करते हैं। हमें तमिल-हिन्दी के सम्बन्धों को दृढ़तर बनाने के लिए लेखकों, अनुवादकों तथा संस्थाओं के कार्य को सम्यक् प्रोत्साहन देने की दिशा में सशक्त प्रयास करना होगा क्योंकि राष्ट्रीय भावात्मक एकता का यह एक महत्त्वपूर्ण ठोस आधार है।

□

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

मानस के तेलुगु अनुवाद

डॉ. टी. राजेश्वरानंद शर्मा

गोस्वामी तुलसीदास प्रणीत रामचरितमानस भक्ति-तन्मयता तथा काव्य-कला की दृष्टि से ही नहीं, प्रत्युत सामाजिक नैतिक मूल्यों की प्रतिष्ठा और सहज-सरल अभिव्यक्ति की मधुरता के कारण भी समस्त रामकाव्यों के बीच विशिष्ट स्थान रखता है। इस काव्य की ओर तेलुगु के कतिपय साहित्यकारों का ध्यान गया है। तेलुगु में इसे अनूदित करने के प्रयास यों तो उन्नीसवीं शताब्दी से दिखाई पड़ते हैं किन्तु तेरहवीं सदी से रंगनाथरामायण, भास्कर रामायण, निर्वचन उत्तर रामायण, मोल्ल रामायण आदि रामकाव्य एक समृद्ध परंपरा की ओर संकेत करते हैं। इन रामायणों में वाल्मीकि प्रणीत आदि काव्य के अलावा अन्य स्रोतों से गृहीत कथा-प्रसंगों की योजना भी मिलती है। तेलुगु की व्यावहारिक समीक्षा में वाल्मीकि रामायण में प्राप्त नहीं होने वाले अंशों को अवाल्मीकीय अंश कहा गया है अर्थात तेलुगु में, रामकाव्य की कथावस्तु की आलोचना, वाल्मीकि रामायण को निकष मान कर की जाती है। मोल्ल रामायण और रामचरितमानस में संयोजित केवट-प्रसंग ऐसा ही अवाल्मीकीय अंश है। इस प्रसंग का मूल स्रोत अध्यात्म रामायण में दिखाई देता है। रंगनाथ रामायण तथा मोल्ल रामायण में धनुर्भंग के अवसर पर धरती, शेषनाग, आदिवराह आदि को सावधान किए जाने का प्रसंग मिलता है। यह प्रसंग रामचरितमानस में भी संयोजित है। इस तरह तेलुगु रामकाव्यों एवं मानस में प्रसंग-साम्य और भाव-साम्य मिलता है। इसको पारस्परिक प्रभाव या एक-दूसरे का अनुवाद कहा नहीं जा सकता। कहने का आशय यह है कि मानस के तेलुगु अनुवाद आधुनिक युग में ही किए गए हैं, मध्यकाल में नहीं।

पूर्व समुद्र के तट पर स्थित विशाखापटणम के समीप विजयनगर रियासत थी। इस रियासत के नरेशों के संबंध वाराणसी से हैं। इलाहाबाद विश्वविद्यालय को विजयनगर के राजाओं की आर्थिक सहायता का प्रमाण आज भी वहाँ का विजयनगरम हाल उपस्थित कर रहा है। विजयनगर के नरेश श्री पूसपाटि विजयराम गजपति को (1826-1879) आन्ध्र प्रान्त में उत्तर भारत की रामलीलाओं का अभिनय प्रवर्तित करने का श्रेय है। विजयनगर में अभिनीत रामलीला उत्सव बनारसी ढंग के थे। इनसे प्रेरणा प्राप्त कर पोड़ूरि वेंकटराज नामक कवि ने 'श्री रामलीला विलास' नामक प्रबन्धकाव्य में रामलीलाओं का आँखों देखा वर्णन प्रस्तुत किया। रामचरितमानस के प्रथम तेलुगु अनुवाद की हस्तलिखित प्रति विजय-नगर नरेश के निजी पुस्तकालय से प्राप्त हुई है। इस प्रकार विजयनगर नरेशों के संरक्षण

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

के फलस्वरूप आन्ध्र प्रान्त में बनारसी ढंग की रामलीला तथा रामचरितमानस का प्रचार होने लगा। दूसरी प्रमुख प्रेरक परिस्थिति महात्मा गांधी जी के नेतृत्व में सम्पन्न स्वतन्त्रता आन्दोलन है। इस आन्दोलन के दौरान राष्ट्रीय भावना से परिचालित होकर आन्ध्र जनता ने हिन्दी के प्रचार-प्रसार में सक्रिय योगदान दिया। हिन्दी सीखने के अतिरिक्त राष्ट्रभाषा की सर्वश्रेष्ठ लोकप्रिय कृति 'मानस' से तेलुगुभाषियों को अवगत कराने के उद्देश्य से भी गोस्वामी तुलसीदास प्रणीत इस महान ग्रन्थ का भाषान्तर प्रस्तुत करने के प्रयास किए गए। अद्यतनकाल में इस भक्ति रचना के अनुवाद से अपने को धन्य बनाने की आध्यात्मिक दृष्टि से मानस को तेलुगु में अनूदित किया गया।

तेलुगु में प्राप्त मानसानुवाद इस प्रकार है :—

I पद्यानुवाद :

(1) श्री शिष्टु कृष्णमूर्ति शास्त्री (1790-1880) एवं मंड कामय्य शास्त्री (जीवनकाल ज्ञात नहीं) का अनुवाद।

(2) श्री भागवतुल नरसिंह शर्मा कृत अनुवाद—बालकाण्ड 1929 में प्रकाशित। कालान्तर में अन्य काण्ड भी प्रकाशित।

(3) श्री मैलवरपु सूर्यनारायण मूर्ति द्वारा किया गया अनुवाद—बालकाण्ड 1956 में, उत्तरकाण्ड 1957 में तथा अयोध्याकाण्ड 1988 में प्रकाशित हुए। बाकी काण्ड पाण्डुलिपि के रूप में हैं।

(4) स्वामी केशवतीर्थ और श्री पाटीलु जम्मारेड्डि से प्रणीत अनुवाद—1963 में प्रकाशित।

II गद्यानुवाद :

(1) श्री पसुमर्ति श्रीनिवास राव कृत अनुवाद—1927 में प्रकाशित।

(2) श्रीमती एलूरुपाटि लक्ष्मी सरस्वती का अनुवाद—1956।

(3) तुलसीदासदासी उपनाम धारिणी श्रीमती नेलनूतल पार्वती कृष्णमूर्ति प्रणीत अनुवाद—1962।

(4) श्री मुंगर शंकरराजु कृत अनुवाद—1965।

(5) श्री पसुमर्ति श्रीराम शास्त्री कृत अनुवाद—1972।

(6) श्री गुड्लवल्लेटि वेंकटाचलपति राव कृत अनुवाद—1978।

(7) श्री मिट्टपल्लि आदिनारायण कृत अनुवाद—1980।

(8) श्रीमती आर. इन्दिरा देवी प्रणीत अनुवाद – 1983 मात्र बालकाण्ड।

(9) श्री बोम्मराजु राघवय्य कृत अनुवाद—केवल बालकाण्ड—1986।

(10) श्रीमती उन्नव कमलकुमारी कृत अनुवाद—प्रकाशन वर्ष नहीं छपा।

(11) श्री नोमुल अप्पाराव कृत अनुवाद—पुस्तक प्राप्त नहीं। इनके शिष्य श्रीराम शास्त्री ने इसका उल्लेख किया।

(12) श्री टी. सांबमूर्ति का अनुवाद—इसका उल्लेख डॉ. भीमसेन निर्मल ने किया है। उनको भी यह पुस्तक नहीं मिली।

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

इन गद्यानुवादों का वर्गीकरण हो सकता है, जैसे संपूर्ण कृति का अनुवाद, किसी एक काण्ड या भाग का अनुवाद, संक्षिप्त अनुवाद या सारानुवाद और व्याख्यानुवाद। श्री पसुमर्ति श्रीनिवास राव प्रणीत तथा वाविल्ल रामस्वामी शास्त्री द्वारा 1927 में मद्रास से प्रकाशित अनुवाद बृहत् ग्रन्थ है, जिसमें मूलकृति के प्रत्येक छन्द का अनुवाद किया गया है। तुलसीदास-दासी, कमलकुमारी आदि के अनुवाद सारानुवाद हैं। इंदिरा देवी, नोमुल अप्पाराव एवं पसुर्मति श्रीराम शास्त्री के अनुवाद व्याख्यानुवाद हैं जिनमें मानस के छन्दों को तेलुगु लिपि में देकर उनकी व्याख्या की गई है। उपर्युक्त अनुवाद ग्रन्थों में से प्रत्येक का संक्षेप में विवेचन प्रस्तुत किया जा रहा है। पहले पद्यानुवादों की समीक्षा की जा रही है।

मानस का प्रथम अनुवाद

उन्नीसवीं शताब्दी में शिष्टु कृष्णमूर्ति शास्त्री एवं मंड कामय्य शास्त्री (नरहरि) नामक कविद्वय ने 'मानस' का प्रथम अनुवाद प्रस्तुत किया था। कृष्णमूर्ति शास्त्री जी का जीवन-काल 1790-1880 है। ये संस्कृत, तेलुगु तथा संगीत के प्रकाण्ड विद्वान और प्रौढ़ कवि थे। रामचन्द्रपुर एवं श्रीकालहस्ति के नरेशों के दरबारों में रहकर इन्होंने राज सम्मान प्राप्त किया था। इनके निम्नलिखित संस्कृत ग्रन्थ हैं—यक्षोल्लास, पल्लवीपल्लवोल्लास, मदवा-भ्युदय, कंकणबन्ध, नील शैलनाथीयम्, अश्वशास्त्र तथा हरिकारिकावली नामक तेलुगु भाषा का व्याकरण। तेलुगु में इन्होंने 'वेंकटाचल माहात्म्य', 'सर्वकामदा परिणय', 'स्त्रीनीति शास्त्र', 'पंचतन्त्र', 'नाटक दीप', 'वसुचरित्र व्याख्या', 'वायुपुत्र शतक', 'दण्डक', 'मालिकाएँ' तथा कतिपय स्तोत्रों की रचना की। दूसरे कवि कामय्य शास्त्री जी के विषय में कुछ भी ज्ञात नहीं लेकिन उनके वंश के लोग विजयनगर एवं उसके आस-पास के गाँवों में पाए जाते हैं। इस मंड वंश के कवियों ने अपनी उपस्थिति से विजयनगर रियासत के दरबार को अलंकृत किया था। उक्त कविद्वय के द्वारा प्रणीत मानसानुवाद की हस्तलिखित प्रतियाँ बिजयनगर नरेश के निजी पुस्तकालय में, तिरुपति श्री वेंकटेश्वर विश्वविद्यालय के ओरिएण्टल शोध-संस्थान में तथा कुछ भाग राज्य अभिलेखागार, हैदराबाद में हैं। इस अनुवाद में अयोध्या-काण्ड तथा अरण्यकाण्ड में 'मारीच वध' प्रसंग तक की रचना कृष्णमूर्ति शास्त्री जी की है। बालकाण्ड, अरण्यकाण्ड का शेष भाग, किष्किंधाकाण्ड तथा सुन्दरकाण्ड की रचना कामय्य शास्त्री जी ने की है। युद्धकाण्ड तथा उत्तरकाण्ड के अन्त में अनुवादक का नामोल्लेख नहीं। डा. भीमसेन निर्मल ने इस ग्रन्थ के सुन्दरकाण्ड मात्र का संपादन कर आन्ध्रप्रदेश साहित्य अकादमी, हैदराबाद से 1984 में प्रकाशित करवाया। बाकी काण्डों का प्रकाशन अभी बाकी है।

इस अनुवाद की मुख्य विशेषता यही है कि इसमें तुलसी के द्वारा प्रयुक्त छन्द विधान दोहा-चौपाई पद्धति को तेलुगु भाषा में अपनाया गया। दोहा और चौपाई हिन्दी के ही छन्द हैं जिनका प्रयोग जायसी, तुलसी आदि कवियों ने कथावस्तु प्रधान प्रबन्ध काव्य में सफलता-पूर्वक किया। तेलुगु कविता में इन छन्दों को अपनाने का यह नवीन प्रयोग मानस के स्वरूप से तेलुगु पाठकों को अवगत कराने के उद्देश्य से किया गया होगा। हिन्दी में अनिवार्य लक्षण के रूप में मान्य अन्त्यानुप्रास (तुक) के साथ तेलुगु कविता में परंपरासिद्ध यतिनियम एवं प्रासनियम का पालन अनुवादक कवियों की प्रयोग-क्षमता की ओर इंगित करता है। मानस

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

के प्रत्येक काण्ड के आरंभ तथा अन्त में पाये जानेवाले कई संस्कृत श्लोकों का अनुवाद इस ग्रन्थ में नहीं मिलता ।

इस हस्तलिखित प्रति में प्राप्त दो पुष्पिकाएँ नीचे उद्धृत की गयी हैं । एक पुष्पिका तेलुगु भाषा में है, दूसरी संस्कृत में ।

(1) "इदि श्री सकलकलिकलुषविध्वंसनकरंबगु रामचरितमानससरोवरंबुन बालकाण्डबनु प्रथम सोपावमु ।"

(2) "इति श्री तुलसीरामायणे आन्ध्रकवितायाम् अयोध्याकाण्ड: । अयमयोध्या-काण्ड: शिष्टकृष्णमूर्तिनाकृत: ।"

उक्त पुष्पिकाओं में मूलग्रन्थ के लिए 'रामचरितमानस' एवं 'तुलसी रामायण'—इन दोनों नामों को व्यवहृत किया गया । आम व्यवहार में मानस की अपेक्षा 'तुलसी रामायण' शब्द का ही अधिक प्रचलन है । कई अनुवादकों ने अपने ग्रन्थ के लिए 'श्रीमत् आन्ध्र तुलसी रामायण' संज्ञा को स्वीकार किया है ।

अनुवाद की भाषा-शैली तथा छन्द योजना के उदाहरण स्वरूप तुलसी के छन्द तथा उनके तेलुगु अनुवाद उद्धृत किए जाते हैं ।

(1) मूल. भए प्रगट कृपाला दीन दयाला कौसल्या हितकारी ।
हरषित महतारी मुनि मन हारी अद्भुत रूप बिचारी ।।
लोचन अभिरामा तनु घन श्यामा निज आयुध भुज चारी ।
भूषन बनमाला नयन बिसाला सोभा सिन्धु खरारी ।।

अनु. प्रभुडपुडु गन्पडे सकल दीन कृपालुडै कौसल्यकुन्
शुभदंबु दिव्यंबैन रूपमु जूपे मोदमु मातकुन्
प्रभविंचु नट्लोनरिंचे श्यामाभ्रंबु ना तनु वोप्पगन्
स्वभुजमुलानाल्गिट तनरु चुंडेनु शंख चक्रादुलु दगन्

(2) मूल. कंकनि किंकिनि नूपुर धुनि सुनि । कहत लखन सन रामु हृदय गुनि ।।
मानहुँ मदन दुन्दुभी दीन्ही । मनसा बिस्व बिजय कहँ कीन्हीं ।।

अनु. घन नूपुर कंकण भूषा ध्वनि । विनि विभुडने सुगुणुनि तम्मुनि गनि ।।
मनसिजुडी जगमुनु गेलुवंगन् । जननगु मेरी ध्वनियो यनंगन् ।।

(3) मूल. अस कहि फिरि चितए तेहि ओरा । सिय मुख ससि भए नयन चकोरा ।।
भए विलोचन चारु अचंचल । मनहुँ सकुचि निमि तजे दृगंचल ।।

अनु. विननय्ये ननुचु गन तन मुंदुन् । जनक कन्या मुख चंद्रुनि यंदुन् ।
तनरु दृक् चकोर निकायंबुल् । तनिवि गोनुचु नुंडेनु सुसुखंबुल् ।।

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

अलीगढ़ मुस्लिम यूनिवर्सिटी के अवकाश प्राप्त प्राध्यापक श्री हनुमत् शास्त्री आयाचित ने मानस के इस प्रथम अनुवाद का पाठ संशोधन तथा संपादन किया है। जब इस कृति का प्रकाशन होगा तो मानस के इस सुन्दर अनुवाद का लाभ साहित्य प्रेमी उठा सकेंगे।

भागवतुल नृसिंह शर्मा कृत पद्यानुवाद

इस कृति पर महात्मा गांधी जी के व्यक्तित्व तथा उनके नेतृत्व में सम्पन्न मुक्ति आन्दोलन का प्रभाव पड़ा। राष्ट्रीय भावना के विकास की अनुकूल परिस्थितियाँ पूरे भारत में उस समय यानी ग्रन्थ के रचनाकाल .929 में विद्यमान थीं। कवि नृसिंह शर्मा की अन्य कृतियाँ देशभक्ति की भावना से परिचालित हैं, जैसे 'विचित्र वीर बोग्बिलि', 'रसपुत्र जीवन संध्या' तथा 'गांधी शतक'।

इस अनुवाद ग्रन्थ की भूमिका लिखते हुए, प्रसिद्ध पत्रकार एवं स्वतन्त्रता-योद्धा श्री काशीनाथुनि नागेश्वर राव ने अपने विचार इस प्रकार व्यक्त किए—'पूरे देश में हिन्दी भाषा का प्रचार सम्पन्न हो रहा है। आन्ध्र प्रान्त के युवक बड़े उत्साह से हिन्दी सीख रहे हैं। आन्ध्र जनता के हृदयेश्वर श्रीराम के चरितामृत का पान करने तथा हिन्दी साहित्य का परिचय प्राप्त करने के लिए तुलसी रामायण उपयोगी होगा।'

इन पंक्तियों के आधार पर हम कह सकते हैं कि श्रीराम आन्ध्र भाषियों के हृदयेश्वर हैं, उस समय देशभक्ति की प्रेरणा से ही आन्ध्र की जनता हिन्दी सीखती थी और हिन्दी साहित्य के उत्कृष्ट काव्य से लाभान्वित होने के लिए मानस का अनुवाद किया गया था।

इस ग्रन्थ के मंगलाचरण में कवि ने राम, सीता, विष्णु, लक्ष्मी, महेश्वर, पार्वती, कार्तिकेय, गणेश, ब्रह्मा, सरस्वती एवं हनुमान की स्तुति की है। वाल्मीकि, व्यास, शंकराचार्य आदि धार्मिक आचार्य पुरुषों की वन्दना की है। तेलुगु साहित्य के भक्तकवि पोतन्ना, रामदास, गोपीनाथुनि वेंकटकवि, सुब्बाराय कवि और त्यागराज की प्रशंसा की गई है। इस क्रम में महात्मा गांधी की स्तुति निम्नांकित छन्द में कवि ने की है—

गांधुकि, लोकसन्नुत युगंधर मंत्रि समान दिव्य धी
कंधिकि, वाङ्निशात शरकांड विखंडित शत्रुराड्गल
ग्रंधिकि, संधिवर्जित परस्पर रंधिकि, सर्वदेशसं
बंधिकि, भक्तिपूर्वक नमस्कृतु लिच्चेद निष्ट सिद्धिकिन्

जहाँ कृष्णमूर्ति शास्त्री कृत प्रथम मानसानुवाद में हिन्दी के दोहा—चौपाई छन्दों को तेलुगु छन्दों के नियत अन्य नियमों से संयुक्त करके स्वीकार किया गया है, वहाँ भागवतुल नृसिंह शर्मा ने तेलुगु की लम्बी काव्य-परंपरा में बहु-प्रचलित शार्दूल विक्रीडित, उत्पलमाला, चंपकमाला, मत्तेभ विक्रीडित, मालिनी, सीसमु आदि छन्दों का प्रयोग किया है। तेलुगु कविता की स्वीकृति प्रवृत्ति के अनुकूल होने के कारण, दोहा-चौपाई पद्धति की अपेक्षा इस छन्द-विधान को समादर मिला।

मानस के महत्त्व के विषय में तुलसी की पंक्तियाँ इस प्रकार हैं :—

छन्द सोरठा सुन्दर दोहा। सोइ बहुरंग कमल कुल सोहा॥
अरथ अनूप सुभाव सुभासा। सोइ पराग मकरंद सुबासा॥

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

सुकृत पुंज मंजुल अलि माला । ग्यान विराग विचार मराला ॥
धुनि अबरेब कवित गुन जाती । मीन मनोहर ते बहुभाँती ॥'

नृसिंह शर्मा ने इन पंक्तियों के भाव को निम्नलिखित छन्द में अभिव्यक्त किया है। इस छन्द के अवलोकन से ज्ञात होता है कि तेलुगु की संस्कृतगर्भित पारंपरिक काव्यशैली पर कवि का पूर्ण अधिकार का था—

सुन्दरवृत्तारविंद संदोहनिष्यंद भाव मरंद संयुतंबु
विद्वज्जनव्रात विनुत भव्य कवित्व सौरभ प्रावृताशातटंबु
ललित मनोहरालंकार विरचित भूरि शब्द पराग भूषितबु
ध्वनि रीति गुणगण व्यंग्य शय्यारसमत्स्य संदोह संश्रयगृहंबु

परम पावन भक्त मंभर कुलंबु
आर्य सन्नुत परमहंसाचितंबु
ज्ञान वैराग्य जपतपो जलचरंबु
महित रामायणाम्नाय मानसंबु

जहाँ हिन्दी कविता में लंबे समास स्थान नहीं पाते, वहाँ तेलुगु के नन्नय, पोतना, श्रीनाथ आदि कवियों ने संस्कृतगर्भित समासबहुला शैली से आन्ध्र कवित्व को श्रीसंपन्न बनाया था। श्री नृसिंह शर्मा ने तेलुगु के महान कवियों का मार्ग अपनाया।

वास्तव में अनुवाद का प्रयोजन मूल ग्रन्थ के भावों को विश्वसनीय ढंग से अन्य भाषा में प्रस्तुत करना होता है किन्तु काव्यानुवाद में लक्ष्यभाषा की साहित्य-परंपरा, कवि का निजी व्यक्तित्व, भाषाधिकार में स्तरभेद आदि के कारण संग्रह-त्याग के अलावा अन्य कल्पनाओं को भी प्रश्रय मिलता है। नृसिंह शर्मा कृत प्रस्तुत अनुवाद में यद्यपि कुछ प्रसंगों में मानस का पूर्ण अनुसरण किया गया है, तथापि कुछ अन्य प्रसंगों में कवि ने स्वकल्पित अंशों की योजना की है। भूमिका में श्री नागेश्वर राव पंतुलु ने इस तथ्य की ओर पाठकों का ध्यान आकर्षित किया है। काव्य के आरंभिक भाग में सज्जन-दुर्जन प्रशंसा के सन्दर्भ में कुछ गंभीर भाव अतिरिक्त रूप में जोड़ दिए गए हैं। अहिल्या शापमोचन के प्रसंग में मूल ग्रन्थ से भिन्न भाव संयोजित हैं। वाल्मीकि रामायण में गंगावतरण का प्रसंग वर्णित हुआ है। किन्तु तुलसी ने इसको छोड़ दिया है। कविवर नृसिंह शर्मा ने गंगा की अवतरण-कथा अपने काव्य में निबद्ध की है। तुलसी ने मिथिला नगर का जो वर्णन किया था, उसे तेलुगु अनुवाद में ग्रहण नहीं किया गया। राम-लक्ष्मण को देखकर जनक ने रामचरितमानस में यह प्रतिक्रिया व्यक्त की है –

कहहु नाथ सुंदर दोउ बालक । मुनिकुल तिलक कि नृपकुल पालक ॥
ब्रह्म जो निगम नेति कहि गावा । उभय बेष धरि की सोइ आवा ॥

इसे भाषान्तरण में भिन्न प्रकार से उपस्थित किया गया है। पुष्पवाटिका में सीता-राम के परस्पर दर्शन के प्रसंग में कवि ने स्रोत-ग्रन्थ से भिन्न वर्णन किया है। तुलसी की कृति में पात्रों की परिकल्पना में जो पवित्र भावना दिखाई पड़ती है, उसके स्थान पर अनुवाद में तेलुगु के श्रृंगार काव्यों की पद्धति अपनाई गई है।

जगत जननी सीता के मुंह से निम्न प्रकार की अभिव्यक्ति में उदात्तता का अभाव है—

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

अदिरा ! या कनुदोयि सोंपु भलिरा या मोमुनंदंबु न
म्मदनुं गन्न महानुभावुडगु निम्मान्युंड्र सामान्युडे !
हृदिनूहिंपग ना 'रमाविभुडे यिट्लेतेंचो नो गाक ये
सुदतीरत्नमु वीनि पेरुश्मुपैं शोभिल्ल जन्मिचेनो ?

मानस में वर्णित है कि गिरिराज किशोरी ने पुष्पमाला देकर सीता के प्रति अपना अनुग्रह प्रकट किया किन्तु अनुवाद में लिखा गया है कि धरती माता ने सीता को पुष्पमाला प्रदान की । मूल रचना में अप्राप्त सूर्यास्त वर्णन अनुवाद में किया गया है ।

ताड़का-संहार की घटना के उपरान्त अनुवादक ने सूर्यास्त वर्णन संयोजित किया है । इसमें दिखायां गया है कि सूर्य भगवान ने अपने वंशज राम के द्वारा एक स्त्री की हत्या किए जाने पर चिन्ता व्यक्त की है । चिन्ता-भार के कारण सूर्य की उष्णता मंद पड़ गई । इस चमत्कार के कारण राम की चारित्रिक उदात्तता पर आँच आती है । तेलुगु के प्रसिद्ध प्रबन्धकाव्य 'स्वारोचिष मनुसंभव' में नायिका वरूधिनी के प्रति सहानुभूति प्रदर्शित करते हुए सोलहवीं शती के कवि अल्लसानि पेद्दनार्य ने इसी तरह का चमत्कारपूर्ण वर्णन किया था । प्रतीत होता है कि अनुवादक पर उस वर्णन का प्रभाव पड़ा ।

अनुवादक ने ग्रंथ के आरंभ में 'निवेदन' में ऐसी योजनाओं के संबंध में अपनी सफाई यों प्रकट की — 'इस सन्दर्भ में मुझे एक बात का निवेदन करना आवश्यक है । कहीं-कहीं थोड़ा-बहुत परिवर्तन मुझे करना पड़ा । कथा के सन्दर्भों तथा आन्ध्र प्रान्त के लोगों की रुचि के अनुसार ही मैंने ये परिवर्तन किए हैं । इसके औचित्य का निर्णय मैं नहीं कर सकता । गुणग्राहक पंडितों तथा कवियों पर निर्णय का यह भार स्थित है ।'

राष्ट्रीय भावना तथा साहित्य-प्रेम से परिचालित समर्थ कवि नृसिंह शर्मा का प्रयास सराहनीय है । मानस को तेलुगु की सुमधुर काव्य-शैली में प्रस्तुत करने का श्रेय उनको मिला है । कोई भी प्रतिभाशाली कवि अनुवाद कार्य में भी, अपने व्यक्तित्व के अनुरूप स्वतन्त्रता का उपयोग करते हुए वस्तु योजना में कुछ परिवर्तन कर देता है । स्मरणीय है कि निक्कना, पोतना, तुलसी, सूर आदि की अनुवाद पद्धति सर्वत्र शब्दानुवाद की नहीं थी ।

श्री मैलवरपु सूर्यनारायण मूर्ति कृत अनुवाद

इस अनुवाद में भी तेलुगु काव्य-परंपरा में अत्यन्त प्रसिद्ध छंदों को अपनाया गया है । इनकी कविता की यही विशेषता है कि इस कृति को पढ़ते समय लगता है कि तेलुगु भाषा की प्रकृति का पूरा ध्यान रखा गया है । मूल ग्रन्थ मानस से अपरिचित काव्यानुरागियों को यह अनुवाद नहीं लगता, स्वतन्त्र काव्य के रूप में ही प्रतीत होता है । अनुवाद की सफलता की यही पहचान हैं । तुलसी के काव्य-सौन्दर्य के साथ उस भक्त कवि के व्यक्तित्व को भी हृदयंगम करके श्री सूर्यनारायण मूर्ति ने यह अनुवाद किया है । इसलिए कई स्थलों पर यह अनुवाद स्रोत ग्रन्थ रामचरितमानस का अनुसरण करता है । यद्यपि कवि ने मानस का पूरा अनुवाद किया है तो भी बालकाण्ड, उत्तरकाण्ड एवं अयोध्याकाण्ड ही अब तक प्रकाशित हुए हैं । आशा कर सकते हैं कि इस ग्रन्थ के प्रकाशन में कवि को आर्थिक सहायता प्राप्त होगी और इनका संपूर्ण अनुवाद आन्ध्रभाषियों को यथाशीघ्र प्राप्त हो सकेगा ।

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

मानस को अनूदित करते हुए कवि का उद्देश्य इस प्रकार है—'तुलसीकृत रामचरित-मानस रूपी सुधा का माधुर्य एक स्वादु न भुंजीत के न्याय से तेलुगु भाषियों में वितरित करके सबके साथ इसका अनुभव करने के उत्साह के कारण कई वर्ष पहले मैंने यह काव्यानुवाद किया था। यद्यपि सीमित शब्दार्थ ज्ञान से युक्त, भाषा और साहित्य का साधारण परिचय रखनेवाले, काव्यांग लक्षण से अनभिज्ञ मुझ जैसे व्यक्ति से अनुवाद का यह साहस किया गया है, फिर भी भगवत् कृपा से मैं इसका निर्वाह कर सका हूँ।' (निवेदन, पृष्ठ 34) कवि सम्राट श्री नोरि नरसिंह शास्त्री ने एक स्थान पर लिखा है कि मैलवरपु सूर्यनारायण मूर्ति रामभक्तों के वंश में उत्पन्न हुए हैं। अतः रामकाव्य के प्रति उनका अनुराग स्वाभाविक है। गोस्वामी जी के अनुसार इस काव्य का प्रयोजन कलिकलुष विध्वंसन है। अनुवादक इसी दृष्टिकोण से काव्य-रचना में प्रवृत्त हुए हैं। केवल तुलसी का ही नहीं, प्रत्युत सूर की कविता के कुछ अंशों का अनुवाद इस कवि ने तेलुगु छन्दों में प्रस्तुत किया है। इस प्रकार कवि का दृष्टिकोण भक्तिभावना से समन्वित है।

भाषा-शैली तथा छन्दाधिकार के उदाहरण स्वरूप मानस तथा प्रस्तुत अनुवाद ग्रन्थ के छन्द उद्धृत किए जाते हैं :

(1) मूल. यस्यांके च विभाति भूधरसुता देवापगा मस्तके
भाले बालविधुर्गले च गरलं यस्योरसि व्यालराट् ।
सोऽयं भूतिविभूषणः सुरवरः सर्वाधिपः सर्वदा
शर्वः सर्वगतः शिवः शशिनिभः श्री शंकरः पातुमाम् ॥

अनु. श्री गौरीसति बाम पार्श्वमुन जेजेवाक शीर्षंबुनन्
नागाधीशु डुरंबुनन् नुदुट क्रोन्जाबिल्लि कंठंबुनन्
ब्रेगौ हालहलंबु भूति योडलन् वेल्गोंदु भूतेश्वरु
डागीर्वाणवरुंडु शंकरुडु सर्वात्मुंडु मम्मोमेडुन्

यहां पर ध्यान देने योग्य बात यह है कि तुलसी ने शिवस्तुति के लिए शार्दूल विक्रीडित छन्द का प्रयोग किया और अनुवाद में भी उसी वर्णवृत्त को अपनाया गया है।

(2) मूल. रामहि देखि एक अनुरागे। चितवत चले जाहिं सँग लागे ॥
एक नयन मग छबि उर आनी। होहिं सिथिल तन-मन बर बानी ॥

दो०—एक देखि बट छांह भलि डासि मृदुल तृन पात।
कहहिं गवांइअ छिनकु श्रमु गवनब अबहिं कि प्रात ॥
एक कलस भर आनहि पानी। नाथ कहहिं मृदु बानी ॥
सुनि प्रिय वचन प्रीति अति देखी। राम कृपाल सुसील विसोखी ॥

अनु. ओक्कडु गांचि या चक्कनय्यल रूपु प्रेममग्नुंडौचु बेंट बडिये
नोक्क दक्षि सरणि जक्क देच्चुक निलचे तत्तनू सुषमंकु तन्मयुडसि
नोक्क डाकुल सेज्ज नोक्क वटच्छाय गूर्चियिंदुन सेद तीर्चु डनिये
नोक्कडु पूर्णकुंभोदकंबुल देच्चि याचमिंचु डनियोनधिक भक्ति

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

नोक्कडु नेंडुडि येगुडी युदयमयने
नोक डोकंडिटु पलुकु लन्योन्य मुननु
वल्कु कोनिरिटु जन्म साफल्य मंदु
डरय। कनुडय्य !यी नल्लनय्यननुचु

उपर्युक्त छन्द को देखने से आन्ध्र भागवतकार पोतना का वह छन्द स्मरण आता है, जिसमें गोप बालकों के साथ श्रीकृष्ण भगवान की भोजन-लीला वर्णित हुई। सूर्यनारायण मूर्ति कृत मानसानुवाद से उनकी भक्ति-भावना झलकती हैं।

स्वामी केशवतीर्थ एवं श्री पाटीलुतिम्मारेड्डीकृत पद्यानुवाद

स्वामी केशवतीर्थ जी आध्यात्मिक साधना तथा भक्तिभावना से परिचालित परिव्राजक हैं। इनका उद्देश्य सुबोध शैली में भक्तजनों के नित्य पारायण योग्य रूप में तुलसी की भव्य रचना को तेलुगु में प्रस्तुत करना था। गाने के लिए उपयुक्त 'मंजरी द्विपद' नामक छन्द में काव्य रचना की गई है। स्वामी जी ने बालकाण्ड, अयोध्याकाण्ड, अरण्यकाण्ड तथा किष्किंधाकाण्ड का अनुवाद किया तो उनके शिष्य श्री तिम्मारेड्डी ने (किशोर उपनाम धारी) सुंदरकाण्ड, लंकाकाण्ड तथा उत्तरकाण्ड का भाषांतर उसी मंजरी द्विपद छन्द में प्रस्तुत किया है। असल में मानस लोकोन्मुखी प्रवृत्ति तथा लोक भाषा में रचित होने के कारण आम जनता का कंठहार बना हुआ है। संस्कृत के वर्णवृत्तों एवं मार्ग कविता से भिन्न सरल देशी छन्द द्विपद में रचित काव्य तेलुगु में शैव कवियों और रंगनाथ रामायणकार आदि के हैं। आलोच्य अनुवाद काव्य में यही पद्धति अपनाई गई है। जैसे तुलसी ने मानस के हर काण्ड के आरंभ में तथा बीच में दोहा-चौपाई से भिन्न छन्दों को प्रयुक्त किया है, उसी तरह इन अनुवादकों ने तेलुगु के परंपरागत अन्य छन्दों, वर्णवृत्तों तथा गीतों का प्रयोग आरंभ तथा बीच में मूलकृति को ध्यान में रखते हुए किया है।

स्वामी केशवतीर्थ जी कृष्णा नदी के तटस्थ 'मट्टपल्लि' नामक पुण्य क्षेत्र में विराजमान नरसिंह भगवान के उपासक हैं। यह अनूदित काव्य उस भगवान को दोनों कवियों ने समर्पित किया है। केशवतीर्थ जी ने भक्त कवि पोतना के समान अपना उद्देश्य 'श्री कैवल्यपद' को प्राप्त करना बताया है। प्रेरणास्रोत के रूप में भगवान को स्वीकार किया है। भूमिका भाग में स्वामी जी ने अपने इष्टदेव के अतिरिक्त शंकर, रामानुज एवं मध्वाचार्य की स्तुति की है। आधुनिक चेतना के फलस्वरूप राममोहन राय, रामकृष्ण परमहंस, विवेकानन्द, दयानन्द, महात्मा गाँधी और साथ ही गोस्वामी तुलसीदास की वन्दना की है।

बालकाण्ड के अन्त में निबद्ध पुष्पिका इस प्रकार है—"इदि श्री गोस्वामि तुलसीदासकृत सकलकलिकलुषविध्वंसक श्री रामचरितमानसमुलोनि बालकाण्डमुनकु श्री रामतीर्थ भगवत्पाद प्रियशिष्यनिरंतर मट्टपल्लिलक्ष्मीनृसिंह परब्रह्मावास हृत्पद्मतीर्थ श्री केशव तीर्थ कृतयैन आन्ध्रानुवादमु संपूर्णमु।"

तेलुगु के काव्यों में प्रत्येक आश्वास के आरंभ में कृतिपति को संबोधित करने की परंपरा है। कृतिपति उस व्यक्ति को कहते हैं, जिसको काव्य समर्पित किया जाता है। यह काव्य मट्टपल्लि क्षेत्र के नरसिंह भगवान को समर्पित है। इसलिए प्रत्येक काण्ड के आरंभ में

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA).

तथा मास पारायण के हिसाब से बने हुए विश्रामों के आरंभ में नरसिंह भगवान को संबोधित करके लिखे गए छन्द प्राप्त होते हैं। नमूने के तौर पर दो छन्द प्रस्तुत हैं :

(1) श्री कल्याण गुणालय !
पाकारि प्रमुख विनुत पादांभोजा !
प्राकृत बंधविमोचन !
श्रीकर ! हरि ! मट्टपल्लि श्री नरसिंहा !

(2) श्री नारद मौनीश्वर
गानामृतं पारवश्य कलित हृदब्जा !
दीनजनावन रंहा !
श्री नायक ! मट्टपल्लि श्री नरसिंहा !

इस प्रकार पूरे काव्य में भक्ति की अभिव्यक्ति हुई है।

अनुवाद ग्रन्थ की शैली को समझने के लिए नीचे मानस के छन्दों के साथ स्वामी केशव तीर्थ विरचित मंजरी द्विपद छन्दों को प्रस्तुत किया गया है—

मूल. कहहु नाथ सुंदर दोउ बालक। मुनिकुल तिलक कि नृप कुल पालक ॥
ब्रह्म जो निगम नेति कहि गावा। उभय वेष धरि की सोइ आवा ॥
सहज विराग रूप मनु मोरा। थकित होत जिमि चंद चकोरा ॥
ताते प्रभु पूछउँ सति भाऊ। कहहु नाथ जनि करहु दुराऊ ॥
इन्हहि बिलोकत अति अनुरागा। बरबस ब्रह्म सुखहि मन त्यागा ॥

अनु. ई मनोहर बालुरेकरु मुनीन्द्र। मुनिकुल तिलकुलो भूपाल सुतुलो ॥
नेति-नेति यहंचु निगमंबु लाडु। आ परब्रह्म मी याकृतुल् गनेनो ॥
सहज विरागि मत्स्वांतंबु नेडु। वीरल दर्शिकी विवशत्व मोंये ॥
नलचकोरमु चंद्रु नरसिन रीति। अंदुचे नेनिटु लड्गु चुन्नाड ॥
नाकड दाचक नाथ ! गाधेय ! सत्यंबु देलुपुमा संयमिवर्य !
ई कुमारुलनु ने नीक्षिप गाने। अत्यनु रागम्मु नंयिना मनसु ॥
त्यजियिचे ब्रह्मलीनानंद महह।

इस प्रकार प्रस्तुत अनुवाद में दोहा-चौपाई, छन्दों के समान सरल और गानयोग्य 'मंजरी द्विपद' छन्द में समूचे काव्य का निर्वाह किया गया है। गोस्वामी जी की रचना में प्रसंगानुसार बीच-बीच में स्तोत्र पाए जाते हैं। तेलुगु अनुवादकों ने ऐसे स्थलों पर गीतों की रचना की है। मानस के छन्दानुवादों में दोहा-चौपाई पद्धति, तेलुगु के विविध छन्दों की पद्धति तथा मुख्यतः मंजरी द्विपद छन्द की पद्धति—इन तीन पद्धतियों को अपनाया गया। प्रस्तुत अनुवाद सरल देशी छन्दात्मक शैली और भक्तिभावना की दृष्टि से महत्त्वपूर्ण है।

गद्यानुवाद

(1) श्री पसुमर्ति श्रीनिवास राव कृत गद्यानुवाद, वाविल्ल राम स्वामि शास्त्री एण्ड सन्स, मद्रास के द्वारा 1927 में प्रकाशित हुआ। इसमें मानस के प्रत्येक शब्द का अनुवाद तेलुगु गद्य में प्रस्तुत हुआ। ग्रन्थ के आरम्भ में 225 शब्दों एवं वचनिकाओं में 'तुलसीदास चरित्र' के नाम से तुलसी की जीवनी दी गई है। इस जीवन चरित्र

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

के अन्त में प्राप्त पुष्पिका इस प्रकार है।

> इदि श्रीमत् त्रिपुरसुन्दरीकरुणावाप्त कविताशक्तियुक्तयु, मौद्गल्य गोत्र संजनितयु नगु वक्कलंक वेंकटसूर्य जोममांबचे विरचितमगु तुलसीदासचरित्रमु सर्वमेका श्वासमुसंपूर्णमु !

अर्थात् मानस के अनुवादक एवं इस तुलसी-जीवनी की कवयित्री भिन्न-भिन्न व्यक्ति हैं। प्रस्तुत अनुवाद में उत्तरकाण्ड के बाद 'कुश-लव काण्ड' के नाम से एक अतिरिक्त काण्ड की योजना है, जिसमें राम के साथ कुश-लव द्वारा किए गये युद्ध का वर्णन है।

(2) श्रीमती एलूरुपाटि लक्ष्मी सरस्वती का अनुवाद भी सम्पूर्ण मानस का अनुवाद है, जिसके लिए एक विस्तृत भूमिका श्री हनुमत् शास्त्री अयाचित ने लिखी। 1956 के करीब इसका प्रकाशन हुआ था।

(3) गद्यानुवादों में 'तुलसीदासदासी' के उपनाम से विख्यात श्रीमती नेलनूतल पार्वती कृष्णमूर्ति की रचना का विशेष महत्त्व है। यह गद्यानुवाद 1962 में रामनवमी के पर्व पर प्रकाशित हुआ। इस कृति का नाम 'श्रीरामचरितमानसामृत' रखा गया है। लेखिका ने यह ग्रन्थ तिरुपति क्षेत्र में विराजमान श्री वेंकटेश्वरसमेतअलिमेलुमंगतायार देवी (पद्मावती) को समर्पित किया है।

लेखिका ने प्रस्तावना में बताया है कि मुझे भगवान वेंकटेश्वर की कृपा से भक्त शिरोमणि गोस्वामी तुलसीदास प्रणीत मृदु मधुर भक्तिरस पूर्ण रामचरित मानस को आठ वर्ष पर्यन्त निष्ठापूर्वक पढ़ने का अवसर मिला था। यह अनुवाद सारानुवाद है। इसमें लेखिका ने मानस के सार को तेलुगु पाठकों तक पहुँचाने का स्तुत्य प्रयास किया। लेखिका के अनुसार उनके सामने श्रीयुत मामडिपूडि रामकृष्णय्या जी द्वारा लिखित 'वाल्मीकि रामायण कथामृत' की वस्तु प्रदर्शन-पद्धति का आदर्श रहा है। इस पद्धति को स्वीकार करने में लेखिका का उद्देश्य, संबंधित कथा-प्रसंगों में मूल रचना के छन्दों से तेलुगुभाषियों को अवगत कराना है। तुलसीदासदासी जी के शब्दों में भारत की राष्ट्रीयता एवं एकसूत्रता को सुदृढ़ बनाने में हिन्दी भाषा मुख्य साधन है। उस भाषा की सर्वश्रेष्ठ तथा पवित्र रचना तुलसीकृत रामचरितमानस है। मूल ग्रन्थ पढ़ने की ओर पाठकों को प्रवृत करना ही मेरा उद्देश्य है।

लेखिका ने यह कामना प्रकट की है कि इस ग्रन्थ का पाठ हर घर में होना चाहिए। यदि कन्याएँ इसे पढ़ेंगी तो शीघ्र ही उनका विवाह होगा। प्रौढ़ लोगों को सब तरह की सम्पत्तियाँ मिलेंगी। आर्त जनों को सुख प्राप्त होगा। विद्यार्थियों को विद्या लाभ होगा। मानव-जन्म को साधन बनाकर श्रीराम की सेवा में जीवन-यापन करने के लिए इस ग्रन्थ में प्रतिपादित भक्तिमार्ग सरल उपाय है।

श्रीमती पार्वती जी ने इस पुस्तक के आरम्भ में मन्दिरों में दीवारों पर उत्कीर्ण रामायण-कथा-प्रसंगों के चित्र मुद्रित करवाए हैं। नेल्लूर जिले में स्थित कृष्णापटनम् के मन्दिर से गृहीत तीन चित्र हैं—(1) श्रवण कुमार को हाथी समझकर भूल से शब्दभेदी बाण से दशरथ के द्वारा मारा जाना। इसमें अंधे माता-पिता को कांवरी में बिठाकर ले चलने वाले मुनि बालक को अंकित किया गया है। (2) सप्त ताल भंजन अर्थात सुग्रीव की शंका दूर करने तथा अपने पराक्रम से उन्हें अवगत कराने के लिए राम ने सात ताड़

 Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

के पेड़ों को एक ही बाण से धराशायी बनाया था। (3) बालि का संहार। इन तीनों के के अलावा अनंतपुरम जिले में स्थित ताटिपर्ति के मन्दिर से गृहीत एक चित्र है, जिसमें अग्नि परीक्षा के सन्दर्भ में हव्यवाहन, पवित्रमूर्ति सीता को श्रीराम के समक्ष उपस्थित करता है। इसमें ब्रह्मा, इन्द्र आदि देवताओं के साथ स्वर्ग से आगत दशरथ भी हैं। इन चित्रों के आधार पर समझा जा सकता है कि आन्ध्र की शिल्पकला में भी रामायण-प्रसंगों को स्थान दिया गया है।

भारतीय भाषाओं में प्राप्त समस्त राम काव्यों में तुलसी का महत्त्व भक्ति तन्मयता की दृष्टि से है। श्रीमती तुलसीदासदासी का व्यक्तित्व भी भक्ति भावना से परिपूर्ण है। रामायण का पाठ, रामनवमी के उत्सव और राम के राजतिलक के समारोह नियम-निष्ठा-पूर्वक इनके यहाँ मनाए जाते हैं। प्रस्तुत अनुवाद का महत्त्व इस पृष्ठ भूमि में समझा जा सकता है।

(4) श्री मुंगर शंकर राजकृत अनुवाद संक्षिप्त अनुवाद है। यह पुस्तक 1965 में प्रकाशित हुई। महाकवि पुट्टपर्ति नारायणाचार्य ने इसकी भूमिका लिखी। पुस्तकाकार में प्रकाशित होने से पहले 'आन्ध्र पत्रिका' साप्ताहिक में इसका प्रकाशन हुआ था। इसमें उत्तरकाण्ड के बाद लवकुशकाण्ड के नाम से एक परिशिष्ट मिलता है, जिसमें रामादि के वैकुंठगमन की कथा वर्णित हुई है।

(5) श्री पसुमर्ति श्रीराम शास्त्री कृत अनुवाद—यह व्याख्यानुवाद है। केवल बालकाण्ड 1972 में प्रकाशित है। तुलसी के छन्दों को तेलुगुलिपि में देकर उनका भावार्थ समझाया गया है। इसमें श्री विजयानन्द त्रिपाठी की व्याख्या का अनुसरण किया गया है।

(6) श्री गुड्लवल्लेटि वेंकटाचलपति राव का गद्यानुवाद 1978 में प्रकाशित हुआ है। इस अनुवाद में गीताप्रेस, गोरखपुर से प्रकाशित मानस, मानस-पीयूष, एफ.एस. ग्राऊज़ की पुस्तक 'द रामायन ऑफ़ तुलसीदास' तथा डब्ल्यू. डगलस पी. हिल की पुस्तक 'द होली लेक ऑफ़ द एक्ट्स ऑफ़ राम' से सहायता ली गई है।

(7) श्री मिट्टपल्लि आदिनारायणकृत अनुवाद 1980 में तथा द्वितीय मुद्रण 1982 में प्रकाशित हुआ। इस अनुवाद के कुछ अंश पुस्तकाकार में छपने से पहले 'आराधना', 'मोक्षसाधनी', 'प्रजावाणी' आदि पत्रिकाओं में प्रकाशित हुए। तुलसी की जीवनी छह पृष्ठों में दी गई है। उत्तरकाण्ड के बाद हनुमान चालीसा को तेलुगुलिपि में तेलुगु भावार्थ सहित दिया गया है। विद्वानों ने इस अनुवादक को 'तुलसीराम' की उपाधि प्रदान की थी। मद्रास, गुंटूर, तिरुपति आदि स्थानों में प्रवचन देकर इन्होंने मानस का प्रचार किया है।

(8) श्रीमती आर. इन्दिरादेवी का अनुवाद व्याख्यानुवाद है। इसमें मानस के छन्द तेलुगुलिपि में दिए गए हैं तथा उनका भावार्थ तेलुगु गद्य में समझाया गया है। प्रथम भाग 1982 में तथा द्वितीय भाग 1984 में प्रकाशित हैं। बालकाण्ड तक ही अनुवाद सीमित है।

(9) श्री बोम्मराजु राघवय्याकृत अनुवाद केवल बालकाण्ड का है जो 1986 में प्रकाशित हुआ। लेखक ने आशा व्यक्त की है कि भगवान की कृपा से बाकी काण्डों का भी अनुवाद वे प्रकाशित कर सकेंगे।

(10) श्रीमती उन्नव कमल कुमारी कृत अनुवाद संक्षिप्त अनुवाद है जिसमें पूरे

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

मानस की कथा है। इसमें प्रकाशन वर्ष का उल्लेख नहीं है।

(11) श्री नोमुल अप्पाराव जी मानस का प्रवचन करने वाले रामभक्त के रूप में विख्यात हैं। इनका ग्रन्थ प्राप्त नहीं है। इनके शिष्य श्री पसुमर्ति श्रीराम शास्त्री ने इसका उल्लेख किया है। अप्पाराव जी ने बालकाण्ड के अन्तर्गत 'देववन्दन' प्रकरण का अनुवाद विशेष अर्थों सहित प्रकाशित किया। मूल रचना को देव नागरी में, फिर उसी को तेलुगु-लिपि में तथा उसका भावार्थ आवश्यक स्थलों पर विवरण सहित तेलुगु भाषा में इन्होंने लिखा। यह व्याख्यानुवाद है।

(12) टी. सांबमूर्तिकृत अनुवाद - इसका उल्लेख डॉ. भीमसेन 'निर्मल' ने मानस के प्रथम पद्यानुवाद की भूमिका में किया है किन्तु यह ग्रन्थ उनको प्राप्त नहीं हुआ।

हिन्दीतर भाषा क्षेत्रों में हिन्दी का प्रचार-प्रसार गांधी जी के द्वारा कार्यान्वित रचनात्मक कार्यक्रम के अन्तर्गत शुरू हुआ। हिन्दी की सर्वश्रेष्ठ कृति के रूप में विख्यात मानस की ख्याति सुनकर उसे राष्ट्रीय भावना से परिचालित कवियों ने तेलुगु में अनूदित करने के प्रयास किए। विगत शताब्दी में श्रीकृष्णमूर्ति शास्त्री तथा श्री मंड कामय्य शास्त्री नरहरि द्वारा प्रणीत अनुवाद 'आन्ध्र तुलसी रामायण' का गुणात्मक तथा ऐतिहासिक महत्त्व है। दोहा-चौपाई छन्दों में तेलुगु भाषा को ढालना इस अनुवाद की विशेषता है। काशी एवं विजयनगर रियासत के सम्बन्धों के परिप्रेक्ष्य में इस रचना की प्रेरणा समझी जा सकती है। किन्तु इसका केवल सुन्दरकाण्ड प्रकाशित है। पूरा ग्रन्थ प्रकाश में आ जाए तो साहित्यानुरागी इससे लाभान्वित होंगे। इसके अतिरिक्त भुवनवाणी ट्रस्ट, लखनऊ के माध्यम से मानस का तेलुगु पद्यानुवाद हो रहा है। राष्ट्रीय भावना, भक्तिभावना तथा सांस्कृतिक आदान-प्रदान की दृष्टि से मानस के अनुवादों का महत्त्व भविष्य में भी बना रहेगा।

□

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

मानस के पंजाबी अनुवाद

डॉ. मनमोहन सहगल

पंजाबी भाषा और गुरुमुखी लिपि ऐसा संयोग है, जिसके प्रणेताओं ने स्वयं अपने को श्री राम-वंशी स्वीकार और प्रमाणित किया था। गुरु गोविंद सिंह ने अपनी सुप्रसिद्ध रचना 'विचित्र नाटक' में गुरु नानक-वंश परम्परा तथा अपनी सोढी वंश-परम्परा को राम-संतति लव-कुश की वंशावली से मिलाया है। तात्पर्य यह कि पंजाब की गुरु-परम्परा में, क्योंकि राम-अंश मौजूद थी, उनके प्रभाव में पनपने वाला समूचा पंजाब, उसकी भाषा और लिपि तथा पंजाबी साहित्य, रामचरित के जीवन-मूल्यों का धारक एवं राम-कथा में प्रदर्शित कर्तव्यों और नातों का पालक बन गया था। जैसे श्री मैथिलीशरण गुप्त ने 'राम-वृत्त के सहज काव्य होने' तथा किसी में कवि बन जाने की सम्भावना का बीजारोपण-सामर्थ्य उसमें होने का दावा किया है, वैसे ही पंजाबी के उत्कृष्ट कवियों के लिए काव्य-विषय, आलम्बन विषय, उपमान-विषय एवं अर्थ-व्यंजना के विषयों की तलाश प्राय: राम-काव्य में से होती रही। पंजाब के लोक जीवन में राम-कथा के पात्र मुहावरों, लोकोक्तियों, आदर्शों और औपम्य-सार्थकता का आधार बन गए।

रामचरितमानस की रचना का युग पंजाब में गुरु-परम्परा का समकालीन है। हिन्दी जगत में ज्यों-ज्यों मानस को लोकप्रियता मिलती चली गई, त्यों-त्यों पंजाबी साहित्य जगत राम-कथा को अपना कथ्य बनाता चला गया। स्वयं गुरुओं ने अपनी वाणी में राम-जीवन के बीसियों संदर्भों की चर्चा की है, और लोक-मानस को सही दिशा देने के लिए राम के वास्तविक स्वरूप और जीवनादर्शों के अनेक उदाहरण प्रस्तुत किए हैं। पंजाबी के प्रसिद्ध आधुनिक कवियों अमर सिंह आहलूवालिया (रचना : अमर रामायण), कालिदास गुजरां-वालिया (रामायण), राम लुभाइया दिलशाद (पंजाबी रामायण), चक्रधर बेज़र (सुन्दर रामायण), बृजलाल शास्त्री (रामगीत) आदि ने भी राम-काव्य पर लेखनी उठाई, जबकि उत्तर मध्यकालीन पंजाब का तो कोई भी कवि शायद अपने कवि होने का तब तक दावा ही नहीं कर पाता, जब तक वह एकाध रचना राम-कथाश्रित न लिख ले। पंजाब में वह युग ब्रज-भाषा साहित्य का युग रहा है, किन्तु तब भी तद्‌युगीन कविगण ब्रज लिखने के लिए गुरुमुखी लिपि ही प्रयोग में लाते थे। उस काल की अनगिनत रचनाएँ, जो अब तक खोजी जा चुकी हैं, मौलिक रामचरित अथवा संस्कृत राम-काव्याश्रित ही हैं। बाल्मीकि रामायण, अध्यात्म रामायण, पद्‌मपुराण के रामाश्वमेघ प्रसंग, महाभारत के वन-पर्व का रामोपाख्यान प्रसंग आदि के भाषानुवाद तथा भावानुवाद, स्वतंत्र मौलिक रचनाएँ, प्रतीकों में लिखी राम-

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

कथा, रामायण-सतसई तथा इसी प्रकार की असंख्य कृतियाँ उत्तर मध्यकाल में लिखी गई हैं। इनमें से अनेक प्रकाश में आई हैं, अनेक के खो जाने की आशंका है और कुछ-एक तो दीमक का आहार भी बन गई हैं। ऐसी समृद्ध पंजाबी राम-काव्य परम्परा के सम्मुख जब मानस की लोक-प्रियता की चकाचौंध आई होगी, तो नए कवियों ने पंजाबी पद्य और गद्य में इसके अनुवाद प्रस्तुत करने का उपक्रम भी अपनाया होगा। इस दिशा में यद्यपि अधिक प्रयास नहीं हुए, तथापि जो भी यत्किंचित् प्रयत्न देखने में आए हैं, हम उनका परिचय यहाँ दे रहे हैं।

मानस के पंजाबी अनुवाद की दिशा में **प्रथम प्रयास** संत गुरमुख सिंह प्रेमी ने किया। अपने अनुवाद को उसने 'तुलसी रमैण पंजाबी' शीर्षक से हकीम रामकृष्ण, मालिक कारखाना जड़ी-बूटी, पवित्र औषधालय व जनरल बुक मर्चेंट, कटड़ा तारकशाँ, लोहारी दरवाज़ा, लाहौर से प्रकाशित करवाया। इसकी जो प्रति हमें भाई मोहन सिंह वैद्य लायब्रेरी (पंजाबी विश्वविद्यालय पुस्तकालय के अन्तर्गत पुस्तक संख्या 106799) में देखने को मिली जिसके अनुसार उक्त प्रकाश मई 1926 ई. में सम्पन्न हुआ यह पुस्तक 20×26/8 आकार में 830 पृष्ठों में मुद्रित हैं, जिसके अक्षर मोटे और तत्कालीन मूल्य केवल 5) रुपये है। पुस्तक के मुखपृष्ठ पर 'संत बलराम दास कवि प्रेम' का नाम शोधक के तौर पर अंकित है। ऐसा प्रतीत होता है कि संत गुरमुख सिंह तथा संत बलराम दास किसी एक ही पीठ के सहयोगी थे। अनुवाद करने के उपरांत गुरमुख सिंह ने संशोधनार्थ पाण्डुलिपि को अपने गुरुभाई (?) बलरामदास को सौंपा होगा।

प्रस्तुत अनुवाद का कार्यारम्भ अन्त:साक्ष्य के अनुसार 7 वैशाख (रामनवमी, शुक्रवार) संवत् 1970 वि. तद्नुसार 18 अप्रैल, सन् 1913 ई. के पावन दिन किया गया। प्रकाशित पुस्तक के पृष्ठ 42 पर निम्न पंक्तियाँ उपलब्ध हैं—

इही रामनौमी सुदिन वार शुकर, विसाख सतवीं पछान सज्जण।
संमत बिक्रमी उनी सौ सत्तर, पंजाबी विच रामाइण उलटाण सज्जण।
अठारां अप्रैल सन ईसवी उनी तेरा, चार चुतालीआ गुरु संमतान सज्जण।
बहुत चिरां तों दिल दा शौक मैंनूं, फिर वी कीता प्रेरणा मान सज्जण।
उपरोक्त दिन दसे ग्रंथ अरंभिआ है, आप रामजी तोड़ चड़ाण सज्जण।

इस अनुवाद कार्य में उत्तर कांड तक 'मानस' का सीधा-सादा पद्यानुवाद किया गया है। उत्तरकांड के अन्त में अनुवाद सम्पन्न होने का समय भी स्पष्ट अंकित किया गया है। कवि कथन है—

प्रेमी गुरमुख सिंह लवपुर वाले, परती रामैण बोलो फते स्री वाहिगुरु।
असू सुदी पंचमी ते भाद्रों दिन इक्की बुध, उनी सौ चुहत्र है विक्रमी स्री वाहिगुरु।
पंजवीं सतंबर सन उन्नी सौ सतारां ईसवी, भुल चुक रही तिमा करे स्री वाहिगुरु॥

अभिप्राय यह कि मानस का पंजाबी अनुवाद कवि गुरमुख सिंह प्रेमी ने 18 अप्रैल 1913 से लेकर 5 सितम्बर 1917 ई. के बीच पूरा किया। इस महान कार्य के लिए लगभग साढ़े चार वर्ष लगाने पड़े।

कवि ने किसी संस्कृत ग्रंथ का आश्रय लेकर एक अन्य छोटी रचना 'रामाश्वमेघ' का भी पंजाबी में लव-कुश कांड के नाम से अनुवाद किया है। प्रकाशन से पूर्व प्रस्तुत अनू-

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

दित कांड को उसने उत्तर-कांड के पीछे जोड़ दिया और सम्पूर्ण रचना को 'तुलसी रामाइण पंजाबी' नाम दे दिया है। 'लवकुश-कांड' एक स्वतन्त्र अनुवाद है, जो मानस का अनुवाद सम्पन्न करने के पाँच वर्ष बाद किया गया है, लेकिन श्रद्धा और भोलेपन के कारण पूर्वकृत अनुवाद के साथ जोड़ कर पुस्तक छपवा ली गई है। स्वयं कवि ने 'लवकुश कांड' के अन्त में अलग से अनुवाद-काल अंकित किया है—

धंन भाग मेरे बड़ी क्रिपा महाराज कीती,
अब दिन शुभ जो उठाई चेत्र आइआ जी।
तिथि शुदी द्वादशी ते ऐतवार मध दिन,
'तुलसी रामाइण पंजाबी' भोग पाइआ जी।
संमत उन्नी सौ उणासीआ बिक्रम जी दा,
लवपुर भुज़ंग विच बैठ लिख गाइआ जी ॥

यहाँ दो बातें और ध्यान देने की हैं—एक, कवि ने प्रस्तुत अनुवाद की समाप्ति में केवल विक्रमी संवत् का संकेत दिया है, अंग्रेज़ी वर्ष की बात नहीं कहीं, जैसा कि उसने मानस-अनुवाद में किया है। दूसरे, लाहौर में भी अपने निवास के भुजंग में होने की बात कही है जो पहले कहीं नहीं कही। भुज़ंग लाहौर की एक उपनगरीय आबादी थी, यह सर्वविदित है। दोनों अनुवादों में पाँच वर्ष का अन्तराल भी इस तथ्य का सूचक है कि ये दोनों अनुवाद अलग-अलग रचनाओं के हैं। तुलसीकृत 'मानस' में लव कुश-कथा जोड़ने के लिए ही कवि ने छपवाते समय उत्तरकांड की समाप्ति के बाद अन्य उपलब्ध सामग्री जोड़ दी है।

कवि गुरमुख सिंह प्रेमी ने 'मानस' का अनुवाद करते हुए कुछ और बातें भी अपनी ओर से बढ़ाई हैं, जैसे आठों कांडों को प्रसंगानुसार आगे छोटे-छोटे अध्यायों में बाँटा है, प्रत्येक कांड के आरम्भ में कांड का सारांश अंकित किया है, ग्रंथ के अन्त में काव्य में प्रयुक्त छंदों का विवरण काव्य-बद्ध ढंग से दिया है और प्रत्येक कांड के आरम्भ में दसों गुरुओं का स्तवन-गान किया है। इन अभिवृद्धियों से कवि की धार्मिक भावना तथा उस पर गुरु-वाणी संकलन पद्धति का प्रभाव स्पष्ट होता है।

अनूदित ग्रंथ में ही कवि ने आत्म-परिचय की कुछ पंक्तियाँ दे रखी हैं। उक्त अन्तः साक्ष्य से इतर कवि-जीवन की कोई अन्य जानकारी उपलब्ध नहीं हो सकी है। आत्म-परिचय के अनुसार कवि लाहौर में भुज़ंग की बस्ती का, जो हाईकोर्ट के समीप थी, रहने वाला था। उसके पिता ज्वालादास तथा भाई रामदास थे। कवि के तीन और भाई भी थे—

भाई सेवादास वड़ा, भाई गुरमुख सिंह,
नरैण सिंह, भाई चतुर सिंह नाम है।
चारे हां भरा पुत्र भाई जुआलादास जी दे,
भाई रागदास जी दे पोते निज ग्राम है।
लवपुर कोल हाईकोर्ट दे नज़दीक ठीक,
शहिर भुज़ंग चंग जिथे कवि-धाम है।
ज़िला है लाहौर और डाकखाना विचे खास,
'प्रेमी' गुरमुख सिंह कही कथा राम है ॥

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

मुद्रित पुस्तक पर कवि की अन्य कृतियों का विज्ञापन भी मौजूद है, जिससे पता चलता है कि 'जीवन चरित्र मतीदास जी,' 'भगत रतनावली' आदि रचनाएँ मानस के काव्य-अनुवाद के अतिरिक्त भी कवि ने प्रदान की हैं। वर्तमान अनुवाद का अध्ययन करने से कवि के हिन्दी-संस्कृत के ज्ञान का भी विश्वास होता है और साथ ही उसके गुरु भक्त तथा राम-भक्त होने के प्रमाण मिलते हैं। अनुवाद सश्रद्ध किया गया है, कवि ने इस दिशा में अपने चाव की बात भी स्वीकार की है—'बहुत चिरां तों दिल दा शौक मैंनूं।'

अनुवादक की मुख्य कठिनाई मूल ग्रंथ के भावों और वातावरण को सजीव बनाए रख सकने की होती हैं। पुनः, यदि अनुवाद ग्रंथ विश्वसाहित्य के गिने-चुने कुछ महाकाव्यों में से एक 'रामचरितमानस' हो, तो अनुवादक का दायित्व और भी बढ़ जाता है। प्रस्तुत कृति में अनुवादक अपना दायित्व सफलता-पूर्वक निभा पाया है। प्रेमी ने मूल कृति के आदर्शों, स्वरूप और प्रकृति की न केवल रक्षा की है, बल्कि कदाचित् भाषा को इतना सरल बना दिया है कि पंजाबी जानने वाला अनपढ़ व्यक्ति भी उसका भाव सुविधापूर्वक पकड़ लेता है। 'मानस' के कतिपय मार्मिक प्रसंगों का पंजाबी अनुवाद तो देखते ही बनता है, ऐसा प्रतीत होने लगता है कि प्रेमी भाषा का मौलिक प्रयोग करते हुए राम-कथा को पद्य-बद्ध कर रहा है। वनवास में राम के साथ जाने के लिए सीता का निवेदन बड़ा संवेदनशील है—उस समूचे प्रसंग में सीता की पति-भक्ति, समर्पण और प्रेम की पराकाष्ठा चित्रित की गई है। अनुवाद-वेला में कवि प्रेमी इस तथ्य को विस्मृत नहीं करता। उसके द्वारा उक्त प्रसंग का अनुवाद भी मूल पंक्तियों की तरह ही सजीव और भाव-गांभीर्य लिये हुए है। यथा—

अम्रित वांगु मैंनूं कंदमूल सारे, दुख दलन वत अवध शैलाइआ ए।
चरण कमल वेखां प्रभु दे हर वेले, खिड़ां कमीं जिउं चंद खिड़ाइआ ए।
दुख वण के नाथ जो कहे बहुते, भै विषाद वाले दे डराइआ ए।
प्रभु वियोग दुख जेड न है न सारे, मानों तुच्छ बहुते जो गिणाइआ ए।
ब्रिछां छां तले जदों आप बैठण, पक्खा झल्लांगी चरण दवाइआ ए।
शाम तन उते मुड़का वांगु कणीआं, वेख तन प्रभु दा मन मोहिआ ए।
कोमल राति नूं कुशा विछाइ आसण, दासी चरण घुटे सम निसाइआ ए।
घड़ी घड़ी मूरति प्रभु दी वेख के ते, तत्ती वाउ ना मैंनूं सताइआ ए॥

इसका मूल पाठ तुलना के लिए नीचे दिया गया है।

कंद मूल फल अमिअ अहारू। अवध सौध सत सरिस पहारू॥
छिनु छिनु प्रभु पद कमल विलोकी। रहिहउँ मुदित दिवस जिमी कोकी॥
बन दुख नाथ कहे बहुतेरे। भय विषाद परिताप घनेरे॥
प्रभु बियोग लवलेस समाना। सब मिलि होहिं न कृपा निधाना॥
पाय पखारि बैठि तरू छाहीं। करिहउँ बाउ मुदित मन माहीं॥
श्रम कन सहित स्याम तनु देखें। कहँ दुख समउ प्रानपति पेखें॥

कवि प्रेमी ने मानस की सूक्ष्मतर संवेदनाओं को बड़ी सफलता से पकड़ा और पद्य-बद्ध किया है। कहीं-कहीं तो शब्दावली का चयन भी मानस की पंक्तियों से ही कर लिया

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

है। वास्तव में हिन्दी और पंजाबी का मूल एक ही संस्कृत भाषा होने के कारण शब्दों में अधिक फेर-बदल की आवश्यकता भी नहीं होती। किष्किधा कांड में तुलसीकृत ऋतु-चित्रण प्रकृति के सजीव उदाहरण हैं। उनके अनुवाद में तुलसी के साथ न्याय कर सकना सामान्यत: बड़ा कठिन दीख पड़ता है, तथापि सिद्धहस्त कवि गुरमुख सिंह न केवल अनुवाद निभा ले गए हैं, बल्कि प्रकृति-चित्रण करने में पंजाबी कवियों के आदर्श बन गए हैं। एक उदाहरण द्रष्टव्य है—

बिजली चमकदी इउं विच बदलां दे,
जिउं खल प्रीत न थिर रहानि वेली।
बद्दल हो नीवें धरती उत्ते वस्सण,
पंडित पा विदिआ जिउं भुकान वेली।
मार कणीआं दी सहिंदे इउं परबत,
दुशट बचन जिउं संत सहि जान वेली।
थोड़े जल वगिआं खाले इउं उछलण,
थोड़े धनों जिउं मूरख मसतान वेली॥
पाणी वगे मैला धरती लगे इकुर,
जिकुर जीउ संग माया लिपटाण वेली॥

इसे मूल पाठ के पढ़ने पर सौंदर्य स्पष्ट हो जाएगा। मूल पाठ निम्नलिखित है—

दामिनी दमक रह न धन माहीं। खल कै प्रीति जथा थिर नाहीं॥
बरषहिं जलद भूमि निअराएँ। जथा नवहिं बुध बिद्या पाएँ॥
बूंद अघात सहहिं गिर कैसें। खल के बचन संत सह जैसें॥
छुद्र नदीं भरि चलीं तोराई। सज थोरेहुँ धन खल इतराई॥
भूमि परत भा ढाबर पानी। जनु जीवहिं माया लपटानी॥

यहाँ शब्द चयन और भाव-चयन में समता नहीं, ऐक्य देखा जा सकता है। कवि की अनूदित रचना ठेठ पंजाबी की ही है, किन्तु सामान्य पाठक के लिए वह ऐसा सरल, शुद्ध रूप धारे हुए है, जिसे पढ़ कर पंजाबी न जाननेवाला हिन्दी का पाठक भी पूर्णत: समझ सकता है।

अनुवादक ने जहाँ एक ओर तुलसी के भावों, मार्मिक संवेदनाओं और उपलब्धियों के साथ पूरा न्याय किया है, वहीं वह अपनी मौलिक काव्य-प्रतिभा द्वारा मानस के दुरूह प्रसंगों के अनुवाद के साथ-साथ उनकी भावाधारित व्याख्या भी कर देता है। अनुवाद कार्य का लक्ष्य यही होता है कि उसमें मूल ग्रंथ के भावों, विचारों, मर्मों, वातावरण और मूल्यों को अन्य भाषा में भी सजीव बनाए रखा जाय। इस मूलाधार की पूर्ति के उपरांत यदि कवि मूल ग्रंथ की किसी बात को और अधिक स्पष्ट करने के लिए अपनी ओर से भी कुछ जोड़ सके, तो इसका श्रेय अनुवादक की प्रतिभा को दिया ही जाना चाहिए। प्रस्तुत अनुवाद-कार्य में गुरमुख सिंह प्रेमी स्वयं एक प्रतिभाशाली और अनुभवी कवि है, इसलिए वह यथा प्रेक्षा 'भाव (अर्थ)', 'कवि-उवाच', 'भाव-विस्तार' आदि शीर्षकों का सहारा लेकर अनुवादोपरांत भाव की व्याख्या या स्पष्टीकरण भी प्रस्तुत करते हैं। एक उदाहरण देखिए

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

जहाँ अनुवादक ने पहले मूल प्रसंग का उपयुक्त अनुवाद किया है और बाद में उसे और गहराई से स्पष्टीकरण भी प्रदान किया है—

हा! जानकी सीता गुणखाणी कित्थे ?
रूपशील पती व्रतहा स्यानि जोए।
कई तरहां समझांवदे भी लक्ष्मण,
पुच्छदे पत्तिआँ ब्रिछां तो प्यान जोए।
ध्यान सीता दे अंग प्रभु करके,
पुछण खगां म्रिगां भौरे कान जोए।
हे पंछीओ, पशूओ, भौरिओ ओए,
किते डिठ्ठी म्रिगनैणी सिय प्रान जोए।

इसका मूल पाठ इस प्रकार है—

हा गुन खानि जानकी सीता। रूप सील व्रत नेम पुनीता ।।
लछिमन समुझाए बहु भाँति। पूछत चले लता तरु पाँति ।।
हे खग मृग मधुकर श्रेनी। तुम्ह देखी सीता मृग नैंनी ।।

ये पंक्तियाँ 'श्रीरामचरितमानस' के अरण्यकांड की पंक्तियों का सहज अनुवाद है किन्तु इसके आगे की मानस-पंक्तियाँ सरल-पूर्वक समझ नहीं आतीं, इसलिए कवि ऐसे स्थलों पर सहज अनुवाद न करके भावानुवाद करता है और पाठक को भली-भाँति तुलसी के कथन से परिचित करवाता है। तुलसी की पंक्तियाँ इस प्रकार हैं—

खंजन सुक कपोत मृग मीना। मधुप निकर कोकिला प्रबीना ।।
कुंद कली दाड़िम दामिनी। कमल सरद ससि अहि भामिनी ।।
बरुन पासं मनोज धनु हंसा। गज केहरि निज सुनत प्रसंसा ।।
श्रीफल कनक कदलि हरषाहीं। नेकु न संक सकुच मन माहीं ।।

इनका भाव कवि प्रेमी इस प्रकार प्रकट करता है—(कवि ऊपर 'ध्यान सीता दे अंग प्रभु करके' अपने अनुवाद में जोड़ चुका है)—

उपमां अक्खां दी सीया दीआं जो,
चंचल चमक सोहणी छबि छान जोए।
नक जिसदा तोते समान अते,
गरदन वांग कबूतर वडयान जोए।
काले भौंरे मानों सिर दे केस लंमे,
बोल कोइल वांगू सी बोलानि जोए।।
शरद चंद वांगू मुखड़ा सीता दासी,
नागणि शरद रुत चोटी तकानि जोए।
वरुण फास जो गले दी लीक दिसे,
मनोज धनु भौंह सीता सालाहणि जोए।
गज-हाथी वांगू सदा मसत चले,
लक शेर जिहा पतला ठान जोए।
छाती सीया दी श्रीफल वांगू,
जंघा केले सुनहरी मुलान जोए।।

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

कवि प्रेमी अनुवाद के साथ-साथ मानस के अनेक प्रसंगों की पुष्टि गुरु ग्रंथ साहिब, श्रीमद्भगवद्गीता तथा पुराण-कथाओं से भी की है। जरूरत पड़ने पर पाद-टिप्पणी में पौराणिक संदर्भ-कथाओं को भी काव्य-वद्ध किया है, यथा गणिका की कथा, हिरण्यकशिपु कथा आदि। यह पुष्टिकरण बड़े सहज भाव से किया गया है—तुलसी ने रामचरितमानस में जिस प्रकार किसी जीवन-मूल्य को चित्रित किया है, वैसे ही गुरुग्रंथ या भगवद्गीता में कहा है, आदि कहकर कुछ पक्तियाँ अनुवादक ने अपनी ओर से जोड़ दी हैं।

अनुवादक पर पंजाबी किस्सा-काव्य शैली का बहुत अधिक प्रभाव है। किस्सा-काव्य प्राय: पंजाबी के बैंत छंद में गाया जाता है। प्रस्तुत अनुवाद का मुख्य छंद बैंत ही है, किन्तु इतनी बड़ी रचना को एक ही छंद में निभा पाना दुष्कर तो था ही, इसीलिए कवि प्रेमी ने कहीं कहीं कवित्त, सवैया, चौपाई आदि छंदों का प्रयोग भी किया है। ग्रंथ के वृहद आकार के कारण वैंत का वृत्त आद्यन्त सफल नहीं हो पाया। अनेकधा वैंत की गेयता में तुकबंदियों के कारण बाधा पड़ी है। इतना जरूर है कि जहाँ दोहा-चौपाई जैसे छोटे छंदों में मानस के सूक्ष्म भावों को व्याप्ति प्रदान करने की आवश्यकता हुई है, वहाँ कवि प्रेमी बैंत का माध्यम अपनाने के कारण अधिक सफल हुआ है। तुक मिलाने के लिए कहीं-कहीं शब्दों को भी विकृत कर दिया गया है।

पंजाबी किस्सा काव्य में उद्देश्य दर्शाने की विशिष्टता अनुवादक कवि गुरमुख सिंह प्रेमी की अनूदित रचना में भी देखी जा सकती है। उसने अनुवाद आरम्भ करने से पूर्व बड़े स्पष्ट शब्दों में लिखा है कि तत्कालीन समाज में अश्लील और अशिष्ट प्रकृति के किस्सों का प्रचलन हो गयाहै, जिनके पठन-पाठ से लोगों में आचरण-हीनता और मूल्य-पतन बढ़ रहे हैं। रामायण महान काव्य है, जिसमें मानव जीवन-मूल्यों का सुचारु चित्रण हुआ है और प्रत्येक सामाजिक के लिए इसे जीवनादर्शों का दर्पण माना जा सकता है, इसीलिए कवि समाजोत्थान की भावना से प्रेरित होकर प्रस्तुत अनुवाद का प्रणयन कर रहा है। राम के महान चरित्र का अध्ययन पंजाबी के माध्यम से कर सकने की सुविधा पाकर पंजाबी मानसिकता का विकास होगा, जन-मन उजला होगा और समाज में सदाचार, सुशिष्टता और मानवता के गुण पनपने लगेंगे। वह लिखते हैं—

जो बिगाड़दे जीवन नूं 'बुरे किस्से', जोर गंदिआं दा वधदा जांवदा ए।
नेक संग अते पढ़णा नेक पुस्तक, उच्चे दरजे दा लाभ पहुंचांवदा ए।
जीवन नेकाँ दा करदा है नेक जीवन, इह मिसाल संसार सुणांवदा ए।
करतव (कर्तव्य) वडिआं दा देंदा है सिखिआ, धरम नेक नेकी विच नांवदा ए।
रामचन्द्र धरमात्मा नेक राजा, जिसदा जग सारा जस गांवदा ए।
जीवन उसदा करे उपदेश चंगा, हर इक दे चित नूं भांवदा ए।
एसे वासते दास इह कथा सुंदर भावा विचों पंजाबी उलटांवदा ए।
संस्क्रित भाषा, उर्दू पढण थोड़े, नहीं सारिआं नूं बोध आंवदा ए।
दास खास ज़बान पंजाब दी जो, बोली मादरी विच बणांवदा ए॥

अनुवाद की भाषा ठेठ टकसाली पंजाबी है। देखने में ऐसे शब्दों की कमी नहीं, जिनका आगमन अरबी-फारसी से हुआ है, यथा बख्श, बाग़, शकर गुज़ार, बुलंद, मेहरबान, गैरत आदि; किन्तु ये सब शब्द पंजाबी भाषा में पूरी तरह घुलमिल गए हैं और एक साधा-

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

रण पंजाबी भाषी इन्हें अरबी-फारसी के माध्यम से नहीं, ठेठ पंजाबी के ही माध्यम से जानता है। अनूदित रामायण का पाठ करते हुए पाठक इसे शुद्ध पंजाबी की ही मौलिक रचना स्वीकार करता है। यों तत्सम् तद्भव, देशी और विदेशी, सब प्रकार के शब्द 'तुलसी रामायण पंजाबी' में देखे जा सकते हैं, यथा तत्सम-तद्भव कोटि के उपाधि, सुरपति, नृप, शिथिल, कुटिल, अनुचित, प्रफुल्लित आदि तथा देशी-विदेशी कोटि के गुलजार, ग़रक, ग़लतान, परेशान, मिसाल आदि। हाँ, अनुवादक ने इसमें अपने पूर्ववर्ती कवियों की तरह, जिन्होंने मानस का आधार लेकर ब्रज में राम-काव्य लिखे, ब्रज का व्याकरण अथवा संस्कृत की विभक्तियों का आश्रय नहीं लिया। उसने व्याकरण की दृष्टि भी पंजाबी तक ही सीमित रखी है।

सारांश यह कि चर्चित अनूदित कृति अपनी साहित्यिक और भाषागत विशेषताओं के कारण सर्वग्राही बन गई है। श्री गुरमुख सिंह प्रेमी का यह अनुवाद-कार्य पंजाबी में मानस का सर्वप्रथम अनुवाद है। पंजाबी साहित्येतिहास की दृष्टि से सन् 1920 ई. तक पंजाबी वृहद् काव्यों में भाषा का ऐसा सहज और ठेठ रूप और कोई उपलब्ध नहीं, जबकि अनुवाद काल सन् 1913-17 ई. है। इससे स्पष्ट है कि कवि प्रेमी रामायण का अनुवाद प्रस्तुत करते हुए एक नवीन परम्परा की भी नींव रख रहे थे और किस्सा-काव्यों एवं साहित्यिक पंजाबी रचनाओं में स्तरीय पंजाबी की स्थापना भी कर रहे थे। प्रस्तुत अनुवाद पंजाबी साहित्य की विशिष्ट उपलब्धि है।

पंजाबी में **दूसरा प्रयास हरपाल सिंह बेदी** ने किया। इसकी रचना यद्यपि 'रामचरितमानस' का पूर्ण काव्यानुवाद है, तथापि मुद्रित रूप में इसके केवल दो ही भाग उपलब्ध हैं, जिनमें क्रमशः 226 और 213 पृष्ठ हैं और जिन्हें भाषा विभाग, पंजाब की ओर से प्रकाशित किया गया है। प्रकाशित अंश किष्किधाकाण्ड के अन्तर्गत सम्पाती-मिलन प्रसंग तक ही है, शेष अंश अप्रकाशित है।

प्रस्तुत रचना के दूसरे भाग के आरम्भ में कवि हरपाल सिंह बेदी ने अपना संक्षिप्त परिचय दिया है। कवि बेदी का जन्म 12 अगस्त, 1916 ई. को नवां शहर, ज़िला हज़ारा (वर्तमान पाकिस्तान) में बेदी परिवार में हुआ था। इनके पिता संस्कृत तथा गुरुमत-ग्रंथों के प्रकाण्ड विद्वान थे। हरपाल को धर्म-ज्ञान एक तरह रिक्थ-रूप में प्राप्त हुआ था। बचपन से ही गुरमत में इनकी रुचि बन गई थी, इसीलिए नियमित स्कूल-कॉलेज की अंग्रेज़ी शिक्षा प्राप्त करने की अपेक्षा इन्होंने धार्मिक संस्थाओं के माध्यम से ही पढ़ाई सम्पन्न की। सन् 1934 में हरपाल सिंह ने अमृतसर के सिक्ख मिशनरी कॉलेज से स्नातक परीक्षा प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण की। यह विश्वविद्यालयीन डिग्री नहीं थी, तथापि कवि बेदी ने इस बीच गुरुमत, भाषा तथा भारतीय-दर्शन का गम्भीर अध्ययन कर लिया था। सन् 1934 से 1937 तक इन्होंने प्रचारक के रूप में काम किया। तिब्बत की कुछ रियासतों में भी धर्म प्रचार के लिए बाद में इन्हें भेजा गया था।

भारत की बदलती हुई राजनीतिक परिस्थितियों के तहत सन् 1942 में हरपाल सिंह बेदी ने रजवाड़ाशाही के विरुद्ध उभरे आन्दोलन में भाग लेने के कारण छह मास तक जेल भोगी। संस्कृत, हिन्दी, उर्दू-फारसी, अंग्रेज़ी और पंजाबी भाषाओं पर इनका पूरा

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

अधिकार था। उन्हीं दिनों इन्होंने लिखना भी शुरु कर दिया था और सन् 1961-62 में छपने वाले तुलसी रामायण (पंजाबी) के दो अंश उसी प्रयास का परिणाम थे। देश-विभाजन के उपरांत स्थायी तौर पर हरपाल सिंह बेदी पटियाला आकर बस गए थे।

कवि ने रामचरितमानस जैसी विश्व-कृति का पंजाबी अनुवाद करने का उद्देश्य भी स्वयं ही अंकित किया है। कवि चाहता था कि वह हिन्दू-सिक्ख तथा हिन्दी-पंजाबी का विवाद मिटाकर नीति, धर्म, आचार और दर्शन का प्रचार करे—

'तुलसी' सूरज 'बेदी' चंदा, धा गलवकड़ी पाईए अज्ज।
हिंदी हिंदू सिक्ख पंजाबी, झगड़ा निपट मुकाईए अज्ज।
हिंदी नहीं कोई होर असानूं, दे धीरज समझाईए अज्ज।
कर अनुवाद पंजाबी दे विच, बोल माण वधाईए अज्ज।
इस रचना दा लाभ इहो है, लगे जाग जहानां नूं।
नीति धरम आचार फलसफा, समझ पए इनसानां नूं॥

इस लक्ष्य को लेकर चलने वाला कवि भारत की एक बड़ी आवश्यकता-पूर्ति को इंगित कर रहा प्रतीत होता है। धार्मिक विरोधों, भाषाओं के विवादों के कारण देश विखंडित हो रहा था; कवि की विवेकशीलता, धर्मांधता-मुक्त दृष्टि और उदार व्यक्तित्व देश को पुनः एक सूत्र में पिरोने का कार्य कर रही थी। 'तुलसी रामायण' समन्वयवादी रचना है, इसकी भावात्मक एकता विशिष्ट महत्त्व का तथ्य है; उसका पंजाबी अनुवाद करके जन-साधारण तक पहुंचाने का लक्ष्य हिन्दू-सिक्ख या हिन्दी-पंजाबी के विवादों की व्यर्थता प्रमाणित करना ही तो था। इस अनुवाद के माध्यम से एक ओर तो कवि हरपाल सिंह बेदी ने समाज को रिश्तों और कर्त्तव्यों की आदर्श कथा प्रदान की और दूसरी ओर विभिन्न वर्गों की संकीर्णताओं को नकारते हुए राम सरीखे महापुरुष के चरित्र को सबका पथालोक बनाया। पंजाबी संस्कार में एकता, प्यार और असाम्प्रदायिकता की जो चेतना युग-युग से व्याप्त हैं, उसी की व्यावहारिक देन है प्रस्तुत अनुवाद कार्य।

उपर्युक्त लक्ष्य को धारण करनेवाले कवि के व्यक्तित्व की कल्पना कठिन नहीं। उदारता, निष्पक्षता, भाव-प्रवणता, संतुलन, संवेदनशीलता, सर्व-धर्म-सत्कार, देश-प्रेम, मातृ-भाषा-प्रेम, देश की एकता के प्रति जागरूकता आदि ऐसे गुण हैं, जो हरपाल सिंह के व्यक्तित्व को आकार देते हैं। कवि गुरु नानकदेव जी के वंश से सम्बन्धित है, धर्म-प्रचारक भी रहा है, इसलिए उसमें हिन्दू-सिक्ख या हिन्दी-पंजाबी का कोई भेद-भाव नहीं। 'हिंदी नहीं कोई होर असानूं' तथा तुलसी के साथ 'गलवकड़ी' पाने (गले लगने) की बात कह कर कवि सब प्रकार की बाहरी संकीर्णताओं और राजनीतिक घेराबंदियों को तोड़ कर 'हिन्दू-हिन्दी, सिक्ख पंजाबी' का झगड़ा सदा के लिए मिटा देना चाहता है। सच्चा धर्म-प्रचारक अपने धर्म की बात कहते हुए भी दूसरे के धर्म को तिरस्कृत कभी नहीं करता। उसे तो हंस के समान सबके गुण रूपी मोतियों को चुग लेना होता है, नीर-क्षीर विवेक उसकी विशिष्टता होती है और मानव-मात्र से प्रेम उसकी महत्ता को प्रदर्शित करता है, हरपाल सिंह बेदी के व्यक्तित्व में यही सब कुछ प्रतिष्ठित था।

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

कविता का शब्दशः अनुवाद कठिन तो होता ही है, कहीं कहीं असम्भव भी प्रतीत होने लगता है। अनुवादक ने यहाँ श्रीरामचरित मानस जैसी एक प्रतिष्ठित काव्य-कृति का अनुवाद कविता में ही करने का प्रयास किया है। उसने मूल कृति के भावों की रक्षा की, तुलसी के भाव-पक्ष को सजीव बनाए रखा है। कई जगह तुलसी सरीखी मार्मिकता, संवेदनशीलता शायद हरपाल सिंह बेदी में न आ पाई हो, फिर भी आधार-ग्रंथ की कथा और भाव–क्रम को उसने पूरा संरक्षण प्रदान किया है। काव्यानुवाद की सफलता इसी पर आधृत होती हैं। बहुधा मूल के समान ही शब्द-योजना, गेयता, भावुकता, मार्मिकता आदि प्रस्तुत अनूदित कृति में देखी जा सकती हैं। एक उदाहरण देखिए। वनवास के समय सीता को जब महलों में ही रहने का उपदेश दिया जाता हैं, तो वह बड़े करूणा-प्लावित भाव में उत्तर देती है—

दो०—खग-मृग परिजन नगरु बनु बलकल बिमल दुकूल।
नाथ साथ सुर सदन सम परनसाल सुख मूल॥

चौ०—बनदेवी बन देव उदारा। करिहहिं सासु समुर सम सारा॥
कुस किसलय साथरी सुहाई। प्रभु संग मंजु मनोज तुराई॥
कंद मूल फल अमिअ अहारू। अवध सौध सत सरिस पहारू॥
छिनु छिनु प्रभु पद कमल बिलोकी। रहिहउँ मुदित दिवस जिमि कोकी॥

इन पंक्तियों का अनुवाद प्रस्तुत करते हुए कवि बेदी ने पंक्तियों के समूचे भाव को अपनी सुविधानुसार शब्द चयन एवं क्रम अपनाकर अनुवाद का जामा पहनाया है। ऐसा करने से मूल भाव को पूर्ण रक्षा हुई है। देखिए—

वणचर भगवान वणां दे खग मृग बाघ हजार,
प्राण नाथ दे नाल मैं समझांगी परवार।
भोजपत्तर दे पत्त नूँ पट-बसतर अनुमान,
परण कुटिआ प्राणपाल जो इह है महल सुजान।
बनदेवी बनदेव जो सहुरे सस्स समान,
पत्थर साथ सुहावणा काम मंच सुलतान।
अंमृतवत मैं अचवसां कंद-मूल आहार,
अवध राम वणराज तों वार दिआं सरदार।
गिर कंदर बन पारबती दरशन रूप निहारि,
छिन छिन प्रभु पद कमल तों मैं वारां संसार॥

इन पंक्तियों में कवि ने तुलसी का उपरिलिखित पंक्तियों में दिया समूचा भाव सफलता से चित्रित किया है। प्रस्तुत कृति में कुछ एक प्रसंगों को छोड़कर शेष समूची रचना इसी स्तर की है। मूल कृति के वातावरण को भी कवि ने अनूदित कृति में संजोया है – हाँ, प्रकृति चित्रण और ऋतुओं के वर्णन में तुलसीदास को जो प्रभावपूर्ण सफलता मिली है, वह हरपाल सिंह बेदी के भाग में नहीं आ पाई है। 'मानस' के ये प्रसंग तुलसी के काव्य कौशल और मार्मिक अभिव्यंजना के जीवंत दृष्टांत हैं, किन्तु अनुवाद करते हुए कवि इन प्रसंगों की गंभीरता और विस्तार को बनाए नहीं रख सका। बेदी ने इन

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

प्रसंगों को संक्षिप्त कर दिया है और तुलसी के भावों को जहाँ तक पकड़ पाए हैं, उन्होंने वहीं तक अपनी बात कहकर प्रायः प्रसंग समाप्त कर दिए हैं। यों भी कहा जा सकता है कि उक्त प्रकृति-चित्रण के प्रसंगों के अनुवाद में बेदी को सफलता नहीं मिली। इसमें कवि 'प्रेमी' अधिक सफल रहा है।

मूल रचना के कथानक और भाव के क्रम को ज्यों का त्यों बनाए रखने के अतिरिक्त प्रस्तुत अनूदित कृति में बहुत-सी मौलिक प्रवृत्तियाँ भी दिखाई पड़ती हैं। ऐसे मौलिक प्रसंग काव्य-कौशल को गौरवान्वित रूप प्रदान करने में विशेष महत्व रखते हैं। ऐसे प्रसंग दर्शनीय हैं, जहाँ लेखक ने 'मानस' के संक्षिप्त, अस्पष्ट या प्रभावहीन स्थलों को व्यापकता, स्पष्टता और मार्मिकता दी है। यथा 'मानस' में परशुराम-लक्ष्मण संवाद, स्वयंवर के समय लक्ष्मण का क्रोध या कैकेयी-मंथरा-बार्तालाप संक्षेप में दिए गए हैं, जबकि हरपाल सिंह बेदी ने उन्हें विस्तारपूर्वक अभिव्यक्ति दी है, जिससे इनमें अधिक स्पश्टता और प्रभावात्मकता आ गई है। जहाँ-जहाँ भी चरित्र स्पष्टता या प्रासंगिक महत्त्व को विस्तार देने के लिए कवि ने आधार ग्रंथ से हट कर स्थिति का सविस्तार दिग्दर्शन करवाया है, वहीं कवि का सुन्दर अभि-व्यंजना-कौशल उभर कर सामने आया है। अभिप्राय यह कि है कवि वेदी में यदि कहीं अनु-वाद-कला दुर्बल भी पड़ती है, तो मौलिक कलात्मक प्रभावी हो जाती है। आधारग्रंथ के अस्पष्ट प्रसंगों को विस्तार और स्पष्टता प्रदान कर सकना और रचना को मौलिक-सम भाव-भूमि पर प्रस्तुत कर पाना हमारे कवि की विशेष उपलब्धि है।

बालकण्ड में मानसकर उमा-शिव की सारी स्थिति को इतना संक्षेप में समेट लेता है कि कदाचित प्रसंग का पूरा रूपाकार ही समझ नहीं आता। उमा के घर लौटने पर उसकी आनन्द विभोर अवस्था तथा उसके मुख-मंडल पर द्वार अद्वितीय सौंदर्य को वाणी देना तुलसी ने आवश्यक नहीं समझा, जबकि कवि वेदी इस प्रसंग में अनेक आकर्षक अभि-व्यक्तियाँ करता है। इन अभिव्यक्तियों में मौलिकता और आलंकारिता दर्शनीय है—

सूरज चंन ते तारे सारे, विच खुशीआँ दे मारे।
असमानाँ ते धरती पतालाँ, लीते प्रेम हुलारे।
कुदरत वी कादर दी नच्ची, लैंके इक अँगड़ाई।
सचमुच तक के उमा दी सूरत, खलकत कुल शरमाई॥

इसी प्रकार—

प्रेम बाले दीवे विच वट मैं फिराक वाली,
पाके नित्त जालदी हाँ, जली नूँ जलाओं न।
पिआर वाली पींध दे गअँमड़े हुलरिआँ नूँ,
शिवाँ दे पिआरिआँ नूँ पिआर तों डुलाउना॥

मूल ग्रंथ का उक्त प्रसंग इतना मार्मिक और सरस नहीं। संभव है, तुलसी ने इस प्रसंग को अपना लक्ष्य न बनाने के कारण उपेक्षा कर दी हो, किन्तु यहाँ अनुवादक अधिक सचेष्ट सिद्ध हुआ है।

अनुवाद के अन्तर्गत मौलिकता का प्रमाण देने के अलावा कवि हरपाल सिंह बेदी ने अपनी रचना में जगह-जगह 'अनुवादक-वचन', 'भाव-विस्तार' अथवा 'अनुवादक खिआल' आदि शीर्षकों का प्रयोग करते हुए भी कुछ नई बातें जोड़ी हैं। गर्व-त्याग, मन की चंचलता,

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

माया के बंधन, शुभ-अशुभ विचार आदि विषयों को लेकर स्वतन्त्र छंद भी लिखे हैं। एक बानगी पेश है—

भाण छडिआ किसे ना जग दे विच, इहने गालिआ गुणी गिआनिआँ नूं।
चोटी लग्गी असमान दे विच सीगी, एस माणने उन्हां नूं पट्टिआ ए।
परब वाकरां जिन्हां दी हिक्क चौड़ी, ऐसे बली बहादरां रोल्लिआ ए।
सट्टे हाथी जिन्हाँ ने आकाश अंदर, इहने मुँह परने आहनूं सुटिआ ए ॥

इतना ही नहीं, समूचे अनुवाद की शैली पर पंजाबियत का प्रभाव है। पंजाबी वातावरण तुलसी रामायण में नहीं, हरपाल सिंह बेदी ने अनुवाद-भाषा के अन्तर्गत कतिपय शब्दों-मुहावरों-जिंद वार सुट्टाँ, घोल-घुमावाँ (बलिहारी होना), तत्तड़ी (संतप्त), कुड़े (ऐ लड़की !) आदि—के प्रयोग द्वारा पंजाबी वातावरण का निर्माण कर दिया है। यह अनुवाद-क्षेत्र में उनकी एक महत्त्वपूर्ण उपलब्धि है। कुछ उदाहरण देखिए—

(क) सुणो भवानी अति सिआणी,
तूं हैं जाणी जाण कुड़े।

(ख) वार वार आखाँ जिंदवार सुट्टां शिव उत्तों,
रिखिओ मुनीशरो वे मेरे पास आए किंउ
घोल के घुमावा आपा गुरु वाले वाक उत्तों,
फेर फेर इको गल्ल थल के सुणाए किंउ ॥

छंद के क्षेत्र में भी तुलसीदास ने संयमित रहते हुए 'मानस' में केवल दोहा-चौपाई का ही प्रयोग किया है। कहीं-कहीं 'सोरठा' भी दिखाई पड़ता है। लेकिन अनुवादक बेदी ने न तो ऐसे संयम का पालन किया है और न ही पंजाबी काव्य में प्रचलित किसी छंद के प्रयोग से परहेज किया है। कवित्त, सोरठा, दोहरा, चौपाई, कोरड़ा, बेंत, डिओढ़, वार, गजब कुंडलिया आदि अनेक छंदों को अनूदित रचना का शृंगार बनाया है। छंद-विविधता के ही कारण बेदी का अनुवाद सुरुचिपूर्ण बना है। बेंत, कवित्त, कोरड़ा आदि बड़े छंदों का लाभ यह हुआ है कि तुलसी-प्रणीत अस्पष्ट और संक्षिप्त भावों को विस्तृत वाणी मिली है। पाठक के लिए स्पष्टता और प्रभावात्मकता से अभिवृद्धि का कारण कवि बेदी का नवीन छंद प्रयोग हैं। पंजाबी के छंद 'वार' और 'सिरखंडी' वीर-रसात्मक चित्रण के लिए सर्वोपयुक्त माने जाते हैं, ओज गुणी रचना इन छन्दों के माध्यम से निखर उठती है। तुलसीदास जिन वीरता-प्रसंगों को दोहा-चौपाइयों में बाँध कर सामान्य-स्तरीय बना गए थे, उन्हीं को 'वार' या 'सिरखंडी' में पुनरोक्त कर हरपाल सिंह बेदी ने उक्त प्रसंगों को अधिक प्रभावी बना दिया है। 'सिरखंडी' में कैकेयी का चित्र देखिए—

अग्ग भबूका होई, साहवें खड़ी तक्क।
वेखी सी न्रिप नारि, गुसैली नागणी।
नारि वणी तलवार, कि मुठ कुमति दी।
हठ नारि दा यार, कि तिक्खी धार सी।
वग्गी ज़हिर कटार, सिबरी साण ते।

यहाँ सफल छंद-योजना के साथ-साथ अत्यानुप्रास की छटा भी दर्शनीय है।

प्रस्तुत अनुवाद में मुख्यतः साहित्यिक पंजाबी का प्रयोग हुआ है। फारसी

 Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

शब्दावली की अपेक्षा तद्भाव शब्दावली का प्रभाव अधिक दीख पड़ता है। इससे लेखक का संस्कृत ज्ञान तो प्रकट ही है, साथ ही, क्योंकि मूल कृति संस्कृत-निष्ठ अवधी की रचना है, इसलिए उसमें कम प्रचलित संस्कृत शब्द भी ज्यों के त्यों प्रयुक्त हो गए हैं, यथा मंदाकिनी, महीप, यज्ञोपवीत, भगिनी, उड्डगण, अनुग्रह, मधुकर, उपहास आदि।

अनुवादक उर्दू-फारसी भाषाओं से भी परिचित है, तथापि उसने अनुवाद में इन भाषाओं के शब्दों का खुला प्रयोग नहीं किया। केवल वे ही शब्द, जो बोलचाल की पंजाबी में शामिल हो चुके हैं अनुवाद के अन्तर्गत देखे जा सकते हैं, यथा-ख्वाब, गुलजार, दामन, नरगिस, मुश्किल, अजमत, शगुफा, पुरनम, हिजर आदि। पश्चिमी पंजाबी अथवा लेंहदा बोली के भी अनेक शब्द काव्य-प्रवाह में सम्मिलित हो गए हैं, तथा—मैंडे, थीवसी, घत, इथाईं, आखिओस, लिआवसां आदि।

अनुवाद में वर्तनी का प्रयोग संस्कृतानुसार हुआ है। पंजाबी में संस्कार-शब्दावली की वर्तनी बहुत भ्रष्ट है। इसे स्तरीय प्रयोग में बदलने के भी अनेक प्रयास हो रहे हैं, किंतु हरपाल सिंह वेदी की प्रस्तुत कृति के प्रथम दो भागों के प्रकाशन के समय तक अभी उक्त प्रयासों का कोई सफल परिणाम नहीं निकला था। चूंकि अनुवादक संस्कृत भाषा का जानकार है, इसलिए पंजाबी प्रयोग करते समय प्रायः सावधानी रखता है, यथा—स्वांती, संपति, आश्रम, वितीत, मूलाधार, स्वरग, स्वपन आदि। सामान्य स्थिति में पंजाबी लिखने वाले उक्त शब्दों की वर्तनी इस प्रकार देते हैं—सवांति, संपत, आशरम, बितीत, मूल आधार, सवरग, सवपन, आदि।

मानसकार के सम्मुख रामकथा एवं रामभक्ति-भावना को जन-साधारण तक पहुँचाने का व्यापक लक्ष्य था। उसी की पूर्ति के लिए उसने राम-कथा को तत्कालीन परिस्थिति में सरल शैली में प्रस्तुत किया। अनुवादक ने शैली की इस सरलता को बनाए रखने का काफी प्रयत्न किया है। उदाहरणार्थ मानस की निम्नलिखित पंक्तियों का पंजाबी अनुवाद दर्शनीय है—

जौं अनीह व्यापक बिभु कोऊ। कहहु बुझाइ नाथ मोहि सोऊ॥
अग्य जानि रिस उर जनि धरहू। जेहि बिधि मोह मिटै सोइ करहू॥
मैं बन दीखि राम प्रभुताई। अति भय बिकल न तुम्हहि सुनाई॥

अनुवाद :

जो विआपक समरथु सुआमी, दस मैंनूं तूं अंतरजामी।
मैं अनजान सदा अगिआनी, क्रोध निवारो मेरे जानी।
भरम हनेरा मिट जाए मेरा, शुकर मनावाँ सौ-सौ तेरा।
बण विच वेखी प्रभु वडिआई, भै कारण न प्रभु सुणाई॥

लेकिन अनुवादक कहीं-कहीं अपनी पंडिताई बधारने की खातिर मूल सरलता को भुलाकर छोटी बात को तूल दे देता है और सरल टिप्पणी को क्लिष्ट भी बना देता है। उपर्युक्त प्रसंग में ही जब भवानी शिवजी से राम-कथा कहने का आग्रह करती है, तो 'सुनो' वाले भाव को कवि यों प्रस्तुत करता है—

शोभावान, गुणवान, रूपवान, भगवान,
तपवान, गिआनवान, दानवान, दानी सुण।

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

कुलवान, कलवान, निरी ही कलिआणकारी,
बलवान, बलकारी अति ही गिआनी सुण ।
अनवान, तानवान, सूझवान, शीलवान,
सुंदर, धिआवान, मानी महमानी सुण ।
तूंहे हैं लासानी, नाम ताहीओ ही भवानी,
जानी तहैं, वाकबानी, गल्ल बेदी दी जबानी सुण ।।

किन्तु ऐसे अस्वाभाविक और अनचाहे प्रसंगों की उपस्थिति में भी प्रस्तुत कृति का पंजाबी साहित्य में विशिष्ट स्थान है । चूंकि सचेत रूप से अलंकृत इस ढंग का प्रयोग कम जगहों में देखने को मिलता है, इसलिए अखरता नहीं।

पंजाबी भाषा में 'रामचरित मानस' सरीखे विश्व काव्य को अनूदित रूप देने का यह भगीरथ कार्य हरपाल सिंह बेदी ने आद्यंत सफलता से निभाया है । मूल ग्रंथ के भावों की सूक्ष्मता और गहनता का पुनर्सर्जन, कवि की मौलिक अभिवृद्धि, साहित्यिक और शुद्ध भाषा का प्रयोग, पंजाबी छंदों की सफल योजना, संगीतमयी शैली का संरक्षण और प्रायः सादी अलंकृत शैली का प्रयोग प्रस्तुत अनुवाद-कार्य की विशेषताएँ हैं। आलोच्य कृति गुरुमुख सिंह 'प्रेमी' के अनुवाद से कहीं अधिक सुविस्तृत और सुप्रभावी है ।

रामचरितमानस चतुःशती के अवसर पर मानस का एक पंजाबी अनुवाद पंजाबी विश्वविद्यालय, पटियाला ने भी प्रकाशित किया है । इसके अनुवादक हैं डॉ. रत्न सिंह जग्गी और प्रकाशन-वर्ष सन् 1966 है । यह अनुवाद लिप्यन्तरण और गद्य में टीका के रूप में प्रस्तुत किया गया है । आमने-सामने के पृष्ठों पर मूल पाठ का गुरुमुखी में लिप्यन्तरण तथा गद्य में उसका अर्थ भाव और संदर्भ दिया गया हैं ।

डॉ. रत्न सिंह जग्गी का जन्म 27 जुलाई, 1927 ई. को पिंडीघेब (पश्चिमी पंजाब वर्तमान पाकिस्तान) स्थान पर हुआ था। उन्होंने पंजाबी तथा हिन्दी में एम. ए. की परीक्षाएँ पास की और फारसी तथा संस्कृत का भी अध्ययन किया । शुरू में रत्न सिंह दिल्ली पुलिस के कर्मचारी रहे, किन्तु साहित्य-क्षेत्र उन्हें पुकार रहा था, इसलिए पढ़ने-लिखने की अदम्य कामना लिए उन्होंने पुलिस की नौकरी छोड़कर, उच्च शिक्षा प्राप्त की और हिन्दू कालेज, सोनीपत में हिन्दी-पंजाबी के प्राध्यापक नियुक्त हुए । बाद में पंजाब सेवा आयोग द्वारा चुने जाने पर सरकारी कॉलेज, हिसार चले गए। वहीं उन्होंने 'दशम ग्रंथ की पौराणिक पृष्ठभूमि विषय पर शोध-प्रबन्ध लिखकर 'पंजाब विश्वविद्यालय' से पीएच.डी. की उपाधि प्राप्त की। सन् 1963 में डॉ. जग्गी पंजाबी विश्वविद्यालय के पंजाबी विभाग में प्राध्यापक बने। सन् 1973 ई. में उन्होंने मगध विश्वविद्यालय से 'गुरुनानक: व्यक्तित्व, कृतित्व और चिन्तन' विषय पर डी. लिट् की उपाधि प्राप्त की। वह 'पंजाबी साहित्य अध्ययन विभाग के अध्यक्ष नियुक्त हुए । इस बीच उन्होंने विश्वविद्यालय के लिए लगभग 200 पंजाबी पुस्तकों का आयोजन किया और प्रकाशन करवाया । पंजाबी, हिन्दी और अंग्रेजी में उनकी 65 स्वलिखित पुस्तकें उपलब्ध हैं, जिनकी साहित्य-जगत में बराबर चर्चा हुआ करती है । अनेक विशेषांक संदर्भ-ग्रथों का गौरव प्राप्त कर चुके हैं ।

'रामचरितमानस' के पंजाबी अनुवाद पर डा. रत्न सिंह जग्गी को साहित्य अकादेमी, नई दिल्ली ने अनुवाद पुरस्कार प्रदान किया है। यह पुरस्कार जनवरी 1949 से दिसम्बर

 Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

1988 तक के 40 वर्षों की अवधि में विभिन्न भारतीय भाषाओं की साहित्यिक रचनाओं के पंजाबी में हुए अनुवादो में डॉ. जग्गी द्वारा किए अनुवाद को सर्वोत्तम समझ कर दिया गया। डॉ. जग्गी ने बताया कि सन् 1973 में 'रामचरित मानस' की चतु: शती को राष्ट्रीय स्तर पर मनाने के लिए पंजाब सरकार द्वारा बनाई गई कमेटी की मीटिंग पंजाब विश्व-विद्यालय, चण्डीगढ़ में हुई, जिसकी अध्यक्षता तत्कालीन मुख्य मंत्री ज्ञानी जैल सिंह ने की। ज्ञानी जी की इच्छा थी कि तुलसी रामायण का पंजाबी अनुवाद तैयार करवाया जाए। इस कार्य का दायित्व डॉ. रत्न सिंह जग्गी को सौंपा गया। पंजाबी विश्वविद्यालय, पटियाला की ओर से सन् 1977 में इसका प्रथम संस्करण प्रकाशित हुआ।

अनुवाद के प्रारम्भ में 69 पृष्ठों की विस्तृत भूमिका लिखी गई है, जिसमें गोस्वामी तुलसीदास की जीवनी, व्यक्तित्व, कृतित्व, आध्यात्मिकता एवं साहित्यिकता, मानस की भाव सामग्री तथा कथा-सौष्ठव पर प्रकाश डाला गया है। भूमिका में अनुवादक ने बताया है कि मध्यकालीन सांस्कृतिक संघर्ष में डूबती हुई दुःखी जनता के चीत्कार को सुनकर तुलसी सरीखे बैरागी साधक का हृदय द्रवित हो उठा। उसके भीतर की भावना कविता के माध्यम से बह चली। उसके मुख से जो शब्द निकले, उन्होंने समस्त हिन्दू जगत को वश में कर लिया। यह वशीकरण मन्त्र 'रामचरित मानस' का था।

भूमिका के पश्चात् 1007 पृष्ठों में रामचरितमानस का गुरुमुखी लिपि में लिप्य-न्तरित पाठ और उसका गद्यानुवाद आमने-सामने के पृष्ठों पर दिया गया है। इस अनुवाद कार्य में अर्थ करते समत भावना और प्रसंग की संगति को विशेष ध्यान में रखते हुए तुलसी की मनस्थिति को यथावत रूपायित करने का भरसक प्रयास किया गया है। अनुवाद की एक बानगी देखिए—

मूल पाठ : श्रवन सुधा राम बचन सुनि पुलक प्रफुल्लित गात।
बोले मनु करि दण्डवत प्रेम न हृदय समात ॥

अनुवाद :

कन्नाँ राहीं अमृत वरगे बचन सुनके (उन्हाँ दे) शरीर रोमांचिक अते प्रफुल्लित हो गए। हिरदे विच प्रेम समांदा नहीं सी। मनु दे दंडौत करके किहा ॥

(कानों से अमृत-समान वचन सुनकर (उनका) शरीर रोमांचित और प्रफुल्लित हो गया। हृदय में प्रेम समाता न था। मनु ने दंडवत करके कहा)

'मानस' के पंजाबी अनुवादों की शृंखला में सन् 1887 में प्रस्तुत ज्ञानी संत सिंह का अनुवाद भी सुनने में आया है, किन्तु यह कृति उपलब्ध नहीं हो सकी है। यों तो 'रामचरित मानस' सरीखा विश्व-काव्य इतना महत्त्व अर्जित कर चुका है कि अभी आने वाली शताब्दियों में पंजाबी के विद्वान और कवि उसके अनेक अनुवाद प्रस्तुत करेंगे, तथापि आज तक की जानकारी में उपरि-चर्चित अनुवादों की बात ही सम्भव है।

□

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

मानस के मराठी रूपान्तर

डॉ. गजानन नरसिंह साठे

प्रचलित वाल्मीकीय रामायण के अनुसार, महर्षि वाल्मीकि की जिज्ञासा का समाधान करते हुए महर्षि नारद ने उन्हें रामचरित सुनाया और ब्रह्मा के आदेश से वाल्मीकि ने उस रामकथा को श्लोकबद्ध किया। वाल्मीकीय रामायण के नायक 'नर' राम कालांतर में 'नारायण' सिद्ध हुए। सगुण साकार दाशरथी राम का चरित्र निर्गुण-निराकार ब्रह्म के सगुण-साकार अवतार की लीला के रूप में लोक में स्वीकृत हुआ। राम-भक्त यह मानते हैं कि राम कलि-मल-हरणकर्ता, भक्तजनों के मुक्ति-दाता हैं, तो ब्रह्म राम का नाम ब्रह्म राम से भी बड़ा है—

ब्रह्म राम तें नामु बड़ बर-दायक बर-दानि।

इस मान्यता का प्रचलन मध्य युग में आसेतु-हिमाचल सर्वत्र हुआ।

वाल्मीकि ने रामचरित को प्रस्तुत कर श्रद्धाशील लोगों का महान उपकार किया, पर उनकी वाणी कालान्तर में 'कूप-जल' हो गई, जन साधारण के लिए अगम्य एवं दुर्बोध हुई। तब वही वाल्मीकि तुलसीदास के रूप में अवतरित हुए! नाभादास ने कहा है—

संसार पारके पारको, सुगम रूप नौका लयो।
कवि-कुटिल जीव-निस्तार हित बालमीकि तुलसी भयो।

गोस्वामी तुलसीदास ने यह स्वीकार किया है कि रामायण की रचना वाल्मीकि ने की। फिर भी उन्हें गुरु-परम्परा से जो रामचरित उपलब्ध हुआ, वह भगवान शिवजी द्वारा विरचित तथा उन्हीं के 'मानस' में सुरक्षित या, जिससे वह 'रामचरित-मानस' कहलाया। गुरुपरम्परा से उपलब्ध उस रामकथा को तुलसीदास ने 'गिरा ग्राम्य' में प्रस्तुत किया, फिर भी वही 'ग्राम्य गिरा', 'भाषा भनिति', जन-साधारण के लिए देव-गिरा, वेद-वाणी बनी है, उनकी 'भाषा-भनिति' वेद बनी है, पवित्र शास्त्र, धर्म-ग्रन्थ प्रमाणित हो चुकी है।

वाल्मीकि ने लोक को 'राम' दिया, तुलसीदास ने जनसाधारण को 'राम' और 'राम-चरित मानस' दिया। ऐसा न होता, जो जन-जीवन में चैतन्य का अभाव हो जाता, लोग जड़ जीव बने रहते। 'गोविन्द' से गुरु बड़े माने जाते हैं। उसी प्रकार, तुलसीदास राम से भी पहले पूजनीय हैं। उन्हीं के कारण मध्ययुग के अँधेरे में जनसाधारण को प्रकाश-किरण प्राप्त हुई, उनके जीवन में 'राम' आया।

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

तुलसीदास के जीवनकाल में ही रामचरित मानस का प्रभाव चारों ओर छा गया। देखते-देखते वह कृति 'मंत्र-सिद्ध' मानी जाने लगी। उस मंत्र-सिद्ध रचना की महत्ता परवर्ती काल में विभिन्न भाषा-भाषी लोगों ने स्वीकार की और आज यह प्रमाण के साथ घोषित किया जा सकता है कि मध्ययुगीन भारतीय भाषाओं में लिखित कोई ग्रन्थ भारत की विभिन्न भाषाओं में अनुवादित होकर जनसाधारण के लिए भव-सागर के उस पार ले जाने वाली नौका सिद्ध हो गया है, तो वह है वाल्मीकि के अवतार गोस्वामी तुलसीदास-विरचित 'रामचरितमानस'। आज भारत की विभिन्न भाषाओं में मानस के अनेकानेक अवतार उपलब्ध हैं और उनमें नए-नए अनुवाद-स्वरूप अवतार प्रतिवर्ष प्रस्तुत होते जा रहे हैं। मराठी भाषा इसका अपवाद नहीं है।

हज़ारों मराठी भाषी लोग पिछली कुछ शताब्दियों में हिन्दी भाषी प्रदेशों में बस गए हैं। संभव है, ऐसे लोगों के लाभ के लिए 18वीं-19वीं शताब्दी में मानस के कुछ अंशों का मराठी में अनुवाद या रूपान्तर किया भी जा चुका हो। फिर भी उसके ठोस प्रमाण के अभाव में उसका विचार करना व्यर्थ है। अत: मानस के केवल उपलब्ध अनुवादों, रूपान्तरों का अनुशासन यहाँ पर प्रस्तुत करना समीचीन होगा।

रामचरित मानस के मराठी गद्यावतार

अब तक रामचरितमानस के तीन मराठी गद्यावतार प्रकाशित हुए हैं। निम्न-लिखित अनुच्छेदों में उनका परिचय दिया जा रहा है।

(अ) ।। **श्रीरामचरितमानस** ।। अथवा ।। श्री तुलसी-रामायण ।।

सम्पादक-अनुवादक : (श्रीमन्त) यादव शंकर जामदार (ई. 1870-1951)।
प्रकाशक : प्रथम संस्करण—श्री गो०ह० पुरोहित, बुधवार पेठ, पुणें (ई० 1913)।
द्वितीय संस्करण-चित्र शाला प्रेस, पुणें (1940 ई०)।

श्री यादव शंकर जामदार नागपुर के निवासी थे। शिक्षा-दीक्षा के पूर्ण होने पर तत्कालीन अंग्रेज सरकार ने उन्हें अदालत में 'सब जज' के पद पर नियुक्त किया। (तत्कालीन मध्य प्रान्त के अन्तर्गत) जबलपुर में उन्होंने उक्त पद पर काम करते हुए 1925 में अवकाश ग्रहण किया और तत्पश्तात् वे नागपुर में रहने लगे।

उन्नीसवीं शताब्दी के अन्तिम चरण में श्री जामदार सद्गुरु श्री राघोबा महाराज के अनुग्रह को प्राप्त हुए। उनके माध्यम से वे सादल्लापुर (पंजाब) के महात्मा श्री साईं महाराज के भी कृपाभाजन हुए। अपने गुरु श्रीराघोबा महाराज के प्रभाव से श्री जामदार में जबलपुर में रामचरित्र मानस के प्रति आकर्षित हो गए और उसका नित्य पठन करने लगे। अपने गुरु के आदेश से वे 'मानस' पर प्रवचन भी दिया करते थे।

श्री जामदार ने मानस का रसास्वादन करते हुए 'मानस-हंस' अथवा 'तुलसी-रामायण-रहस्य' नामक एक अनुशीलनात्मक पुस्तक मराठी में लिखकर ई० 1926 में प्रकाशित कराई थी। उनकी दूसरी पुस्तक है—'वाल्मीकीज़ राम ऐण्ड हिज पालिटिक्स'।

श्री जामदार मानस के आद्य मराठी अनुवाद-कर्ता है परवर्ती अनुवाद-कर्ताओं को उन्होंने यथोचित ऐसे कार्य में परामर्श भी दिया है। ये अनुवादक श्री जामदार का आदर और कृतज्ञता के साथ उल्लेख करते हैं।

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

श्री जामदार ने अनुवाद के लिए नागरी प्रचारिणी सभा, वाराणसी द्वारा स्वीकृत और प्रकाशित मानस का पाठ अनुवाद के लिए चुना है। उनके 'तुलसीरामायण' में मराठी भाषान्तर सहित मूल हिन्दी पाठ भी उपलब्ध कराया गया है। इस दृष्टि से उन्होंने अपने आपको 'सम्पादक' कहना ही उचित माना है।

मानस का मराठी में 'भाषान्तर' करने का उनका यह उद्देश्य था कि भारत की 'राष्ट्र भाषा' में लिखित इस धर्म-ग्रन्थ को सन्त-भक्त-काव्य प्रेमी, 'सहृदय' और 'भक्ति प्रिय' मराठी भाषी पाठकों को सुलभ कर देना। वर्तमान कालीन सु-संस्कार-शून्य परिस्थितियों में सद्धर्म की शिक्षा देने वाले मानस जैसे ग्रन्थ का प्रचार उनकी दृष्टि से बहुत अभीष्ट है। उनके मत में ऐसे ग्रन्थों के अनुवाद द्वारा भारत में एक राष्ट्रीयता का भाव भी वृद्धि को प्राप्त होगा अर्थात् अनुवाद करने में श्री जामदार का प्रधान उद्देश्य धार्मिक आध्यात्मिक शिक्षा-संस्कार करना है और गौणतः है साहित्यिक परिचय कराना।

श्री जामदार ने बाल और अयोध्या काण्डों का मराठी भाषान्तर मूल पाठ को बराबर सामने रखकर किया है। भाव की महत्ता का ध्यान रखते हुए भी उन्होंने उनका शब्दानुवाद करने का विशेष प्रयास किया है। तदन्तर उन्होंने शेष काण्डों का भावानुवाद किया है—मूल पाठ का कुछ स्वतंत्रता के साथ, फिर भी प्रामाणिक, रूपान्तर किया है। इसलिए शेष पाँच काण्डों का अनुवाद स्वतंत्र रूप में पढ़ें, तो उसमें अधिक स्वाभाविक भावाभिव्यक्ति अनुभव होती हैं, विशेषत: रावण-अंगद संवाद में ऐसी स्वतन्त्रता में एक अजीब-सा उत्साह पाया जाता है। अनुवादक ने यह स्वयं स्वीकार किया है कि उसने विदर्भ-नागपुर में प्रचलित 'वऱ्हाडी' बोली भाषा के शब्दों-मुहावरों का विपुल मात्रा में प्रयोग किया है। लोक में प्रचलित ऐसे अर्थघन शब्दों के चयन में उसने बड़ी सतर्कता बरती है। इससे यह भी कहा जा सकता है कि अनुवाद की मराठी भाषा बम्बई-पूना वाले मराठी भाषियों को कुछ अजीब सी जान पड़ती है। इसके अलावा, वह आज (1991 ई०) से लगभग 80 साल पहले प्रचलन में रही मराठी है, अत: यदि कहीं-कहीं आज के पाठक को वह पुरानी और क्लिष्ट जान पड़े, तो इसे अस्वाभाविक नहीं कहा जा सकेगा।

अनुवाद ने 'भरनी' (बाल-31) को एक विशिष्ट पक्षी, 'गवासा' (बाल-6) को 'म्लेच्छ' कहा है। ऐसे कतिपय शब्दों के अर्थ को मतभेद का विषय माना जाए।

कुल मिलाकर श्री जामदार-कृत (तुलसी रामायण का) यह आद्य मराठी गद्यानुवाद अच्छा है। अनुवादक का लक्ष्य सिद्धि को प्राप्त हुआ है। इसके द्वारा सैकड़ों मराठी भक्ति शील और साहित्य-प्रेमी पाठकों को रामचरित मानस का सम्यक् परिचय हो सका है।

अनुवादक ने अनुवाद में आवश्यक संशोधन करते हुए उसका द्वितीय संस्करण 1940 में उपलब्ध करा दिया है। उसने (दोनों संस्करण में) गोस्वामी तुलसीदास और उनकी रचनाओं का परिचय दिया है। स्थान-स्थान पर स्पष्टीकरणार्थ पाद-टिप्पणियाँ दी हैं, 'मानस' की (मूल हिन्दी) सूक्तियों को 'तुलसीदास-वाग्रत्न-माला' नामक सूची में प्रस्तुत किया है और मूल पाठ के कठिन शब्दों का कोश मराठी-अर्थसहित समाविष्ट किया है। इससे श्री यादव शंकर जामदार कृत इस (मूल हिन्दी पाठ सहित) मराठी अनुवाद की उपयोगिता पर्याप्त मात्रा में वृद्धि को प्राप्त हुई है।

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

(आ) ॥ सार्थ तुलसी-रामायण (अर्थात) श्री रामचरित मानस ॥

सम्पादक—अनुवादक : श्री नारायण भास्कर जोशी (1901-1976)

प्रथम संस्करण—1970, द्वितीय संस्करण—1989

प्रकाशक—(दोनों संस्करण) : सारथी प्रकाशन, 1005 सदाशिव पेठ, पुणें 411030

श्री नारायण भास्कर जोशी (जन्म-ग्राम : कुण्डल, जनपद-सांगली, महाराष्ट्र) ने दर्शनशास्त्र में एम. ए. करने के पश्चात् कई माध्यमिक विद्यालयों में तथा राष्ट्रीय पाठशाला (तिमाणी) में अध्यापन-कार्य किया। उन्होंने एल. एल. बी. उपाधि भी प्राप्त की थी। व्यक्ति, परिवार, समाज एवं राष्ट्र के उत्थान में वे प्रभु रामचन्द्र के आदर्श को सर्वोपरि मानते थे। सौभाग्य से उन्हें महाराष्ट्र के विख्यात राम-भक्त 'मानस' भक्त स्वामी प्रज्ञानानन्द सरस्वती के सत्संग तथा अनुग्रह का लाभ हुआ। पाठकों में सच्चरित्र का निर्माण और विकास रामचरितमानस जैसे मंत्र सिद्ध एवं श्रेष्ठ काव्य के अनुशीलन से हो सकता है, इस विचार से प्रेरित होकर उन्होंने मानस का मराठी गद्यानुवाद 1960 में किया जो 1970 में पुस्तकाकार प्रकाशित हुआ। प्रथम संस्करण दो प्रकार से प्रकाश में आया— मूल हिन्दी पाठ-सहित मराठी गद्यानुवाद भी अलग से प्रस्तुत किया गया। द्वितीय संस्करण में मूल हिन्दी पाठ-सहित मराठी अनुवाद है।

अनुवादक के तुलसी के जीवन और साहित्य का परिचय देते हुए अपने संस्करण में राम-जीवन-तिथि-पत्र (स्कन्द पुराण के आधार से), श्री राम शलाका-प्रश्नावली, श्रीराम चरित-मानस-पारायण की विधि, 'मानस' और श्रीराम की (स्व-रचित) आरतियों को तथा हिन्दी-मराठी-शब्दकोश को समाविष्ट किया है।

सम्पादक-अनुवादक श्री ना. भा. जोशी ने 'मानस' के गीता प्रेस-गोरखपुर के पाठ को प्रधानतः अपने सामने रखा है, परन्तु गीता प्रेस के पाठ एवं टीका के सन्दर्भ में जहाँ-जहाँ अपने गुरु स्वामी प्रज्ञानानन्द सरस्वती का मतभेद रहा, वहाँ-वहाँ उन्होंने अपने गुरु का ही अनुसरण किया है।

श्री जोशी ने स्थान-स्थान पर पाठकों की दृष्टि से उपयुक्त टिप्पणियाँ दी हैं। विषय सूचक शीर्षक देते हुए अनुवाद को कई भागों में विभक्त किया है। अनुवाद करते समय वह मूल पाठ के प्रति एकनिष्ठ रहे हैं और उन्होंने तुलसीदास के भाव को यथा सम्भव आसान, ऋजु, प्रासादिक भाषा में प्रस्तुत करने का भरसक प्रयास किया है। उनका यह विश्वास अनुचित नहीं है कि 'मानस' के 'अर्थामृत' का यह अनुवाद स्वरूप प्रवाह सीधे पाठकों-श्रोताओं के हृदय-स्थल में पहुँचकर उसे प्रभावित करेगा और वे स्वतन्त्र रूप से इसे अमृत का रसास्वाद कर सकेंगे। जन साधारण पाठकों-श्रोताओं का ध्यान रखते हुए उन्होंने छोटे-छोटे वाक्यों का, आसान शब्दों का प्रयोग किया है। इसलिए (तथा अब की प्रचलित भाषा में अनुवादित होने के कारण) यह अनुवाद (श्री जामदार-कृत अनुवाद की तुलना में) पाठकों को बहुत आसान प्रतीत होगा। प्रकाशक अनुवादक-सम्पादक ने इस ग्रन्थ में मूल पाठ प्रत्येक पृष्ठ के प्रथमार्ध में देकर उसके नीचे अनुवाद दिया है, केवल दोहा-संख्या दी है। अतः मूल के साथ अनुवाद का मिलान करने में पाठकों को कुछ कठिनाई हो सकती है। श्री जामदार ने प्रत्येक कड़वक को चौपाइयों में विभक्त करके उनकी क्रमसंख्याएँ दी हैं—कड़वक की ऐसी

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

प्रत्येक इकाई के नीचे उसका मराठी अनुवाद दिया है। यह पद्धति यदि श्री जोशी और उनके प्रकाशक अपना लेते, तो पाठकों को मिलान करने में अधिक सुविधा हो जाती।

श्री जामदार की भाँति श्री जोशी भी अपने आपको तुलसी रामायण का 'सम्पादक' कहना अधिक पसन्द करते हैं।

निःसन्देह यह कहा जा सकता है कि अपने स्वीकृत कार्य में श्री जोशी सफल हुए हैं।

(इ) ।। **तुलसी-रामायण** ।। (=कथन-कर्ता, प्रस्तुत कर्ता)

श्री ग. दि. माडगूलकर (1919-1977)

प्रथम संस्करण : 1977

प्रकाशक : विश्व-मोहिनी प्रकाशन, 62/12 एरंडवणे, पुणें-411004

श्री ग० दि० माडगूलकर (गजानन दिगम्बर माडगूलकर, जो 'ग०दि०मा०' नाम से ही अधिक पहचाने जाते रहे) मराठी के ख्यातनाम कवि-गीतकार कवि थे, फिल्मी कथाओं और वार्तालापों (डाइलॉग) के लेखक, कहानीकार संस्मरण-लेखक थे। वे अच्छे अभिनेता भी थे। मराठी फ़िल्मी दुनिया में उन्होंने अपने 'युग' का निर्माण करते हुए अपने आपको अजर-अमर बना रखा है। 'गीत-रामायण' उनकी अमर कृति है— पहले उनके रामकथाश्रित कुल 56 गीत आकाशवाणी के पुणें और बम्बई केन्द्रों द्वारा एक-एक सप्ताह में एक-एक के क्रम से प्रसारित हुए और ऐसे रामकथाश्रित गीतों में उन्हें अनन्य साधारण लोकप्रियता प्राप्त हुई। इसके अलावा जोगिया, चैत्र बन आदि उनके गीत-संग्रह हैं, 'मंतरलेले' दिवस' आदि उनकी संस्मरणात्मक पुस्तकें हैं।

ग०दि०मा० रामकथा के प्रति मंत्र-मुग्ध बने रहे। वे तुलसी-रामायण के प्रेमी थे। उन्होंने 'मानस' का जो मराठी अनुवादात्मक रूपान्तर किया, वह पूना से प्रकाशित होने वाली 'स्वराज्य' नामक साप्ताहिक पत्रिका द्वारा 85 किश्तों में प्रकाशित हुआ। जनसाधारण मानस के मूल पाठ को समझ नहीं सकते, अतः उनके लिए 'सुगम' रूप में 'मानस' की कथा कहने के उद्देश्य से प्रेरित होकर श्री ग०दि० माडगूलकर ने यह प्रयास किया था। उन्होंने उसका शब्दशः भाषान्तर व अनुवाद नहीं किया है—'मानस' की कथा उसे बिना विच्छृंखल किए, उन्होंने अपने शब्दों में पुनः कही है। इसलिए वे अपने आपको तुलसी-रामायण के 'निवेदक' अर्थात् 'कथन-कर्ता' कहना ही पसन्द करते हैं। इस प्रयास में 'मानस' को सामने रखकर वे उसके प्रति एकनिष्ठ रहे हैं। इसमें वह अपने पूर्ववर्ती अनुवादकों का ऋण भी स्वीकार करते हैं।

ग०दि०मा० ने बालकाण्ड के 44वें कड़बक ('भरद्वाज मुनि बसहिं प्रयागा') से आरम्भ किया है और उत्तरकाण्ड के 14वें दोहे की पंक्ति बरनि उमापति रामगुन हरषि गए कैलास' का रूपान्तर करके अपना कथा-कथन समाप्त कर दिया है। स्पष्ट है कि श्रीराम और 'मानस' के प्रति श्रद्धालु होने पर भी, वे मानस के दार्शनिक आदि पक्षों में उलझाना नहीं चाहते थे। कथन-कर्ता ने तुलसी-कृत (प्रत्येक काण्ड के आरम्भिक) वन्दना प्रकरण का भी रूपान्तर नहीं किया है—पर उसके अन्तर्गत आये हुए स्तुतियों-स्तवनों का ही गद्य रूपान्तर किया है। ग०दि०मा० यदि उन्हें पद्य-बद्ध, गीत-बद्ध करते, तो वह निश्चय ही प्रभावकारी हो जाते।

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

'मानस' की कथा का मूल-निष्ठ पुनर्कथन करने के कारण ग०दि०मा० द्वारा प्रस्तुत यह 'तुलसी-रामायण' एक स्वतन्त्र प्रासादिक कृति-सी जान पड़ती है—उनकी कथन-शैली पाठकों पर जादू का-सा प्रभाव करती प्रतीत होती है। जिस सीमित उद्देश्य से श्री ग०दि० माडगूलकर ने यह प्रयास किया है, उसकी पूर्ति का आनन्द उन्होंने अवश्य अनुभव किया होगा। कहना न होगा कि इस ग्रन्थ में 'मानस' का मूल पाठ नहीं दिया गया है।

रामचरितमानस के पद्यावतार

अब तक रामचरित मानस के मराठी में पांच पद्यानुवाद प्रकाशित हो चुके हैं। निम्न-लिखित पंक्तियों उनका संक्षिप्त परिचय दिया जा रहा है।

(अ) **।। श्रीरामचरित मानस ।। अथवा ।। मराठी चौपाईवृत्त रामायण ।।**

अनुवादक—संपादक : श्री गणेश सदाशिव भोपटकर

(वि०सं० 1944 निर्माण वि०सं० 2004)

प्रथम संस्करण : वि० सं० 1977 (ई० 1920)

प्रकाशक : श्री गणेश सदाशिव भोपटकर (ग्वालियर)।

श्री गणेश (वस्तु मूलतः नाम 'गणपति') सदाशिव भोपटकर का जन्म गुलसराई (झांसी) में हुआ। बचपन में ही उनकी भगवद्भक्ति देखकर उनके पिता जी ने उन्हें रामचरित मानस का नित्य पाठ करने की प्रेरणा दी। कुछ वर्षों के पश्चात् वे अध्यात्म-रामायण का भी पठन करने लगे, उन पर हनुमान का विशेष अनुग्रह था। उन्होंने हनुमान, राम, शिव, दत्तात्रेय आदि का साक्षात्कार भी किया था। एक समय जब वे अयोध्या गए थे, तब सरयू तट पर बैठकर मानस के किष्किन्धा का पाठ करते हुए उनके मुख से 'को तुम श्यामल गौर-शरीरा' का चौपाई छन्द में मराठी रूपान्तर सहसा निकला, तब उन्होंने चौपाई छन्द में मानस का मराठी रूपान्तर करने की ठानी। सं० 1967 में इसका श्रीगणेश करके पहले उन्होंने किष्किन्धा काण्ड और सुन्दर काण्ड का अनुवाद किया, तदनन्तर कुछ वर्षों के बाद उन्होंने बालकाण्ड का अनुवाद करना आरम्भ किया। पर उन्हें जान पड़ा कि ऐसा भाषा-न्तर करने से उत्कृष्ट भक्ति की अभिव्यक्ति करने में कभी-कभी बाधा उत्पन्न हो रही है। इसलिए 'भाषान्तर' करने की अपेक्षा 'रूपान्तर' करना अधिक पसन्द किया हालांकि उन्हें रामचरित मानस और अध्यात्म रामायण दोनों कण्ठस्थ हो गए थे। भावावेग से वे कहीं-कहीं अध्यात्म रामायण में वर्णित घटनाओं का, तो कहीं-कहीं अन्य आधारों से स्वीकृत वह मौलिक कथा-सूत्रों का भी समावेश अपने 'मराठी चौपाई वृत्त रामायण' में करते गए। फल-स्वरूप यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि श्री भोपटकर ने मानस का पंक्ति-अनुपंक्ति अनुवाद नहीं किया है, परन्तु उसमें अध्यात्म रामायण से तथा 'क्वचिदन्यतोऽपि' अंश लेकर उन्होंने मानस का इस प्रकार 'मूलाश्रित मराठी पद्य रूपान्तर' किया है। उन्होंने प्रधानतः तुलसीदास का अनुकरण करते हुए मराठी में दोहा-चौपाई आदि छन्दों का प्रयोग किया है। इस प्रकार का यह प्रथम प्रयास है। श्री भोपटकर ने मानस के प्रत्येक काण्ड के संस्कृत मंगलाचरण के स्थान पर स्वतंत्र संस्कृत छन्द-स्वरूप मंगलाचरण प्रस्तुत किया है, उसी प्रकार मानस में समाविष्ट अधिकांश स्तुतियों का मराठी रूपान्तर न करते हुए स्वतन्त्र रूप से स्तुतियों की रचना की है। उन्होंने 'मानस' के अपने रूपान्तर में कुछ प्रसंग अध्यात्म

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

रामायण से उधार लेकर अपनी शैली में प्रस्तुत किए हैं। उदाहरणार्थ, नारद द्वारा राम को उनके अपने निर्धारित कार्य के विषय में उद्बोधित करना (अ० अयोध्या), कैकेयी द्वारा ग्लानि के साथ अपने अपराध को स्वीकार करके राम से क्षमा याचना करना (अ० अयोध्या), रावण-सनत्कुमार-संवाद (अ० उत्तर० अनुवाद में बाल०) इत्यादि।

निम्न-लिखित प्रसंगों के वर्णन में अनुवादक पर अध्यात्म रामायण का प्रभाव स्पष्ट दृष्टिगोचर होता है :—

अहिल्योद्धार (बाल.), राम द्वारा लक्ष्मण का उद्बोधन (अरण्य.) भरत-कैकेयी संवाद (अयोध्या.) इत्यादि।

श्री भोपटकर द्वारा प्रस्तुत कतिपय मौलिक कथांश—भरत द्वारा कैकेयी के सामने सिर पटकना और कौशल्या से यह कहना कि राम स्वयं इस 'कलंक' को पोंछ लेंगे (अयोध्या०), बालि के निर्धारित अवधि में न लौटने से सुग्रीव द्वारा राज्य के साथ तारा पर भी अधिकार कर लेना (किष्किन्धा) इत्यादि।

अनुवादक श्री भोपटकर की भाषा सरल आसान मराठी है, फिर भी 70 वर्षों के बाद आज वह पुरानी-सी जान पड़ती है। उनका मराठी भाषा और छन्दोरचना कला पर अधिकार है। पर वे स्वयं भावुक आर्त साधक थे, अतः यह स्वाभाविक है कि उन्होंने शब्दों की अपेक्षा भाव पर अधिक ध्यान दिया है। फिर भी यह कहना अत्युक्तिपूर्ण नहीं जान पड़ेगा कि श्री भोपटकर द्वारा प्रस्तुत 'मराठी चौपाई वृत्त रामायण' में मानस से कुछ अधिक बातों के होने पर भी, आज से 60-70 वर्ष पहले विशेषतः मध्य भारत में रहने वाले, ठीक से हिन्दी न जानने वाले मराठी भाषियों के लिए तुलसी रामायण का परिचय प्राप्त कर लेने में यह पद्यानुवाद बहुत उपयुक्त सिद्ध हुआ था।

(आ) ।। श्री रामचरित मानस ।। (मराठी)

अनुवादक : श्री प्रज्ञानानन्द सरस्वती स्वामी महाराज (संन्यास-ग्रहण-पूर्व नाम—दत्तात्रेय नारायण कर्वे (ई० 1893-1968)।

प्रथम संस्करण : प्रकाशक : शेठ लालचंद हिंमतमल कटारे ग्राम - चास (कमान) जि० पुणें (ई० 1949)।

द्वितीय (संशोधित) संस्करण : प्रकाशक—प्रसाद प्रकाशन, सदाशिव पेठ, पुणें (1961 ई०)

तृतीय संस्करण (पुनर्मुद्रण) : प्रकाशक—गुरुदेव रानडे मन्दिर, हिन्दवाड़ी, बेलगाँव (कर्नाटक) (1987 ई०)

श्री दत्तात्रेय नारायण कर्वे जब हाई स्कूल में अध्ययन कर रहे थे, तब वह गोस्वामी तुलसीदास-परम्परा के सुविख्यात राम भक्त श्री बाबा गंगादास के सम्पर्क में आए। उनके अनुग्रह और प्रेरणा से श्री कर्वे ने रामचरित मानस का सूक्ष्म अध्ययन किया, उसके सैंकड़ों पारायण किए। बाबा जी ने आशीर्वाद दिया था—'श्री गोस्वामी जी तुम्हारे मुख से बोलेंगे।' 1943 में श्री कर्वे संन्यासाश्रम में दीक्षित होकर 'प्रज्ञानानन्द सरस्वती' हो गए। उन्होंने मानस के मराठी सम-छन्द अनुवाद के अतिरिक्त उसकी मराठी टीका लगभग 7000 पृष्ठों में लिखी है। उस 'मानस-गूढ़ार्थ-चन्द्रिका' का प्रस्तावना स्वरूप केवल प्रथम खण्ड प्रकाशित हुआ है। इसके अतिरिक्त उनकी 'अभिनव रामायण' और 'वेदान्तसार अभंग रामायण',

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

'संगीत गीता' आदि रचनाएँ प्रकाश में आई हैं।

प्रज्ञानानन्द सरस्वती द्वारा अनुवादित मराठी रामचरित मानस प्रथमत: 1949 में प्रकाशित हुआ। उसमें भावाभिव्यक्ति की दृष्टि से कई त्रुटियाँ दिखाई दीं, अत: उन्होंने उसका परिश्रम पूर्वक संशोधन करके उसे प्रकाशित कराया।

उन्होंने अनुवाद के आरम्भ में तुलसी की जीवनी के अतिरिक्त 'श्रीराम-चरित्र' की मराठी आरती, मानस की 'नित्य-पठन पद्धति' भी प्रस्तुत की है। साथ ही 'आरती श्री बाबा गंगादास जी' और छोटी-सी 'शब्द-सूची' भी समाविष्ट की है। इस मराठी रामचरित मानस की निम्नलिखित विशिष्टताएँ हैं—

(1) अनुवादक ने मुख्यतया अनुवाद के लिए गीता प्रेस, गोरखपुर, द्वारा निर्धारित पाठ स्वीकार किया है; फिर भी जिन स्थानों पर उसका पाठ उन्हें सन्तोषप्रद नहीं प्रतीत हुआ, वहाँ उन्होंने अन्यान्य उपलब्ध, प्रचलित पाठों से शब्द आदि ग्रहण किए हैं। (2) प्रत्येक काण्ड के लिए अनुवादक ने संस्कृत में अपनी ओर से 'मंगलाचरण' लिखकर तदनन्तर तुलसीदास-कृत मूल मंगलाचरण दिया है—उसका मराठी अनुवाद नहीं किया। उसी प्रकार मानस में तुलसी द्वारा प्रस्तुत संस्कृत स्तुतियों को भी वैसे ही रखा है। (3) अनुवादक ने तुलसीदास द्वारा लिखित चौपाई, दोहा, सोरठा आदि छन्दोबद्ध मानस का मराठी 'सम-छन्द' अनुवाद और वह भी पंक्ति-अनुपंक्ति अनुवाद किया है। कहना न होगा कि यह 'शब्दानुवाद' नहीं है, पूर्णत: भावानुवाद है। (4) उन्होंने भावाभिव्यक्ति के हेतु कुछ नए शब्द भी गढ़े हैं—जैसे 'स्वागती' (स्वागत करने वाले), 'भाली' (छोटा माथा) इत्यादि। कतिपय स्थानों पर 'कोंकणी' शब्दों, आसान संस्कृत शब्द-रूपों ('विहाय', 'श्रुत्वा' आदि), कुछ हिन्दी शब्दों या उनके रूपान्तरों (दरोगा आदि), मध्य युगीन मराठी भक्ति-काव्य में प्रयुक्त कुछ शब्दों का भी प्रयोग किया है। उन्होंने हिन्दी कहावतों के स्थान पर समानार्थक मराठी कहावतों को प्रयुक्त किया है। (5) उन्होंने प्रत्येक काण्ड को कई अध्यायों में विभक्त किया है। कुल अध्याय हैं एक सौ तेरह।

श्री प्रज्ञानानन्द ने मराठी श्रीरामचरितमानस के प्रथम संस्करण का पुनरीक्षण करते हुए यथास्थान संशोधन किया है। फलस्वरूप अनुवाद की दृष्टि से उसकी गुणवत्ता तथा मूल्य की वृद्धि हुई है। उनकी भाषा प्रचलित मराठी है; वह प्रासादिक एवं लालित्य पूर्ण, धारावाही है। उन्होंने गोस्वामी की रचना पर 'आक्रमण' करके अपनी ओर से उसमें कुछ जोड़ा नहीं है—न ही उसमें से कुछ छोड़ा है। ऐसा कहीं नहीं जान पड़ता कि मानस की पंक्तियों को मराठी सम छन्द रूप में प्रस्तुत करने में उन्हें कोई कठिनाई अनुभव हुई है। इस दृष्टि से श्री भोपटकर-कृत 'मराठी चौपाई वृत्त रामायण' की तुलना में स्वामी प्रज्ञानानन्द सरस्वती-कृत यह अनुवाद बहुत अच्छा है।

(इ) ।। श्री सुश्लोक-मानस ।।

अनुवादक : डॉ० रामचन्द्र चिन्तामण श्रीखण्डे (1899-1961 ई०)
प्रथम संस्करण : भाग 1—बाल काण्ड (1952)
भाग 2—अयोध्या०, अरण्य०, किष्किन्धा काण्ड (1953)

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

भाग 3—सुन्दर०, लंका०, उत्तर काण्ड (1955)
(तीनों भाग एक जिल्द में उपलब्ध)

प्रकाशक : डॉ० रामचन्द्र चिन्तामण श्रीखण्डे,
'श्री तुलसी-मंजरी', बेलबाग वसाहत,
मंगलवार पेठ, कोल्हापुर (महाराष्ट्र)।

डॉ० रा० चि० श्रीखण्डे (एम.बी.बी.एस.) तत्कालीन भारतीय सेना के वैद्यकीय विभाग में काम करते थे। तब श्री जामदार-कृत तुलसी-रामायण का मराठी अनुवाद पढ़कर उससे बहुत प्रभावित हुए। फल-स्वरूप, 'मानस' का मराठी श्लोक छन्दो-बद्ध अनुवाद करने की प्रेरणा उन्हें मिली। सेना-विभाग से अवकाश ग्रहण करने पर उन्होंने कोल्हापुर में 1947 से 1951 तक की अवधि में लगभग 6700 छन्दों में यह अनुवाद कार्य पूर्ण किया। अनुवाद श्लोक-वद्ध अर्थात् विविध प्रकार के मुख्यतया संस्कृत छन्दों में है—अतः यह 'सुश्लोक-मानस' कहा जाता है। इसके अतिरिक्त डॉ० रा० चि० श्रीखण्डे ने गीत-गोविन्द, कुमार-सम्भव, मेघदूत आदि संस्कृत काव्यों का भी श्लोकबद्ध अनुवाद मराठी में प्रस्तुत किया है।

अपने छन्दोबद्ध मराठी अनुवाद में डॉ० श्रीखण्डे ने वसन्त-तिलका, इन्द्रवज्रा, उपेन्द्र वज्रा, उपजाति, स्रग्धरा, शार्दूल-विक्रीड़ित, शिखरिणी, आर्या, अनुष्टुम्, दोहा आदि 26 छन्दों का प्रयोग किया है; पर वसन्त-तिलका का प्रयोग सर्वाधिक हुआ है। उन्होंने मानस के सात सोपानों को सुविधा की दृष्टि से वर्ण्य विषय का ध्यान रखते हुए कुल 204 तरंगों में विभक्त किया है।

डॉ० श्रीखण्डे ने मूल कृति के एक-एक चौपाई, दोहा आदि छन्द का अनुवाद यथा-सम्भव एक-एक मराठी 'श्लोक' (छन्द) में करने का प्रयास किया है। यह अनुवाद मूल-अधिष्ठित भावानुवाद है; अतः मूल भाव से इधर-उधर हटकर स्वतन्त्रतापूर्वक तुलसी के भाव को परिवर्तित करते हुए उन्होने मूल-मुक्त रुपान्तर नहीं किया है। अतः कहीं-कहीं तुलसी द्वारा प्रयुक्त शब्दों के अर्थ को प्रकट करते हुए कुछ भिन्नार्थक मराठी शब्दों का प्रयोग हुआ है जिसे क्षम्य माना जा सकता है। उदाहरण के लिए 'वायस पलिअहिं अति अनुरागा' (बाल०) के अनुवाद में 'अनुराग' के स्थान पर अनुवादक ने 'आदर' शब्द प्रयुक्त किया है। पर उन्होंने 'वायस' और 'काक' दो समानार्थ शब्दों में-से केवल एक ही शब्द 'काक' लेकर पुनरुक्ति दोष को टाल दिया है। 'बल भारी' (सुन्दर०), होइहि काजु··· (सुन्दर०), सत्य कहहुँ··· (सुन्दर०) आदि के अनुवाद में बहुत शिथिलता पाई जाती है। ऐसे उदाहरण अनेक हैं। यदि अनुवाद का वे पुनरीक्षण करते, उसका मूल से मिलान करके संशोधन कर लेते, तो अच्छा होता।

अनुवादक को मराठी छन्दोरचना-कला पर पर्याप्त अधिकार प्राप्त है। अनुवाद की भाषा सरल प्रासादिक मराठी है। अनुवाद में मुख्यतया अक्षर-गण छन्द प्रयुक्त हैं। आर्या को छोड़कर कोई मात्रा-छन्द नहीं है। अतः पद-रचना में अनुवादक को अनेक स्थलों में अ-आ, इ-ई तथा उ-ऊ में लघु-गुरु क्रम के विचार से परिवर्तित करना पड़ा है, जो कुछ पाठकों को अवश्य अखरता होगा। 'आम्ही' के स्थान पर 'आम्हि' (अयोध्या० तरंग 13) ऐसे परिवर्तन अनुवादक को मज़बूरन् करने पड़े हैं।

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

कुल मिलाकर हम कह सकते हैं कि यह छन्दोबद्ध अनुवाद अच्छा है। हां, यदि अनुवादक मूल पाठ के सभी दोहों को मराठी दोहे में प्रस्तुत करता, तो अच्छा होता— उससे चौपाई-दोहा वाला एक-एक कड़वक भी मराठी अनुवाद में आ जाता।

अनुवादक ने प्रत्येक 'भाग' के प्रारम्भ में प्रस्तावना भी लिखी है; उसमें उन्होंने अनेक व्यक्तियों का ऋण स्वीकार किया है। उसने अनेकानेक प्रसंगानुकूल चित्रों से भी अपने अनुवाद को चित्ताकर्षक बनाने का सफल प्रयास किया है। 'ओवी' जैसे बहुप्रचलित तथा आख्यानात्मक रचना के लिए अत्यधिक अनुकूल छन्द-रचना की परम्परा को छोड़कर डॉ० श्रीखण्डे ने विविध-छन्दोमय अनुवाद प्रस्तुत करने का जो साहस किया है, उसके लिए वे अभिनन्दन के पात्र हैं।

(4) ॥ **मानस-विहार** ॥

अनुवादक : श्री देवीदास लक्ष्मण महाजन (1896-1967 ई०)
प्रथम संस्करण : भाग—1 बाल० अयोध्या काण्ड (1955 ई०)
भाग—2 अरण्य० से उत्तर काण्ड (1957 ई०)।
प्रकाशक : सेक्रेटरी, महाजन साहित्य प्रकाशन मण्डल, नांदेड़ (महाराष्ट्र)।

श्री देवीदास लक्ष्मण महाजन मराठी के कवि और 'कीर्तन' कर्ता थे। उन्हें बचपन से ही भक्ति-साहित्य में रुचि थी। जब वे निज़ाम रियासत के वास्तु-निर्माण-विभाग में नौकरी करते थे, तब उन्हें उक्त विभाग के (अनन्य रामोपासक और तुलसी रामायण के मर्मज्ञ) श्री लाला रघुवीर दयाल नामक ओवरसीयर से मूल रामचरितमानस का श्रवण करने का अवसर प्राप्त हुआ था।

इससे तुलसी रामायण के प्रति उन्हें बहुत आत्मीयता अनुभव हो गयी। आगे चलकर उन्होंने उसी मानस-प्रेम के कारण मानस के (श्री जामदार-कृत) मराठी गद्यानुवाद का कई बार पारायण किया। फलस्वरूप उन्हें तुलसीरामायण का मराठी पद्यानुवाद करने की प्रेरणा हुई—उन्होंने कुछ अंशों का ओवी छन्द में अनुवाद किया भी। पर श्री महाजन को वह अनुवाद इसलिए अखरने लगा कि वह एक-एक अर्ध-चौपाई के लिए एक-एक 'ओवी' छन्द में नहीं हो सका था। अतः उन्होंने पुनश्चः अनुवाद का श्रीगणेश किया और उसे तीन-चार वर्षों में पूर्ण किया।

श्री दे. ल. महाजन ने 'काण्ड' के स्थान पर 'सोपान' शब्द का प्रयोग किया है और प्रत्येक 'सोपान' को अनेकानेक 'विश्रामों' में विभक्त किया है। 'मानस-विहार' नामक 'ओवी' छन्दों में प्रस्तुत इस मराठी पद्यानुवाद में इस प्रकार के कुल 68 विश्राम हैं। इन 68 विश्रामों के अतिरिक्त, श्री महाजन ने 4 विश्रामों में गोस्वामी तुलसीदास के जीवन, कार्य आदि का परिचय छन्दोबद्ध करके उसे 'मानस-विहार' के अन्त में समाविष्ट किया है। प्रत्येक विश्राम के अन्त में अनुवादक ने कुछ छन्दों में अपनी ओर से श्रोताओं से निवेदन भी किया है। उसी प्रकार अनेक स्थलों पर उसने श्रोताओं के जिज्ञासा-समाधान के लिए या स्पष्टीकरणार्थ कुछ छन्द अपनी ओर से जोड़े हैं। ऐसे समस्त छन्द (— प्रक्षेप!) कोष्ठकों में दिये गए हैं।

श्री दे. ल. महाजन ने मानस के प्रत्येक सोपान के प्रारम्भिक मंगलाचरणात्मक

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

संस्कृत छन्द उद्धृत करते हुए उनका ओवी छन्द में मराठी अनुवाद दिया है। अन्यत्र दी हुई स्तुतियों का मात्र मराठी अनुवाद दिया है। उन्होंने सर्वत्र ओवी छन्द का ही प्रयोग किया है। एक-एक अर्धाली, अर्ध दोहा, चार पादों वाले छन्द का एक-एक पाद—एक-एक ओवी में अनूदित किया गया है।

ओवी छन्द में अक्षर-संख्या या मात्रा-संख्या सम्बन्धी कोई विशिष्ट बन्धन नहीं है। इस विशेषता के कारण श्री दे. ल. महाजन को शब्द-रूप में मात्राओं की दृष्टि से 'तोड़-मरोड़' करनी नहीं पड़ी, जैसे डॉ. रा. चि. श्रीखण्डे के सुश्लोक-मानस में पाई जाती है। श्री महाजन की भाषा प्रासादिक, परिमार्जित मराठी है। वे स्वयं जाने-माने कवि थे, अतः उनकी भाषा में एक प्रकार की स्वाभाविक सुन्दरता है। फिर उन्होंने अपना प्रथम अनुवाद त्याज्य समझकर पुनश्च अनुवाद किया, इससे उसकी गुणवत्ता निश्चय ही वृद्धि को प्राप्त हुई है। आचार्य विनोवा भावे, भक्त कवि दास गणु, म. म. दत्तो वामन पोतदार आदि ने इस अनुवाद की सराहना की है। निश्चय ही मानस के मराठी पद्यानुवादों में यह 'मानस-विहार' बढ़िया है।

।। मराठी तुलसीरामायण ।।

(अर्थात् गोस्वामी तुलसीदास के रामचरित मानस का पद्यानुवाद)
अनुवादिका : श्रीमती सुलोचना खाण्डेकर (1908-1989)
प्रथम संस्करण—1980।
प्रकाशक : कान्टिनेन्टल प्रकाशन, पुणें-411030।

श्रीमती सुलोचना खाण्डेकर का विवाह-पूर्व जीवन में इन्दौर में हिन्दी-भाषियों के बीच व्यतीत हुआ। 1925 में विवाह हो जाने के पश्चात् वे पुणें आईं। पूना के 'मॉडर्न हाई स्कूल फॉर गर्ल्स' की प्रधानाध्यापिका के नाते उन्होंने 20 साल से अधिक काम किया।

इन्दौर में रहते, समय बचपन में वे तुलसी रामायण से—भले ही उसका भाव ठीक से समझ में नहीं आता था—बहुत प्रभावित हो गईं। उसकी लयवद्धता, पद-लालित्य, भाषा-माधुर्य से वे मंत्र-मुग्ध हो गयी थीं। ससुराल में अपने श्वसुर के रामायण-प्रेम से वे वाल्मीकीय रामायण का अनुशीलन करती रहीं। अवकाश-ग्रहण करने के बाद जब वे कुछ साल दिल्ली में रहीं, तो फिर रामचरित मानस उनके मानस पर छा गया और उन्होंने मानस का पद्यानुवाद करना तय किया। उस ग्रन्थ की गुण-सम्पदा का परिचय कराकर मराठी-भाषियों के उसका रसास्वादन करने में सहायता करना—अनुवाद करना उनका उद्देश्य बन गया। उसकी प्रेरणा प्रधानतः साहित्यिक रही।

श्रीमती सुलोचना खाण्डेकर ने गीता प्रेस, गोरखपुर, द्वारा स्वीकृत पाठ मराठी अनुवाद के लिए चुना है। उन्होंने दिल्ली में 1972 में बालकाण्ड का अनुवाद किया और तदनन्तर वे अपने सुपुत्र के साथ लन्दन गईं। वहां उन्होंने 1973 मार्च तक शेष अनुवाद कार्य पूर्ण किया। अनुवाद के सम्बन्ध में वे बहुत सावधान रहीं। उन्होंने मानस के विद्वान अधिकारियों द्वारा उसका मूल पाठ से मिलान और पुनरीक्षण करवाया। फिर यथोचित संशोधन करके उसे प्रकाशित कराया है।

श्रीमती खाण्डेकर ने मानस की चौपाइयों, दोहों, सोरठों का अनुवाद एक-एक इकाई के

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

लिए एक-एक 'ओवी' में किया है। अतः मूल मानस के पाठ में जो छन्दानुक्रम है, उसमें उन्हें कोई परिवर्तन नहीं करना पड़ा है। मानस के अन्तर्गत देवों-ऋषियों द्वारा की हुई जो स्तुतियाँ हैं, उन्हें 'अभंग' छन्द में अनूदित किया गया है। साथ ही संस्कृत-हिन्दी मिश्रित छन्द की संस्कृत भाषित शैली को अपरिवर्तित रखते हुए यथावश्यक मराठी का प्रयोग किया गया है। श्रीमती खाण्डेकर द्वारा प्रयुक्त ओवी छन्द 'एकनाथी ओवी'-स्वरूप जान पड़ता है। अनुवाद की भाषा प्रासादिक आसान साहित्यिक मराठी है, धारावाही है—अतः उसे समझने में जन-साधारण को भी कोई कठिनाई अनुभव नहीं होती। हाँ, तुलसीदास की भाषा में विशिष्ट मात्रा-संख्या वाले चौपाई जैसे छन्द में जो लय-बद्धता है, संस्कृत से संस्कारित उनकी अवधी में जो पद-लालित्य है, उसे मराठी अनुवाद अधिक मात्रा में पाने की आशा करना व्यर्थ है। अनुवादिका ने 'सठ' (बाल०) को 'दुष्ट' बताया—यहाँ 'मूर्ख' जैसा अर्थ अधिक उचित है। लेकिन ऐसे उदाहरण कम पाए जाते हैं।

अनुवादिका ने अपने ओवी छन्दोबद्ध तुलसी रामायण में सविस्तार विषय सूची देते हुए तुलसीदास के जीवन तथा कार्य और रामचरित मानस के स्वरूप और महत्त्व पर अनुशीलनात्मक निबन्ध 'प्रस्तावना' के रूप में प्रस्तुत किया है। अन्त में उसने स्व-रचित (तुलसीदास की) आरती भी समाविष्ट की है।

इन प्रकाशित अनुवादों के अतिरिक्त तीन मराठी अनुवाद प्रकाशन की प्रतीक्षा-पंक्ति में खड़े हैं। श्री व्यंकटेश वकील ने तुलसी-रामायण का कथा-सार क्राउन आकार के 293 पृष्ठों की 'श्री तुलसी-रामायण' नामक अपनी पुस्तक में प्रकाशित कर दिया है (सं. 1956, 1966 और 1971)। प्रो. काशीनाथ शंकर केलकर ने अपनी पुस्तक 'कथा श्री रामचरित मानसाची' (1975) में भी मानस की कथा संक्षिप्त रूप में दी है। लेकिन इन दो तथा ऐसी ही दो-एक पुस्तिकाओं में मानस की जो कथा प्रस्तुत की गई है, उसे किसी भी स्थिति में अनुवाद नहीं कहा जा सकता।

वाल्मीकीय रामायण की तरह गोस्वामी तुलसीदास-कृत श्रीरामचरितमानस भी कालजयी कृति है, प्रदेश-देश-भाषा आदि की संकुचित सीमाओं को तोड़कर विश्व-विजयी बनी हुई रचना है। अतः यह स्वाभाविक है कि उसका स्वागत-सम्मान मराठी भाषी समाज में होता रहा है। उसके उपर्युक्त मराठी अवतारों का परिदर्शन करते हुए यह कहा जा सकता है कि उनसे मराठी अनुवादित साहित्य समृद्ध हो गया है।

□

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

मानस के मलयालम अनुवाद

डॉ. एस. तंकमणी अम्मा

भारतीय और विदेशी भाषाओं की उत्कृष्ट साहित्यिक कृतियों को अपनी भाषा–मलयालम में उपलब्ध कराने की ओर केरलवासी सदैव ही सजग रहे हैं। हिन्दी के इस अभूतपूर्व प्रचार प्रसार ने मलयालम भाषियों को हिन्दी में साहित्य सृजन की ओर उन्मुख किया। उनका ध्यान हिन्दी में मौलिक लेखन की ओर गया और अनुवाद के द्वारा साहित्यिक आदान-प्रदान की ओर भी।

गोस्वामी तुलसीदास की अक्षय कीर्ति का आधार तथा हिन्दी की अमर काव्यकृति रामचरितमानस के काव्यसौष्ठव एवं अनूठी भक्तिभावना ने केरल के हिन्दी प्रेमियों को इस भाँति आकर्षित कर लिया कि उनकी दृष्टि हिन्दी की इस अपूर्व निधि को मलयालम भाषियों के लिए सुलभ बनाने की ओर मुड़ गई और मलयालम भाषा में रामचरितमानस के अनुवाद के प्रयास शुरू हुए। सुखद आश्चर्य की ही बात है कि हिन्दी की इस अनूठी काव्यकृति के आठ अनुवाद मलयालम में निकले हैं। वाल्मीकि रामायणं, एषुत्तच्छन रामायणं, कम्ब रामायणं, कृत्तिवास रामायणं आदि के समान तुलसीदास रामायणं केरल में काफी लोकप्रिय है। केरल में यत्र-तत्र ऐसी भक्त-मण्डलियाँ भी हैं जहाँ नियमित रूप से रामचरितमानस का पाठ और व्याख्याएँ चलती हैं।

मलयालम में मानस के सर्वप्रथम अनुवाद का श्रेय श्री पेट्टयिल् रामन पिल्लै आशान को है। आपने 'तुलसीदास रामायणं—बालकाण्ड' शीर्षक से सन 1928 में बालकाण्ड का अनुवाद प्रकाशित किया। एषुत्तच्छन ने जिस किलिप्पाट्टु शैली (शुकगीत शैली) में केरलीय जनमानस में चिरप्रतिष्ठित 'अध्यात्म रामायणं' की रचना की थी, उसी लोकप्रिय शैली में रामन पिल्लै आशान ने मानस का अनुवाद प्रस्तुत किया था। यही कारण है कि आशान का काव्यानुवाद विद्वज्जनों के बीच काफी चर्चित रहा। यद्यपि मानस का यह अनुवाद अधूरा है तथापि मानस जैसी उत्कृष्ट काव्यकृति के सर्वप्रथम अनुवाद होने के कारण उसकी अपनी महत्ता है।

गद्य में मानस को अनूदित करने के कई प्रयास मलयालम में हुए। श्री कावुंगल नीलकंठ पिल्लै ने सन 1930 में मानस का एक गद्यानुवाद प्रकाशित किया।

प्रोफ़ेसर एन. चन्द्रशेखरन नायर ने भी मानस का गद्यानुवाद प्रस्तुत करने का सराहनीय प्रयास किया है। श्री नायर ने 'मलयाली' दैनिक के रविवारीय अंकों में सन 1954 से 1957 तक मानस का गद्यानुवाद खंडों में प्रकाशित किया। 'देवस्वं' पत्रिका में भी इसका

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

अनुवाद निकला था। ग्रंथ रूप में इसका प्रकाशन नहीं हुआ है। तुलसी की काव्यकृति को सरल एवं सुबोध मलयालम गद्य में प्रस्तुत करने का प्रयास ही इस अनुवाद में हुआ है। सन 1956 में विद्वान ए. वासुमेनन ने मानस का गद्यानुवाद प्रकाशित किया। श्री मेनन ने मानस का स्वच्छन्दानुवाद किया है। यही कारण है कि कहीं-कहीं मानस के कतिपय अंशों को अनुवादक ने छोड़ भी दिया है।

मानस का और एक गद्यानुवाद श्रीमती के. पी. पार्वती अम्माल (श्रीमती शान्ता देवी) ने प्रस्तुत किया है। यह कृति प्रकाशित तो नहीं है, पाण्डुलिपि के रूप में यह सुरक्षित है। 'श्रीरामचरितमानसं' शीर्षक से श्रीमती पार्वती अम्माल ने संपूर्ण मानस का सुन्दर अनुवाद गद्य में किया है। कई बार संशोधन करके ही उसकी आखिरी पाण्डुलिपि तैयार हुई है और यही कारण है कि उनका अनुवाद काफी प्रौढ़ एवं प्रतिष्ठित है। मानस का यह अकेला अनुवाद है जो किसी हिन्दी सेवी केरलीय नारी ने प्रस्तुत किया है। उसकी एक विशेषता और यह भी है कि वे आजीवन राम की परम भक्त भी रही हैं तथा स्वयं अपने को राम की बहन शान्ता समझती भी थीं। तुलसी की ही भाँति रामभक्ति के परिवेश में रहकर देवी जी ने यह अनुवाद कार्य संपन्न किया है कि अनुवाद भी भक्तिपूरित निकला है।

श्री टी. के रामन मेनन ने सन 1967 में रामचरितमानस का व्याख्यासहित अनुवाद प्रकाशित किया। हिन्दी सेवी विद्वान श्री टी. के रामन मेनन के अनुवाद की यही विशेषता है कि उन्होंने मूल काव्य की पंक्तियों को मलयालम लिपि में देकर, तदुपरान्त शब्दार्थ व टीका सहित अनुवाद प्रस्तुत किया है। स्पष्ट है, यह मानस का मात्र अनुवाद न होकर उसकी व्याख्या भी है। गीता प्रेस वालों के टीका सहित मानस का प्रभाव अनुवादक पर स्पष्टतया दृष्टिगोचर होता है। मलयालम भाषा में तुलसी के मानस की सही पहचान प्राप्त करने के लिए मेनन का यह व्याख्यासहित अनुवाद बड़ा सहायक सिद्ध हुआ है।

मानस के अनुवादों में श्री टी. के. भट्टतिरी के पद्यानुवाद का उल्लेखनीय स्थान है। सन 1968 में मातृभूमि प्रिंटिंग एण्ड पब्लिशिंग कम्पनी (कालीकट) ने इसका प्रकाशन किया है। 'रामचरितमानसं' शीर्षक से संपूर्ण मानस का काव्यानुवाद प्रस्तुत करने का सराहनीय प्रयास ही भट्टतिरी जी का रहा है।

आज तक उपलब्ध मानस के मलयालम अनुवादों में सर्वश्रेष्ठ एवं बहुचर्चित है महाकवि वेण्णिक्कुलम गोपाल कुरुप का 'तुलसीदासरामायणं' शीर्षक काव्यानुवाद। श्री वेण्णिक्कुलम गोपाल कुरुप (1902-1980) स्वयं उच्चकोटि के रससिद्ध कवि थे। उनके हाथों मानस का जो काव्यानुवाद हुआ है, वह वस्तुतः काव्यसौष्ठवयुक्त, सर्वांग सुन्दर एवं अनूठा निकला है। सन 1968 में प्रकाशित इस अनुवाद पर वे पुरस्कृत भी हुए हैं।

मानस के अनुवाद के प्रेरणास्रोत की ओर संकेत देते हुए स्वयं अनुवादक ने लिखा है कि इसकी रचना प्रेरणा उन्हें 'यंग इंडिया' में निकले महात्मा गाँधी के एक लेख से मिली थी जिसमें उन्होंने तुलसीदास रामायण की मर्मस्पर्शी चर्चा की है। उससे प्रेरणा पाकर कई बार उन्होंने मनोयोगपूर्वक मानस का पारायण किया तथा मानस सम्बन्धी सन्दर्भ ग्रंथों का अध्ययन व अनुशीलन भी किया। मलयालम भाषा के महाकवि के रूप में प्रतिष्ठा प्राप्त वेण्णिक्कुलम मानस के काव्यानुवाद की ओर प्रवृत्त हुए। पहले आपने 'बालकाण्ड' का प्रकाशन किया, सहृदयों ने उसका हार्दिक स्वागत भी किया। कई वर्षों के सतत प्रयत्न के फलस्वरूप

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

वे संपूर्ण मानस का काव्यानुवाद तैयार कर सके और 1968 में वह प्रकाशित हुआ।

मानस के अनुवाद में अनुवादक की जो अटल आस्था एवं निष्ठा रही, उसका उल्लेख आपने यों किया है—'भगवान की मूर्ति की निरन्तर उपासना में लीन भक्त की भाँति मैं भी निरन्तर रामचरितमानस की उपासना में ही लीन रहा था।'

मानस के प्रथम अनुवादक रामन पिल्लै आशान ने जिस शुकगीत शैली का प्रयोग किया था, उसी शैली को वेण्णिक्कुलम ने भी स्वीकार किया है। हर एक सोपान के लिए आपने भिन्न-भिन्न द्रविड़ छन्द का प्रयोग किया है। इसके पहले टी. के. भट्टतिरी जी ने 16 मात्राओं वाली चौपाई शैली में पूरे मानस का अनुवाद प्रस्तुत किया था। छन्द वैविध्य के कारण वेण्णिक्कुलम का अनुवाद विशेष सजीव बन पड़ा है।

मानस के अनुवादों का सम्यक अनुशीलन करने पर स्पष्ट ज्ञात होगा कि सारे के सारे गद्यानुवाद शुद्ध, सरल और परिनिष्ठित मलयालम गद्य में प्रस्तुत हुए हैं। गद्यानुवादों में अनुवादकों की विद्वत्ता के साथ-साथ मूल ग्रंथ के प्रति पूरी ईमानदारी भी प्रकट होती है। मानस के प्रसिद्ध पुष्पवाटिका प्रसंग का श्रीमती के. पी. पार्वती अम्माल द्वारा प्रस्तुत अनुवाद उदाहरण स्वरूप पेश किया जा सकता है—

कंकण किंकिणि नूपुर ध्वनिकले केट्टु, रामन हृदयत्तिल् आलोचनयोटु कूटि लक्ष्मण नोटु परयुन्नु —'मदनन विश्वविजयत्तिनायिक्कोण्टु मनसा ओरुङ्ङि दुंदुभि मुषक्ककुकयाणु।' इप्रकारं परञ्ञु कोण्टु प्रभु आ भागत्तेक्कु ओन्नु तिरिञ्ञु नोक्कि। सीतामुखमाकुन्न चन्द्रनु प्रभु नयनङ्ङल् चकोरङ्ङलायि भविच्चु।

यह तो सर्वमान्य है कि पद्यानुवाद गद्यानुवाद से कहीं अधिक कष्ट साध्य है। यही कारण है कि काव्यानुवाद को अनुवादक की कसौटी माना जाता है। मानस जैसी कृति का काव्यानुवाद वस्तुतः अनुवादक के सम्मुख विभिन्न समस्याएँ पेश करता है। कवि की संवाद-योजना, दार्शनिक विचार, छन्दयोजना आदि ऐसे तत्त्व हैं जो अनुवादक से प्रखर प्रतिभा की अपेक्षा करते हैं। मानस के मलयालम अनुवादकों ने इस ओर उचित ध्यान दिया है—

मानस के पुष्पवाटिका प्रसंग का विभिन्न अनुवादकों द्वारा प्रस्तुत अनुवाद प्रमाण-स्वरूप पेश है। पहले मानस के प्रथम काव्यानुवादक श्री राम पिल्लै आशान का अनुवाद लें—

सीताकंकणङ्ङलुं किंकिणिलुं पोन्नुं
चेतोहरङ्ङलां चिलंपुकलुं किलु—
किलेन्नु किलुङ्ङुन्न शब्दत्ते केट्टु मन—
स्सलिञ्ञु रामचन्द्रन लक्ष्मणं कटाक्षिच्चु—
रामदेवण्टे विश्वमश्यमां जयभेरि
केममाचिता मुषङ्ङ्ङुन्नु चोन्नान्—।

इस अंश का श्री टी. के भट्टतिरी ने इस प्रकार अनुवाद किया है—

कंकण नूपुर रणितं रामन
केट्टु चिन्तचेय्तनुजनोटोती—
योलिचितु केल् नीयलर शरनुलकं
वेल्लान पटहमटिप्पतु पोले।

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

इस अंश का महाकवि वेण्णिक्कुलम का अनुवाद निम्नलिखित है—

कैयणि वलकलुँ काञ्चनत्तलकलुं
कौतुकमेट्टीटुन्न कम्रकिंकिणिकलुं
कर्णपीयूषमायि क्किलुङ्ङु नादं केट्टु—
पुंडरीकाक्षन चोन्नान् लक्ष्मणन तन्नोटेवं
'मारनां भगवाण्टे विश्वत्तेज्जयिक्कुन्न—
भेरितन् कलकलकिन्निता मुषुङ्ङुन्नु।

उपर्युक्त अनुवादों का विश्लेषण करने पर पता चलेगा कि तीनों अनुवादों में मूल कविता का भावार्थ पूरा का पूरा उतर आया है, किन्तु श्री भट्टतिरी के अनुवाद में मूल कविता का नाद सौन्दर्य व ध्वन्यर्थव्यंजना पूरी तरह विद्यमान नहीं हो पाई है। उनके सामने छन्द की सीमा रही थी, वे तो समस्त काव्य का अनुवाद सोलह मात्राओं वाले छन्द में करने के लिए कटिबद्ध थे। इस छन्दमोह के कारण कहीं-कहीं उन्हें कतिपय काव्यांशों को छोड़ना पड़ा और कहीं-कहीं अपनी ओर से कुछ जोड़ना भी पड़ा है। कहीं-कहीं उनके अनुवाद में कतिपय त्रुटियाँ भी आ गई हैं। उदाहरणार्थ 'सियमुख ससि भए नयनचकोरा' का अनुवाद करते हुए उन्होंने लिखा है—

निर्निमेषनाम निन्नु चातकं
पनिमतिये दर्शिच्चतुपोले ।

'चकोर' के स्थान पर अनुवादक के 'चातक' शब्द का गलत प्रयोग किया है।

रामन पिल्लै आशान और महाकवि वेण्णिक्कुलम के काव्यानुवाद मूलकृति के भावार्थ को सुरक्षित रखने में सक्षम हैं, साथ ही साथ नाद सौंदर्य तथा अर्थ सौष्ठव को उतारने में भी रामन पिल्लै आशान ने केवल बालकाण्ड का ही अनुवाद किया है। वेण्णिक्कुलम ने पूरे काव्य का अनुवाद किया है और अन्य काव्यानुवादों की तुलना में यही श्रेष्ठतम है। मूलकृति के मर्म को समझकर उसका अनुवाद करने में महाकवि को आशातीत सफलता मिली है। 'बहुरि वदन-विधु आंचल टाँकी' वाली पंक्तियों के अनुवाद का सौष्ठव अनूठा बन पड़ा है—

चेलेषुं तन्मुखचन्द्रने पिन्नेय—
च्चेलाञ्चलत्ताल् मरच्चकोण्टोमलाल्,
मञ्जुल दृष्टि चरिच्चु रामोन्मुखं
खञ्जनपक्षियेप्पोले नोक्कीटवे,
रञ्जितमन्दाक्षमाकुं मिषिकलाल्
तन्जीवितेशनाणेन्नु चोल्लीटिनाल्।

मूलकृति के अन्त्यनुप्रास के स्थान पर महाकवि वेण्णिक्कुलम ने मलयालम कविता में प्रचलित 'द्वितीयाक्षरप्रास' का प्रयोग किया है। पूरे काव्य में 'द्वितीयाक्षरप्रास' के प्रयोग के कारण एक अनोखी छटा आ गई है। वस्तुतः कथ्य और शिल्प की दृष्टि से वेण्णिक्कुलम का अनुवाद उत्कृष्ट बन पड़ा है।

समग्रतः विचार करने पर ज्ञात होगा कि मानस के मलयालम अनुवादों ने हिन्दी की इस श्रेष्ठतम काव्यकृति को मलयालम भाषाभाषियों के लिए सुगम और सुलभ बना देने की दिशा में एक महत्त्वपूर्ण और सराहनीय कार्य किया है। □

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

मैथिली श्री रामचरितमानस

डॉ. नयन बाला शर्मा

'मैथिली श्री रामचरित मानस' में अनुवादक श्री रामलोचन शरण जी ने अपना कोई परिचय नहीं दिया है। यह कृति पुस्तक भंडार, पटना से वि. सं. 2025 को प्रकाशित हुई। 'तुलसी निर्देशिका' में इसका समय 1890 से 1971 तक माना गया है। इनका जन्म बिहार में प्रथापुर जिला मुजफ्फरपुर में हुआ कहा जाता है।

श्री रामलोचन शरण जी श्री राम-सीता विशेषकर सीता जी के भक्त थे जिन्हें वह जानकी जी अथवा मैथिली जी की संज्ञा देते हैं। वह गोस्वामी तुलसीदास से पर्याप्त प्रभावित थे। उन्होंने मानस के अतिरिक्त अन्य बारह ग्रंथों अर्थात् कवितावली, गीतावली, बरवै रामायण, दोनों मंगलकाव्य, कृष्ण-गीतावली, वैराग्य संदीपनी, रामाज्ञाप्रश्न, रामलला-नहछू, हनुमान-बाहुक का भी मैथिली भाषा में अनुवाद किया। उन्होंने इन ग्रंथों के नाम के आगे मैथिली श्री शब्द को जोड़ दिया है, जैसे, मैथिली श्री विनयपत्रिका, मैथिली श्री गीतावली आदि। 'मैथिली श्रीरामचरितमानस' गोस्वामी तुलसीदासकृत श्रीरामचरितमानस का यथा सम्भव पूर्णभाव रक्षित समश्लोकी मैथिली रूपान्तर है।

यह मानस का पूर्णानुवाद है। काण्डों के नाम, बालकाण्ड से उत्तरकाण्ड तक की दोहे की संख्या अर्थात बालकाण्ड के 361, अयोध्या काण्ड के 326, अरण्यकाण्ड के 46, किष्किन्धा काण्ड के 30, सुन्दर काण्ड के 60, लंका काण्ड के 120 और उत्तर काण्ड के 130 दोहे, नवाह्न तथा मासपारायण के विश्रामस्थल अंत में रामायण जी की आरती आदि मानस के आधार पर ही है। यद्यपि यह मैथिली में है किन्तु प्रत्येक काण्ड के प्रारम्भ में संस्कृत के श्लोक मंगलाचरण के रूप में दिए गए हैं, जैसे बालकाण्ड के 'वर्णानामर्थसंघानां रसानां छन्दसामपि' आदि श्लोक—अयोध्या काण्ड के 'यस्यांके च विभाति भूधर सुता देवापगामस्तके' आदि 3 श्लोक और इसी प्रकार अन्य काण्डों में पूरे के पूरे श्लोक ज्यों के त्यों दिए गए हैं।

अनुवादक ने प्रत्येक सोपान की इति संस्कृत में निर्दिष्ट की है। जैसे—'इति श्रीमद्रामचरित मानसस्य श्री रामलोचनशरणविरचिते मैथिलीरूपान्तरे सकलकलिकलुष-विध्वंसनेसुख-सम्पादनो नाम प्रथमः सोपानः समाप्तः।' इस प्रकार प्रत्येक काण्ड का समापन अपने आप में एक साक्ष्य सिद्ध हो जाता है। इससे मूल ग्रंथ, अनुवादक, अनुवाद की भाषा तथा सोपान सभी के नाम का उल्लेख हो गया है। अनुवादक की मौलिकता

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

इससे झलकती है कि उन्होंने प्रत्येक सोपान का नामकरण किया है जैसे—

बालकाण्ड के लिए—सुख सम्पादनो नाम प्रथम: सोपान:

अयोध्याकाण्ड के लिए—प्रेम वैराग्य सम्पादनो नाम द्वितीय: सोपान:

अरण्यकाण्ड के लिए—विमल वैराग्य सम्पादनो नाम तृतीय: सोपान:

किष्किन्धाकाण्ड के लिए— विशुद्ध संतोष सम्पादनो नाम चतुर्थ: सोपान:

सुंदरकाण्ड के लिए—ज्ञान सम्पादनो नाम पंचम: सोपान:

लंकाकाण्ड के लिए—विमल विज्ञान सम्पादनो नाम षष्ठ: सोपान:

उत्तरकाण्ड के लिए—अविरल हरिभक्ति सम्पादनो नाम सप्तम: सोपान:

मानस की भाँति प्रस्तुत अनुवाद पद्यात्मक है, जिसमें दोहा-चौपाई-सोरठा आदि छंदों का प्रयोग किया गया है।

श्री रामलोचन शरण जी की प्रेरणा श्री मैथिली जी के प्रति भक्ति-भावना है जो ग्रंथ की भूमिका से स्पष्ट लक्षित होती है। वह लिखते हैं, 'वि. सं. 2014 की बात है। श्री अवध में – श्री सरयू जी के पुलिन में—श्री चन्द्रकला भवन के एक कक्ष में—शरत पूनों की रात्रि में – ऊषा काल के आरम्भ में—मैं महारास दर्शन कर लौट आया हूँ। बैठा हूँ, श्री सरयू जी के कलकल शब्द सुन रहा हूँ। एक ब एक ऐसा लगा कि कोई ललना मुझे कह रही है—श्री मैथिली जी को अपनी वाणी में रामायण सुनाइए।'

मैथिली जी को मैथिली भाषा में रामायण समर्पित करने हेतु पटना में आपने इसका शुभारंभ किया। उन्हें श्री किशोरी जानकी जी की कृपा का क्षण-क्षण अनुभव हुआ। लगभग एक वर्ष में ग्रंथ समाप्ति पर था किन्तु हृदय शूल से पीड़ित हो गए, फिर भी उत्तर काण्ड का अंतिम अंश पूर्ण कर दिया। इतने कम समय में रचना की पूर्णता देख अनुवादक स्वयं भी विस्मित हुआ। उनका कथन है—'आध्यात्मिक ग्रंथ श्री रामचरितमानस का अनुमानत: चौदह-पन्द्रह सहस्त्र पंक्तियों का यथासंभव पूर्णभाव रक्षित मैथिली रूप? कैसे संपन्न हुआ? अवश्य ही मुझ पर श्री किशोरी जी का वरद-हस्त है।'

भाषा एवं भाव की दृष्टि से अनुवाद की विशेषता इस बात से लक्षित होती है कि मैथिली के कई पंडितों, संत महात्माओं विशेषकर जनकपुर के करपात्री जी, श्री बड़े मौनीबाबा, चित्रकूट के श्री रामचंद्रदास, अवध के पंडित श्री श्रीकान्तशरण तथा श्री रामविलास शरण, मिथिला के श्री मोपलता जी एवं पाटलिपुत्र के पं० श्री रमाकान्त दास जी आदि ने समय-समय पर इसकी पर्याप्त प्रशंसा की है।

लगन और कठोर परिश्रम के साथ-साथ मित्रों का सहयोग यहाँ तक की मैथिली भाषा की छपाई के लिए दीर्घ स्वरों के लघु उच्चारण के लिए प्रेस के उपयोगी काँटे बनवाए गए और इस प्रकार वि. सं. 2014 में आरम्भ किया गया। अनुवाद जानकी नवमी वि. सं. 2025 में पहली बार प्रकाशित हुआ।

यह देखने में 'मानस' जैसी ही हैं। संस्कृत के श्लोक वही है। बस अवधी के स्थान पर मैथिली का प्रयोग है। तुलसी की रामकथा उसका काव्य वैभव उसी रूप में विद्यमान है। विनीत अनुवादक ने अपनी प्रतिभा कौशल से चमत्कृत करने का किंचित भी प्रयास नहीं किया है, फिर भी यह केवल शब्दानुवाद नही है। हाँ, अनुवाद करते समय कही भाव-

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

साम्य के कारण पंक्ति में अथवा अंत्याक्षर में उलटफेर हो गया है— जैसे 'जो सुमिरत सिधि होय, गननायक करिबर बदन' में। अन्यथा पंक्ति को तोड़-मरोड़ कर लिखने की अपेक्षा उसे यथावत रूप में प्रस्तुत करने की चेष्टा की गई है। कहीं-कहीं पर्यायवाची शब्दों का प्रयोग किया गया है तो कहीं पद के क्रम मे परिवर्तन कर दिया गया है।

अनुवाद के कुछ उदाहरण

मूल सोरठा

जो सुमिरति सिधि होइ, गन नायक करिवर बदन।
करउ अनुग्रह सोइ, बुद्धि रासि सुभ गुन सदन॥

मैथिली सोरठा

सिधि हो सुमरत जइह गन नायक करिबर बदन।
करथु अनुग्रह सइह बुद्धि रासि सुभ गुन सदन॥

मूल दोहा

बंदउ संत समान चित हित अनहित नहिं कोउ।
अंजलि गत सुभ सुमन जिमि सम सुगंध कर दोउ॥

मैथिली अनुवाद

बंदी संत समान चित, क्यों हित अहित न लैछ।
अंजलि गत सुभ सुमन सम, दुहु कर सुरभि करैछ॥

मूल दोहा

करत बतकहि अनुज सन मन सिय रूप लुभान।
मुख सरोज मकरंद छवि करइ मधुप इव पान॥

मैथिली अनुवाद

करथि बतकही अनुज सौं, मन लुबधल सिय रूप।
मुख सरोज मकरंद छवि पीवथि बनल मधूप॥

मूल चौपाई

साधु चरित सुभ चरित कपासू। निरस विसद गुनमय फल जासू॥

मैथिली चौपाई

साधु चरित सुभ तूर समाने। जसु फल निरस त्रिसद गुन माने॥

मैथिली चौपाई

संभु प्रसाद सुमति गइल कवि। रामचरितमानस कवि तुलसी॥

मूल चौपाई

संभु प्रसाद सुमति हिय हुलसी। रामचरित मानस कवि तुलसी॥

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

अनुवाद में मिथिला की लोकोक्तियों का भी सुन्दर समावेश दिखाई देता है—

मूल चौपाई

नदी उमगि अंबुधि कहँ धाई । संगम करहि तलाब तलाई ।।

मैथिली चौपाई

नदी उमकि अंबुधि दिसि धायल । पोखर पोखरिक कोर समायल ।

मिथिला की लोकोक्ति है—राजा सिबँ सिंघ आर सब छोकरा । पोखर रजोखरि आर सब पोखरा ।। तुलसी की पुष्प वाटिका-प्रसंग की प्रसिद्ध पंक्तियों का अनुवाद देखिए—

कंकन किंकिनि नूपुर धुनि सुनि, कहथि लखन सौं राम हृदय गुनि ।
मानु मदन दुंदभी बजेलक वछैलक । बिस्व बिजय करवे चितधैलक ।
लखल येहन कहि घुरि तहि ओरे । सिय मुख ससि महल नय चकोरे ।
भेल बिलोचन चारू अचंचल । मानु सकुचि निमि तजल दृगचंल ।।

पार्वती की सीता द्वारा आराधना का अनुवाद भी देखिए—

जय जय गिरिवर राज किसोरी । जय महेस मुख चंद चकोरी ।।
जय गज बदन षड़ानन माता । जगत जननि दामिनी दुति गाता ।।
नहि तव आदि अंत अवसाने । अमित प्रभाव बेद नहि जाने ।।
भव भव विभवपराभव कारिनि । बिस्व बिमोहिनी स्वबस बिहारिनि ।।

इसके बाद का छंद है—

मनु जाहि राचेउ मिलिहि सो बरु सहज सुंदर साँवरो ।
करुना निधान सुजान सीलु सनेहु जानत रावरो ।।
एहि भाँति गौरी असीस सुनि सिय सहित हियँ हरषीं अली ।
तुलसी भवानिहि पूजि पुनि पुनि मुदित मन मंदिर चली ।।

इसका अनुवाद निम्नलिखित है :—

मन रतन जनिमे हइला से सुन्दर सहज स्यामल पती ।
करुना निधान सुजान बुझ तव सील ओ नेहक गती ।
यहि भाँति गौरि असीस सुनि सिय सहित सखि हरखित भइली ।
तुलसी भवानिहिं पुजि पुनि पुनि मुदित मन मंदिर चइली ।

सोरठा—जानि गौरि अनुकूल, सिय हिय हरष न ही अय कहि ।
मंजुल मंगल भूल, फड़कय लागल वाम अंग ।।

तुलसी के 'वाम अंग फरकन लगे' में माधुर्य, मार्दव और शुभ शकुन से हृदय में हुलास की अनुभूति होती है । 'फड़कय' शब्द के उच्चारण से कर्कशता आ जाती है जिससे काव्य-सौंदर्य की श्री वृद्धि बाधित होती है ।

एक अन्य छन्द का अनुवाद देखिए—

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

मूल छन्द

पहिचान को केहि जान सबही, अपान सुधि भोरी मई।
आनंद कंदु बिलोकि दूलह, उभय दिसि आनँद मई ।।
सुर लखे राम सुजान पूजे, मानसिक आसन दए।
अवलोकि सील सुभाउ प्रभु को, बिबुध मन प्रमुदित भए ।।

मैथिली छन्द

जानल चिन्हल ककरो न क्यों सब, अपन सुधि बुधि बिसरले ।
आनंद कंद बिलोकी बर, दुहु पच्छ आनंद उमगले ।।
लखि सुरहिं राम सुजान, पूजल मानसिक दय आसने ।
पुनि प्रभुक सील सौभाब लखि कय, अति मुदित सुरगन मने ।।

संस्कृत श्लोक अपरिवर्तित ही रहे हैं।

श्री राम लोचन शरण जी बहुमुखी प्रतिभा के घनी थे। वे मात्र संस्कृत और हिंदी के विद्वान ही नहीं थे अपितु कवि के रूप में भी उनकी प्रतिभा स्थान-स्थान पर झलकती है। अवधी एवं ब्रजभाषा के समस्त तुलसी-साहित्य का अनुवाद कर आपने मैथिली साहित्य को समृद्ध किया। मिथिला एवं मैथिली से आपको लगाव रहा। मिथिलाग्राम आपका आवास था तो मैथिली जी के प्रति भक्ति भावना आपकी प्रेरणा। मैथिली में किए गए अनुवाद मैथिली साहित्य के प्रति आपका महत्वपूर्ण योगदान हैं।

□

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

'रामचरितमानस' का रूसी अनुवाद

हेमचंद्र पांडे

तुलसीकृत 'रामचरित मानस' का रूसी अनुवाद* आचार्य अलेक्सेई पेत्रोविच बरान्निकोव ने द्वितीय महायुद्ध के दिनों में कज़ाखस्तान में प्रवास के दौरान किया था जहाँ उन दिनों सोवियत सरकार ने अपने देश के चोटी के विद्वानों के लिए अवश्यक सुविधाएँ जुटाई थीं। यह अनुवाद सन् 1948 में प्रकाशित हुआ था और इसके लिए आचार्य बरान्निकोव को स्तालिन पुरस्कार से सम्मानित किया गया था। 'रामचरितमानस' जैसे मध्यकालीन काव्य-ग्रन्थ का आधुनिक रूसी में अनुवाद करने में जो समस्याएँ सामने आई, उनके विषय में बरान्निकोव ने अपनी भूमिका में लिखा है—'रामचरितमानस' में आई भारतीय दर्शन, धर्म और संस्कृति की अनेकों संकल्पनाएँ, ढेर सारे पौराणिक तथा अन्य प्रकार के संदर्भ अनुवाद की दृष्टि से ऐसी चुनौती प्रस्तुत करते हैं कि कोई अच्छा अनुवादक भी उनके सामने घुटने टेक सकता है। **निर्गुण, सगुण, भक्ति, माया, मोक्ष** जैसे शब्दों के यथाचित पर्याय यूरोपीय भाषा में मिलना कठिन है, विदेशी पाठक के लिए आहुति, सिंदूर, चातक आदि शब्दों के अभिप्राय को समझाना भी आवश्यक है। पूरा ग्रंथ भारतीय संस्कृति में पगा हुआ है और जगह-जगह व्याख्या और टीका की अपेक्षा रखता है। ठेठ भारतीय उपमानों को बिना समझाए काम नहीं चल सकता। इस तरह देखें तो 'रामचरितमानस' का रूसी में अनुवाद करना असाध्य कार्य है।' फिर भी बरान्विकोव ने इस दुष्कर कार्य को अपने हाथ में लिया और वह उसे पूरा करने में सफल हुए।

बरान्निकोव ने अपनी भूमिका में लिखा है कि इस अनुवाद का लाभ मुख्यतः भारतविदों तथा साहित्यशास्त्र के विद्वानों को पहुँचेगा जो इसके द्वारा भारतीय काव्य-रचना की विशेषताओं से परिचित हो सकते हैं। उन्होंने अपने इस अनुवाद में पंक्तियों के मूल क्रम को बनाए रखा है, दोहों और चौपाइयों के चरणों को बदला नहीं है। इस तरह बरान्निकोव का यह अनुवाद शाब्दिक अनुवाद प्रतीत होता है। परन्तु वास्तव में यह निरा शाब्दिक अनुवाद नहीं है। केवल अर्थ के आधार पर शब्दों को लक्ष्य भाषा में ज्यों-का-त्यों रख देने से काव्यार्थ नष्ट हो जाता है। इसलिए अनुवाद करते समय उन्हें सँवारना पड़ता है। बरान्निकोव ने यह काम बखूबी किया है। उनका यह प्रयास इसलिए विशेष रूप से सराहनीय है क्योंकि इतनी सीमाओं में बँध कर भी उन्होंने अर्थ की हानि नहीं होने दी है। भारतीय संकल्पनाओं

---

* तुलसीदास रामायण (अथवा रामचरितमानस), अनुवादक अ. पे. बरान्निकोव, मास्को-लेनिनग्राद, 1948

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

पौरणिक संदर्भों आदि का मुख्यत: रूसी में लिप्यंतरण किया गया है और पादटिप्पणियों में उनकी व्याख्या की गई है। ऐसे शब्दों का केवल अनुवाद भर कर देने से अर्थ की हानि हो सकती थी जबकि व्याख्या करने से उनका आशय अधिक स्पष्ट हो जाता है। इस प्रकार रामायण के मूल भाव को वे रूसी पाठकों तक पहुँचने में सफल हुए हैं। लगभग हर पृष्ठ पर पाद टिप्पणियाँ हैं जिनकी कुल संख्या 1200 से भी अधिक है। अनुवाद के अन्त में इन संकल्पनाओं को 39 पृष्ठों की विस्तृत अनुक्रमणिका में संकलित किया गया है जिससे यह पता चल जाता है कि कहाँ-कहाँ इन शब्दों के अर्थों को समझाया गया है। अपने आप में यह एक अनोखा प्रयास है। इस अनुक्रमणिका को तैयार करने का काम आचार्य बरान्निकोव के सुपुत्र प्योत्र अलेक्सेयेविच बरान्निकोव ने किया था।

इस प्रकार बरान्निकोव ने 'रामचरितमानस' के अनुवाद में कम-से-कम स्वतन्त्रता ली है या लगभग नहीं ली है। इतने बंधनों और सीमाओं के रहते हुए यह अनुवाद निश्चय ही सराहनीय है। वह आचार्य बरान्निकोव की विनम्रता है कि स्वयं उन्होंने अपने अनुवाद को 'काव्यात्मक' अनुवाद न कह कर 'शास्त्रीय' अनुवाद कहा है।

बरान्निकोव ने अपने अनुवाद में जो पद्धति अपनाई है उसे मूल पाठ के कुछ उदाहरणों के आधार पर यहाँ समझाने का प्रयास किया जा रहा है। इस लेख में 'रामचरितमानस' के उद्धरण गीता प्रेस गोरखपुर के आधार पर तथा बरान्निकोव का अनुवाद काशी नागरी प्रचारिणी सभा के संस्करण पर आधारित है।

बालकाण्ड के निम्नलिखित दोहे में लगभग प्रत्येक शब्द व्याख्या की अपेक्षा रखता है—

सारद सेस महेस विधि आगम निगम पुरान।
नेति नेति कहि जासु गुन करहिं निरंतर गान॥

इस दोहे में मोटे टाइप में दिए शब्दों का रूसी में लिप्यंतरण कर दिया गया है और पाद-टिप्पणियों में उनकी व्याख्या की गई है। 'नेति नेति' की व्याख्या दार्शनिक दृष्टि से करते हुए यह समझाया गया है कि परम तत्त्व को निश्चित रूप से किसी एक नाम अथवा विशेषण के द्वारा परिभाषित करना संभव नहीं है। इसी तरह बालकाण्ड के निम्नलिखित सोरठे के मोटे टाइप में दिए अंशों का अनुवाद न करके पादटिप्पणियों में उनके आशय को स्पष्ट किया गया है :

प्रनवउँ **पवनकुमार खल बल पावक ग्यान घन।**
जासु हृदय आगार बसहिं राम सर चाप धर॥

पवनकुमार का शाब्दिक अनुवाद करके पादटिप्पणी में बताया गया है कि यह हनुमान का ही एक अन्य नाम है। 'जासु हृदय आगार' को यह कह कर समझाया गया है कि हनुमान को राम का परम भक्त माना जाता है। 'खल बन पावक ग्यान घन' के विषय में पादटिप्पणी में यह लिखा है—'हनुमान अपने ज्ञान की लौ से दुष्टों का उसी तरह विनाश कर देते हैं जिस तरह अग्नि वन को जला डालती है।'

इस प्रकार की व्याख्याएँ 'रामचरितमानस' को उचित परिप्रेक्ष्य में पढ़ने के लिए आधार प्रदान करती हैं जिनकी सहायता से रूसी पाठक इस ग्रन्थ का उचित मूल्यांकन कर सकता है। इस प्रकार वह धीरे-धीरे रामायण की कथा के मर्म को ग्रहण करने लगता है। उसे भी भक्ति रस का आस्वादन प्राप्त होता है।

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

अयोध्याकाण्ड के निम्नलिखित प्रसंग में **जनु बुध बिच रोहिनि सोही** का अर्थ समझाने के लिए बरान्निकौव ने पूरी कथा पादटिप्पणी में दी है—

आगे रामु लखनु बने पाछें। तापस बेष बिराजत काछें॥
उभय बीच सिय सोहति कैसें। ब्रह्म जीव बिच माया जैसे॥
बहुरि कहउँ छबि जसि मन बसई। जन मधु मदन मध्य रति लसई॥
उपमा बहुरि कहउँ जियँ जोरी। जनु बुध बिच रोहिनी सोही॥

यह पाद टिप्पणी इस प्रकार है—

'बुध—बुध को तारा का पुत्र कहा जाता है। तारा बृहस्पति और चन्द्रमा की पुत्री थी। कथा यह है कि चन्द्रमा ने तारा का अपहरण किया। देवताओं के बार-बार कहने पर भी चन्द्रमा ने तारा को उसके पति को नहीं लौटाया। तब बृहस्पति ने चन्द्रमा के साथ युद्ध किया। अन्ततः ब्रह्मा के द्वारा बाध्य किए जाने पर चन्द्रमा ने तारा को लौटा दिया। परन्तु तारा को चन्द्रमा से गर्भ हो गया था। पति के भय से तारा ने असमय ही पुत्र को जन्म दिया जिसका नाम बुध पड़ा। बुध को शूद्र, अथर्ववेद का ज्ञाता और गगन का शासक माना जाता है। सूर्य और शुक्र उसके मित्र हैं और चन्द्रमा शत्रु है। (पृष्ठ 474)

रोहिणी—पुराणों के अनुसार रोहिणी दक्ष प्रजापति की कन्या और चन्द्रमा की प्रिय भार्या है।'

हनुमान और रावण के युद्ध का वर्णन करते समय तुलसीदास ने रावण के लिए **कजल गिरि** और हनुमान के लिए **सुमेरु** उपमानों का प्रयोग किया है जिनकी रूसी में व्याख्या आवश्यक है—

सोहहिं नभ छल बल बहु करहीं। कज्जलगिरि सुमेरु जनु लरहीं॥

जगह-जगह व्याख्याओं से भरे इस अनुवाद में से अनेक ऐसे स्थल उद्धृत किए जा सकते है जो विशुद्ध काव्यानुवाद की कसौटी पर खरे उतरते हैं और उच्च स्तर के हैं। उदाहरण के लिए—

मूल— भलो भलाइहि पै लहइ लहइ निचाइहि नीचु।
सुधा सराहिअ अमरता गरल सराहिअ मीचु॥

अनु.— दोब्री दस्तिगाएत स्लावि 'दब्रातोइ स्वयेइ,
अ पोदलो तोल्का पोदलस्त्यु स्वयेइ :।
स्लावित्सा अम्व्रोज़िया : विस्स्म्येर्तिये दरयोत,
इ स्लाविन याद, पफ़्स्यूदु स्म्येर्तं लीश स्येया॥

मूल— गृह गृह बाज बधाव सुभ प्रगटे सुषमाकंद।
हरषवंत सब जहँ तहँ नगर नारि नर बृंद॥

अनु.— फ् काभ्दम दोगे मूज़िका इप्येनिये, वस्तोर्गं,
विद् कोरिन क्रासाति ना स्वेत यवोल्स्या॥
फ़्स्यूदु रादस्निये तालिपभ्रेन्शिन इ मुश्शीन।
प्रिकास्नी गोराद व् रादस्त पगुज़ोल्स्या॥

सुंदर काव्यात्मक अनुवाद के और भी उदाहरण प्रस्तुत किए जा सकते हैं। बरान्निकोव द्वारा किए 'रामचरित मानस' के अनुवाद को हमें उसकी समग्रता में देखना चाहिए।

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

जिस उद्देश्य से उन्होंने यह अनुवाद किया उसका उन्होंने समुचित निर्वाह किया है।

अंत में यही कहा जा सकता है कि 'रामचरित मानस' के इस व्याख्यात्मक या कहें टीका परक अनुवाद को पढ़ते समय प्रत्येक (रूसी) पाठक को इस वात का ध्यान रखना होगा कि वह काव्य के साथ-साथ भारतीय संस्कृति में पगे ग्रंथ को पढ़ रहा है। हम भारतीयों का भी 'रामचरितमानस' के प्रति लगभग ऐसा ही दृष्टिकोण है। काव्य-प्रेमियों को इसमें कविता का आनन्द मिलता है तो दैनिक पारायण करने वाले इसे पूरे भक्तिभाव के साथ पढ़ते हैं। इन दोनों के सहयोग ने ही तो 'रामचरितमानस' को हिन्दी काव्य-जगत को सबसे अधिक लोकप्रिय रचना का दर्जा प्रदान किया है। आचार्य बरान्निकोव ने 'रामचरितमानस' का रूसी अनुवाद भी इसी रूप में किया है।

□

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

सिन्धी में मानस के अनुवाद

डॉ. मुरलीधर जेतली

सिन्धी भाषा, आधुनिक भारतीय आर्य भाषाओं के पश्चिमी वर्ग की प्रमुख साहित्यिक भाषा है। उसका जन्म वैदिक कालीन उस प्रथम प्राकृत से हुआ है, जो सिन्धु घाटी के दक्षिण भाग में बोली जाती थी। सिन्धी भाषा ने भी अन्य आधुनिक भारतीय आर्य भाषाओं के समान प्राचीन (वैदिक संस्कृत, और संस्कृत) और मध्य काल (पालि, प्राकृत, अपभ्रंश) की विकास की मंज़िलों को पार कर, दसवीं ईस्वी सदी के आसपास नए चरण में प्रवेश किया है। इस भाषा में लिखित रूप में साहित्यिक कृतियाँ सोलहवीं सदी के आरम्भ से ही मिलती है।

गोस्वामी तुलसीदास कृत 'रामचरित मानस', रामाश्रयी सगुण भक्ति की काव्यधारा का अनुपम ग्रंथ है। आठवीं ईस्वी सदी के आरम्भ में सिन्ध में इस्लाम का आगमन हुआ। इस मज़हब के कट्टरपंथी अनुयायियों की संख्या इस प्रदेश में दिन ब दिन बढ़ती गई। इस्लाम के आश्रय में सूफ़ी संतों और दरवेशों की संख्या में काफी वृद्धि हुई, जो अपनी विशाल हृदयता के कारण अल्पसंख्यक हिन्दू जाति के लोगों को भी प्रभावित कर सके। सूफ़ियों के समान ज्ञान मार्ग प्रधान संत भी निर्गुण, निराकार ब्रह्म के उपासक थे। अतः उनकी वाणी भी मध्यकालीन सिन्धी साहित्य में हमें मिलती है। पंजाब के गुरुओं की वाणी का भी सिन्ध में काफी प्रभाव रहा है। सिन्धु प्रदेश अपनी भौगोलिक परिस्थिति के कारण निकटवर्ती राजस्थान और गुजरात प्रान्तों से कटा हुआ है। पूर्व में राजस्थान का मरुस्थल और दक्षिण में कच्छ की खाड़ी और अरब सागर ऐसी कुदरती बाधाएँ हैं, जिनकी वजह से सिन्ध और भारत के अन्य प्रदेशों के बीच यातायात सुगम नहीं था। अतः मीराबाई, सूरदास और तुलसीदास जैसे सगुणोपासक भक्त कवियों की वाणी का प्रभाव सिन्ध के जनमानस पर मध्यकाल में नहीं हो सका।

सिन्धी में रामचरितमानस के अनुवाद

सन् 1843 में सिन्ध में अंग्रेजों के राज्य की स्थापना के साथ-साथ सिन्धी साहित्य में आधुनिक काल का आरम्भ हुआ और पद्य के साथ, गद्य की विभिन्न विधाओं का विकास शुरु हुआ। यातायात की सुविधाएँ होने के बाद, राम और कृष्ण की लीलाओं को

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

रंगमंच पर प्रस्तुत करने के लिए अन्य प्रान्तों से मंडलियाँ सिन्ध में आने लगीं। उनसे प्रेरित होकर, संस्कृत तथा हिन्दी में उपलब्ध रामकथाओं के आधार पर सिन्धी भाषा में नाटक लिखकर रंगमंच पर प्रस्तुत करने की परम्परा का आरम्भ हुआ। पिछली सदी के अन्तिम दशक में सिन्ध के प्रसिद्ध लेखक लीलाराम वतनमल लालवाणी (1867-1941) ने 'रामायण' नामक नाटक लिखा। उसका प्रेरणा स्रोत वाल्मीकि रामायण के साथ-साथ तुलसीकृत रामचरित मानस भी था। यह नाटक 1898 में मंच पर सफलता से खेला गया। उसी काल के अन्य प्रसिद्ध नाटककार डेऊमल गागनमल ने भी 'राम वनवास' नाम से सिन्धी में नाटक लिखा। इसका प्रेरणा स्रोत मुख्यतः गोस्वामी तुलसीदास की कृति था।

सिन्धी भाषा में तुलसीदास की कृति 'रामचरित मानस' का प्रथम अनुवाद इस सदी के प्रथम दशक में हुआ है। महाराज तेजूराम शर्मा ने 1902 ई. के आसपास कराची में 'सनातन धर्म प्रचारक सभा' की स्थापना की। उसी सभा के द्वारा उन्होंने रामायण, महाभारत, पुराण, आदि धार्मिक ग्रंथों का प्रकाशन शुरु किया। इस क्षेत्र में उन्होंने वर्तमान सदी के आरम्भिक वर्षों में 'तुलसीकृत रामायण' नाम से सिन्धी गद्य में मानस का अनुवाद प्रकाशित किया। आजकल यह ग्रंथ उपलब्ध नहीं है।

सन् 1947 में देश की आजादी से पूर्व 'मानस' के अन्य महत्त्वपूर्ण अनुवाद इस प्रकार हैं :—

लोकराम पेसूमल डोडेजा ने हिन्दू धर्म और सिक्ख पंथ से सम्बद्ध कई ग्रंथ सिन्धी में प्रकाशित किए हैं। उन्होंने सन् 1946 में वाल्मीकि कृत रामायण का सिन्धी में अनुवाद किया था परन्तु इसकी तुलना में तुलसी की कृति का सिन्ध में अधिक प्रचार देखकर, उन्होंने सन् 1947 में 'तुलसी रामायण' नाम से मानस का गद्यानुवाद प्रकाशित किया। यह इतना लोकप्रिय सिद्ध हुआ कि भारत में आकर महाराष्ट्र के 'पुणें' नगर में निवास करने के बाद, लोकराम ने इसके सात संस्करण प्रकाशित किए हैं। ग्रंथ सात काण्डों में विभाजित है और सरल तथा प्रवाहपूर्ण भाषा में लिखा गया है। कथा को उचित स्थानों पर शीर्षक देकर स्पष्ट किया गया है। ग्रंथ में यथास्थान सुन्दर चित्र भी दिए गए हैं।

"श्री तुलसीकृत रामायण-बाल काण्ड" नाम से मानस के प्रथम काण्ड का अनुवाद गोबिन्दराम केवलराम थधाणी ने किया है। यह ग्रंथ 1947 में कराची से प्रकाशित हुआ है। मुझे सिन्धी भाषा में यही एक अनुवाद दिखाई दिया है, जिसमें मानस के मूल चौपाई और दोहे देवनागरी लिपि में छापकर, उनके नीचे सरल सिन्धी भाषा में उनका अनुवाद दिया गया है। ग्रंथ रायल साईज़ में 430 पृष्ठों में है और आरम्भ में 23 पृष्ठों की भूमिका में गोस्वामी तुलसीदास का संक्षिप्त जीवन चरित्र, रामायण माहात्म्य, राम शलाका प्रश्नावली, मानस के पारायण की विधि आदि बातें दी गई हैं। अनुवादक का उद्देश्य इस प्रकार अन्य काण्डों का अनुवाद भी प्रकाशित करना था, जो देश विभाजन के कारण पूरा न हो सका।

इस काल में दो और भी सिन्धी अनुवाद दिखाई देते हैं, जो संक्षिप्त हैं। मेलाराम मंगतराम वास्वाणी ने बच्चों के लिए 'बाल रामायण' नाम से एक सचित्र पुस्तक सन् 1930 के आसपास प्रकाशित की। उसके लिए उन्होंने वाल्मीकि के साथ-साथ तुलसी की

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

कृति को भी आधार बनाया है। इसमें मनोरंजक शैली में और सरल भाषा में रामकथा को प्रस्तुत किया गया है।

सन् 1922 में चैनराइ वूलचन्द आडवाणी ने 'राम गीता' नामक पद्यानुवाद प्रकाशित किया है। इसमें संक्षिप्त रूप में, तुलसी के 'मानस' के आधार पर रामकथा का सिन्धी कविता में वर्णन किया गया है।

देश की आज़ादी के बाद, भारत में 'रामायण' की कथा को सिन्धी भाषा में प्रस्तुत करने वाली तो आठ-दस पुस्तकें प्रकाशित हुई हैं। उनमें लेखकों ने बाल्मीकि तथा तुलसीदास की कृतियों को आधार बनाकर, रामकथा प्रस्तुत की है। इस प्रकार की पुस्तकों में सतरामदास सोभासिंह जुड़ियासिहाणी की पद्य कृति 'रामकथा' विशेष रूप से उल्लेखनीय है। इसी प्रकार बालकों को ध्यान में रखकर, राम के चरित को संक्षेप में प्रस्तुत करने वाली भी कुछ पुस्तकें हैं। परन्तु तुलसीदास कृत 'रामचरितमानस' के जो सिन्धी भाषा में महत्त्वपूर्ण अनुवाद मिलते हैं, वे इस प्रकार हैं :—

'तुलसीकृत रामायण' नाम से जोधपुर निवासी उत्तमचन्द शास्त्री ने सिन्धी भाषा में एक ग्रंथ लिखा है। यह गद्य में है और कहीं-कहीं उचित स्थानों पर दोहे भी दिए गए हैं। यह उल्हास नगर महाराष्ट्र से एल. किशनचन्द ने प्रकाशित किया हैं। इसी प्रकाशक ने बच्चों के लिए 'बाल रामायण' भी प्रकाशित की है, जिसमें कुछ चित्र भी हैं।

ग्वालियर (मध्य प्रदेश) के हेमनदास बुकसेलर ने 'तुलसीकृत रामायण' नाम से सिन्धी गद्य में और देवनागरी लिपि में मोटे टाईप में एक ग्रंथ प्रकाशित किया है। उसमें अनुवादक का नाम नहीं दिया हुआ है। कथा के बीच-बीच में उचित स्थानों पर पद्य भी दिए गए हैं। इन दोनों अनुवादों का उद्देश्य राम कथा का कीर्तन करना है।

भारत में 'मानस' का सबसे महत्त्वपूर्ण अनुवाद तुलसीदास तलरेजा ने किया है, जो सम्पूर्ण पद्य में है। इसका नाम है **'गोस्वामी तुलसीदासकृत रामायण'**। अनुवादक सेवानिवृत्त अध्यापक थे। बचपन से ही उनकी प्रवृत्ति धर्म और कथा कीर्तन की ओर थी। भगवान राम के परम भक्त थे। गोस्वामी तुलसीदास का रामचरित मानस जब उन्होंने पढ़ा, तो भावविभोर हो गए। मन ही मन निश्चय कर लिया कि मेरा नाम भी तुलसीदास है और मैं इस अमर कृति को अपनी मातृभाषा में अवश्य प्रस्तुत करूंगा। अपने अध्यापन काल में वे प्रतिदिन नियमपूर्वक मानस का पाठ श्रद्धापूर्वक करते रहते थे। चालीस वर्ष बीत गए। पर गाँठ में इतना पैसा न था कि अपने संकल्प को कार्यान्वित कर सकते। सेवानिवृत्त होने पर उन्हें जो धनराशि मिली और अपना मकान बेचकर उन्होंने जो धन प्राप्त किया, वह मानस को सिन्धी अनुवाद के प्रकाशन में लगा दिया। उनके सुपुत्र ने भी इस यज्ञ में सहर्ष आहुति डाली।

तुलसीदास तलरेजा का यह अनुवाद रायल साईज़ में है, और उसमें 964 पृष्ठ हैं। पुस्तक में कई स्थानों पर चित्र भी हैं। मानस की कथा के मर्मस्पर्शी अंशों को लेकर उन्होंने दोहे और चौपाइयों में वर्णन किया है। अनुवादक ने छन्द के बन्धन की अपेक्षा संगीत के स्वर, ताल और लय तथा गेयता को अधिक महत्त्व दिया है। यह भावानुवाद है, जिसमें

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

प्रबन्धात्मकता का विशेष ध्यान रखा गया है। भाषा सरल होते हुए भी प्रभावपूर्ण है। प्रत्येक पद के नीचे गद्य में उसका अर्थ भी स्पष्ट किया गया है। उदाहरणार्थ :—

मूल : सोहत जनु जुग जलज सनाला। ससिहि सभीत देत जयमाला ॥
गावहिं छबि अवलोकि सहेली। सियँ जयमाल राम उर मेली ॥

अनु : गुल ड्ांडीअ व कमल जिएँ, डिजी पाइनि चंड माला तिएं।
गीत सहेलियुनि मधुर पुणि गाए, जयमाला सीय राम पहराए ॥

मूल : श्री गुरु चरन सरोज रज, निज मन मुकुरु सुधारि।
बरनउँ रघुबर विमल जसु, जो दायक फल चारि ॥

अनु : रज चरन मस्तक धरे, दरसनी मन निहारि।
वरिण्यां रघुवर विमल जसु, जो दायक फल चारि ॥

यह अधिक अच्छा होता, यदि तुलसीदास तलरेजा मानस का पूरा अनुवाद मूल पाठ के अनुसार ही सिन्धी भाषा में प्रस्तुत करते। वर्तमान रूप में सिन्धी पाठक रामकथा का आस्वाद तो ले सकते हैं, परन्तु कई स्थानों पर मूल मानस में अंलकारों का सौन्दर्य और वर्णनशैली का जो अनोखापन है, वह सिन्धी पद्यानुवाद में लुप्त हो गया है।

निष्कर्ष रूप में यह कहा जा सकता है कि सिन्धी भाषा में 'रामचरितमानस' के गद्यानुवाद और भावानुवाद तो मिलते है, परन्तु मूल पाठ का अक्षरशः अनुवाद नहीं मिलता। इस प्रकार का केवल बालकाण्ड का अनुवाद किया गया है, जिसमें मूल पाठ को देवनागरी लिपि में रखकर, उसके नीचे सिन्धी भाषा में उसका गद्यानुवाद किया गया है।

□

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

हरियाणवी पद्यानुवाद

डॉ॰ जयनारायण कौशिक

रामचरित मानस का हरियाणवी में पद्यानुवाद श्री रामेश्वर दयाल शास्त्री द्वारा किया गया है। शास्त्री जी का जन्म 24 मई 1919 को जिला महेन्द्रगढ़ में स्थित पाल्हावास नामक गाँव में हुआ। आपने संस्कृत तथा हिन्दी में एम.ए. की परीक्षाएँ पास कीं। वर्तमान पद्यानुवाद के अतिरिक्त वीरांगना (ऐतिहासिक एकांकी संग्रह) हिन्दी भाषा एकांकी में कठ-पुतली नाटकों का योगदान, अमर चरितम्, हरियाणा हिन्दी व्याकरण आदि आपकी प्रसिद्ध कृतियाँ हैं।

हरियाणवी पद्यानुवाद उसके समस्त काण्डों का हरियाणवी में पद्यानुवाद है। यह अनुवाद पंक्तिशः अर्थात सम्पूर्ण कृति का है। संस्कृत के छंदों का अनुवाद करते समय कोई अंश छोड़ा नहीं है। हाँ, युद्ध वर्णन में आल्हा छंद होने के कारण आवश्यकता अनुसार प्रत्येक पंक्ति में कुछ शब्द या वाक्यांश अवश्य जोड़े गए हैं। चौपाइयों के अतिरिक्त दोहा, सोरठा आदि का पद्यानुवाद भी किया गया है। अनुवादक ने आवश्यकता अनुसार 28, 30 तथा 31 मात्रा वाले छंदों का भी प्रयोग किया गया है जबकि चौपाई 16 मात्राओं का छंद है। अनुवाद का स्तर प्रशंसनीय है।

जनवाणी और जनहृदय में उसी कृति का निवास हो पाया है जो जनभाषा में जन-रंजन को ध्यान में रख कर रची गईं। रामचरित से संबंधित रामायण भी उन्हीं कृतियों में से एक है। संस्कृत युग में इसकी रचना संस्कृत में हुई। क्षेत्रीय भाषाओं के विकास काल में गत डेढ़-दो हजार वर्षों से इसकी रचना समस्त भारतीय भाषाओं और अनेक बोलियों में हुई है। उप भाषा या बोलियों की श्रृंखला में हिन्दी की पश्चिमी बोली हरियाणवी में गीता, दुर्गा सप्तशती, धम्म पद, प्रसिद्ध वेद मंत्रों तथा भर्तृहरि शतक आदि के पद्यानुवाद प्रकाशित हो चुके हैं। किन्तु रामचरित मानस का हरियाणवी पद्यानुवाद अब तक प्रकाशित बृहत्तम कार्य है।

श्री रामेश्वर दयाल शास्त्री द्वारा अनूदित यह कृति विक्रम संवत 2030 चैत्र शुक्ल तृतीया को सम्पूर्ण हुई तथा इसका प्रकाशन अखिल भारतीय साहित्य परिषद, भिवानी, हरियाणा द्वारा सन 1988 में किया गया। सन 1988 में यह कृति हरियाणा साहित्य अकादमी द्वारा पुरस्कृत की गई।

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

आइए, बानगी स्वरूप इस कृति के कुछ स्थल उद्धृत करके इसका रसास्वादन करें। पहले जनकपुरी चलें, वहाँ नगरी की शोभा और रामलीला के प्रथम दर्शन को निहारें।

गली भरी सुथरे चौराहे च्याऊँ कैड़ सुहाए थे।
चंदन अगर और किस्तूरी के छिड़काव कराए थे॥
घर घर भीतर बाहर मंगल के सामान सजाए थे।
कामदेव फोटू आले नै घर घर चित्र वणाए थे॥
हाथीखाना एक ओड़ नै भारी थी घुड़साल उड़ै।
हाथी घोड़े और रथाँ की लागी भीड़ विशाल उड़ै॥

राम की शोभा निहार जनकपुरी की ललनाएँ लालायित हो कह उठती हैं :—

शोभा निरख राम की न्यारी एक सखी नै वचन कह्या।
सीता जी की जोड़ी का यों वंदड़ा जोगमजोग रह्या॥
इस सुन्दर सुथरे छोहरे नै जो देखै नरनाथ दिखे।
परण त्याग कै सीता जी नै व्याह दे इसके साथ दिखे॥

तुलना के लिए मूल पाठ निम्नलिखित है :—

देखि राम छवि कोउ एक कहई। जोगु जानकिहि यह बरु अहई॥
जौ सखि इन्हहि देख नरनाहू। पन परिहरि हठि करइ बिवाहू॥

उधर राम वाटिका की ओर चलें जहाँ सीता जी गौरी पूजन के लिए जा रही हैं :—

बखत जाण्य् के पूजा का दोनूं नै मुनि आज्ञा लीन्ही।
फूल तोड़ कै ल्यावण खात्तर सुरत बगीचे की कीन्ही॥
उस्सै मोके पै सीता जी उड़ै बाग में आई थी।
पारबती पूजण की खातर माँ नै उड़ै खँदाई थी॥
राजकुमाराँ के देखण का सीता कै मन चा चढग्या।
पाटी जाण सभी नै जिब सखियाँ के मन का भा बढ़ग्या।
न्यों कह कै श्री रामचंद्र सीता की ओड़ लखाए सैं।
सीता का मुख चाँद वण्या निज नयन चकोर वणाए सैं॥
दुनियाँ तैं न्यारी सुथराई मन्नै इसमें पाई सै॥
निर्मल भोले मेरे मन में भी या आज सामाई सै॥

इसका मूल पाठ देखिए :—

समय जानि गुर आयसु पाई। लेन प्रसून चले दोऊ भाई॥
तेहि अवसर सीता तहँ आई। गिरिजा पूजन जननि पठाई॥
तासु बचन अति सियहि सोहाने। दरस लागि लोचन अकुलाने॥
अस कहि फिरि चितए तेहि ओरा। सिय मुख ससि भए नयन चकोरा॥
जासु बिलोकि अलौकिक सोभा। सहज पुनीत मोर मनु छोभा॥

उधर सीता जी की मनस्थिति देखिए—

कर्‌या इशारा सखियाँ नै बेलाँ की ओर खड़े देखे।
छोटा गोरा बड़ा साँवला बण कै जोट खड़े देखे॥

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

आख्याँ माँह् कै सिरी राम जी हिरदा भीतर बठा लियो।
स्याणी जनकदुलारी नै फिर पलक किवाड़े लगा लिये ।।

तुलना के लिए मूल पाठ प्रस्तुत है :—

लता ओट तब सखिन्ह लखाए। स्यामल गौर किसोर सुहाए ।।
लोचन मग रमहि उर आनी। दीन्हे पलक कपाट सयानी ।।

परशुराम-लक्ष्मण संवाद से अनूदित कुछ पंक्तियों के नमूने इस बात का उदाहरण हैं कि अनुवादक ने अवधी भाषा को किस प्रकार हरियाणवी के ढांचे में ढाला है—

हाथ कुलाड़ा दया नहीं सै क्रोधी खूब सुभा मेरा।
आगै खड़्या गुरु का बैरी सहणा नहीं सुभा मेरा ।।
चवर-चवर ला रह्या सै फिर भी इसनै नहीं मारता मैं।
थारा प्रेम घणा करड़ा सै इसनें देख हारता मैं ।।
बोले लछमन शील आपका जाणै सै संसार दिखै।
मात पिता तें उऋण, गुरु के ऋण का बोहोत विचार दिखै ।।
कौशिक हँस कै मन मैं सोचें, इसमें हर्या दिखाई दे।
लोहे का खाण्डाँ यो इसनै पौण्डा ईख दिखाई दे ।।

मूल पाठ इस प्रकार है :—

कर कुठार मैं अकरुन कोही। आगे अपराधी गुरु द्रोही ।।
उतर देत छोड़ऊँ बिनु मारें। केवल कौसिक सील तुम्हारे ।।
कहेउ लखन मुनि सीलु तुम्हारा। को नहिं जान विदित संसारा ।।
मात पितहि उरिन भए नीकें। गुरु रिनु रहा सोचु बड़ जीकें ।।
गाधिसून कह हृदयँ हँसि, मुनिहि हरिअरई सूझ।
अयमय खाँड न ऊखमय, अजहुँ न बूझ अबूझ ।।

अब थोड़ी झलक राजतिलक के रंग में भंग, कैकेयी-मंथरा और दशरथ-कैकेयी संवाद की, यहाँ तो अनुवादक ने मानो मुहावरों की झड़ी सी लगा दी है—

एक दिवस राजा नै कर मैं ऊँए सीसा लीन्हा था।
मुखड़ा देख मुकुट कुछ सूवा अपणे करतैं कीन्हा था ।।
कानाँ के धौरै फिर देखै नृप नै धौले केश दिखे।
जणू बुढ़ापा कानाँ कै मुंह ला दे रह्या उपदेश दिखे ।।
वाहे स्यात कड़ी घड़ आछी सै राम बणै युवराज दिखे।
राजन देर जरा मत लाओ सजल्यो सभी समाज दिखे ।।
नाम मन्थरा था उसनै अपजश का बणा पिटार गई।
कैकयी की वा दासी थी अक्कल्य उसकी मार गई ।।

मूल पाठ पर भी विचार कीजिए :—

रायँ सुभायँ मुकुरु कर लीन्हा। बदनु विलोकि मुकुट सम कीन्हा ।।
श्रवण समीप भए सित केसा। मनहु जरठपनु अस उपदेसा।
बेगि विलंबु न करिअ नृप साजिअ सबुइ समाजु।
सुदिन सुमंगलु जब रामु होंहि जुबराजु ।।

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

नामु मंथरा मंदमति चेरी कैकई केरि।
अजस पिटारी ताहि करि गई गिरा मति मारि॥

आगे कथा इस प्रकार चलती है :—

इब तै कहली तनै जमालो मतना कहिए फेर दिखे।
जीभ काट ल्यूंगी मैं तेरी ना लाऊँगी देर दिखे॥
भाठा तैं फोड़न जोगा सै मेरा माथा आज दिखे।
भली कही पर लागी मूंडी थम हो रही नाराज दिखे॥
कोये राजा बणों अवध का मेरा के नुकशान बिल्या।
दासी छोड़ बणावैं मन्नै के राणी भगवान बिल्या॥
घड़ धड़ बात कुटिलता की दासी नैं खूब सुणाई थी।
वैर वढाणी सुणा कहाणी राणी खूब बणाई थी॥
दाव लगा पापण बोली—आसण पाटी ले पड़ ज्यइये।
हुश्यारी तैं काम काढिये बातां में मतना आइये॥
साज साज कै कोप भवन का उसमें जाकै सोई थी।
राज करै थी, अपणै सुख की लुटिया आप डबोई थी॥
कोप भवन की बात सुणी तै राजा हाल बेहाल हुआ।
आगा नै पाँ पाटै कोन्या तन का हाल बेहाल हुआ॥

इसका मूल पाठ इस प्रकार है :

पुनि अस कहहुँ कहसि घर फोरी। तब धरि जीभ कढ़ावउँ तोरी॥
फोरै जोगु कपारु अभागा। भलेउ कहत दुख रउरेहि लागा॥
कोउ नृप होउ हमहि का हानी। चेरि छाड़ि अब होव कि रानी॥
रचि पचि कोटिक कुटिलपन कीन्हेसि कपट प्रबोध।
कहिसि कथा सत सवाति कै जेहि विधि बाढ़ बिरोधु॥
बड़ कुघात करि पातकिनि कहेसि कोपगृहँ जांहु।
काजु सँवारेहु सजग सब सहसा जनि पति आहु॥
कोप भवन सुनि सकुचेउ राउ। भयबस अगहुड़ परई न पाऊ॥

अब दशरथ और कैकेयी की उठा पटक का वर्णन हरियाणवी में सुनिए—

रामचन्द्र नै बणा रह्या सूं तड़के तैं युवराज दिखे।
सुथरी आख्यां आली इब तो सजले मंगल साज दिखे॥
सुन राजा के बोल कालजा राणी का दुख पाया था।
पके हुए जणु बाल तोड़ कै हाथ चाणचक लाया था॥
प्राण पती जी! कती मनोरथ योहे सै मेरे जी का।
पहला द्यो बरदान भरत का काल्य् सवेरे हो टीका॥
दूजा वर यो मांगू सूं मैं साथ जोड़ कै हाथ पती।
करद्यो मेरे मन का चीत्या मेरे नाथ! पती॥
तपसी का भर भेस जरूरी होकै जगत उदास पती।
चौदा बरस तलक तज नगरी राम करै बणवास पती॥

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

राजा पड़ै धरण मैं बोले क्यूं कर रही कुणबा घाणी।
कपट खेल मैं बत्ती स्याणी बोली ना कुछ भी राणी।।

इसका मूल पाठ इस प्रकार है :—

रामहि देउँ कालि जुवराजू। सजहि सुलोचनि मंगल साजू।।
दलकि उठेऊ सुनि हृदय कठोरु। जनु छुइ गयउ पाक बरतारु।।
सुनहु प्रानप्रिय मावत जी का। देहु एक वर भरतहि टीका।।
मागऊँ दूसर वर कर जोरी। पुरवहु नाथ मनोरथ मोरी।।
तापस बेस बिसेषि उदासी। चौदह बरिस राम बनवासी।।
परेउ राउ कहि कोटि विधि काहे करसि निदान।
कपट सयानि न कहति कछु जागति मनहुँ मसानु।।

आल्हा छंद में युद्ध के प्रसंग का संदर्भ दिए बिना लेख अधूरा ही रहेगा। जरा यह भी पढ़िए—

वीर मारणी साँग तब, मारी तेज घुमाय।
सापण सी वा लखन कै उर मैं गड़ग्यी जाय।।
खाकै साँग तेज दुश्मन की लछमन पड़े तिवाला खाय।
लख कै लखन लाल नै दुश्मन उनकै धोरै पोहच्चया जाय।।
मेघनाथ से अनगिन योद्धा जती लखन नै रहे उठाय।
क्यूंकर उठै जगत ठावणियाँ खिसियाणे सब हो हो जाय।।
एक बाण सर सर कर उड़ता सूंडी भीतर बड़ाया जाय।
तीस बाण दस सीस बीस भुज न्यारे न्यारे लागे घाय।।
मन्दोदर की नजर सीस पै रावण के ज्यूं ही पड़ ज्याय।
व्याकुल होकै होश भूलग्यी इकदम पड़ी तिवाला खाय।।

मूल पाठ देखिए :—

वीरघातिनी छाडिसि साँगी। तेज पुँज लछिमन उर लागी।।
मुरछा भई सक्ति के लागें। तब चलि गयउ निकट भय त्यागें।।
मेघनाद सम कोटि सत जोधा रहे उठाइ।
जगदाधार सेष किमि उठै चले खिसिआइ।।
सायक एक नाभि सर सोषा। अपर लगे भुज सिर करि रोषा।।
पति सिर देखत मंदोदरी। मुरुछित बिकल धरनि खसि परी।।

उपर्युक्त उदाहरण से स्पष्ट है कि अनुवादक ने अनुवाद में आवश्यकतानुसार स्वतंत्रता बरती है। 'अपर लगे भुज सिर करि रोषा' से यह बात और भी स्पष्ट हो जाती है। यत्र-तत्र अन्य पंक्तियों का मिलान भी किया जा सकता है। अनुवादक ने संस्कृत श्लोकों के अनुवाद में बहुत सावधानी बरती है। उत्तरकाण्ड में अपने शिष्य की भलाई की कामना के लिए गुरु द्वारा शिव स्तुति का उदाहरण इसका प्रमाण है। पहले मूल पाठ देखें—

नमामीशमीशान निर्वाणरूपं। विभुं व्यापकं ब्रह्म वेद स्वरूपं।।
निजं निगुणं निर्विकल्पं निरीहं। चिदाकाशमाकाश वासं भजेऽहं।।

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

इसके श्लोक के अंश का अनुवाद हरियाणवी में इस प्रकार किया गया है—

जगदीश्वर! ईशान! मोक्ष के रूप, मुक्ति के दाता।
अंबर रूप दिगम्बर धारी! चित् का ध्यान लगाता॥
निराकार! ओंकार रूप हे! चौथे पद के स्वामी।
गिरा ज्ञान इन्द्रिय गोचर ना ईश! गिरीश नमामि॥
महाकाल के काल! कृपालु! गुणाकार! जगपारा।
भोले भोले शंकर बाबा! ध्यान धरूँ मैं थारा॥
सिर पै भारी जटाजूट सैं जिसकै ऊपर गंगा।
माथे ऊपर चाँद दूज का गल मैं पड़े भुजंगा॥

यदि भाषा की दृष्टि से हरियाणवी रामायण का विश्लेषण करें तो हमें ज्ञात होगा कि इस पर बागड़ी बोली का प्रभाव भी है। उदाहरण के लिए हिन्दी और हरियाणवी में ने कारक लगाने पर आकारान्त शब्द एकारांत हो जाता है। यथा— अंधा से, अंधे ने। किन्तु अनुवादक ने 'आँधा नै जणू आँख मिली थी' रूपों का प्रयोग अनेक स्थानों पर किया है। अनुवादक ने अनेक शब्दों का हरियाणवीकरण करके इसे स्थानीय पुट दिया है जैसे—'घरफोरी' के लिए 'जमालो' शब्द का प्रयोग किया है, जिसका प्रयोग मन्थरा के लिए पहले किया जा चुका है। ठीचा (रस्म), किव (कव), डभसूल (कुशा कंटक), पाधरा (सीधा) आदि शब्द इसके प्रमाण है। अनुवादक ने उर्दू शब्दों का प्रयोग भी किया है। यथा—मिजमानी (मेजवानी), कबूलता आदि। संस्कृत शब्दों का प्रयोग कहीं शुद्ध रूप में—दर्शन, ब्राह्मण, कहीं अर्द्धशुद्ध— 'शीसे' आदि रूप में किया है। मुहावरों का प्रयोग अनुवादक ने खुल कर किया है। यथा—जतन की बाड़, बैर बढांणी, हूणी के बस, दूध मैं माखी, गाजब का गोला आदि।

अहमद बख्श ने भी हरियाणवी में स्वाँग पद्धति में रामायण की रचना की है और मौलिक स्थलों का भी सृजन किया है किन्तु वर्तमान अनुवादक तो तुलसी के रामचरित मानस पर रीझे हैं। तुलसीदास स्वयं अपनी कुरुक्षेत्र यात्रा के समय अध्यात्म रामायण से प्रभावित हुए थे जिसकी रचना हरियाणा में पृथूदक (पेहोवा) तीर्थ में हुई। लगता है शास्त्री जी ने उसी ऋण को चुकाया है।

वास्तव में रामकथा तो गंगा है भले ही स्थान और भाषा भेद के कारण गंगा को भागीरथी, मंदाकिनी, जाह्नवी, नंदिनी, त्रिधारा, गिरिजा आदि नाम दिए जाएँ। रामकथा के लिए भारत के पूरब, पश्चिम, दक्षिण या उत्तर में जो भी भिन्न-भिन्न नाम दिए गए हैं वे सभी रामनद में समा जाते हैं। रामकथा में कथा या भाषा भेद होना इसी प्रकार स्वाभाविक है कि कहीं यह नद हिमाद्री में बहता है, कहीं ऊँचे-नीचे पहाड़ों पर, कहीं कृषि भूमि में तो कहीं गहन बीहड़ वनों में और अन्त में अनेक धाराओं में बँट कर महार्णव में विलीन हो जाता है। यदि प्रत्येक प्रकार का पर्यावरण इस कथा को प्रभावित न करे तो वह पर्यावरण ही क्या और यदि लचीलापन सहन करके यह अपना मूल रूप न बनाए रखे तो फिर राम कथा ही क्या हुई।

□

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

मानस के अनुवाद

8.01 असमिया

श्री रामचरित मानस

अनु. वापचन्द महन्त तथा केशव महन्त । जोराहट, असम साहित्य सभा, 1981, 642 पृ., 22 से.मी. ।

एस. बरुआ द्वारा अनूदित हस्तलिखित प्रति आसाम पब्लिकेशन बोर्ड में उपलब्ध है । श्रीकांत सूर्यविप्र द्वारा लंकाकाण्ड का पद्यानुवाद अठारहवीं शती में हुआ ।

8.02 उर्दू

रामायण

अनु. जगन्नाथ खुश्तर । लखनऊ, नवलकिशोर प्रेस, 1860 ई. । संक्षिप्त पद्यात्मक अनुवाद । कानपुर से भी प्रकाशित ।

रामायण-ए-फरहत नज्म उर्दू फ़रहत हर्फ़ व हर्फ़ मुताबिक तुलसीकृत

अनु. शंकर दयाल फ़रहत । लखनऊ, नवल किशोर प्रेस, 1966-67 ।

रामायण

हस्तलिखित उर्दू, प्राप्ति, कैलास सिंह, ग्राम कैथा, उन्नाव 1885 ई. ।

रामायण

अनु. जगन्नाथ खुश्तर । 16वां सं., नवल किशोर प्रेस, 1924 : 256 पृ., सचित्र 22.5 से. । संक्षिप्त पद्यात्मक अनुवाद, लीथो मुद्रण ।

रामायण

अनु. रामस्वरूप कौशल । लाहौर, 1926 ।

रामायण-ए-फरहत नज्म उर्दू फरहत हर्फ़ व हर्फ मुताबिक तुलसीकृत

अनु. शंकर दयाल फरहत 7 वां सं., लखनऊ, नवल किशोर प्रेस 1938 । 346 पृ. सचित्र, 18.5 से., लीथो में ।

तुलसीकृत रामायण उर्दू

अनु. सुखदेवलाल । लखनऊ, तेजकुमार प्रेस, 1956 : 1156 पृ., सचित्र, 28 से.मी. । कपड़े की जिल्द, नागरी में भी शीर्षक पृ., पर 'रामायण' लिखा है ।

रामायण मंजूम

तुलसीकृत रामायण का मंजूम उर्दू । अनु. हकीम वाइसराय वहमी । हैदराबाद दक्षिण, अनुवादक (रफीक प्रि. प्रेस), 1960 : 275 पृ., मु. चि., (अनु.), 24 से.मी., उर्दू लिपि में ।

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

रामायण मलजूम

अनु. हकीम वाइसराय 'वहमी'। हैदराबाद, अनुवादक, 1963 : 162 पृ., 25 से.मी., नागरी लिपि में।

मुंशी अदालत खाँ ने मानस के अयोध्याकाण्ड का उर्दू अनुवाद किया है। रघुनंदन बंदन अ. च. ने वालकाण्ड को उर्दू लिपि में लिखा है।

रामायण (बालकाण्ड, उर्दू लिपि में)—रघुनंदन चंदन अमर चंदन चंद—प्रका. ज्ञान भास्कर प्रेस, बाराबंकी 1903 ई.

रामायण बहार—बांके बिहारी लाल 'बहार'

रामायण

उर्दू अक्षरों में। 5वां सं., लखनऊ, नवल किशोर।

8.02.2 स्फुट कांड

रघुनंदन वंदन अमरजन चंदन चंद

(श्री रामचरित मानस सकल विधि हंसिनी विमल वैरण संतोष—तुलसीकृत बालकांड समाप्त, अन्तिम पृ. पर), वाराबंकी, ज्ञानभास्कर प्रेस, 1903, मूल बालकांड

8.03 ओड़िया

तुलसी रामायण

अनु. जगबन्धु महापात्र। वेरहामपुर, (गंजम) रिसीवर स्टूडेन्ट्स स्टोर्स, 1952 21, 383 पृ., 25 से. मी., 700।

श्री रामचरितमानस या तुलसी रामायण, नवीन सं.

अनु. श्रीनाथ चन्द्र मिश्र। कटक, राधारमण पुस्तकालय, 1956। 2 खण्ड, सचित्र।

श्री रामकिशोर कानूनगो ने इस दिशा में पहला प्रयास किया है। इनके अतिरिक्त गणनाथ दास ने 1613 तथा साधुचरण मिश्र ने 1930 में मानस के अनुवाद किए हैं।

श्री रामचरित मानस या तुलसी रामायण—शिवनाथ चंद्र मिश्र, राथारमण पुस्तकालय, नवीर संस्करण—1956 ई.

तुलसी रामायण

अनु. स्वप्नेश्वर दास। 2 रा. सं., कटक, राष्ट्रभाषा पुस्तक भण्डार, 1960। 14, 460 पृ., 24 से.मी.।

गोविंद रामायण—गोविन्द साव तेली

श्री रामचरित मानस

अनु. बलराम दास। लखनऊ, भुवन वाणी ट्रस्ट, 1978। 1664 पृ., 20 से.।

श्री रामचरितमानस कथा

अनु रघुनाथ महापात्र। कटक, ग्रन्थ मन्दिर, 1980। 7, 241 पृ., 21.5 से.।

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

8.04 : कन्नड़

सचित्र रामचरित मानस अथवा तुलसी रामायण

अनु. गलकनाथ । हवेरी, सद्गुरु कार्यालय, 1926 : 8, 400 पृ., 20 से. । रामचरित मानस—वेंकटेश तिरको कुलकरणि बल्लवनाक वनकरगज: (संपादक, प्रकाशक एवं मुद्रक)—ट्रेनिंग कॉलेज, धारवाढ़

तुलसीदास रामायण

गद्यानुवाद मुक्ति नरसिंह राव । मंगलौर, यू. जी. शिनोज, 1935 : 4, 146 पृ., 18 से. मी. ।

श्री तुलसीदास रामायण अथवा श्री रामचरितमानस

अनु. एम. एस. अनन्तपद्य राव । बंगलौर, के. 'नरसिंह स्वामी । खण्ड—1:1958 खण्ड—2:1967 ।

श्री रामचरितमानस

गद्यानुवाद : गुरुनाथ जोशी । धारवाड़, मिन्चिन वल्ली, 1968 : 8, 276 पृ., 18 से. मी. ।

रामायण

अनु. दत्तात्रय कृष्ण भारद्वाज । बंगलौर, आनन्दाश्रम । दि. न. । 2, 60 पृ., 20.5 से. । प्रथम सोपान—बालकांड ।

तुलसी रामायण-बालकाण्ड

अनु. दत्तात्रेय कृष्ण भारद्वाज । बंगलौर । 24, 256 (163) पृ., परिशिष्ट गद्यानुवाद । परिशिष्ट में मूल हिन्दी सम्मिलित

रामचरितमानस

अनु. शम्भु भट्ट । बडोडे, एस. एस. भट्ट, 1954 : 6, 315, 3 पृ., चित्र, 18 से, मात्र बालकांड ।

दत्तात्रेय सुब्बाराव हेरूर (बालकाण्ड) 1965, डॉ. एन. एस. दक्षिणामूर्ति (पद्यानुवाद) 1977 नथा डॉ. एम. के. भारती रमणाचार्य जी के अनुवाद 1977 में प्रकाशित हुए हैं ।

8.05 : गुजराती

तुलसीकृत रामायण

अनु. गिरजाशंकर मायाशंकर शास्त्री । अहमदाबाद, सस्ता साहित्य, 1927 । 2 भाग, मुख चित्र, 24.5 से. ।

श्री रामचरितमानस

अहमदाबाद, सस्तु साहित्यवर्द्धक प्रकाशन, 1953 । 598 पृ., चित्र, 18 से. मीं. मूलपाठ ।

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

तुलसीकृत रामायण

भाषांतरकार गिरजाशंकर मायाशंकर शास्त्री। 11 वां सं., अहमदाबाद, सस्तु साहित्यवर्द्धक प्रकाशन, 1943 : 2 भाग, चित्र, 24.5 से. मी.। मूल साहित्य गुजराती लिपि में अनुवाद।

श्री रामचरितमानस

भाषांतरकार शंकर भाई त्रिकम भाई पटेल। नडिआद, अबालाल पटेल, 1954 : 16, 540 पृ., चित्र, 18 से. मी.।

रामायण

अनु. अखंडानन्द। बम्बई, सस्ता साहित्यवर्द्धक कार्यालय, 1957 : 2 भाग, चित्र 24 से.। मूल के साथ गुजराती अनुवाद।

श्री रामचरितमानस

अहमदाबाद, सस्तु साहित्यवर्द्धक प्रकाशन 1960 : 16, 954 पृ., चित्र, 29 से. मी.। मूल एवं अनुवाद।

शुकदेव ने लवकुश काण्ड सहित मानस का पद्यानुवाद किया। इनके अतिरिक्त चार अज्ञात विद्वानों के कुछ पद्यानुवाद उपलब्ध हुए हैं।

8.06 : तमिल

रामायणम्

संक्षिप्त एवं अनु., टी. वेंकटकृष्ण आयन्गार। मद्रास, वनति पडिप्पागम, 1967। 472 पृ., 18 से. मी.।

रामचरितमानसम् अल्लतु मानस रामायणम्

आलोचनात्मक टीका सहित गद्यानुवाद, एस. जगन नारायणम्। नई दिल्ली, एस. जगन नारायणम्, 1971-72 : 5 खण्ड, सचित्र, 21.5 से. मी.। भूमिका में तुलसीदास की जीवनी सम्मिलित, अन्य रामायणों के साथ तुलनात्मक अध्ययन।

श्री मद्रान्ध्र तुलसी रामायणमु (लंकाकाण्ड, कुंभकर्ण वध)—भागवतुल नरसिंह शर्मा, वेगुचुक ग्रंथमाल बेहरामपुर, 1954 ई.

तुलसी रामायणमु—(अयोध्याकाण्ड)—तकाल सांवमूर्त्तिगुप्त, प्रकाशक अनुवादक, विजयवाड, 1955 ई.

श्री रामचरितमानस

अनु. शिवरामकृष्णन। मेलकवेरि, साधन निकेतन, 1983 : 5 खण्ड, 21 से.मी.।

3.06.2 : स्फुट कांड

तुलसी रामायणम्—अयोध्या काण्डम्

अनु., एस. अम्दुजम्मल। मद्रास, एलाइन्स कम्पनी, 1942 : 3, 200 पृ., 19 से. मी.।

श्री रामचरितमानस : सुन्दर काण्डम्

टिप्पणी एवं संपा., एस. जी. सुब्रहमण्य अय्यर तथा राजलक्ष्मि अय्यर। मद्रास

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

राजलक्ष्मि अय्यर, 1963 । 12, 170 पृ., 21 से. मी. मूल देवनागरी लिपि में । के. कृष्णाचार्य का अनुवाद अप्राप्य है ।

8.07 : तेलुगु

रामायणमु

अनु. भागवतुल नरसिंह शर्मा । लंकाकाण्ड और कुम्भकर्ण बध । राजमुनद्री, रयप प्रिन्टिग हाउस, 1926 । 18 से. मी. ।

रामायणमु

अनु. श्री निवास शर्मा । मद्रास, वी. आर. संस्त्लु एण्ड सन्स, 1952 । 1218 पृ., 21 से. मी. ।

तुलसी रामायणमु

अनु. तकांल साम्वमूर्ति गुप्त । विजयवाड़ा, अनुवादक, 1955 : 18.5 से. मी. ।

आन्ध्र तुलसी रामायणमु अनु रामचरित मानसमु

अनु. मैलवरपु सूर्यनारायण मूर्ति, कृष्णनम्पलम, 1956 : 21.5 से. मी. । पृथक-पृथक खण्डों में प्रकाशित ।

रामचरित मानस

अनु. हरपाल सिंह बेदी । पटियाला, भाषा विभाग, 1981 : 1000 पृ., 20 से. मी. ।

3.08.3 : रामचरितमानस पर आधारित

अमर सिंह

अमर रामायण । अमृतसर, मथुआचश्मनूर, 1885 : 208 पृष्ठ, 21 से. मी. । तुलसीकृत रामचरितमानस पर आधारित ।

तेलुगु में मानस के अनुवादकों की सूची इस प्रकार है ।

श्री थिष्टू कृष्णामूर्ति शास्त्री एवं मंड कामय्य ने अनुवाद किया ।

स्वामी केशवतीर्थ तथा पाटील, जम्मारेड्डी का अनुवाद 1903 में प्रकाशित, पुसुर्माति श्रीनिवास एवं (1927 प्रकाशन वर्ष), एलूसपाटि लक्ष्मी सरस्वती प्र. व. 1956)

श्रीमती नेतामूतल पार्वती कृष्णमूर्ति (प्र. व. 1962) मुंगर शंकर रामु (प्र.व. 1965) पुसुर्माति श्रीराम शास्त्री (प्र.व. 1972), गुडल वब्हेंटि वेंकटाचलपतिराव (प्र.व. 1988), मिट्टिपल्ली आदिनारायण (प्र.व. 1980)

श्रीमती आर. इंदिरा देवी (प्र.व. 1983, मात्र वालकाण्ड) । इनके अलावा नोमुक्त अप्पाटाक तथा उन्नव कमल कुमारी ने भी मानस के अनुवाद किए हैं लेकिन ये उपलब्ध नहीं हैं ।

डॉ. भीमसेन निर्मल ने मानस के चुने हुए छंदों का तेलुगु अनुवाद किया है ।

8.09 : बंगला

रामचरितमानस

रामायण

अनु. हरिनारायण मिश्र । कलकत्ता, हरिनारायण मिश्र, 1903 : 335 पृ., 25

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

से. मी. । काव्यानुवाद।

रामायण

अनु. हरिनारायण मिश्र, । कलकत्ता, नट बिहारी राय, 1904 : 318 पृ., 20 से. मी. । छन्दानुवाद ।

आन्ध्र तुलसी रामायणमु—(रामचरित मानसमु)—मंलबरदुर सूर्यनारायण मूर्ति, प्रका' अनुवादक, कृष्णम पलेम, 1956 ई.

तुलसी रामायणमु—वेलूल्याटि लक्ष्मी सरस्वती, प्रका. अनुवादक, जाजमहेन्द्रि, 1958 ई.

श्री रामचरित माचगमु— केश्वतीर्थ स्वामी और पाटीलु तिम्मोरड्डि, रामतीर्थ सेवा-श्रम, पिड़गुराल, 1957 ई.

रामचरितमानस

अनु. एवं सं. सतीशचन्द्र दासगुप्त । तीसरा सं. कलकत्ता, खादी प्रतिष्ठान, 1963 613 पृ., 25 से. मी., । प्रथम संस्करण, 1933 ।

रामचरितमानस

अनु. शिव प्रसाद गंगोपाध्याय, कलकत्ता, 1951 ।

खण्ड-1 : बाल काण्ड एवं अयोध्या काण्ड ।

खण्ड-2 : अन्य काण्ड ।

बंगला रामचरितमानस

अनु. वीरेन्द्रलाल भट्टाचार्य । वाराणसी, अनुवादक, 1959 : 24, 386 पृ., सचित्र, 24.5 से. मी. ।

रामचरितमानस

अनु. विजयकालि महाचार्य । कलकत्ता, आर्य विद्यापीठ, 4 भाग, 1960 ।

रामचरितमानस

अनु. एवं संपा. विजयकालि महाचार्य, कलकत्ता, संपादक, 1962 : 8 खण्ड । बालाकण्ड से उत्तरकाण्ड तक बंगला लिपि में मूल सहित

रामचरितमानस ओ दोहावली

अनु. एवं संपा. ज्योतिभूषण चाकी । कलकत्ता, नवपत्र प्रकाशन, 1978 : 2 खण्ड, 22 से. मी. ।

वीरेंद्र लाल भट्टाचार्य ने आठ खंडों में बंगला लिपि में रामायण लिखी हैं ।

फुस्ट काण्ड

रामायण

अनु. हरिमोहन गुप्त । कलकत्ता, काली किंकर चक्रवर्ती, 1869 : 169 पृ., 18 से. मी. । बालकाण्ड एवं अयोध्याकाण्ड का काव्यानुवाद ।

श्री रामचरितमानस : खण्ड-1, बालकाण्ड

अनु. जीवन बाला देवी । जलपाईगुड़ी, उत्तर बंगला साहित्य मन्दिर, 1962 ।

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

4, 43 पृ., मुखचित्र, 24.5 से. मी.।

रामायण

अनु. मदन मोहन चौधरी। 2, 208 पृ., 26 से. मी.। उत्तरकाण्ड, लव-कुश काण्ड, तुलसी काण्ड।

8.10 : मराठी

श्री रामचरितमानस अथवा श्री तुलसी रामायण

अनु. एवं संपा. यादवशंकर जामदार। 2 रा सा., पूना, चित्रशाला प्रेस, 1940 : 24, 651, 35 पृ., 24 से. मी.। मूल सहित, प्रथम संस्करण : 1913।

श्री रामचरितमानस अथवा मराठी चौपाई वृत रामायण

अनु. गणेश सदाशिव भोपटकर। ग्वालियर, अनुवादक : बम्बई, मनोरंजन प्रेस, मुद्रक, 1920। 14, 747, सचित्र, 17.5 से. मी.

रामचरितमानस

अनु. प्रज्ञानन्द सरस्वती। चासर (पूना), लालचन्द कटारे, 1979 : 79, 495 पृ., मुखचित्र, 20.5 से. मी.। जीवनी सहित समश्लोकी समावृत अनुवाद।

सुश्लोक मानस

अनु. रामचन्द्र चिन्तामणि श्रीखण्डे। कोल्हापुर, अनुवादक, 1952-55। 3 खण्ड, 648 पृ., मुखचित्र, चित्र, 17.5 से. मी.। संपूर्ण रामचरित मानस का पद्यानुवाद।

तुलसी रामायण

संक्षिप्त एवं अनुवादक व्यंकटेश वकील। बम्बई, महाराष्ट्र ग्रन्थ भण्डार, 1959। 8 खण्ड, सचित्र, 21 से. मी.।

रामकथा माला

अनु. वी. जी. आप्टे। बम्बई, वोरा एण्ड कम्पनी, 1960 : 4 खण्ड, सचित्र, 18 से. मी.। मूल : तुलसी रामकथा माला, दिल्ली, सस्ता साहित्य मण्डल।

मानस सूक्ति सुधा

अनु. एम. जी. घाटे। पूना, चित्रशाला, प्रकाशन, 1961 : 8, 39 पृ., 18 से.मी.। संचयन मूल एवं अनुवाद।

सार्थ श्री तुलसी रामायण—श्री रामचरित मानस

अनु. नारायण भास्कर जोशी। पुणे, सारथी प्रकाशन, 1970 : 807 पृ., मुख-चित्र, सचित्र, 25 से. मी.।

श्री रामचरितमानस

गोरखपुर, गीता प्रेस। मूल सहित गद्यानुवाद तथा संक्षिप्त तुलसी चरित। मानस चतुः शताब्दी महोत्सव पर प्रकाशित।

सम्पूर्ण मराठी तुलसी रामायण—रामचरितमानस

अनु. नारायण भास्कर जोशी। पुणे, सारथी प्रकाशन, 1970 : 505 पृ, 25 से. मी.। मूल सहित अनुवाद।

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

मराठी में श्री ग. दि. माउमूलर ने 1919, श्री देवीदास लक्ष्मण महाजन 1896 तथा सुलोचना बांडेकर ने 1908 में मानस के अनुवाद किए हैं।
कर्वे दत्तात्रेय नारायण ने 1949 में मानस का पद्यानुवाद किया। दे. ल. महाजन का खंड एक दो काण्ड तथा खंड दो में शेषकांड अनूदित हैं।

8.11 मलयालम

तुलसी रामायणम्

अनु. कावुराल नीलकंठ पिल्ल। कोल्लम, श्री रामविलासन प्रेस एण्ड बुक डिपो, 1930-1954 : 2 खण्ड, चित्र, 21 से. मी.। गद्यानुवाद।

रामचरितमानस

अनु. और टीका. टी. के. रामन मेमन। चिहू, टी. रामन मेमन, विक्रय एन. वी. एस. 1967 : 1173 पृ., 18 से. मी., टीका सहित मूल मलयालम लिपि में।

रामचरितमानसम् अथवा रामायणम्

अनु. टी. के. भट्टतिरी। कोजीकोहे, अनुवादक, (विक्रेता-मातृभूमि), 1968 : 325 पृ., 25 से. मी.

तुलसीदास रामायणम्

अनु. वोणिकुलम् गोपाल कुरूप। कोट्टयम्, साहित्य प्रवर्तक सहकरण संघम्, 1968 : 842 पृ., 21 से. मी.।

डॉ. एन. चंद्रशेखर नायर द्वारा अनूदित मानस के अंश 1954 से 1975 तक मलयालम के साप्ताहिक अंक में छपे।

8.11.2 : स्फुट काण्ड

रामचरितमानम् अथवा तुलसी-रामायण-बालकाण्ड

अनु. ए. वासु मेमन। पालघाट, एजुकेशनल स्पलाईज डिपो, 1956 : 18, 171 पृ., 21 से. मी.। गद्यानुवाद।

8.12 मैथिली

8.12.1 : अनुवाद : रामचरितमानस

मैथिली श्री रामचरितमानस

अनु. रामलोचन शरण। पटना, पुस्तक मंडार, 1968 : 10, 505 पृ., 26 से. मी.

8.13 संस्कृत

8.13.1 : अनुवाद : रामचरित मानस

मानस भारती

श्रीमद् गोस्वामी तुलसीदास रचित श्री रामचरितमानस सहित पंक्ति अनु. पंक्ति संस्कृत पद्यानुवाद, अनु. जनार्दन गंगाधर रटाटे। लखनऊ, भवनवाणी ट्रस्ट, 1981 : 739 पृ., 22 से. मी.।

संस्कृत

रामचरित मानस—रामू द्विवेद—हस्तलेख। रचनाकाल 1962 सं. के पूर्व। प्राप्ति

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

स्थान —सरस्वती भंडार, रामनगर दुर्ग, वाराणसी; रायल एशियाटिक सोसाइटी एवं इडिया आफिस लाइब्रेरी, लंदन।
रामचरित मानस—पं. बलभद्र
तुलसी महाकाव्यम्—रघुनंदन शर्मा, अखिल भारतीय, अणुव्रत समिति, सब्जीमंडी, दिल्ली।

8.13.2 : स्फुट काण्ड

श्रीमन्या रामणाचार्य। गोस्वामी तुलसीदास जी के रामचरित मानस के अरण्य और सुन्दर काण्डों का संस्कृत काव्यान्तर, अनु. संपा. श्रीनारायण चतुर्वेदी, इलाहाबाद, भारतवासी प्रकाशन, 1972।

8.13.2 : संकलन

मणिरत्न माला

संपा. नन्देश्वरी। देहरादून, संपादक, 1929 : 2, 198 पृ. 18 से. मी.।
नालिनी साधले पराड़कर ने बालकांड का अनुवाद किया जो 1978 में पुस्तकाकर प्रकाशित हुआ। रामद्विवेदी ने 1605 के पूर्व अनुवाद किए जिसके सिर्फ तीन कांड उपलब्ध हैं। डॉ. शिवकुमार शुक्ल व सुधाकर द्विवेदी ने भी मानस का संस्कृत में पद्यानुवाद किया।

8.14 नेपाली

अनु. एवं टीका श्री कुल चन्द्र गौतम। वाराणसी, ज्ञान मण्डल प्रेस (एस. पी. बहादुर), 1972। 1126 पृ.।
मूल मानस नेपाली टीका सहित राष्ट्रपति की 1963 की नेपाल यात्रा के अवसर पर प्रकाशित। बिना मूल्य वितरित।
तुलसीदास से प्रभावित होकर खंड बहादुर श्रेष्ठ ने राधेश्याम रामायण, तुलसी प्रसाद दुभापला, संगीत रामायण व वाणीविलास पांडे चित्रकूगेपाख्यान का अनुवाद किया।

अंग्रेजी

मैकडोनल, डॉ. विलियम चार्ल्स—
द वे ऑव साल्वेशन व रामायण ऑव तुलसीदास. इलिनोइस, सिकावो, 1926 ई.
मुन्शी अदालत खाँ—
—रामचरित मानस, (आंशिक अनुवाद, अंग्रेजी में, फोर्ट विलियम कॉलेज, कलकत्ता, 1871 ई.
डब्ल्यू. डगलस पी. हिल---(अंग्रेजी गद्यानुवाद)
द होली लेक ऑव द एक्ट्स ऑव राम (एन इंगलिश ट्रांसलेशन ऑव रामचरित मानस), ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, 1952 ई.
एटकिन्स ए. जी.—(अंग्रेजी पद्यानुवाद)
द रामायण ऑव तुलसीदास, हिन्दुस्तान टाइम्स प्रेस, नई दिल्ली, 1955 ई.
एफ. आर. अलीची—कवितावली (का अंग्रेजी अनुवाद)

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

पंजाबी

संत गुरमुख सिंह प्रेमी ने 1917 में मानस का पद्यानुवाद किया।

हरपाल सिंह वेदी ने मानस का पंजाबी अनुवाद 1962, डॉ. रत्नसिंह डोगी ने 1977 तथा ज्ञानी संतसिंह ने 1987 में किया।

भाव प्रकाश (तुलसी रामायण की गद्य टीका)—ज्ञानी संत सिंघ, संवत 1881 वि.

तुलसी रामायण, सटीक—(गद्यानुवाद)—संत सिंघ, नवल किसोर प्रेस लाहौर, 1894 ई.।

तुलसी रामायण बिसन पदे—लाहौर, 1982 वि. सं.

,, ,, (सचित्र)—लिपिक, मोता सिंघ, सुनाम निवासी. 1911 वि. सं.

,, ,, —प्रका. आफताब पंजाब छापाखाना, 1871 ई.

रामायण (गरुमुखी में लिप्यंतर)—महवूब अहमद, मुंशी, नवल किसोर प्रेस, लाहौर, लोथो मुद्रित, 1890 ई.।

रामायण (गुरुमुखी लिपि में) मुंशी गुलाब सिंह एंड संस, लाहौर, 1924 ई.

रामचरित मानस (गरुमुखी लिपि में) बूटा सिंह।

रामचरित तुलसी कृत—मानस सागरी का राम दासी गरुमुखी विश्रादिया, दो भागों में, लाहौर, 1957-58 वि. सं.।

फ्रेंच

गार्सा व तासी—'इस्तुस्वार द आ लितरेत्यूर ऍंटूए ए हिन्दुस्तानी' में सुन्दर काण्ड का फ्राँसीसी (फ्रेंच भाषा में अनुवाद—जिल्द 2, 1851 ई., एवं 1839 ई.।

सालेदि वोदविल—'एत्यूद सरले एटलॉकपोजीशन टु रामायण दे तुलसीदास, भाग-1 (तुलसीदास रचित रामचरितमानस का मूलाधार व रचना विषयक समालोचनात्मक अध्ययन)—अनु. जगवंश किशोर वलवीर—फ्रेंच से अंग्रेज़ी में, प्रका. इन्स्टीच्यूट फ्रांसेस 'द' इंडोलॉजी, पांडेचेरी, 1959 ई.

एल, पी. टेसीटोरी—'रामचरित मानस ए इल रामायण, जियोनॉले देल्ला सोसियेता जयातिका, जिल्द 24, 1911-12 ई.।

उपर्युक्त का अंग्रेज़ी अनुवाद—'द रामचरित मानस एंड द रामायण (ऑव वाल्मीकि) इंडियन एंटिक्वेरी, खंड 41-42; 1913 तथा दिसंबर 1912 ई.

हिन्दी अनुवाद—रामचरित मानस और वाल्मीकि रामायण, (अनु. राधिका प्रसाद त्रिपाठी)—आनंद प्रकाशन, फैजाबाद, 1974 ई.

रूसी

ए. पी. बारानिकोव ने 1948 में रामचरित मानस का रूसी भाषा में पद्यानुवाद किया।

□

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

अनुवाद-सिद्धांत : कुछ उपयोगी पुस्तकें

अनुवाद-चिंतन :
एल. एन. शर्मा सौमित्र

अनुवाद सिद्धांत की रूपरेखा
डा. सुरेश कुमार

अनुवाद की सामाजिक भूमिका
डा. रीतारानी पालीवाल

अनुवाद बोध
संपादक : डा. गार्गी गुप्त

अनुवाद कला : सिद्धांत और प्रयोग
डा. कैलाश चंद्र भाटिया

पारिभाषिक शब्दावली की विकास यात्रा
संपादक : गार्गी गुप्त

काव्यानुवाद : सिद्धांत और समस्याएँ
डा. नगीन चंद सहगल

हिंदी में व्यावहारिक अनुवाद
डा. आलोक कुमार रस्तोगी

अनुवाद सूक्तियाँ
संपादक : गार्गी गुप्त
डा. कुसुम अग्रवाल

अनुवाद सिद्धांत और प्रयोग
डा. जी. गोपीनाथन

अनुवाद-चिंतन के सैद्धांतिक आयाम
संपादक : डा. गार्गी गुप्त
डा. ओम्प्रकाश सिंहल

अनुवाद से संवाद
डा. ओम्प्रकाश सिंहल

अनुवाद के रंग
संपादक : डा. ओम्प्रकाश सिंहल

अनुवाद भाषाएँ- समस्याएँ
डा. एन. ई. विश्वनाथ अय्यर

बैंकों में अनुवाद प्रविधि
डा. सीता कुंचितपादम

अनुवाद : सिद्धांत और व्यवहार
डा. मंजुला दास

अनुवाद : मूल्य और मूल्यांकन
डा. शशि मुदिराज

The Art of Translation
R. Raghunath Rao

अनुवाद : अवधारणा और अनुप्रयोग
संपादक : चन्द्रभान रावत
डा. दिलीप सिंह

हिन्दी में बातचीत
अशोक कुमार वर्मा

प्रकाशनाधीन
मानस के अनुवाद
अनुवाद चिंतन की परम्परा

मुद्रक : अर्चना प्रिंटर्स, सीलमपुर, दिल्ली-३१ दूरभाष : २२०५३७८